अढीद्वीपना नकशानी हकीगतनुं पुस्तक.

एमां जंबूद्वीप, लवणसमुद्र, धातकीखंड, कालोदसमुद्र,
अने पुष्करार्द्ध द्वीप, संबंधि शाश्वता पदार्थोनुं सविस्तर वर्णन.

तथा

चोवीश दंडकें स्थिति आदिक पांत्रीश द्वार प्रमुख

अनेक प्रकारना बूटा बोलोनो समावेश करेलो छे.

ए ग्रंथ

समस्त निश्चयार्थी जिज्ञासु एवा सम्यग्दृष्टि जनोने वांचवा धारवाना

खपमां आववा योग्य जाणी.

श्रावक. भीमसिंह माणकें.

श्रीमुंबापुरी मध्यें.

निर्णयसागर नामक मुद्रालयमां मुद्रित कराव्यो छे.

शके. १८११ संवत् १९४६ सने १८९०

अनुक्रमणिका.

श्रीवर्द्धमानस्वामिनेभ्योनमोनमः

अथ

॥ अढीदीपनां नकशानोविचार प्रारंभः ॥

एक राज प्रमाण तिर्छो लोकछे तेमां असंख्याता द्वीप अने असंख्याता समुद्र छे, ते सर्वमां जंबुद्वीप आद्यमां छे अने स्वयंभु रमण समुद्र अंतमां छे ए सर्व द्वीप मली संख्यायें अढीसागरोपम अर्थात् पच्चीश कोडाकोडी उद्धार पल्योपमनां जेटलां समय थाय तेटलां छे, ते संस्थान थकी एकज आकारेंछे अने विस्तार पणे अनेक प्रकारनांछे एटले प्रथम द्वीपथी प्रथम समुद्र द्विगुणो छे तेथी बीजो द्वीप बमणो छे तेथी बीजो समुद्र बमणो छे तेथी त्रीजो द्वीप बमणोछे एरीतें सर्वे द्वीपसमुद्र विस्तारें एकेकथी बमणा बमणा पहोल पणेछे, सुप्रशस्त वस्तुनां जेवा जेवा नामछे तेवा तेवा नामे ए द्वीप समुद्र छे ते वली एकेका नामे करी पण असंख्याता असंख्याताछे जेम आ मध्यनो जंबूद्वीप छे तेम एज जंबूने नामे बीजा पण असंख्याता द्वीप छे.

ते सर्व द्वीप अने समुद्रने अंभ्यतर एटले तिर्यक्लोकने मध्यवर्त्ति आ जंबूद्वीप छे ते बधा द्वीप समुद्रनी अपेक्षायें सर्वथकी न्हानोछे एमां जंबू सुदर्शन नामे वृक्षछे तेमाटे एनुं जंबू एवुं नाम छे ए जगति सहीत प्रमाणांगुलें करी एक लाख योजन लांबो पहोलोछे, थालीने आकारें, कमलना मोभानें आकारें, तेलना पुडला करीयें ते जेवा गोल होय तेवा आकारे, पूरण चंद्रमाने आकारे, तथा रथना पइडाने आकारें गोलछे.

एनी त्रणलाख शोलहजार बशें सत्तावीश योजन, त्रणकोश, एकशो अठावीश धनुष्य, तेर अंगुल, पांच यव, एक जूं, एक लीख, चार वाल, वली एक वालनां शाठ भाग करीयें ते मांहेला सात भाग तथा वली ते शाठीया एक भागनां एकशठ भाग करीयें ते मांहेला दशभाग उपर एटली परिधिछे शेष सर्व असंख्याता जंबूद्वीप चूडीने आकारे जाणवा अने असंख्याता कोडा कोडी योजननां लांबा पहोलाछे, ए प्रथम जंबूद्वीप जे छे ते बीजा सर्वे असंख्याता द्वीप अने समुद्रें करी वींटेलुं छे.

जेम जंबूद्वीप जगती सहीत एकलाख योजननुं छे तेम एने फरतो लवण समुद्र छे ते जगती सहीत बे लाख योजननां विस्तार वालोछे तेमज लवण समुद्रने फरतो धातकी खंड छे ते जगती सहीत चार लाख योजन छे तथा धातकी खंडने फिरतो कालोद समुद्रछे ते जगती सहीत आठ लाख योजन छे तथा कालोद समुद्रने फरतो पुष्करवर द्वीपछे ते पूरणतो शोल लाख योजन छे परंतु ते मांहेलुं आठलाख योजन प्र

माण अर्द्ध द्वीप मानुष्योत्तर पर्वतें करी वींटेलुं छे ते मांहे मनुष्यनी वस्तिछे अने बाहेरनो अर्द्ध द्वीप मनुष्यनी वस्तिथी शून्यछे माटे पुष्करवर द्वीपनो अर्द्धभाग अढीद्वीपनी गणतिमां लीधुंछे तेथी एनुं पुष्करार्द्ध द्वीप एवुं नाम राख्युंछे.

एरीतें एक लाख योजन जंबूद्वीपनां तथा बे लाख पूर्व अने बे लाख पश्चिमनां मली चार लाख योजन लवण समुद्रनां मेलवतां पांच लाख योजन थया तेनी सार्थे पूर्व धातकीनां चार अने पश्चिम धातकीनां चार मली आठ लाख योजन धातकीखंडनां मेलवतां तेर लाख योजन थया तथा तेनी सार्थे पूर्व कालोद समुद्रनां आठलाख अने पश्चिम कालोद समुद्रनां आठ लाख मली शोल लाख योजन कालोद समुद्रनां मेलवीयें तेवारें ओगणत्रीश लाख योजन थाय तेनी सार्थे पुष्करवरद्वीपार्द्धनां पूर्व पश्चिमनां आठ आठ लाख मली शोल लाख योजन मेलवीयें तेवारें पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण अढीद्वीप थाय छे तेमां मनुष्यनी वस्तिछे.

ए अढी द्वीप प्रमाण मनुष्यक्षेत्रनुं पूर्वोक्त रीतें पूर्व पश्चिम विष्कंभ पीस्तालीश लाख योजन प्रमाणछे तेमज दक्षणोत्तर विष्कंभ पण पीस्तालीश लाख योजन प्रमाणछे तेमां जे जे शाश्वता पदार्थो रह्याछे तेना चित्र आ पुस्तकने विषे सामान्य प्रकारें देखाड्याछे. तिहां प्रथम पूर्व पश्चिमनां पीस्तालीश लाख योजन आवीरीतें पूराणा छे.

पुष्करार्द्ध द्वीपनां पूर्व अने पश्चिम ए बे बाजुनां मानुष्योत्तर पर्वत पासें आवेला मह्मोटा बे वन मुख छे ते प्रत्येक ११६८८ योजननो छे. ..	२३३७६
पुष्करार्द्धमां बे बाजुनां बेवडा बत्रीश विजयछे ते प्रत्येक विजयनुं विष्कंभ १९७९४। योजननुं छे तेने बत्रीश विजय साथे गणतां सरवाले.	६३३४१६
पुष्करार्द्धमां शोल वक्षस्कारा पर्वतछे ते प्रत्येक पर्वत बे बे हजार योजननुंछे	३२०००
पुष्करार्द्धनी बार अंतरनदी प्रत्येक पांचसो योजन प्रमाणे गणतां योजन.	६०००
पुष्करार्द्धनां बे मेरुनां बे वन प्रत्येके ४४०९१६ योजन प्रमाणे गणतांयोजन.	८८१८३२
पुष्करार्द्धनां मांहेली बाजुनां समुद्र तरफनां बे बाजुनां बे वनमुख जगतीनां योजन बाद करतां प्रत्येक ११६७६ योजन प्रमाणे गणतां योजन.	२३३५२
अढीद्वीपमां एक जंबुद्वीपनी, बीजी लवण समुद्रनी, त्रीजी धातकी खंडनी अने चोथी कालोद समुद्रनी ए चार जगती पूर्वदिसीनी अने चारजगती पश्चिमदिसीनी एम बे बाजुनी मली जगती आठ छे अने पुष्करार्द्ध द्वीपने फरतो मनुष्योत्तर पर्वतछे, तेनी जगती जिहां द्वीपपूरण थायछे तिहांछे माटे ते गणी नथी शेष आठ जगती प्रत्येक बारबार योजन प्रमाणे गणतां.	९६

कालोद समुद्रनां एकेकी बाजुनां आठ आठ लाख योजन प्रमाणे बे बाजुनां.	१६०००००
धातकी खंमनां बे बाजुनां चार वनमुखछे तेमांथी एकेका बाजुनां बे बे वन मुखें जगति बाद करतां ११६६४ योजन रुंध्या छे.	२३३२८
धातकी खंमनी बे बाजुनी बत्रीश विजयनां प्रत्येक विजयें (९६०३) योजन उपर एक योजननां आठ नाग करीयें तेवा त्रण नाग रुंध्या छे... ..	३०७३०८
धातकी खंमनां बे बाजुनां शोल वक्खस्कार पर्वत प्रत्येक हजार योजननां छे.	१६०००
धातकी खंमनी बार अंतर नदीनां प्रत्येकें अढीसो अढीसो योजन गणतां.	३०००
धातकी खंमनां बे बाजुनां बे मेरुनीपासें नद्रशाल वननां एकेक बाजुनां २२५१५८ योजन प्रमाणे गणतां योजन	४५०३१६
लवण समुद्रनी एकेकी बाजुनां बे बे लाख गणतां बे बाजुनां योजन.. ..	४०००००
जंबूद्वीपनो वनमुख एकेक बाजुनी जगतीनां बार बार योजन बाद करतां बाकी २९१० योजन प्रमाणे गणतां बे बाजुनां योजन.	५८२०
जंबूद्वीपनां प्रत्येक एकेकी विजयनां २२१२ योजन अने एक योजननां आठनाग करीयें तेवा सात नाग उपर एवा शोल विजयछे यद्यपि जंबूमां विजयतो बत्रीशछे पण पूर्व पश्चिम आश्रयी बे बे विजयनो एकेक नाग गणतां आ ठेकाणे शोल विजय हिसाबमां गणवा एजरीत धातकीखंमे तथा पुष्करार्द्धमां पण जाणवी.	३५४०६
जंबूद्वीपनां आठ वक्खस्कार पर्वत पांच पांचशो योजन प्रमाणे गणतां...	४०००
जंबूद्वीपनी छ अंतरनदी सवासो सवासो योजन प्रमाणे गणतां योजन.	७५०
जंबूद्वीपनो मेरु तथा नद्रशाल वननां योजन.	५४०००
सरवाले अढीद्वीप संबंधी पूर्व पश्चिमनां योजन.	४५०००००

हवे दक्षणोत्तर विष्कंन ४५००००० लाख योजन आवी रीतें पूराणा छे.

पुष्करार्द्धमां बे तरफनां बे इक्षुकार पर्वत प्रत्येक जगति सूधां आठ लाखयो०	१६०००००
कालोदधीनां एकेक बाजुनां आठ आठ लाख योजन प्रमाणे गणतां.	१६०००००
धातकीखंमनां इक्षुकारपर्वत एकेकी बाजुनां चारलाख योजनजगती सूधांछे.	८०००००
लवण समुद्रनी एकेकी बाजुनां बेबे लाख योजन प्रमाणे गणतां.	४०००००
दक्षण नरतार्द्ध तथा दक्षण ऐरवतार्द्ध एकेकाना २३८ योजन अने एक योजनना ओगणीश नाग करीयें ते मांहेला त्रण नाग उपर छे... ..	४५८ $\frac{६}{१९}$
नरतक्षेत्र मांहेला वैताढ्यनां पञ्चाश योजन.	५०
ऐरवतक्षेत्र मांहेला वैताढ्यनां पञ्चाश योजन.	५०

दक्षण जरतार्द्धनी अयोध्यानगरी पोहोळ पणे नव योजन छे.	९
उत्तर ऐरवतार्द्धनी अयोध्यानगरी पोहोळ पणे नव योजन छे.	९
उत्तर बाजुना जरतार्द्धना योजन.	२३८) ३/१९
दक्षण बाजुयें ऐरवतार्द्धना योजन.	२३८) ३/१९
चुल्लहेमवंत पर्वत पोहोळ पणे योजन.	१०५२) १२/१९
शिखरी पर्वतना पोहोळ पणे योजन.	१०५२) १२/१९
हेमवंत क्षेत्र गलीयानुं पोहोळ पणे योजन.	२१०५) ५/१९
एरन्यवंत क्षेत्र युगलीयानुं पोहोळ पणे योजन.	२१०५) ५/१९
महाहिमवंत पर्वत दक्षणोत्तर पहोळ पणे योजन.	४२१०) १०/१९
रूपी पर्वत दक्षणोत्तर पहोळ पणे योजन.	४२१०) १०/१९
हरिवर्ष क्षेत्र युगलीयानुं दक्षणोत्तर पहोळ पणे योजन.	८४२१) १/१९
रम्यक् क्षेत्र युगलीयानुं दक्षणोत्तर पहोळ पणे योजन.	८४२१) १/१९
निषध पर्वत दक्षणोत्तर पोहोळ पणे योजन.	१६८४२) २/१९
नीलवंत पर्वत दक्षणोत्तर पोहोळ पणे योजन	१६८४२) २/१९
देव कुरुक्षेत्र युगलीयानुं दक्षणोत्तर पोहोळ पणे योजन.	११८४२) २/१९
उत्तर कुरुक्षेत्र युगलीयानुं दक्षणोत्तर पोहोळ पणे योजन.	११८४२) २/१९
मेरु पर्वतनो दक्षणोत्तर विष्कंज.	१००००
सरवाळे अढीद्वीपना दक्षणोत्तर योजन संख्या.	४५०००००

॥ अथ एकतालीश बोलें अढीद्वीप व्याख्या उपदेश ॥

॥ प्रथम इष्टदेवने नमस्काररूप मंगलाचरण ॥

॥ श्लोक ॥

श्रीवर्द्धमानाख्यविभुं यजामि, सुरासुरैः सेवितपादपद्मम् ॥
तस्योपदेशामृतपानपीना, नरा जवाब्धिं विषमं तरंति ॥१॥

हवे अढीद्वीपनी व्याख्या करेछे जंबूद्वीपथी मांमीने मानुष्योत्तर पर्वत लगें अढीद्वीप समयक्षेत्र कहेवायछे एमां जे कांइ शाश्वता पदार्थ, नित्य पदार्थ, ध्रुवपदार्थ, अवस्थितजावेछे ते संक्षेपथी एकतालीश बोलें करी कहीयें छैयें.

१ प्रथम बोलें खांमुआनुं प्रमाण कहेछे. लाख योजननुं जंबूद्वीपछे तेना १९०) खांमुआ थाय ते आवी रीतें प्रथम एक खांमुओ जरत क्षेत्रनो जाणवो तेवाज बे खां

कुआ चुल्लहेमवंत पर्वतना तथा चार खांकुआ हेमवंतनामे युगलीयानां क्षेत्रनां तथा आव खांकुआ महाहेमवंत पर्वतना तथा शोल खांकुआ हरिवास युगलीयानां क्षेत्रनां तथा बत्रीश खांकुआ निषध पर्वतना एरीतें जरत क्षेत्रीथी मांमीने निषध पर्वत लगें त्रेशव खांकुआ थया तेवाज त्रेशव खांकुआ ऐरवत क्षेत्रथी मांमीने नीलवंत पर्वत लगें थाय अने चोशव खंकुक प्रमाणे माहाविदेह क्षेत्रवे एम सरवाले मली एकशो नेवुं खांकुआनुं जंबूद्वीप वे ते एकेको खांकुउ (५२६) योजन अने एक योजननां उगणीश जाग करीयें तेवा व जाग उपर एटला प्रमाणनुं जाणवो तेने एकशो नेवुंयें गुणतां बराबर एक लाख योजन दक्षणोत्तर जंबूद्वीपनां थाय तेनी यंत्र स्थापना

खंकुक.	क्षेत्रादिकोनां नाम.		
१	जरतक्षेत्रनो खंकुक एक.	६४	महाविदेहक्षेत्रनां खंकुक चोशव.
२	चुल्लहिमवंतपर्वतनां खंकुक बे.	३२	नीलवंतपर्वतनां खंकुक बत्रीश.
४	हेमवंतयुगलीयानुंक्षेत्र खंकुक चार.	१६	रम्यकक्षेत्रयुगलीयानुं खंकुक शोल.
८	महाहेमवंतपर्वत खंकुक आव.	८	रूपीपर्वतनां खंकुक आव.
१६	हरिवासयुगलक्षेत्रनां खंकुक शोल.	४	ऐरन्यवंतक्षेत्रयुगलीयानुंखंकुक चार.
३२	निषधपर्वतनां खंकुक बत्रीश.	२	शिखरीपर्वत खंकुक बे.
		१	ऐरवतक्षेत्रनो खंकुक एक.

२ बीजा बोलें योजन प्रमाण कहेवे. जंबूद्वीपनां दक्षण दरवाजाथी मांमीने चुल्लहेमवंत पर्वतनां रूषजकूट पर्यंत (५२६) योजन अने व कला प्रमाणे जरतक्षेत्रवे तथा १०५२) योजनने बारकला प्रमाणे पोहोलो हिमवंत पर्वतवे तथा २१०५) योजन ने पांच कला प्रमाणे पोहोलो हेमवंतयुगलक्षेत्र वे तथा ४२१०) योजन ने दश कला प्रमाणे पोहोलो माहाहिमवंत पर्वतवे तथा ८४२१) योजन अने एक कला प्रमाणे पोहोलो हरिवास युगलीयानुं क्षेत्रवे तथा १६८४२) योजन अने बे कला प्रमाणे पोहोलो निषधपर्वतवे एज प्रमाणे ऐरवतक्षेत्रथी मांमीने नीलवंतपर्वत लगें पण मर्यादा जाणवी अने निषधपर्वतथी मांमी नीलवंत पर्वत लगें ३३६८४) योजन अने चार कला उपर एटलो महाविदेहक्षेत्र पोहोलुंवे सरवाले उत्तरदक्षण जंबूद्वीपनां एक लाख योजन थया तेनुं यंत्र.

क्षेत्रादिकनां नाम.	पोहोलाइयो०	कला.	क्षेत्रादिकनां नाम.	पहोलाइयो०	कला.
जरतक्षेत्र.	५२६....	६	नीलपर्वतवंत.	१६८४२	२
चुल्लहेमवंतपर्वत	....१०५२....	१२	रम्यकक्षेत्र युलीगयानुं.	८४२१	१
हेमवंतयुगलक्षेत्र.	....२१०५....	५	रूपी पर्वत	४२१०	१०
महाहिमवंतपर्वत	....४२१०....	१०	ऐरन्य वंतयुगलक्षेत्र ..	२१०५	५

अढीद्वीपना नकाशानी हकीगत.

हरिवर्षयुगलक्षेत्र	....८४२१....	१	शिखरीपर्वत........	१०५२	१२
निषधपर्वत	......१६८४२....	२	ऐरवतक्षेत्र	५२६	६
महाविदेहक्षेत्र	....३३६८४....	४		३३१५७ ——	१७
	६६८४२———	२ सरवाळे (१०००००)			

३ त्रीजे बोलें गणीत पद कहे छे सातसें कोड, नेवुंकोड, छपन्नलाख, चोराणु हजार, उपर दोढसो योजन कांइक अधिकुं एटलुं जंबूद्वीपनो गणीत पद छे.

४ चोथे बोलें परिधि कहे छे त्रणलाख शोल हजार बसें सत्तावीश योजन,त्रण कोश, एकशो अठावीश धनुष्य अने तेर अंगुल जाजेरा एटली जंबूद्वीपनी परिधि जाणवी तथा पंदरलाख एकयासी हजार एकसो ठगणचालीश योजन किंचित उणा लवण समुद्रनी परिधि जाणवी तथा एकतालीश लाख दश हजार नवसेने एकशठ योजन एटली धातकी खंडनी परिधि जाणवी तथा एकाणु लाख सीतेर हजार छशें पांच योजन कांइक विशेषाधिक एटली कालोदधीनी परिधि जाणवी तथा एक कोडी बेतालीश लाख त्रीश हजार बशें ठगणपच्चाश योजन एटली अभ्यंतर पुष्करार्द्धनी परिधि जाणवी.

५ पांचमें बोले पूर्वथी दक्षणे, दक्षणथी पश्चिमें, पश्चिमथी उत्तरे चार द्वारनुं अंतर कहे छे ठगणाएंसी हजार बावन योजन एक कोश पंदरसें बत्रीश धनुष्य अने त्रण अंगुल एटलो जंबूद्वीपनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवुं तथा त्रणलाख,पंचाणुहजार बशें ऐंसी योजन ने एक कोश एटलो लवण समुद्रनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो तथा दशलाख सत्तावीश हजार सातशें पांत्रीश योजन अने त्रण कोश एटलुं धातकी खंडनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो तथा बावीश लाख बाणुहजार छशें छेंतालीश योजन अने त्रण कोश एटलो कालोदधीनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो अने पुष्करार्द्धनां दरवाजा नथी पण आखो पुष्करवरद्वीप शोळलाख योजननो तेना दरवाजाछे परंतु अर्द्धद्वीपनां दरवाजा नथी, प्रत्येक द्वीप समुद्रनी परिधिना योजननो चोथो भाग करी तेमांथी द्वारनां बारणानां साढाचार योजन ओछा करतां जेटला योजन बाकी रहे तेटलुं दरवाजा दरवाजानुं अंतर जाणवुं तथा जंबूद्वीपनां चार दरवाजानां नाम आ प्रमाणेछे एक पूर्वें विजय बीजो दक्षणें विजयंत त्रीजो पश्चिमें जयंत चोथो उत्तरें अपराजित ए चार दरवाजाने नामे ए दरवाजाना चार द्वारपालनां पण एहीज नाम छे, जंबूनो कोट मूलमां पोहोलो बार योजन छे तथा मध्यभागें पोहोलो आठ योजनछे अने उपर पोहोलो चार योजनछे तथा सर्वें दरवाजा आठ योजन उंचा छे अने चार योजन पहोळ पणे बारणा छे एकेक कोशनी बे बाजु बारशा

ख छे जंबूद्वीपना दरवाजाने साहामा चारे कोरें दोरी छंट सर्व असंख्यात द्वीप समुद्रनां दरवाजा छे ते सर्व द्वीप समुद्रोना दरवाजानां नाम एना एहिज जाणवा.

६ छठे बोलें वर्षधरक्षेत्र कहेछे. एक भरत, बीजो हेमवंत युगलक्षेत्र, त्रीजो हरिवास युगलक्षेत्र, चोथो ऐरवंतक्षेत्र, पांचमो ऐरण्यवंत युगलक्षेत्र, छठो रम्यक्युगलक्षेत्र, अने सातमो माहाविदेह क्षेत्र ए सात जंबूद्वीपमां तथा धातकीखंडमां एथी बमणा चौदवर्ष धर क्षेत्र छे अने पुष्करार्द्धमां पण धातकीनी पेरें चौदवर्षधर छे सर्व मली अढी द्वीपमां पांत्रीश वर्ष धर क्षेत्र छे एनी लंबाइ पोहोलाइनां प्रमाण आगल कहेशे.

७ सातमे बोले वर्षधर पर्वत कहे छे एक हेमवंत, बीजो महाहेमवंत, त्रीजो निषध चोथो शिखरी, पांचमो रूपी, छठो नीलवंत, अने सातमो मेरु ए सात जंबूद्वीपमां छे अने धातकी खंडमां ए थकी बमणा चौदछे ते सर्व जंबूद्वीपनां वर्षधर प्रमाणे उंचा छे पण लंबाइमां चार चार लाख योजनछे हवे पोहोल पणो कहेछे बे हेमवंत अने बे शिखरी ए चार पर्वत बे हजार एकसो पांच योजन अने ५ भाग तथा बे महा हेमवंत अने बे रूपी ए चार पर्वत आठ हजार चारशो एकवीश योजन अने १ भागछे तथा बे निषध अने बे नीलवंत ए चार पर्वत तेत्रीश हजार छशें चोरासी योजन उपर ४ भाग छे हवे पुष्करार्द्धमां पण जंबूद्वीपथी बमणा वध्या तेवारे चौद पर्वत थया ते सर्वे लंबाइमां आठ लाख योजन प्रमाणेछे अने पोहोलाइमां जेटला छे ते कहेछे बे हेम वंत तथा बे शिखरी ए चार पर्वत चार हजार बशें दश योजन अने १० भाग छे तथा बे माहाहेमवंत अने बे रूपी ए चार पर्वत शोल हजार आठसें बेंतालीश यो जन पनर १) भाग छे तथा बे निषध अने बे नीलवंत मली चार पर्वत शडशठ हजार त्रणसें अडशठ योजन उपर ८ भाग छे.

हवे पांच मेरुनो उंचपणो तथा पोहोल पणो कहेछे. प्रथम जंबूद्वीपनो मेरु एक हजार योजन धरतीमां उंडो छे अने नवाणुं हजार योजन उपर उंचो छे सरवाले लाख योजन उंचो छे मेरुना मूलना हेठला छेहेडाथी समभूतल पृथ्वी एक हजार योजन उंची छे तथा समभूतलथी वली पांचशें योजन उंचो नंदन वन छे तथा नंदनवनथी शाडा बाशठ हजार योजन उंचो सोमनस वनछे तथा सोमनसवनथी छत्रीश हजार योजन उंचो पंडुक वनछे एरीते एक लाख योजन उंचपणानां थया अने उपर चालीश योज न उंची चूलीका छे ते चोटली सरखी छे ए मेरुनो उंचपणो कह्यो हवें पोहोल पणो कहेछे मूल धरतीमां दशहजार ने नेवुं योजन उपर एक योजननां अगीआर भाग क रीयें तेवा दस भाग एटलुं पोहोल पणेछे पछी त्यांथी प्रदेशें प्रदेशें घटतां घटतां सम भूतल आगल बराबर दशहजार योजननो पोहोल पणे थयो छे तथा नंदनवन पासें

अढीद्वीपना नकाशांनी हकीगत.

हरिवर्षयुगलक्षेत्र	....८४२१....	१	शिखरीपर्वत........	१०५२....	१२
निषधपर्वत	......१६८४२....	२	ऐरवतक्षेत्र........	५२६....	६
महाविदेहक्षेत्र	....३३६८४....	४		३३१५७ ——	१७
	६६८४२ ——	२	सरवाले (१०००००)		

३ त्रीजे बोलें गणीत पद कहे छे सातसें कोड, नेवुंकोड, छपन्नलाख, चोराणु हजार, उपर दोढसो योजन कांइक अधिकुं एटलुं जंबूद्वीपनो गणीत पद छे.

४ चोथे बोलें परिधि कहे छे त्रणलाख शोल हजार बसें सत्तावीश योजन, त्रण कोश, एकशो अठावीश धनुष्य अने तेर अंगुल जाजेरा एटली जंबूद्वीपनी परिधि जाणवी तथा पंदरलाख एकयासी हजार एकसो उगणचालीश योजन किंचित उंणा लवण समुद्रनी परिधि जाणवी तथा एकतालीश लाख दश हजार नवसेने एकशठ योजन एटली धातकी खंडनी परिधि जाणवी तथा एकाणु लाख सीतेर हजार छशें पांच योजन कांइक विशेषाधिक एटली कालोदधीनी परिधि जाणवी तथा एक कोडी बेतालीश लाख त्रीश हजार बशें उगणपच्चाश योजन एटली अभ्यंतर पुष्करार्द्धनी परिधि जाणवी.

५ पांचमें बोले पूर्वथी दक्षणे, दक्षणथी पश्चिमें, पश्चिमथी उत्तरे द्वार द्वारनुं अंतर कहे छे उगणाएंसी हजार बावन योजन एक कोश पंदरसें बत्रीश धनुष्य अने त्रण अंगुल एटलो जंबूद्वीपनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवुं तथा त्रणलाख, पंचाणुहजार बशें एंसी योजन ने एक कोश एटलो लवण समुद्रनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो तथा दशलाख सत्तावीश हजार सातशें पांत्रीश योजन अने त्रण कोश एटलुं धातकी खंडनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो तथा बावीश लाख बाणुहजार छशें छेंतालीश योजन अने त्रण कोश एटलो कालोदधीनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो अने पुष्करार्द्धनां दरवाजा नथी पण आखो पुष्करवरद्वीप शोललाख योजननो तेना दरवाजाछे परंतु अर्द्धद्वीपनां दरवाजा नथी, प्रत्येक द्वीप समुद्रनी परिधिना योजननो चोथो भाग करी तेमांथी द्वारनां बारणानां साढाचार योजन ओछा करतां जेटला योजन बाकी रहे तेटलुं दरवाजा दरवाजानुं अंतर जाणवुं तथा जंबूद्वीपनां चार दरवाजानां नाम आ प्रमाणेछे एक पूर्वें विजय बीजो दक्षणें विजयंत त्रीजो पश्चिमें जयंत चोथो उत्तरें अपराजित ए चार दरवाजाने नामे ए दरवाजाना चार द्वारपालनां पण एहीज नाम छे, जंबूनो कोट मूलमां पोहोलो बार योजन छे तथा मध्यभागें पोहोलो आठ योजनछे अने उपर पोहोलो चार योजनछे तथा सर्वे दरवाजा आठ योजन ऊंचा छे अने चार योजन पहोल पणे बारणा छे एकेक कोशनी बे बाजु बारशा

ख छे जंबू द्वीपना दरवाजाने साहामा चारे कोरें दोरी छंट सर्वे असंख्याता द्वीप समुद्रनां दरवाजा छे ते सर्व द्वीप समुद्रोना दरवाजानां नाम एना एहिज जाणवा.

६ छठे बोलें वर्षधरक्षेत्र कहेछे. एक भरत, बीजो हेमवंत युगलक्षेत्र, त्रीजो हरिवास युगलक्षेत्र, चोथो ऐरवंतक्षेत्र, पांचमो ऐरण्यवंत युगलक्षेत्र, छठो रम्यक्युगलक्षेत्र, अने सातमो माहाविदेह क्षेत्र ए सात जंबू द्वीपमां तथा धातकीखंडमां एथी बमणा चौदवर्ष धर क्षेत्र छे अने पुष्करार्द्धमां पण धातकीनी पेरें चौदवर्षधर छे सर्व मली अढी द्वीपमां पांत्रीश वर्ष धर क्षेत्र छे एनी लंबाइ पोहोलाइनां प्रमाण आगल कहेशे.

७ सातमे बोले वर्षधर पर्वत कहे छे एक हेमवंत, बीजो महाहेमवंत, त्रीजो निषध चोथो शिखरी, पांचमो रूपी, छठो नीलवंत, अने सातमो मेरु ए सात जंबू द्वीपमां छे अने धातकी खंडमां ए थकी बमणा चौदछे ते सर्व जंबू द्वीपनां वर्षधर प्रमाणे उंचा छे पण लंबाइमां चार चार लाख योजनछे हवे पोहोल पणो कहेछे बे हेमवंत अने बे शि खरी ए चार पर्वत बे हजार एकसो पांच योजन अने ५ भाग तथा बे महा हेमवंत अने बे रूपी ए चार पर्वत आठ हजार चारशो एकवीश योजन अने १ भागछे तथा बे निषध अने बे नीलवंत ए चार पर्वत तेत्रीश हजार छशें चोरासी योजन उपर ४ भाग छे हवे पुष्करार्द्धमां पण जंबू द्वीपथी बमणा वध्या तेवारे चौद पर्वत थया ते सर्वे लंबाइमां आठ लाख योजन प्रमाणेछे अने पोहोलाइमां जेटला छे ते कहेछे बे हेम वंत तथा बे शिखरी ए चार पर्वत चार हजार बशें दश योजन अने १० भाग छे तथा बे माहाहेमवंत अने बे रूपी ए चार पर्वत शोल हजार आठसें बेंतालीश यो जन पछर २) भाग छे तथा बे निषध अने बे नीलवंत मली चार पर्वत शडशठ हजार त्रणसें अडशठ योजन उपर ७ भाग छे.

हवे पांच मेरुनो उंचपणो तथा पोहोल पणो कहेछे. प्रथम जंबू द्वीपनो मेरु एक हजार योजन धरतीमां उंडो छे अने नवाणुं हजार योजन उपर उंचो छे सरवाले लाख योजन उंचो छे मेरुना मूलना हेठला छेहेडाथी समभूतल पृथ्वी एक हजार योजन उंची छे तथा समभूतलथी वली पांचशें योजन उंचो नंदन वन छे तथा नंदनवनथी शाडा बाशठ हजार योजन उंचो सोमनस वनछे तथा सोमनसवनथी छत्रीश हजार योजन उंचो पंडुक वनछे एरीते एक लाख योजन उंचपणानां थया अने उपर चालीश योज न उंची चूलीका छे ते चोटली सरखी छे ए मेरुनो उंचपणो कह्यो हवें पोहोल पणो कहेछे मूल धरतीमां दशहजार ने नेवुं योजन उपर एक योजननां अगीआर भाग क रीयें तेवा दस भाग एटलुं पोहोल पणेछे पछी त्यांथी प्रदेशें प्रदेशें घटतां घटतां सम भूतल आगल बराबर दशहजार योजननो पोहोल पणे थयो छे तथा नंदनवन पासें

(९९९५४) योजन अने एक योजननां अगीआर भाग करीयें तेवा ७ भाग उपर एट लुं पोहोळ पणे छे तथा सोमनसवन आगळ (४२७२) योजन उपर अगीआरीआ आठ भाग एटलुं मेरुनो विष्कंभ छे तथा पंडूकवन पासें १००० योजन मेरुनो विष्कंभ छे हवे धातकी खंडनां बे मेरु तथा पुष्करार्द्धनां बे मळी चार मेरु प्रत्येकें एक हजार योजन धरतीमां छे अने चोरासी हजार योजन उपर छे मळी पच्चासी हजार योजन उंचपणे छे ए चारे मेरु उपर चूलिका नथी एम अढीद्वीपमां ३५ वर्षधर पर्वत छे.

८ आठमे बोलें अढीद्वीप मांहेला शाश्वता पर्वतनी संख्या कहेछे तिहां प्रथम जंबू द्वीपनां पर्वतो कहेछे सात वर्षधर पर्वत पूर्वें कह्या ते जाणवा अने चोत्रीश वैताढय पर्वत छे ते आवी रीतें एक भरतक्षेत्रनां मध्यनो, बीजो एरवत क्षेत्रनां मध्यनो तथा बत्रीश विजय माहाविदेहना तेमां बत्रीश वैताढय छे एवं चोत्रीश वैताढय थया तथा चार युगलीयानां खेत्रनी विचमां चार गोळ वृत्त वैताढय छे तथा कुरु खेत्रना यमक, सम क, चित्र अने विचित्र ए चार तथा नीलवंतनां बे गजदंता अने निषधनां बे गजदंता मळी चार गजदंत पर्वत तथा निषधने हेठळ पांचकुंडने बे पासें १०० कंचनगिरि छे अने नीलवंत हेठळ पांच कुंडने बे पासें १०० कंचनगिरि छे मळीने बसो कंचनगिरि छे तथा महाविदेहमां पूर्वपश्चिमनां मळी शोळ वखारा पर्वत छे ए सर्वमळी २६९ पर्वत जंबू द्वीपमां थया. एथकी बमणा ५३८ धातकी खंडमां छे तेनी साथे बे इक्षुकार भेळीयें तेवारें ५४० थाय तथा धातकी खंड प्रमाणे पुष्करार्द्धनां पण ५४० पर्वत जाणवा तथा लवणसमुद्रमां चारदिसिनां वेलंधर अनुवेलंधर देवोनां आठ पर्वत मांहे भेळीयें तेवारे सरवाळे १३५७ शाश्वता पर्वत अढीद्वीपमां छे.

९ नवमे बोलें अढीद्वीपनां शाश्वता कूट कहेछेः—तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां २६९, पर्वत छे ते उपर जे कूट छे ते कहेछे तेमां ३४ वैताढय उपर प्रत्येकें नव नव कूट ग णतां ३०६ थया तथा हिमवंतें अगीआर, महाहेमवंतें आठ, निषधेंनव, शिखरीयें अगी आर, रूपी पर्वतें आठ कूट, नीलवंतें नव कूट, तथा बे गजदंतें नव नव, अने बे गजदंतें सात सात मळी चार गजदंताना बत्रीश कूट, तथा शोळ वक्षस्कार.पर्वतें प्रत्येकें चार चार कूट गणतां ६४ थाय तथा मेरु पर्वतनां नवकूट ए रीतें सरवाळे एकशठ पर्वतना ४६७ कूट थया अने यमकादि चार तथा वृत्तवैताढय चार एवं आठ पर्वत उपर कूट नथी तथा धातकी खंडमां एथकी बमणा ९३४ अने पुष्करार्द्धमां पण ९३४, मळी २३३५, कूट अढीद्वीपमां छे.

१० दशमें बोलें चक्रवर्त्ति जिहां पोतानुं नाम लखे तेनें ऋषभकूट कहीयें ते जंबू द्वीपमां बत्रीश विजयनां नीलवंत पर्वत पासे शोळ कूटछे, तथा निषध पर्वत पासे

शोल कूट ठे मलीने बत्रीश थया तथा जरतक्षेत्रनो हिमवंत पर्वत पासें एक कूटछे अने ऐरवत क्षेत्रनो शिखरी पर्वत पासें एक कूटछे एरीतें सरवाले चोत्रीश ऋषजकूट जंबूद्वीपमां ठे अने ए थकी बमणा अडशठकूट धातकी खंमांठे तथा अडशठ कूट पुष्करार्द्धमां ठे सरवाले अढीद्वीपमां १७० ऋषज कूटछे.

११ अगीआरमें बोलें त्रण खंम साधीने वासुदेव जेने उपाडे तेने कोटी शिल्ला कहीयें ते शिल्ला जंबूद्वीपमां चोत्रीशछे तथा धातकी खंमां एथकी बमणी अडशठ अने पुष्करार्द्धमां पण अडशठ मली अढीद्वीपमां १७० कोटी शिल्लाछे.

१२ बारमें बोले प्रत्येक वैताढ्य पर्वत दीठ तिमिश्रा अने खंम प्रपात एवी बे बे गुफाठछे ते जंबूद्वीपमां चोत्रीश वैताढ्यनी अडशठ गुंफाछे, धातकीमां अडशठ वैताढ्यनी एकशो ठत्रीश अने पुष्करार्द्धमां पण एकसो ठत्रीश मली अढीद्वीपमां३४०गुफाछे.

१३ तेरमें बोले बिल्लनी संख्या कहेछेः–प्रथम जंबूद्वीपमां जरतक्षेत्रनी गंगा अने सिंधु ए बे नदीनां बहोत्तेर बिल्ल तथा ऐरवत क्षेत्रनी रक्ता अने रक्तवतीनां बहोत्तर बिल्ल तेमज बत्रीश विजयमां पण प्रत्येक विजयनी गंगा अने सिंधु ए बे नदीनां बहोत्तर गणतां २३०४ बिल्ल महाविदेहमांछे सरवाले जंबूद्वीपमां २४४० तथा धातकी खंमां ४०एद अने पुष्करार्द्धमां पण ४०एद सरवाले अढीद्वीपमां १२२४० बिल्ल छे.

१४ चौदमें बोलें मागधादि तीर्थनी संख्या कहेछेः–तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां मागध, वरदाम अने प्रजास ए त्रण तीर्थ चक्रवर्त्ति साधेछे तेमां जरतनां त्रण तीर्थ दक्षणदरवाजे समुद्रमांछे, अने ऐरवतनां त्रण तीर्थ उत्तर दरवाजे समुद्रमांछे, एवं ठ थया तथा पूर्व महाविदेहनी शोल विजयछे तेमां साहामा साहामी आठ आठ विजय वच्चें सीता नदीमां साहामा साहामा त्रण त्रण तीर्थ गणतां शोल त्रिक अडतालीश तीर्थ सीता नदीमां अने पश्चिम महाविदेहनी शोलविजय तिहां साहामा साहामी आठ आठ विजय विच्चें सीतोदा नदीमां साहामा साहामी त्रण त्रण तीर्थ गणतां शोल त्रिक अडतालीश तीर्थ सीतोदा नदीमां ठे मली ठनुं तीर्थ महाविदेहमां थया तेनी साथें पूर्वोक्त जरत ऐरवतनां ठ मेलवीयें तेवारें १०२ तीर्थ जंबूद्वीपमांछे, तेथी बमणा २०४ धातकी खंमनां अने २०४ पुष्करार्द्धनां मली अढीद्वीपमां ५१० तीर्थ छे.

१५ पंदरमें बोलें खंमनी संख्या कहेछेः–तिहां पांच जरत, पांच ऐरवत, अने पांच महाविदेहने बत्रीश विजये गणतां एकशोने शाठ थानक थाय तेनी साथें पूर्वोक्त पांच जरत अने पांच ऐरवतनां दश स्थानक मेलवतां १७० थानक अढीद्वीपमां थाय ते प्रत्येक थानकमां ठ ठ खंमछे तेवारें एकसो सीतेरने ठ ए गुणतां१०२० खंम थया तेमां जंबूमां २०४ धातकीमां ४०७ अने पुष्करार्द्धमां ४०७ जाणवा.

१६ शोलमें बोले छ खंडमां बत्रीश हजार देश होयछे माटे एकंदर देश संख्या कहेछेः—तिहां जंबूद्वीपमां एक भरत बीजो ऐरवत अने बत्रीश विजय मली चोत्रीश थानक छ छ खंड वाला छे ते प्रत्येक थानकमां ३२००० देश गणतां १०८८००० देश जंबूद्वीपमां छे तथा २१७६००० देश धातकी खंडमां छे तथा २१७६००० देश पुष्करार्द्धमां छे सरवाले अढीद्वीपमां ५४४०००० देश छे.

१७ सत्तरमें बोले छ खंडमां पांच अनार्य खंड अने एक आर्य खंड तिहां आर्य खंडमां अयोध्या नगरीछे तेनी संख्या कहेछेः—जंबूमां चोत्रीश अयोध्या, धातकीमां अडशठ अयोध्या अने पुष्करार्द्धमां अडशठ मली एकसो सीतेर अयोध्या अढीद्वीपमांछे अने आर्यखंड पण एकशो सीतेरछे ते आयोध्या नगरी बार योजन लांबी अने नव योजन पोहोली होय सर्वेनी एज मर्यादा जाणवी तिहां जे आर्यखंड होय तेमां धर्म होय तीर्थंकर, गणधर, चक्री, बलदेव, वासुदेव प्रमुख त्रेशठ शिलाका पुरुष आर्य खंडमां उपजे, मोक्ष गमन होय अने पांच अनार्यखंडमां धर्म न होय, सर्व म्लेछ होय.

१८ अढारमें बोलें कया खंडमां केटला देश होय ते कहेछेः—तिहां छ खंडमां मली ३२००० देश होय तेमां पांच अनार्यखंडमां प्रत्येकें ५३१८ देश होय अने छठा आर्य खंडमां ५३१० देश होय तेमां साढा पचीश देश आर्य अने बीजा अनार्य देश जाणवा. ए रीतें अढीद्वीपना सर्वे खंडमां देशनी मर्यादा जाणवी. एमां ५३१८ देश पांच अनार्य खंडमां लखेलाछे परंतु ५३३६ देश गणतां ३२००० देशनुं हीसाब मलेछे पण एक प्रतमां तथा एक पट्टमां उपर कहेला रीतें लख्युं छे. ते प्रमाणे में पण अहीं लिख्युंछे.

१९ उगणीशमें बोलें विद्याधर तथा आभियोगिक देवनी श्रेणीयो वैताढ्य दीठ कहेछेः—तिहां प्रत्येक वैताढ्य दीठ त्रण त्रण कांडछे तेमां भूमीथी दश योजन प्रथम कांडछे तेने दक्षण पासें पचाश नगर अने उत्तर पासें साठ नगर विद्याधरना छे एवी बे बे श्रेणी वैताढ्यें लेवी तेवारे जंबूद्वीपमां चोत्रीश वैताढ्यनी अडशठ श्रेणी, तथा धातकीमां १३६ अने पुष्करार्द्धमां १३६ मली ३४० श्रेणी विद्याधरनीछे हवे वैताढ्यनां प्रथम कांडथी वली दश योजन उंचो बीजो कांडछे तिहां दक्षण उत्तर बे पासें आभियोगिक देवोनी बे श्रेणीछे तेथी पूर्वोक्तरीते एनी पण ३४० श्रेणी अढीद्वीपमांछे ए बेहुनी श्रेणी एकठी करीयें तेवारें ६८० श्रेणी अढीद्वीपमांछे.

२० वीशमे बोले द्रह संख्या कहेछेः—तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां शोल द्रहछे ते देखाडेछें. प्रथम हेमवंत पर्वतें पद्मद्रहछे, बीजो महाहिमवंतें महापद्मद्रहछे, त्रीजो निषधपर्वतें तिगिछिद्रहछे, चोथो शिखरीपर्वतें पुंडरिक द्रहछे, पांचमो रूपीपर्वतें महापुंडरिक द्रहछे, छठो नीलवंत पर्वतें केशरीद्रहछे, ए प्रकारें छ द्रह तो पर्वतोनी उपरेंछे हवे दश द्रह

बीजा देखाडेछे तिहां निषधपर्वत उपरथी सीतोदा नदी पृथवी उपर पडेछे ते प्रथम द्रहथी बीजा, त्रीजा, चोथा अने पांचमां द्रहमां पडेछे तिहां पहेलो निषधद्रह, बीजो देवकुरुद्रह, त्रीजो सुरप्रभद्रह, चोथो सुलसद्रह अने पांचमो विद्युत्प्रभ द्रह ए पांच द्रह मूकी पछी आगल चालीछे माटे ए पांच द्रह जाणवा तेमज नीलवंतपर्वत उपरथी सीतानदी धरती उपर पडेछे ते प्रथम द्रहथी बीजा, त्रीजा, चोथा, पांचमांमां पडीने आगल चाली ते पांच कुंडद्रहनां नाम कहेछे प्रथम नीलवंतद्रह, बीजो उत्तरकुरुद्रह, त्रीजो चंद्रदह, चोथो ऐरवत द्रह, पांचमो माल्यवंतद्रह एरीते ए दस द्रह धरती उपरछे ते पूर्वोक्त छ साथें मेलवतां शोल द्रह जंबूद्वीपमांछे अने तेथी बमणा बत्रीश द्रह धातकी खंडमां छे तथा बत्रीश द्रह पुष्करार्द्धनां मली अढीद्वीपमां ८०, द्रह छे.

२१ एकवीशमें बोलें द्रहनी देवी देव कहेछेः— प्रथम हेमवंत पर्वतें पद्मद्रह छे. एनां मध्यनां एक मुख्य महोटा कमल पाछल बीजा लघु कमलनां छ वलयछे, तेनां १२०५०१२० एटला लघुकमल तेणे वींटियुं थकुं महोटुं कमलछे ते उपर श्री देवी रहेछे ए पद्मद्रह ऊंडो दस योजन, पोहोलो पांचसें योजन अने लांबो एक हजार योजनछे उपर श्रीदेवी रहेछे ते भुवनपतिदेवोनी जातिछे, हवे बीजो महाहिमवंत पर्वतें महापद्मद्रहछे ते दशयोजन ऊंडो, हजार योजन पोहोलुं अने बे हजार योजन लांबोछे, तेना मध्यनां एक मुख्य महोटा कमल पाछल लघु कमलोना बार वलयछे तेनां २४१००२४० एटला लघु कमलें वींट्युंछे ते उपर ह्रीदेवीनो निवासछे त्रीजो निषध पर्वतें तिगिच्छिद्रहछे तेनो मध्यनो मुख्य कमल चोवीश वलयें वींट्युंछे तेमां ४८२००४८० एटला लघु कमलछे तिहां धीदेवीनो निवासछे एनुं एक पल्यायुछे, ए द्रह दश योजन ऊंडो, बे हजार योजन पोहोलो अने चार हजार योजन लांबोछे हवे ऐरवतखेत्रथी शिखरी पर्वत उपर पुंडरिक द्रहछे ते हिमवंतनां पद्मद्रहनी मर्यादायेंछे एमां लक्ष्मीदेवीनुं निवासछे एनुं एक पल्यायुछे पांचमो रूपी पर्वतें महापुंडरिक द्रहछे ते महाहिमवंत पर्वतनां महापद्मद्रहनी मर्यादायेंछे एमां बुद्धिनामे देवीनुं निवासछे एनुं एकपल्यायुछे छठो नीलवंत पर्वतें केशरीद्रहछे ते निषधपर्वतनां तिगिच्छिद्रहनी मर्यादायेंछे एमां कीर्त्तिदेवीनुं निवासछे तेनुं एकपल्यायुछे ए छ द्रह पर्वतो उपरछे तेनी देवी छ कही हवे पृथ्वी उपरनां दश कुंडद्रहछे तेमां देवताउनां निवासछे तथा जे रीतें पर्वत उपरें लक्ष्मी देवीनी संकलना कही तेम देवकुरु उत्तरकुरुमां महोटुं जंबूवृक्षछे ते पण एटलेंज लघु जंबूवृक्षें करी वींटेलुंछे ते आगल लखशुं एरीतें जंबूमां छ देवी तथा दश देवता धातकीमां एथी बमणा बार देवी ने वीश देवता, पुष्करार्द्धमां पण बार *देवीने वीश देवता मली अढीद्वीपमां द्रहनिवासी त्रीसदेवी अने पचाश देवता जाणवा.

२२ बावीशमें बोलें अढीद्वीपनी नदीउ कहेछेः—सर्व मली जंबूद्वीपमां १४५६००० नदीछे तेमां मूलमां चौद महानदीछे-तिहां नरतक्षेत्रमां गंगा अने सिंधु, ऐरवतमां रक्ता अने रक्तवति ए चार महानदीनो चौद चौद हजार नदीनो परिवारछे तथा हेमवंत युगलीयानां क्षेत्रमां रोहिता अने रोहितांसा तथा ऐरण्यवत युगलीयानां खेत्रमां रूपकुला अने सुवर्णकुला ए चार महानदी अठावीश अठावीश हजार नदीने परिवारेछे एवं आठ थइ तथा हरिवास युगलीयानां खेत्रमां हरिकंता अने हरिसलीला तथा रम्यकु युगलीयानां खेत्रमां नरकंता अने नारिकंता एवं चार महानदी छपन्न छपन्न हजार नदीने परिवारेंछे एवं बार थइ तथा पूर्व महाविदेहमां सीता अने पश्चिम महाविदेहमां सीतोदा ए बे महानदीओनो मली १०६४००० नदीनो परिवारछे एवं चौद महानदी जंबूद्वीपमां थइ तेमां प्रथमनी बार नदीनो हीसाब तो प्रगटछे अने सीता सीतोदानी संख्या लखेछेः—नीलवंत पर्वतथी नीकलीने पूर्व महाविदेहमां सीतानदी गइ तेणे बे बाजुयें आठ आठ विजय कीधी तेवारे शोल विजयनी गंगा अने सिंधु ए बे बे गणता बत्रीश नदी थइ अने छ अंतरनदी छे एरीतें अडत्रीश महा नदी थइ ते प्रत्येकनो चौद चौद हजार नदीनो परिवार गणतां ५३२००० नदी पूर्व महाविदेहनी सीता महानदीमां पडे छे अने एज प्रमाणे निषध पर्वतथकी सीतोदानदी नकली ते पश्चिम महाविदेहमां गइ तिहां पण अडत्रीश महानदीनो परिवार ५३२००० नदीनोछे सरवाले १०६४००० नदी थइ तेनी साथे पूर्वोक्त बार महानदीनी परिवार जूत ३९२००० नदी मेलवीयें तेवारें १४५६००० नदीओ जंबूद्वीपमां थाय अने एथकी बमणी धातकी खंडमां २९१२००० तथा पुष्करार्द्धमां पण २९१२००० सरवाले अढीद्वीपमां ७२८०००० नदीछे.

२३ त्रेवीशमें बोलें नदीनी लंबाइ पोहोलाइ आदिक कहेछेः—नरतनी बे अने ए रवतनी बे नदी एवं चार नदी मूलें सवा छ योजन अने पछी वधती वधती समुद्र प्रवेसें साडा बाशठ योजन पोहोलीछे तथा हेमवंत युगल क्षेत्रनी बे अने ऐरण्यवत युगल क्षेत्रनी बे एवं चार नदी मूलें साडा बार योजन अने समुद्र प्रवेसें सवासो योजन पोहोलीछे. तथा हरिवास युगल क्षेत्रनी बे अने रम्यक् युगल क्षेत्रनी बे एवं चार नदी मूलें पच्चीश योजन पोहोली अने समुद्र प्रवेशें अढीसो योजन पोहोली छे तथा सीता अने सीतोदा ए बे नदी मूलें पचास योजन पोहोली अने समुद्र प्रवेसें उंडी विजयमां पडी तिहां पांचशो योजन पोहोली छे तथा धातकी खंडमां अने पुष्करार्द्धमां पण संख्यायें जंबूद्वीप थकी बमणी बमणी नदी छे तेनी लंबाइ पोहोलाइ पण एज रीतें जाणवी.

२४ चोवीशमें बोलें जंबूद्वीपमां देवकुरुक्षेत्रमां एक महोटा जंबुवृक्षनी पाछल लघु*

जंबुवृक्षनां ७ वलयछे तेनी संख्या एक क्रोड, वीस लाख, पचाश हजार, एकशोने वीशछे तेणेकरी जंबूवृक्ष वींटयुंछे ते उपर अणाढीयो देव वसेछे एम उत्तरकुरुमां साल्मली वृक्षछे तेनी पण एज रीतें मर्यादछे तेना उपर गरुल देवतानो निवासछे. तथा धातकी खंडमां बे देवकुरुछे तेमां बे महोटा साल्मली वृक्षछे तेनी पाछल बार वलय लघु सा ल्मली वृक्षनांछे तेनी संख्या २४१००२४० एटला साल्मली वृक्ष वींटयाछे तेना उपर पण गरुल देव रहेछे. तथा धातकी खंडना बे उत्तरकुरुमां बे महोटा महा धावडीना वृ क्षछे ते प्रत्येक लघु धावडी वृक्षनां बार वलयें करी वींटयाछे तेनी संख्या २४१००२४० छे तेनां उपर सुदर्शन अने प्रीयदर्शन देवनो निवास छे तथा पुष्करार्द्धनां माहाविदे हनां बे देवकुरुमां बे महोटा साल्मली वृक्षछे ते लघु साल्मलीवृक्षनां चोवीश वलयें करी वींटयाछे तेनी संख्या ४८२००४८० नी छे ते महोटा वृक्ष उपर गुरुड देवतानो निवा सछे तथा पुष्करार्द्धनां उत्तर कुरुमां एक महोटो पद्मवृक्षछे तेपण चोवीश वलयें वींटयोछे तेनां उपर पद्मदेवनो निवासछे, तथा पुष्करार्द्धनां पश्चिम महाविदेहनां उत्तरकुरुमां मुख्य महापद्म वृक्ष पण चोवीश वलयें वींटयुंछे तेनी संख्या पूर्वपरे जाणवी तेनाउपर पुंडरि क देवनो निवासछे ए मुख्यवृक्ष सर्वे वेदिका अने वनखंडे सहीतछे तेनो पीठ पांचशें योजन पोहोलो अने बार योजन उंचोछे ते वृक्षो उपर देव निवासनां स्थान तथा श्री जिन भुवनछे ए सर्व वृक्ष रत्नमय पृथवीकायनां छे शाश्वताछे.

२५ पच्चीशमें बोलें जंबूद्वीपमां एकेकी विजय वखारा पर्वत लगें पोहोली २२१२॥ योजनछे अने नीलवंत पर्वतथी सीतानदी लगें तथा निषध पर्वतथी सीतोदा नदी पर्यं त १५६९२ योजन अने उपर बे कला एटलीलांबीछे तथा धातकी खंडमां एकेकी विजय ९६०३ योजन उपर एक योजननां शोल भाग करीयें तेवा ७ भाग एटली पोहोलीछे अने शोले विजय १५३६५४ योजन पोहोली छे तथा पुष्करार्द्धनी एकेकी विजय १९७९४। योजन पोहोलीछे अने शोले विजय ३१६७०८ योजन पोहोली छे.

२६ छवीशमें बोलें जंबुद्वीपमां महाविदेहनी बार अंतरनदी एकशो पचीश योजन पोहोलीछे तथा धातकी खंडमां अंतरनदी अढीसो योजन पोहोली छे अने पुष्करार्द्धमां अंतरनदी पांचशें योजन पोहोली छे.

२७ सत्तावीशमें बोलें जंबुद्वीपमां वक्षस्कारा पर्वत ५०० योजन उंचा अने पोहोला छे तथा धातकी खंडमां वक्षस्कारा हजार योजन उंचा अने पोहोला छे तथा पुष्करा र्द्धमां वक्षस्कारा बे हजार योजन उंचा अने बे हजार योजन पोहोलाछे.

२८ अठावीशमें बोलें जंबूद्वीपमां दरवाजा आगल पूर्व पश्चिमनुं एकेकुं वनमुख ज

गति सूधां २०२२ योजननुं छे अने धातकी खंडमां एकेकुं वनमुख ११६७७ योजन त तथा पुष्करार्द्धमां एकेकुं वनमुख ११६७७ योजन छे.

२९ उगणत्रीशमें बोलें जंबूद्वीपमां नद्रशालवन ५४००० योजन लांबो छे तथा धातकी खंडमां एकेकुं नद्रशालवन मेरुपर्वतसहित १२५१५७ योजन लांबो छे अने पुष्करार्द्धमां एकेकुं नद्रशा लवन ४४००९१६ योजन लांबो छे.

३० त्रीशमें बोलें वीश गजदंतगिरिनुं विचार कहेछे तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां निषध पर्वतथी बे गजदंता पर्वत निकल्या ते मेरुपर्वत तरफ चाल्या तेमां प्रथम सोमनस गजदंतो धोले वर्णे छे ते अग्निकूंणमां वल्यो बीजो विद्युत्प्रन गजदंतो राते वर्णे छे ते नैरुत कूंणमां वल्यो तथा नीलवंतपर्वतथी बे गजदंता नीकल्या ते मेरुपर्वत तरफ चाल्या तेमां प्रथम गंधमादन गजदंतो पीले वर्णे छे ते वाव्य कूंणमां वल्यो बीजो माल्यवंत गजदंतो नीले वर्णे छे ते इशान कूंणमां वल्यो एम चार गजदंता जाणवा ए चारे गजदंता ३०२०९ योजन ने ६ कला लांबा छे अने निषध तथा नीलवंतथी नीकल्या तिहां थरतीथी चारसें योजन उंचा छे पछी वधता वधता मेरुपर्वतनी पासें पांचशे योजन उंचा थया छे तथा धातकी खंडमां पूर्व पश्चिम मलीने बे मेरु पर्वतछे माटे तिहां आठ गजदंताछे तिहां प्रथम जंबूद्वीपनी परे बे बे मली चार गजदंता ३५६२२४ योजन लांबाछे अने बीजा बे बे मली चार गजदंता ५६९२५९ योजन लांबाछे तथा पुष्करार्द्ध द्वीपमां पण बे मेरुछे माटे तिहां आठ गजदंताछे तेमां पण आगली तरफनां धातकीनी परे बे बे मली चार गजदंता १६२६११६ योजन लांबाछे अने पाछली तरफना बीजा बे बे मली चार गजदंता २०४३२१९ योजन लांबाछे ए सर्वे गजदंता मेरु तरफ जतां प्रथम उंचाइमां चारसें चारसें योजन छे अने छेहडे मेरुनी पासें पांचसें योजन उंचाइमां छे,

३१ एकत्रीशमें बोलें इक्षुकार पर्वतनो विचार कहेछे तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां इक्षुकार पर्वत बिलकुल नथी अने धातकी खंडमां बे इक्षुकारछे तेणे वचमां पडीने बे बे नरत अने बे बे ऐरवत कर्याछे ते लांब पणे चार चार लाख योजन छे अने उंचा पांचशें योजनछे तथा पोहोल पणे एक हजार योजनछे ते उपरें एकेको जिनप्रसाद छे तथा पुष्करार्द्ध द्वीपमां पण बे इक्षुकारछे तेणे पण वचमां पडी बे बे नरत अने बे बे ऐरवत कर्याछे ए लांब पणे आठ आठ लाख योजनछे अने उंचपणे पांचशें योजन छे तथा पोहोला एकेक हजार योजन छे एना उपर पण एकेकुं श्रीजिनप्रासाद छे अढीद्वीपनां चित्रामणमां जगतीनां दरवाजा पर्यंत लाल रंग नरेछे पण तिहां दरवाजानी जगा राखवी जोइयें दरवाजाना अंतर पर्यंत छे इहां (इक्षुके०) सेलडी तेनो सांगो जेवो लांबो थाय तेनां सरखा ए पर्वत पण लांबा छे माटे एनुं इक्षुकार एवो नाम छे.

३२ बत्रीशमें बोलें जंबूद्वीपमां भरत क्षेत्र तरफ हिमवंत युगल क्षेत्रमां शब्दापाती वृत्तवैताढ्यछे अने हरिवास युगल क्षेत्रमां गंधावती वृत्तवैताढ्यछे तथा ऐरवत क्षेत्र भणी ऐरण्यवत युगल क्षेत्रछे तेमां वकटापाती वृत्तवैताढ्यछे तथा रम्यक् युगल क्षेत्रमां माल्यवंत वृत्तवैताढ्यछे ए चार जंबूद्वीपमां छे तथा एथकी बमणा एज नामे धातकी खंडमां आठ वृत्तवैताढ्यछे तथा पुष्करार्द्धमां पण आठ वृत्तवैताढ्यछे सरवाळे अढीद्वीपमां वीश वृत्तवैताढ्यछे ते सर्वे पालाने आकारें गोळछे मूळ तथा उपरें एकेक हजार योजन पोहोळा छे अने उचां पण एकेक हजार योजन छे.

३३ तेंत्रीशमें बोलें जंबूद्वीपनां देवकुरुमां यमक अने समक ए बे अने उत्तरकुरुमां चित्र विचित्र ए बे मळी चार पर्वतछे अने धातकी खंडमां ए थकी बमणा आठछे तथा पुष्करार्द्धमां पण आठछे सरवाळे अढीद्वीपमां वीश पर्वतछे तेसर्वे एकेक हजारयोजन उंचाछे

३४ चोत्रीशमें बोलें जंबूद्वीपमां निषध पर्वतने नीचें सीतोदा नदीने बे पासें थइने एकसो कंचनगिरिछे तथा निलवंत पर्वतने नीचें सीता नदीने बे पासें थइने एकशो कंचन गिरिछे एरीते बशो कंचनगिरि जंबूद्वीपमांछे तेथकी बमणा चारसो कंचनगिरि धातखंडमांछे तथा चारसो कंचनगिरि पुष्करार्द्धमांछे सरवाळे अढीद्वीपमां एक हजार कंचन गिरिछे तेनां उपर तिर्यकजृंभक देवताना निवासछे ए सर्वे पर्वत शो शो योजन उंचाछे.

३५ पांत्रीशमें बोलें जंबूद्वीपमां भरतनी दिसायें पहेलुं हेमवंत युगल क्षेत्रछे तथा ऐरवतनी दिसायें पहेलुं ऐरण्यवंत युगल क्षेत्रमां त्रीजो आरो वर्त्तेछे त्यांना मनुष्यनो एक गाउ प्रमाण शरीरछे एक पल्योपम आयुछे अने चोथ भक्त एकांतरें आमला प्रमाणे आहार कल्पवृक्ष आपेछे एने पृष्ट करंडक चोशठछे, अपत्यपालना ७९ दिवस करे अने अपत्य एटले दीकरा दीकरी जेवारें ओगण्याएंसी दिवसनां थाय तेवारे माता पिता मरण पामीने देवलोकमां जाय हवे भरत तरफ हरिवास क्षेत्र अने ऐरवत क्षेत्रनी तरफ रम्यक् क्षेत्र ए बे युगलक्षेत्र मध्ये बीजो आरो वर्त्तेछे ए युगलीयानुं बे गाउ शरीर अने बे पल्यायुछे १२८ पृष्ट करंडीछे, छठ्ठभक्तछे,चोसठ दिवस अपत्य पालना करी माता पिता स्वर्गें जाये इहां हरिवास क्षेत्रमां उपजेलो वनमाला नामे राजानो जीव युगलीयो हतो तेने वीराशालवीनो जीव किल्विषियो देव थयो तेणें क्रोध वसें ए युगलियाने नरकमां मोकलवा सारुं हरिवासथी उपाडीने चंपानगरीयें मूक्या अने बे पल्योपमनुं आयु तोडीने ते समयना आयु प्रमाणे आउखुं कर्युं तेने राज्यें बेसाडी मद्य मांस कुकर्म शीखवीने नरकें मोकल्युं ए अछेरुं थयुं ए हिरवास क्षेत्रना भाव कह्या हवे आ तरफ निषध पर्वतनी नीचें देवकुरुक्षेत्र अने पेहेली तरफ नीलवंत पर्वतनी नीचें उत्तरकुरु क्षेत्र ए बे युगल क्षेत्रमां पहेलो आरो वर्त्तेछे ए युगलीयानुं त्रण गाउ शरीर अने त्रण पल्यायुछे

२५६ पृष्ट करंमीछे ओगणपच्चास दिवस अपत्य पालना करे,तूवर प्रमाणे कल्प वृक्षनो आहार, अष्टमभक्त एटले चोथे दिवसें आहार करे ए युगलीयानां पुण्य प्रभावें दस जातना कल्पवृक्ष आहारादिक सर्व वंछित पूरण करेछे ए वृक्षमां एवो स्वभावजछे पण देवता पूरता नथी ए सर्वे युगल भद्रिक स्वभाव वाला छे एमां क्रोध नथी मात्र छीक बगासी उघ्रस करतां एनुं मरण थाय ए रीतें जंबूद्वीपमां युगलीयाना छ क्षेत्रछे तेथी बमणा बार क्षेत्र धातकी खंडमांछे तथा बार पुष्करार्द्धमांछे ते सर्वेना सरखा भावछे सरखी रीत मर्यादछे सरवाले अढीद्वीपमां त्रीश युगलीयानां क्षेत्रछे.

३५ छत्रीशमें बोलें छपन्न अंतरद्वीपनो विवरो कहेछेः—जंबूद्वीपमां आपणी तरफ हिमवंत पर्वत अने ऐरवतनी तरफ शिखरी पर्वत ए बे पर्वतें जंबूद्वीपनां कोट उपरथी पर्वत दीठ चार चार दाढा नीकलीछे ते वहिली तरफ वलीछे लवण समुद्रनां पाणी थी उंची देखायछे अढी योजन उंची तथा आठ हजार चारसें योजन लांबी छे ए आठे दाढा अधर चाली गइछे ते एकेकी दाढा उपर सात सात अंतरद्वीपछे तेवारें आठ दाढानां छपन्न अंतर द्वीप थया ए उपर युगलीया मनुष्य वसेछे तेनो आठसें धनुष शरीर छे एक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग आयुछे ए युगलीया मरणपामीने भवनपत्यादिक देवोमां जइ उपजेछे ए छपन्न अंतरद्वीपनां त्रीजा आराना छेडा सरखा भावछे एटले जेवो नाभिराजानो पिता छठो कुलकर हतो ते वखत जे भाव वर्त्तता हता ते प्रमाणेनां भाव सर्वकालें तिहां वर्त्ते छे ते भाव फरे नही.

३७ शाडत्रीशमें बोलें महाविदेह क्षेत्रमां चोथो आरो वर्त्तेछे. पांचसें धनुष शरीर मान, पूर्वकोटी वर्ष आयु, नित्य आहार तथा जंबूद्वीपना विदेहमां चार तीर्थंकरछे तेमां पूर्वविदेहना वनमुख समीप आठमी पुष्कलवती विजयमां पुंडरिकिणी नयरी तिहां सीमंधरनामे विहरमान छे तथा पश्चिम विदेहनां वन पासें पच्चीसमी वप्राविजय अने विजया नगरी तिहां श्रीयुगमंधर बीजा विहरमान छे तथा पूर्वविदेहनां वनमुख समीप नवमी वच्छविजय अने सूसीमा नयरी तिहां बाहुस्वामी त्रीजा विहरमान छे तथा पश्चिमविदेहनां वनमुख समीप चोवीसमी नलीनां वती विजय अने अयोध्यानगरी तिहां चोथा सुबाहु नामे विहेरमान तीर्थंकरछे ए रीतें जंबूद्वीपमां चार तीर्थंकरछे तथा धातकी खंडमां बे मेरु अने बे महाविदेहछे तेमां चार तीर्थंकर पूर्व महाविदेहमां अने चार तीर्थंकर पश्चिम महाविदेहमां एरीतें आठ तीर्थंकर छे तथा पुष्करार्द्धमां पण बे मेरु अने बे महाविदेहछे माटे तिहां पण पूर्वविदेहमां चार तीर्थंकर अने पश्चिमविदेहमां चार तीर्थंकर मली आठ छे सरवाले अढीद्वीपमां वीश विहरमान तीर्थंकर छे जेवीरीतें जंबूद्वीपमां आठमी, पच्चीशमी, नवमी अने चोवीशमी विज

यें अनुक्रमें चार तीर्थंकरछे तेवीरीतें धातकीखंड अने पुष्करार्द्धमां पण विजय अने नगरी तेटलामीज कहेवी अने तेनां नाम पण तेना तेहीज जाणवा.

भरतक्षेत्रमां सत्तरमां श्रीकुंथुनाथ अने अढारमां श्रीअरनाथने अंतरालें ए अढी द्वीप मांहेला वीशे तीर्थंकरनो जन्म एक समयेंज थयलो छे अने श्रीमुनिसुव्रत तथा श्रीनमिनाथ भगवानना अंतरालें एक समयेंज ए वीशे तीर्थंकरे दीक्षा लीधी हती ते एक हजार वर्ष पर्यंत छद्मस्थावस्थायें दीक्षा पालीने एक समयें वीशे तीर्थंकर केवलज्ञान पाम्या छे हमणा ए वीशे जिन केवली छे ते आवती चोवीसीमां सातमां आठमां तीर्थंकरनी वच्चें एक समयेंज वीशे तीर्थंकर मोक्षपुरीयें पधारशे सर्वेने चोरासी चोरासी गणधरछे, चोरासी चोरासी लक्ष पूर्व आयुछे, पांचसें पांचसें धनुष प्रमाणे शरीर मानछे एकेकाने दश दश लाख केवलीनी संख्याछे, शोशो कोडी साधुमुनिराजछे, सोसो कोडी साधवीछे ए प्रकारें वीशेविहरमान जिनना बे क्रोड केवलीछे, बे हजार क्रोड साधु छे, अने बे हजार क्रोड साधवी छे. ए वीश विजयमां सदा एकेक तीर्थंकरने सहचारी बीजा चोरासी चोरासी तीर्थंकर होय तेमां एक तो केवलज्ञाने सहीत होय अने बाकीनां त्र्यासीमां कोइ राजा, कोइ युवान, कोइ बालक, एरीतें होय ए सर्वे चोरासी लक्ष पूर्वने आकले होय अने जेवारें चोरासीमो तीर्थंकर मोक्ष सधावे तेवारें त्र्यासीमां तीर्थंकरने केवलज्ञान उपजे तेवारे ते चोरासीमो कहेवाय ते वखतें वली एकनो जन्म थाय एरीतें चोरासीनी परंपरा सहचारीछे इहां कोइ कहेसे जे एक क्षेत्रमां एकथी बीजो तीर्थंकर, चक्रवर्त्ति, बलदेव, वासुदेव न होय तो एक क्षेत्रमां चोरासी तीर्थंकर केम संभवे तेनो उत्तर वृद्ध परंपरा वडील एम कहेछे जे ए वीश विजयनां शाश्वता भाव एमजछे पछी केवलीगम्य इहां जघन्य कालें वीश तीर्थंकर होय ते एकेको तीर्थंकर एकेक लक्षपूर्वनो थाय तेवारें बीजा तीर्थंकरनो जन्म थाय तथा गर्भ मांहे होय एम चोरासी लक्ष पूर्वना आयु मध्ये त्र्यासी तीर्थंकर बीजा थाय तेने वीश गुणा करतां १६६० थाय अने मूलना वीश विहरमान होय सरवाले जघन्य कालें १६८० तीर्थंकर होय अने जेवारें १७० तीर्थंकर उत्कृष्ट विचरता होय तेवारे पांच भरत तथा पांच ऐरवतनां मली दश बाद करता बाकी १६० तीर्थंकर पांच विदेहनी विजयना ते प्रत्येकने त्र्यासीयें गुणतां १३२८० थाय तेनी साथें विहरमान १७० भेलीयें तेवारे १३४५० एटला तीर्थंकर उत्कृष्ट कालें होय इति विदेहजिन संख्या विचार समाप्तः अहीं सुधी जंबूद्वीपनो विचार कह्यो.

३८ आडत्रीशमें बोले लवण समुद्रनो अधिकार कहेछेः—सर्व मली असंख्याता समुद्रछे,ते सर्वे धुरथी मांमीने छेहेडा पर्यंत हजार हजार योजन उंडाछे अने मात्र एक ल

वण समुद्र मात्रायें मात्रायें उंमो थतो थतो जेवारे जंबूद्वीपथी पंचाणु हजार योजन समुद्रमां जइयें अने धातकी खंमथी पण पंचाणु हजार योजन समुद्रमां आवीयें तिहां मध्यनागें हजार योजन उंमोछे ए समुद्र गोतीर्थ कहीयें आ ठेकाणे हजार योजन उंमो, दश हजार योजन पोहोल पणे अने शोल हजार योजन उंचो कोटनी परें दग मालोछे शोल हजार योजन पाणी उंचो चडेलोछे ते उपर बे गाउनी वेल बे वार एक अहोरात्रमां उंची चढे छे ए पाणी सीरीते उछले छे ते कहेछेः—

पूर्वें वडवामुख, दक्षणे केयूप, पश्चिमें यूप अने उत्तरें ईश्वर ए चार महोटा पाताल कलशाछे ते लाख योजन उंचा लाख योजन पेटमां पोहोला अने दश हजार योजन मुख पोहोळुं, दश हजार योजननी पडगी, एक हजार योजन कलशनी ठीकरी जाडी छे तथा ३३३३३ योजन कलशामां केवल वायुछे अने ३३३३३ योजन मध्यनागें वायु पाणीछे तथा ३३३३३ योजन उपर पाणीछे, ते मध्यना वायुने योगे उछलेछे. ए त्रणसें तेत्रीश योजन त्रण ठेकाणे लख्याछे तेना उपर पण एक योजननो त्रीजो नाग अधिक लेवो.

हवें पूर्वनो महोटो कलश अने दक्षणना कलशने वच्चें तथा दक्षणनाने पश्चिमना क लश वच्चें तथा पश्चिमनाने उत्तरनां कलश वच्चें २१५—२१६—२१७—२१८—२१९—२२०—२२१—२२२—२२३—एवी संख्याये ए नव नव पंक्ति लघु पातल कलशनीछे तेवारे सर्व मली चारे पंक्तिना कलश ७८८४ छे ए लघु कलश दश हजार योजन उंमाछे तथा मध्यमां पोहोळा पण तेटलाजछे अने एक हजार योजननुं मुखछे, एक हजार योजन प डगीछे सो सो योजननी ठीकरीछे ३३३३ योजन केवल वायुछे ३३३३ योजन मध्य नागे वायु अने पाणी छे ३३३३ योजन उपर पाणी छे, ए लघु कलशनी मांहेथी पाणी उछले छे ते लवण समुद्रनी वच्चो वच्च पाणीनो गोल कोट बंधायछे.

ए चार महाकलशना अधिष्ठाता पूर्वें काल, दक्षणे महाकाल, पश्चिमें वेलंब अने उत्तरे प्रनंजन ए चार देवछे, शोल हजार योजनना दगमालनी उपर बे गाउनी वेल वधेछे तेने दाबवाने जंबूद्वीपनी दशा नणी बेतालीश हजार देवताछे तथा वेल उपर शाठ हजार देवताछे तथा धातकीनी दिसायें वेल उपर बहोंत्तेर हजार देवता छे सरवाले वेलं धर अनुवेलंधर एटले दिसाना अने विदिसाना मलीने १७४००० देवता छे.

हवे ए देवतानां निवास कहेछेः—जंबूद्वीपना दरवाजाथी चार दिसायें तथा चार वि दिसायें बेतालीश बेतालीश हजार योजन जइयें तिहां वेलंधर अने अणुवेलंधर नागरा जाना आठ पर्वतछे तेना नाम कहेछे १ पूर्वें गोथुनपर्वत अने गोथुन देव २ दक्षणे दिग् नास पर्वत अने शिव देवता ३ पश्चिमें संखनाल पर्वत अने संख देवता ४ उत्तरे दगसीमी पर्वत, अने माणोसल देवता, ५ इशानिकूंणे कर्कोटक पर्वत अने कर्कोटक देवता ६, अ

ग्निकूंणे विद्युत्प्रभ पर्वत अने कर्दम देवता ७ नैकृतकूंणे कैलाश पर्वत अने कैलाश देवता ८ वाव्यकूंणे अरुणप्रभ पर्वत अने अरुणप्रभ देवता ए आठे पर्वत १०२२) योजन नीचे पोहोलाछे अने ४२४ योजन जऊेरा उपर पोहोलाछे तथा सर्वे १७२१ योजन उंचाछे तेमां पूर्वादि चार दिसाना अनुक्रमें १ कनकमय २ अंकरत्नमय ३ रूपामय ४ स्फाटिक मय जाणवा तथा चार विदिसाना सर्व रत्नमयछे जंबूद्वीपथी बेतालीश हजार योजन जश्ये ते स्थानके ३०ए योजन उपर पंचाणुआ पीस्तालीश नाग एटली जलवृद्धिछे तथा ४४२ योजन उपर पंचाणुआ दश नाग एटला पर्वत ढंकाछे तथा एद्दए योजन उपर पंचाणुआ चालीश नाग एटला जंबूद्वीपनणी उघाडा देखायछे तथा एद्दृ योजन उपर पंचाणुया सीत्तोतेर नाग एटला शिखा नणी उघाडा देखायछे.

तथा मेरुपर्वतथकी पश्चिम दरवाजाथी बारहजार योजन समुद्रमां जाइयें तिहां लवणना अधिष्टातानो गौतमद्वीप सुस्थितदेवनोछे ते गौतमद्वीपने बे पासें जंबूद्वीपनां बे सूर्यनां बे द्वीपछे तथा लवणनी सीखानी आणी तरफनां बे सूर्य तेना बे द्वीपछे एरीतें चार सूर्यनां चार द्वीप गौतमद्वीप पासेछे ए गौतमद्वीप सूधां पांचे द्वीप बार बार हजार योजन लांबा अने पोहोला छे.

तथा मेरुपर्वतथी पूर्वदिसियें जगतीनां दरवाजाथी बार हजार योजन लवणसमुद्रमां जाइयें तिहां जंबूद्वीपनां बे चंद्र तथा लवणनी सीखानी आणी तरफनां बे चंद्र एवं चार चंद्रमाना चार द्वीपछे.

एजरीतें पश्चिमदिसें सिखानी पेली तरफ लवणनां बे सूर्य अने धातकीना छ सूर्यमली आठ सूर्यनां आठ द्वीपछे तथा पूर्वदिसायें शिखानी पेलीतरफ लवणसमुद्रनां बे चंद्र अने धातकी नां छ चंद्र एरीतें आठ चंद्रनां आठ द्वीपछे ए लवण समुद्रमां पांचसें योजननां मत्सछे तथा लवणनी सिखामां जेज्योतिष चक्रचालेछे तेना विमान दिगस्फाटिकरत्ननांछे. लवणाधिकारः

३ए उंगणचालीशमें बोलें कालोदधिनो विचार कहेछे ते कालोदधी प्रथमदरवाजाथी साहामा दरवाजा लगें आठ लाख योजन पोहोलोछे अने एक हजार योजन उंमो छे, गोतीर्थ नथी, वेल नथी, दरवाजेथी पूर्वपश्चिमें बेंतालीश हजार योजन जाइयें तिहां कालनामे देव, पश्चिमें महाकालदेव, ए बें समुद्र अधिष्टायक देवना द्वीपछे तथा पश्चिमें बार हजार योजन जइयें तिहां कालोदधिनां एकवीश सूर्यना एकवीश द्वीपछे, तेमज पूर्वे बार हजार योजन जइयें तिहां कालोदधिनां एकवीश चंद्रमाना एकवीश द्वीपछे ए समुद्रमां सातसें योजनना शरीर वाला मत्सछे एना पाणीनो स्वाद पीवा सरखो छे तथा धातकी खंमना सूर्य चंद्रना द्वीप सर्वे पाणीथी बे कोश उघाडा छे.

४० चालीशमें बोलें पुष्करार्द्धद्वीपनी वस्तु लखीयेछेयें पुष्करार्द्ध शोल लाख योजन

पोहोळुं छे तेना मध्यमां मानुष्योत्तर पर्वत पडयो तेथी एना बे भाग थया छे तेमां आ गला भागना आठ लाख योजनमां मनुष्यनी वस्ती छे अने पहेली तरफनां आठ लाख योजनमां सून्यक्षेत्रछे.

४१ एकतालीशमें बोलें मनुष्योत्तर पर्वत बेठा सिंहने आकारेछे पुष्करद्वीपनां मध्य भागें वलयाकारे पडयो छे हेठल एक हजारने बावीश योजन पोहोळोछे अने मध्यमां सातसें त्रेवीश योजन पोहोळोछे तथा उपर चारसें चोवीश योजन पोहोळो छे अने उंचो तो वेलंधर पर्वत जेटलो १७२१ योजनछे तथा भूमीमां चोथो भाग उंमोछे एनी माहेली परिधि १४२३०२२४ योजन अने मानुष्योतरथी बाह्य परिधि १४२३३७१३ योजन छे एटलीज परिधि सिद्ध सिलानी पण जाणवी ए सिद्ध सिला अने अढीद्वीप बेहु बरो बरछे ए अढीद्वीप रूप मनुष्य क्षेत्रमां नव वानां होय तेना नाम कहेछे १ नदी २ द्रह ३ मेघ ४ गर्जारव ५ अग्नी ६ तीर्थंकर ७ गणधर आदि मनुष्य तेना ७ जन्म ८ मरण ९ रात्रि दिवस ए नव वांना होय ए प्रमाणे संक्षेपथी अढीद्वीपनां भाव जाणवा.

हवे एज अढीद्वीप संबंधि कांइक विशेष विचार कहीयें छैयें.

ए अढीद्वीपना मध्यमां प्रथम जंबूद्वीप आवेलुंछे माटे ते जंबूद्वीपनो वली जूदो पट्ट बनाव्युंछे तेपण ए पुस्तकनी साथेछे ए सर्वे द्वीप अने समुद्र ते जगतीयें करी वींटेलाछे माटे प्रथम जगतीनो वर्णन करीयें छैयें. प्रत्येकें प्रत्येकें द्वीप अने समुद्र पद्मवर वेंदिकायें करी सहीत छे अर्थात् सर्वद्वीप अने समुद्रने चोकफेर पद्मवर वेदिका छे अने सर्वे पद्मवरवेदिकाउने केडे तथा आगल बे बाजु वन खंड पण छे.

अथ जगती वर्णन.

तिहां प्रथम जंबूद्वीप मोहटा नगरना गढने आकारें वज्रमय जगतीयें करी चारें बाजु वींटेलुंछे ते कोट आठ योजन उंचोछे तथा बार योजन नीचें धरतीनां मूलमां पोहोलोछे पछी जेम जेम उंचा चडीयें तेम तेम अनुक्रमें पोहोलाइनुं विस्तार घटतां घटतां जेवारें एक योजन उंचा चडीयें तेवारें अगीआर योजन पोहोलो थाय, बे योजन चडतां दश योजन पोहोलो थाय, त्रण योजन चडतां नव योजन पोहोलो थाय अने जेवारें चार योजन उंचा चडी कोटना मध्यभागने विषे आवीयें तेवारें आठ योजन पोहोल पणे थाय एम यावत् आठ योजन चडीने कोटनी उपर जइयें तेवारें चार योजन पोहोल पणे थायछे ए कोट उंचु करेलुं गायनुं पूंछडुं तेने आकारें छे जेम गायनुं पूंछ मूलमां जाडुं होय अने पछी उतरतां उतरतां पातलुं होय तेम जगती पण धरतीनां मूलमां जाडी छे अने पछी उपर चडतां चडतां पातली थती गइ छे.

ते जगती सर्व प्रदेशें वज्ररत्नमयछे, मणिरत्ननी नींतछे, वैडूर्य रत्नमय थांनाछे, लोही ताक्ष रत्नमय खीला छे, उतमां सोना रूपाना पाटीया छे, आकाशनी पेरे आछी छे, सुकोमलछे, घसीछे, मांजी कोमल करेलीछे, रजरहीत छे, मलरहित छे, कर्दमरहीत छे, बाधा आवर्ण रहित शोजा वाली छे, निरूपघात कांतीवाली छे, उद्योत सहित छे, जोवा योग्य छे, मनोहर आंखने देखवा योग्य जोवावालाने मनोज्ञ छे, प्रतिबिंब जेमां पडे एवी जगती छे. कलश, मंगल, तोरण, विजय, प्रसावणीया, वेदिका, सिंघासण, जरोखा, जाली ए सर्वे रत्नमय रमणीक छे ते जगती उपरे जंबुधीपनी पासें एक जालीयें करी चोक फेर सर्व दिसें वींटाणी छे एटले हीयारखी छे ते जाला अर्द्ध योजन उंच पणे छे, पांचसे धनुष्य पहोली जाडपणे छे, सर्व रत्नमय छे, निर्मल छे, सुकुमाल छे, यावत् देखवा योग्य छे, मनोहर छे, एनुं प्रथम आंकवालुं चित्र पहेला पृष्टमां छे.

ते जगती महोटा गवाक्षोना वलय तेणे करी सर्वदिशियें चारे बाजुयें वींटेली छे ते सर्वे गोख रत्नमय छे एकेको गोख बे बे कोश उंच पणे छे अने पांचशें पांचशे धनुष पोहोल पणे छे तथा अर्द्धो कोश लांब पणे छे आछा निर्मल छे यावत् प्रति रूप छे ए गवाक्षनो चित्र बीजा आंकवालु आ पुस्तकना प्रथम पृष्ठ मध्ये आपेलुं छे तिहांथी जोवुं ए गवाक्ष सर्वे लवण समुद्रनी पासें जगतीनां मध्यजागमां चोफेर जाणवा.

हवे ते जगतिनी उपरली जूमिनां मध्यजागने विषे चोफेर फिरति एक महोटी पद्म वरवेदिका देवताउने क्रीडा करवानुं स्थानक छे ते उंचपणे अर्द्ध योजन छे अने पांच शें धनुष्य पहोल पणे छे जेटलो जगतिनां मध्यजागें परिधि छे ते प्रमाणे परिधि पणे छे, सर्वे रत्नमय छे, जगती समान जगती सरखी फरती छे, तेनी वज्ररत्नमय जूमि छे, जूमिजागथी उंचा नीकल्या जे प्रदेश ते सर्वे वज्ररत्नमय छे, अरिष्ट रत्नना मूल पग थालीयां छे, वैडूर्य रत्नना थांजा छे, शोना अने रूपानां पगथालीयानां पाटीयां छे, वज्र रत्ननी संधीपूरी छे, एटले बे पाटीआनो संबंध जोडवो तेने संधी कहीयें. वली पइडाने थानके पण संधि समजवी, पाटीआवच्चे जे खीलीउ छे ते लोहिताक्ष रत्ननी छे तिहां नवनवा प्रकारनां मनुष्यनां युग्म शरीर छे ते मनुष्यनां जोडलानुं रूप नवनवा प्रकारनां मणिरत्नमयछे तेमज मनुष्यना एकाकी रूप पण छे तथा ए रूपना युग्म छे तेनां अंक रत्नमय देस छे ज्योतिरसा रत्नमय वांस मावे अने जमणे बे पासे बाधा छे अने वंसनी खीली विशेष रूपानी पाटली वंसनी उपर छे तेना उपरें शोनानी ढांकणी छे ते उपर वली वज्ररत्ननी निबिड ढांकणी छे ते उपरे सर्वस्वेतरूपामय आछादन छे एवी पद्मवरवेदिका छे.

ते पद्मवरवेदिकायें एक सुवर्णनी माला, एक घूघरनी माला, यावत् मोतीनी माला, एक कमलनी माला, तेपण सर्वे रत्नमय पीला सूवर्णमय दाम समूहे करी तेणे

करी सर्वदेशें सहीत छे, ते मालाने रक्तसुवर्णना झूमकाछे, सोनाने प्रकरे सहीतछे, नव नवा प्रकारनां मोती अने रत्न तेना हार अने अर्द्धहार तेणेकरी शोभित थकी लगा रेक मांहोमांहे वेगली रही छे ते पूर्व, पश्चिम, दक्षण अने उत्तरनो मंदमंद वायरो तेणे कंपती थकी, लंबती थकी, जणजणाट प्रमुख शब्द करती थकी, कान अने मनने गम ता एवा शब्दने चोकफेर पूरती थकी शोभती थकी रहे छे तथा जिहां जिहां एक युगल छे तेने स्थानके बीजा पण घणा घोडानां युगल, हाथीनां युगल, मनुष्यनां युगल, किन्नरनामा व्यंतरदेवोनां युगल, किंपुरुषनां युगल, महोरगनां युगल, गांधर्वनां युगल, वृषभनां युगल इत्यादिक सर्व युगल रत्नमयछे, निर्मलछे, सुकुमालछे यावत् प्रतिरूप छे तेमज ते ते स्थानके घणा घोडाना रूपनी पंक्तिउ छे ते पण पूर्ववत् यावत् प्रतिरूप छे तेमज वली घोडानां मैथुननां रूप एटले स्त्री सहीत रूप पणछे तथा ते ते स्थानकें घणी पद्मलता, नागवृक्षनी लता, अशोकवृक्षनी लता, चंपकवृक्षनी लता, आम्रवृक्षनी लता, जाय विशेष वृक्षनी लता, मचकुंदलता, श्यामलता प्रमुखछे ते नित्यें फली फूली थकी मंजरे करी सहीतछे ते सर्व रत्नमयछे यावत् प्रतिरूपछे तथा ठामें ठामें घणा रत्न मय अक्षतना स्वस्तिकछे इत्यादि एनो विशेष वर्णन सर्व जीवाभिगमादि सूत्रोथी जोवुं.

हवे एवुं पद्मवरवेदिका एवो नाम छे तेनुं हेतु कहेछेः—ए वेदिकामां ठामे ठामे एटले वेदिकाने विषे, वेदिकानां पासाने विषे, वेदिकानां पाटियानां माथाने विषे, वेदिकानां पुटांतरने विषे, थांभाने विषे, थांभानां पासाने विषे, थांभाने माथे, थांभानां पुटांतरने विषे, खीलीने विषे, खीलीनां मूखने विषे, खीलीनां पाटीयाने विषे, खीलीनां पुटांतरने विषे, खीलीने पासे, खीलीना पासाने स्थानकें, खीलीनां पक्षनां अंतने ठामे, एवा एवा स्थानकें घणा उत्पल तथा सूर्य विकाशी कमल यावत् लाखपांखडीनां कमल ते सर्व रत्नमयछे महोटा वर्षाकालनां जल राखवानां स्थानक तथा छत्र सरिखा मोहोटा कम ल प्रमुख ते सर्व पद्मवरवेदिकाने विषे रत्नमय छे ते सारुं पद्मवरदिका एवो नाम छे ए शास्वतीछे ए पद्मवरवेदिकानो चित्र त्रीजा आंकवालो प्रथम पृष्ठमां छे

ते पद्मवरवेदिकानी पूर्व पश्चिम दिसायें बे बाजुयें बे वनखंड छे ते देशें उणा बे योजन अर्थात् अढीसे धनुषे उणा बे योजन चक्रवाल पणे पोहोला छे एटले जगती नी उपर पांचशें धनुषनी वेदिका पोहोलीछे अने वेदिकानी बाहेरली समुद्रनी तरफ नी बाजुनो वन बे योजनमां अढीशो धनुष उणो छे तथा वेदिकानी जंबूद्वीपनी तरफनी बाजुनो वन पण बे योजनमां अढीशो धनुष उणो छे ए सरवाले जगती उपरनी भूमी चार योजन पोहोल पणे पूर्वें कहीछे तेटली थइ, हवे ते बे बाजुनां वन जगती समान परिधिपणे फरता छे तेनी कृष्णवर्णे नीली शोभाछे ते वननी भूमी चा

मडाना पुडा सरखी सम छे तथा आरीसानो तलो, हथेलीनुंतलो, चंद्रमानो मंमल, सूर्यनुं मंमल, घेटानुं चर्म, वृषभनुं चर्म, वराहनुं चर्म, सिंहनुं चर्म, वाघनुं चर्म, छागनुं चर्म, द्वीपडानुं चर्म, ते समान नूमीनो तलो छे तथा ते वनमां नाना प्रकारनां काला, पीला, धोला, राता, नीला एवा मणिरत्ननां तृणछे तेनो मनोज्ञ शब्दछे, मनोज्ञ रूप छे, तिहां चार दिसानो वायरो लागे तेवारें ते तृण मांहोमांहे आफले छे तेना योगें करी तेमांथी बत्रीश राग रागणी आलाप्या जेवा शब्दनी ध्वनी उठेछे, जाणे बत्रीशबद्ध नाटक थतो होय, जाणे बत्रीश वाजां वाजतां होय, जाणे गंधर्व देवता राग करता होय, तेवा शब्द उठे छे तथा ते वनने विषे ठामे ठामे घणी लघु वाव्य, गोलवाव्य ते पुष्करणी, तथा गुंजालिकाते ढांकेली वाव्य, लांबी वाव्य, तेमज एक उंले होय तेने पंक्ति कहीयें एवी सरनी पंक्ति, तथा एकनुं पाणी बीजामां आवतो होय तेने सरसर पंक्ति कहीयें तथा कूपनी पंक्ति ए सर्व सुकुमालछे, रत्नमय तेना कूलछे, रूपामय कूल कांठाछे, वज्रमय पाषाणेकरी तेनां पासा बांध्याछे, सुवर्णमय तेनां तलीयाछे, वैडूर्यरत्नमय अने स्फाटिमय तेनां तटना समिपनां प्रदेशछे, सुवर्ण अने शुभ्ररजतमय तेनी वेलुछे, सुखे प्रवेश करवा योग्यछे, सुखें उतरवा योग्यछे, नवनवा प्रकारनां रत्नेकरी तीर्छिनींत बांधीछे, चोखुणी छे, सरखो तटछे, अनुक्रमें नमतो नमतो जलनुं स्थानकछे, जिहां गंनीर शीतल जलछे, ते ठेकाणे बिसमृनाल नामे नीला कमल तेना पत्रेंकरी वली घणा उत्पल, कुमुद, नलिनि कमलजाति, आदिक अनेक जातिना कमल तेणे करी सहीतछे, ते कमलोने नमरा प्रमुख नोगवेछे, निर्मल पाणीयें करी ते वाव्यो पूरण नरेलीउं छे, तेने विषे मत्स, काचबादिक अतिघणा नमेछे तथा अनेक पक्षीओना युगल मैथुन क्रीडा करेछे तथा ते प्रत्येक वाव्य पद्मवेदिका अने वनखंमेकरी सहीत छे.

केटलीक वाव्य प्रमुखनां मदिराना सरखा पाणीछे केटलीकनां वारूणीवर समुद्रनां सरखा पाणीछे, केटलिकनां गोदुग्ध सरखा पाणीछे, केटलिकनां घृतसरखा पाणीछे, केटलिकनां शेलडीनां रस सरखा पाणीछे, केटलिकनां अमृत सरखा पाणीछे, केटलिकनां स्वनाविक पाणी समान पाणीछे, ते वावी जोवा योग्यछे इत्यादिक ए वावी कूपादिकनो वर्णन घणोछे ते जीवानिगमादि सूत्रथी जाणवो तथा फल, फूल, पत्र, आंबा, नीबू, दाडीम, नंनेरी प्रमुख सर्व पदार्थ ते वनने विषे रत्नमय जाणवा.

हवे ते वनने विषे ठाम ठाम घणा उत्पाद पर्वतछे जिहां व्यंतर प्रमुख देवता क्रिडा करवा निमित्तें आवी नवधारणीय वैक्रिय शरीरें करी क्रीडा करेछे ते पर्वतने विषे स्फटिक रत्ननां मंमप, तथा मंचक, दगमाल प्रासाद विशेष, स्फटिकना प्रासाद, हींमोला खाट, पक्षीने बेसवाना ठाम इत्यादिक सर्व रत्नमयछे तथा हंस, क्रौंच, गुरुड प्रमुखने आ

कारे जुदा जुदा जातनां अनेक सिंहासन, प्रमुखछे एरीतें वावडीउं, तोरण, पुतलीयो, मेहेल ए सर्व रत्नमय छे छ ए ऋतुमां सर्व स्थले देखवायोग्य रमणीक छे.

तथा ते वनखंडने विषे ठाम ठाम केलीनां घर, लतानां घर, अवस्थान घर, प्रच्छन स्नान करवाना घर, प्रसाधन घर इत्यादिक अनेक जातीना घरछे, तेमज घणा जाय आदिक फूलोनां मंडपछे तथा उत्तम सय्या अने आशनने स्थानके पृथ्वी शिलाना पटछे, तिहां घणा व्यंतरिक देवो अने देवांगनाउ वसेछे, विश्राम करेछे, सूवेछे, बेसेछे, निषिद्या करेछे, पासुं पालटेछे, रमेछे, इछित सुख जोगवेछे,क्रीडा विनोद करेछे,मैथुन सेवा करेछें पूर्व जवना आचारेला सुकृतथी उपार्जन करेला कल्याणकारी शुजकर्म तेनां शुजविपाक फल जोगवतां थकां प्रत्येकें विचरेछे एमां एटलुं विशेष जे मांहेला पासानां वनखंडमां तृण नथी तृणविनानो जाणवो. इत्यादिक वन संबंधि संक्षेप अधिकार कह्यो.

अथ धारवर्णनं

हवे ए जंबूद्वीपनां दरवाजानी संख्या कहेछे एक पूर्वदिसे विजयनामे द्वार छे तेनो विजयदेव नामे पोलीउछे बीजो दक्षणदिसें विजयंत नामे द्वार छे तेनो विजयंत नामे देवरक्षक छे त्रीजो पश्चिमदिसें जयंत नामें द्वार छे तेनो जयंतनामे देव रक्षक छे, चोथो उत्तरदिसें अपराजित नामे द्वार छे तेनो अपराजित नामे देव रक्षक छे. एरीतें विजयादि चार अनुत्तर विमानने नामे चार दरवाजानां पण नाम कह्याछे.

तिहां मेरूपर्वतने पूर्वदिसे पीस्तालीश हजार योजन जइयें तेवारें जंबूद्वीपनी पूर्वदिसीने छेहेडे लवण समुद्रनी पूर्वदिसिनी पश्चिमदिसें सीतामहानदीनी उपरें विजयनामे दरवाजो छे ते आठ योजन उंचोछे चार योजन पोहोलोछे अने चार योजन लांबपणे प्रवेश पणेछे तथा बे बाजुयें एकेक कोशनी बारसांखनी जींत स्वेतवर्णछे, तेनुं शिखर शोनानुंछे, तिहां हाथी, मृग, वृषज,अश्व,मनुष्य, मगरमछ, पंखी, सर्प, किन्नरनामा व्यंतरदेव, रुरुजीव, गेंडा, चमरीगाय, वनहस्ति, वनलता, पद्मलता प्रमुख चित्रामें करी युक्त छे. थंज उपर उत्तम वेदिका तेणेकरी सहीतछे, विद्याधरना युगलनां आकारें करी ते थंज युक्त छे, हजारोगमे सूर्यनां किरणो थकी पण अधिक प्रकाशवान छे, देदीप्यमानछे, चक्षुने जोवा योग्यछे, सुखकारी फरसछे, सश्रीक रूपछे.

वज्ररत्नमय तेनुं जूमी जागछे, अरिष्टरत्नमय पगथालीयानां मूलछे, वैडूर्यरत्नमय थंजछे, सुवर्णेकरी सहीत एवा उत्तम पंचवर्णी मणिरत्न तेणेकरी जूमितल बांध्युंछे, हंसगर्जरत्नो उंबरो बांध्योछे, गोमेदरत्नना नीचला टोडलाछे, अने उलालोछे, लोहीताक्ष रत्नमय बार शाखछे, ज्योतिरसा रत्नमय बारणानां उपरला चांपणाछे, वैडुर्यरत्नमय

कमाडछे, वज्ररत्नमय पाटीयानी सांधि जडीछे, लोहीताक्ष रत्नमय बे पाटीया वच्चें खी लीछे, नवनवा मणीमय चणीयारा छे,वजरत्नमय जोगलछे, अने जोगलनो ठामपण वज्र रत्नमय आवर्त्तन पीठिकाछे, जिहां जलालो बेशे ते ठाम जाणवो, अंकरत्नमय द्वारना बे पासाछे, एवा आंतरा रहीत निवड अनंग कमाड छे.

ते द्वारने बेहुपासें बेसवाना चोखूणा ओटलाछे, तेनी पासे पण त्रण त्रणनी उपन्न पंक्ति एवा १६० लांबा ओटलाछे, तिहां नाना प्रकारनां मणिरत्नमय सर्पनां रूपछे,द्वारने बेपासे लीलायें करी सहीत एवी पुतलीछे, वजरत्नमय शिखरछे, रूपामय उपरलो पीठछे, सर्वं सुवर्णमय चंद्रूयाछे, नाना प्रकारनां मणिरत्नमय जालपिंजर गवाक्षछे, मणिमय उपर लो वंशछे, लोहिताक्षरत्नमय उपरलो प्रतिवंशछे, रूपामय जोमछे, आदसरनां खाणा अने बीजा पण जे खाणाछे ते सर्वं अंकरत्नमयछे, ज्योतिरसा रत्नमय वंशने वलाछे, ज्योतिरसा रत्नमय अनेक खापछे, ते उपरें रूपामय पीठछे, ते वचे सुवर्णमय पातली छोतीछे, ते वचे सूक्ष्म तृण समान आछादन ढांकणी रूपछे, ते उपरें वली सर्वं स्वेत रूपामय आछादनछे, अंकरत्नमय पक्षबाधाछे, सुवर्णमय शिखरछे, ते उपरें सुवर्णमय थूलिकाछे, ते द्वारनो उपरलो जाग सर्वं स्वेतदक्षणावर्त्त संखनोछे जेम निर्मल दहीना दडवां, गायनुं दूध, समुद्रनां फीण, रूपानापूंज, एना सरखो उज्वल पोलनो प्रकाशछे, तिलकरत्न तथा अर्द्धचंद्र तेणेकरी सहीत एवा अनेक चित्रामछे, नाना प्रकारनी रत्नम य मालायें करीने ते द्वारनां मुख शोजितछे, बाहेर अने मांहे सुकुमालछे, पोल मध्ये सो नानी वेलु पाथरी छे. तेनुं शुजफरसछे, सश्रिकरूप छे, जोवा योग्य छे,यावत् प्रतिरूप छे.

हवे ते विजयनामा द्वारना बे पाशें बे ओटलाछे तेमां चंदने चर्चित बे बे कलशछे, ते कलश उत्तम कमल उपरें थाप्या छे, सुगंधित उत्तम पाणीयें करी प्रतिपूरण जर्या छे, ते कलशने बावनां चंदननां छांटा कीधाछे. गलाने विषे राता सूत्रनां दोरा बांध्याछे, कमलनां ढांकणाछे, ए कलश प्रमुख सर्व रत्नमयछे, निर्मलछे. सुकुमालछे, यावत् प्रति रूपछे, महोटा महोटा महेंद्र कुंजसमान ते कलश कह्या छे.

ते द्वारने बे पासें ओटले बेसवाने स्थानके बे बे नागदंता सरिखा खीलाछे, ते नागदं ताने विषे घणी मोतीनी माला, लंबायमान हेमनी माला, गवाक्षने आकारें रत्ननी माला अने घूघर माल प्रमुख वलगाडीछे, तेणे करी सहीतछे, कांइक उंचाछे, सन्मुख निकल्या छे,त्रिछा जिन्न प्रदेशने विषे रूडीपरें रह्या छे,नीचें सर्पनां अर्द्ध आकार समानछे, सर्प्पार्द्ध संस्थाने संस्थितछे, सर्वं रत्नमयछें, निर्मलछे, यावत् प्रतिरूपछे, एवा महोटा नागदंता हाथीनां दांत समानछे,ते नागदंताने विषे घणा कृष्णसूत्रें बांधी तेमज नीले सूत्रें,लालसूत्रें, पीलेसूत्रें, यावत् स्वेतसूत्रें बांधी एवी लंबायमान फूलनी मालानां समूह वलगाड्याछे, ते

मालाउने सोनानां फूंबकाछे, सोनानी पानडीयें मंडितछे, नाना मणिरत्न विविध प्रकारना हार अने अर्द्धहार तेणें करी सहीतछे, यावत् शोनायें अत्यंत शोजता थका रहेछे.

ते नागदंता उपरें बीजा बे नागदंताछे ते मोतीनी जालायें करी शोजितछे तेनो वर्णन पूर्वपरें जाणवो ते नागदंताने विषे घणा रत्नमय शीकाछे ते शीकाने विषे घणी वैडूर्यरत्नमय धूपघटीछे ते धूपघटी, कृष्णागर, कुंदरुक, तेने धूपेंकरीने घम घमाय मान गंधने उत्कृष्ट पणे करी मनोहर छे, सुगंध गंधे करी गंधवंत छे, गंधनी वाती रूप उदार मनने गमती मनोहर नासिका अने मनने सुख उपजावे एवी गंधे करी ते प्रदेश प्रत्यें सर्व दिसें चोफेर पूरती थकी अत्यंत शोजती थकी यावत् रहेछे.

ते विजयनामे द्वारने बे पासें बे चोतराने विषे बेठकने विषे बे बे पूतली कही छे पूतली ललितांग लीलावंत लीलायें सहित रूडे प्रकारें थापीछे, जले अलंकारे अलंकृतछे, ते पूतलीने नवनवा आकारनां वस्त्रछे, नवनवा प्रकारनी फूलनी माला कंठे पेहेरीछे, जेनो कटी प्रदेश मुष्टीयें ग्राह्यछे, जेना शिखर सरिखा युगल वृत्ताकारें उंचा पुष्ट मांसे युक्त एवा पयोधरछे, नेत्रनां खूंणा राताछे, केश कालाछे, कोमल निर्मल जला लक्षण सहित प्रशस्त संवछोछे छेडो जेनो एवा मस्तकनां केशछे, किंचित् अशोकवृक्षने आश्रितछे शरीर जेनो, मावे हाथें ग्रहीछे अशोकवृक्षनी शाखा जेणे, किंचित् अर्द्ध कटाक्ष तेनी चेष्टायें करी देवता प्रमुखने लूसती थकी, चक्षुने विलोकवे करी माहोमांहे जाणीयें खिंसना करती थकी एवी ते पूतली पृथवीकायमयछे, शाश्वते जावे छे तेनो चंद्रमा समान मुखछे, चंद्रमा सरखो मनोहर विलासछे, अर्द्धचंद्रमा समान निल्लाडछे, चंद्रथकी अधिक सोम्यदर्शनछे, उल्कापातनी पेरें उद्योत करतीछे, मेघनी वीजली थकी सूर्य देदीप्यमान छे तेथी पण देदीप्यमान अधिकतर प्रकाश वालीछे. शोल शृंगारने आकार तेणे करी मनोहर वेष छे, जोवा योग्य छे, यावत् प्रतिरूप छे ते पुतली तेजे करी अत्यंत अत्यंत शोजती थकी रहेछे.

ते विजयनामा द्वारने बे पासें बे उटलाने विषे बे बे जालीना कटक समूहछे, ते जाल कटक सर्व रत्नमयछे, यावत् प्रतिरूपछे, तथा ते द्वारने बे पासेंना बे उटलाने विषे बे बे घंटा कहीछे ते जंबूनंद रत्नीछे, वज्र रत्नमय लालाछे, नाना मणिमय घंटाना पासाछे, सुवर्णमय सांकलछे, रूपामय रासडीछे, ते घंटानो उघस्वरछे, मेघनां सरिखो स्वरछे, हंसनां सरिखो स्वरछे, क्रौंचनां सरिखो स्वरछे, तथा बारवाजानां समूहनो स्वर तेने नंदीस्वर कहीयें तेना सरखो स्वरछे अने तेना सरखो घोषछे, सिंहना सरखो स्वरछे, सिंहनां सरखो घोषछे, मीठो स्वरछे, मीठो घोषछे, जलो स्वरछे, जला स्वरनो घोषछे, ते स्थानकनां प्रदेश उदारछे, मनोज्ञ स्वरछे, कान अने मन तेने सुखनो करनार एवे शब्दें यावत् रहेछे.

विजय द्वारने बे पासें बे ओटले बे बे वनमाला कहीछे जेमां पत्र, पुष्प, फल, अंकूरा अने साखा एकठा गुंथ्यां होय तेने वनमाला कहीयें ते वनमाला नाना प्रकारनां फूल, लता, टिसी, अंकूरा तेणे करी सहीतछे, जमरा प्रमुख जीवें जोगवती थकी शोजायमान मनोहरछे, जोवा योग्यछे, प्रतिरूपछे ते प्रदेशें गंधें करी पूरती थकी यावत् रहेछे.

ते विजय द्वारने बें पासें ओटलाने विषे वली बे बे चोखूणा ओटलाछे ते चार योजन लांबा अने पोहोलाछे, बे योजन जाड पणेछे, सर्व वज्र रत्नमय निर्मलछे यावत् प्रतिरूप छे ते ओटला उपरें प्रत्येकें प्रत्येकें प्रासादावतंसकछे ते चार योजन ऊंचपणेछे तथा बे योजन लांब पणे अने पोहोल पणेछें ते प्रासादावतंसक, सन्मुख नीकली सर्व दिसें प्रसार पामेली एवी प्रजा तेणे करी जाणीयें कांती खीलाती रहेती नथी? एवाछे, विविध विविध प्रकारनां मणिरत्ननी जांते करी विचित्रछे, विजय अने विजयंति ध्वजा वायरें करी कंपितछे, छत्र अने ते उपर छत्र तेणे करी सहीतछे, ते प्रासादनां शिखर अत्यंत ऊंचाछे, आकाश तलने उलंघे छे, ते जुवननी जींते जालीछे, तेनी शोजाने अर्थें रत्न जडयाछे, करंडीयामां जडीत रत्न राख्या होय ते जेवा शोजे तेवा ते रत्न शोजेछे, मणी अनें सुवर्णनां शिखरछे, विकस्वर शतपत्र तथा पौंमरीक कमल तथा तिलक वृक्ष प्रमुख रत्नमय तथा अर्द्धचंद्र इत्यादिकनां स्वरूप द्वारने विषे छे, नाना प्रकारनी मणिमय माला तेणे करी ते प्रासादनुं द्वार शोजितछे, ते प्रासाद मांहे अने बाहेर सुकमालछे, तेमां सुवर्णनी वेलु पाथरीछे, तेनो सुखकारी फरसछे, सश्रीक मनोहररूपछे, जोवा योग्यछे, यावत् प्रतिरूपछे.

ते प्रत्येकें प्रत्येकें प्रासादावतंसकने मध्ये घणुंक सम मनोहर जूमि जागछे, ते जेम मुरज नामा ढोलनो तलो ते समानछे, यावत् मणियें करी उपशोजितछे, मणिनो गंध वर्ण फरस पूर्वली परें जाणवो, तेमध्ये चंद्रोदय अने पद्मलता प्रमुखछे, यावत् सामलिका नामे वनस्पति प्रमुखनां चित्रामछे, ते सर्व सुवर्णमयछे, निर्मलछे, यावत् प्रतिरूपछे.

ते सम मनोहर जूमिजागनां मध्यदेश जागने विषे प्रत्येकें प्रत्येकें मणिमय पिठिका चोतरा रूपछे, ते एक योजन लांब पणे अने पोहोल पणेछे, अर्द्ध योजन जाड पणे, सर्व रत्नमयछे, यावत् प्रतिरूपछे.

ते मणिपीठिकानी उपर प्रत्येकें प्रत्येकें सिंहासन छे, ते सिंहासननां पगथालियानां अधःप्रदेश सुवर्णमयछे, रूपामय सिंहासनछे, सुवर्णमय पगथालीयाछे, नवनवा रत्नमय पादपीठछे, जंबुनंद रत्नमय गात्रछे, वज्र रत्नमय संधि पूरितछे, नवनवा रत्नमय सिंहासननुं तलीउंछे, ते सिंहासन हस्ति, मृग, वृषजादिनां चित्रामें युक्तछे, मणिरत्नमय पादपीठछे, तेना उपर कोमल मसरूनो नूतन सीतल स्पर्शें सहीत सिंहनी केसरा समान एवो वस्त्र ढाक्युं

छे, तथा नला उंठाड रूप राते वस्त्रें करी पाद पीठ ढाक्याछे, तेनो मृगचर्म, रू, पर, माखण अने अर्क समान कोमल फरसछे.

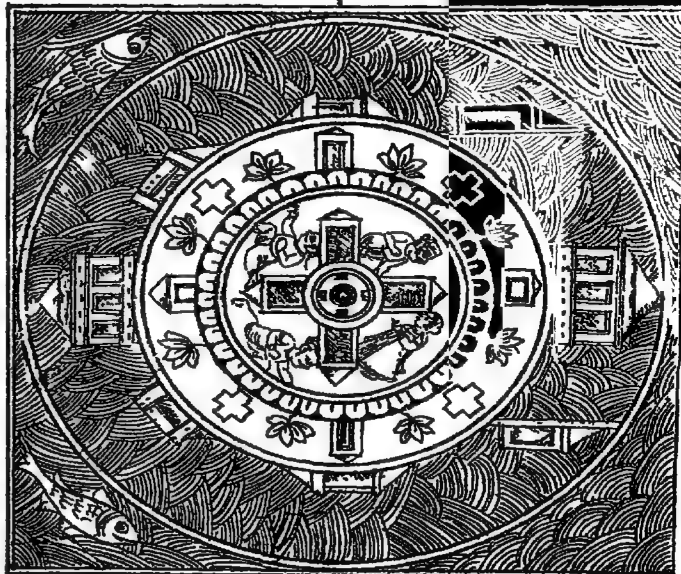
तथा ते सिंहासन उपरें प्रत्येकें प्रत्येकें विजयदूष्य चंडुआछे, ते चंडुवा संख, मच कुंद, पाणीनां फूसारा, अमृत, समुद्रना फेण सरखा स्वेतवर्णछे, ते सर्वे वस्त्र रत्नमयछे तथा ते विजयडुष्यने मध्यदेश नागें प्रत्येंके प्रत्येंके वज्र रत्नमय अंकूस रूपछे, ते अंकूसने विषे कुंन समान मोतीनी मालाछे, ते माला पासें वली तेथकी अर्ध स्वरूपें कुंन समान मोतीनी मालायें करी सर्व दिसे चोक फेर परिवरीछे, ते मालाने सोनानां फूंबकाछे, सुवर्णने प्रकरे शोभितछे, ते प्रासादावतंसक उपरें घणा आठ आठ मंगलीकछे, तथा द्वारने बे पासे बे उंटले बे बे तोरणछे, ते तोरण आगल बे बे पुतलीछे, तथा बे बे नागदंताछे, ते नागदंताने मोतीनी माला लगाडीछे, तेम ते नागदंताने विषे घणीज कृष्णसूत्रें बंध फूलनी मालानां समूह यावत् रहेछे, तथा ते तोरणने आगल घोडाने आकारे बे बे युग्मछे, तथा वावीनी पंक्ति, मैथुन ते स्त्रीसहीतरूप, बे बे पद्मलता छे तथा अक्षत स्वस्तिकछे, तथा उत्तम कमल उपर चंदने चर्चित कलश थाप्याछे, तथा बे बे नृंगार कमल उपर थाप्याछे, तेनां मत्तहाथीनां मुख समान आकार छे.

ते तोरणने आगले बे आरीसाछे, ते आरीसानो घर सुवर्णमयछे, वैडूर्य रत्नमय आरीसा जालवानी मूंठीछे, वज्र रत्नमय हाथीछे, अनेक मणिमय श्रृंखलायें वेष्टित शोभितछे, अंकरत्नमय खाप एटले रूप जोवानुं ठामछे, तेनी छायायें करी सर्व देखाय, अनुबंध सहीत छे, चंद्रमंडल सरखा छे, मोटा अर्धकाय समान छे.

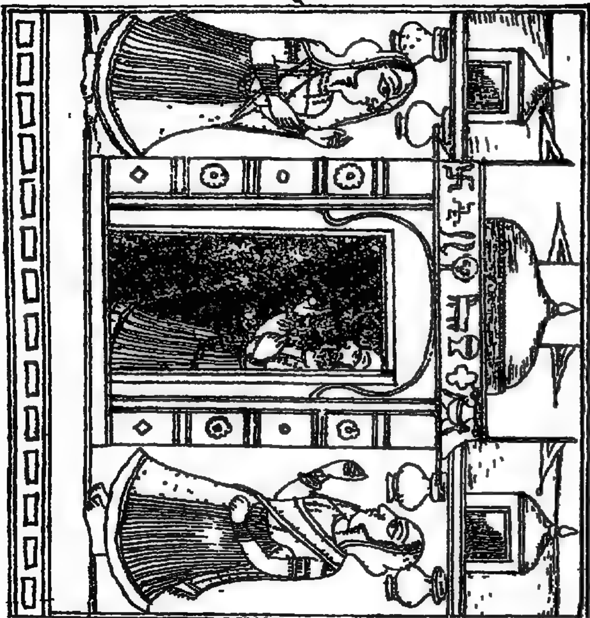
ते तोरणनी आगल वज्रनी नाभी समान थालछे, ते थाल स्फिटिक समान त्रण्य वार छडथा शाली मध्यनां तंडुल मूसले करी खांमधा एवा तंडुले करी नखा थका रहेछे, ते चोखा अने थाल सर्वे जंबूनंद रत्न मयछे. मोहोटा मोहोटा रथनां पइडा समान ते थाल छे. ते तोरणनी आगल बे बे पात्रीछे ते निर्मल पाणीयें करी प्रतिपूरणछे, अनेक प्रकारना पंचवर्ण फूलेंकरी प्रतिपूर्ण समानछे तथा बे बे सुप्रतिष्ठक नाजन विशेषछे ते अनेक प्रकारनां पूजाना उपकरणें करी नखाछे, सर्वउंषधीयें प्रतिपूर्णछे तथा बे बे मनोगुलिका पीठिकाछे, तेने घणा सोनामय रूपामय पाटीयाछे, ते पाटीयाने विषे घणा वज्रमय नागदंताछे, ते नागदंताने विषे घणा रूपामय शीकाछे. ते तोरणनी आगल बे बे आश्चर्यकारी रत्ननां करंमीयाछे तथा बे बे हयकंठछे, यावत् बे बे वृषनने आकारे तोमला छे, इत्यादिक घणा पदार्थो छे तनुं विशेषे वर्णन जीवाभिगमथी जोइ लेवो.

विजय द्वारने विषे चक्र, मृग, गुरुड, बगला, पीछ, छत्र, शकुनी पंखी, सिंह, बलद,

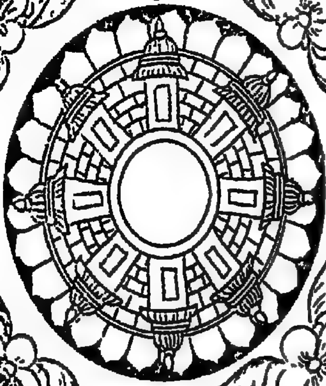
जगतीनी स्थापना तथा विजयादि चार
दरवाजानी स्थापना.
१



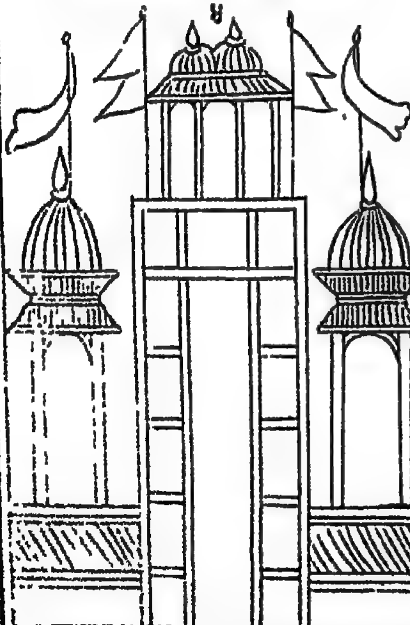
जंबुद्वीपना विजयद्वारनी पांचमी भूमिनी स्थापना
तथा देवोनी स्थापना.
२



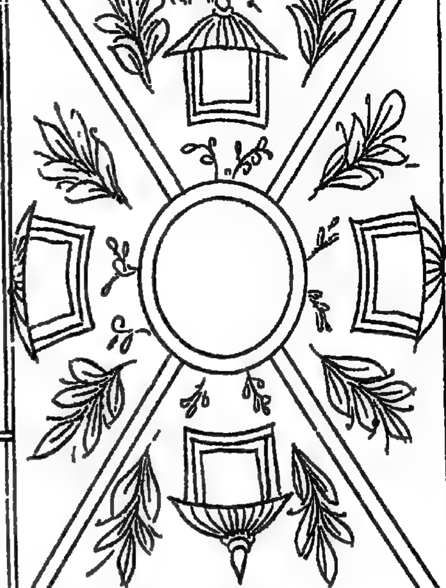
विजयदेवनी राजधानीनी स्थापना. ३



विजयराजधानीना द्वारनी स्थापना. ४



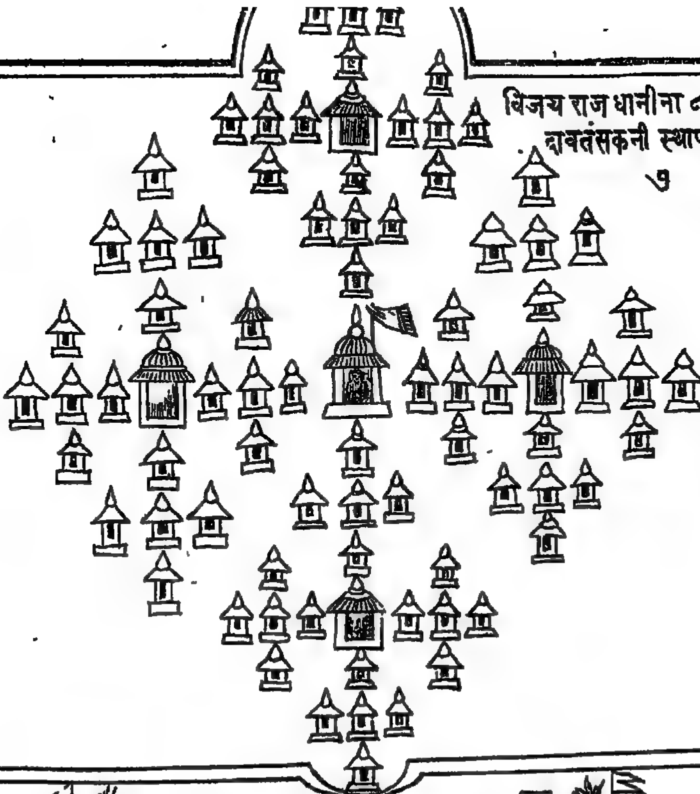
विजय राजधानीनी चारे दिशाना चार वनखंड अने चार प्रासादावतंसकनी स्थापना ५

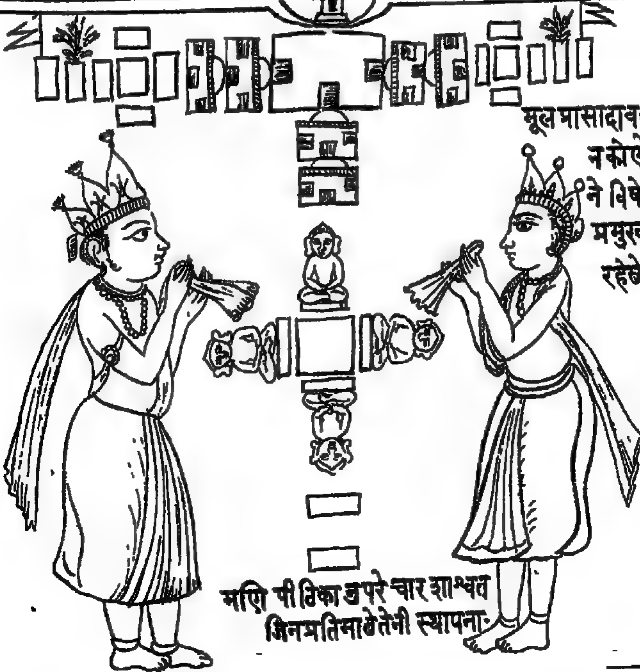


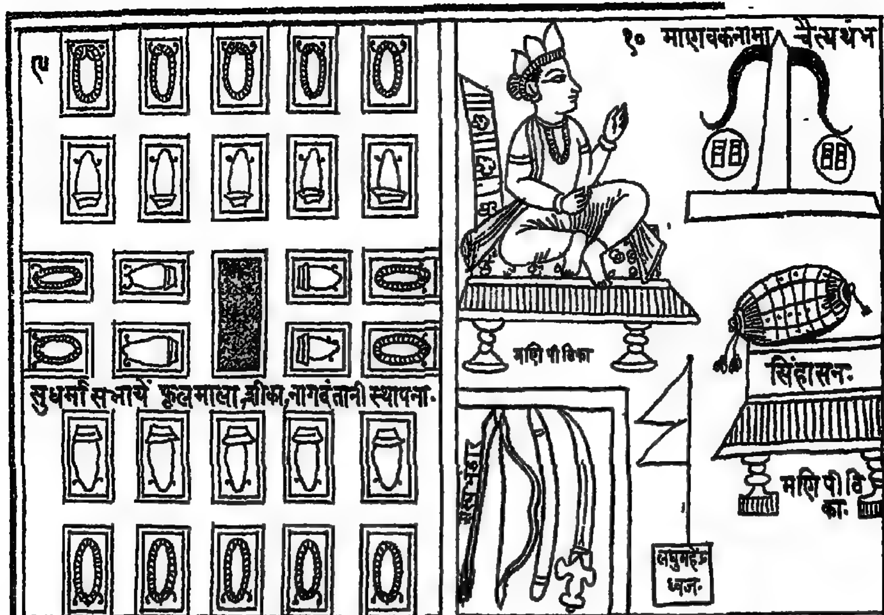


६

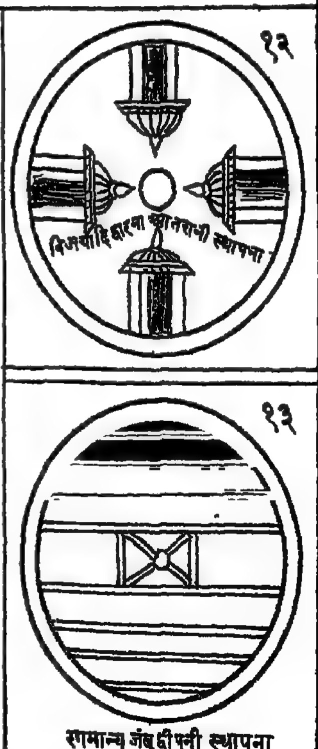
वनखंडना प्रासादावतंसकना मध्य भागने विषे अशोकादिक समने
... देवोना भद्रासन छे तेनी स्थापना


विजय राज धानीना ८५ प्रासा-
दावतंसकनी स्थापना.
૭


मूल प्रासादावतंसकनी ईशा-
नकोणे सुधर्मासभा
ने विषे जिनदाढा
प्रमुखना डाबला
रहेछे तेनी स्थापना.
૮
मणि पीठिका उपरे चार शाश्वत
जिनप्रतिमाछे तेनी स्थापना.


९
सुधर्मा सभाये फूलमाला, शीका, नागदंतानी स्थापना.
१० माणवकनामा चैत्यथंभ
मणिपीठिका
सिंहासन:
मणिपीठिका.
लघुमहेन्द्र ध्वज.


११
पुस्तकसभा
अभिषेक सभा
अलंकार सभा
देवशय्या
सिध्धायतन


१२
विजयादि द्वारनो आंतरानी स्थापना
१३
सामान्य जंबूद्वीपनी स्थापना

स्वेत चउदंता हस्ति ए दस मांहेला एकेकना चिन्हे करी युक्त एकशो ने आठ आठ ध्व जाउं छे तेवारे ए दशेना चिन्हे युक्त सर्वमली १०८० ध्वजाउं विजयद्वारें छे.

विजयद्वारनी नव भूंईछे तेमां मध्यनी पांचमी जोमिने विषे एक मोहोटुं सिंहासन छे, ते सिंहासननी वाव्यकूंणे अने उत्तरदिसें तथा इशानकूंणे विजय देवतानां चार ह जार सामानिक देव तेना चार हजार नद्रासनछे ते सिंहासननी पूर्वदिसें विजय देवता नी चार अग्रमहीषीना परिवार सहित चार नद्रासनछे, तथा अग्निकूंणे विजय देवता नी अन्यंतर परखदानां आठ हजार देवता तेनां आठ हजार नद्राशनछे, तथा दक्षणदि सें विजयदेवतानी मध्य परखदानां दशहजार देवतानां दशहजार नद्रासनछे, तथा नै रुतकूंणे विजयदेवतानी बाहेरली परिखदानां बारहजार देवतानां बारहजार नद्रासन छे, ते मूल सिंहासनथी पश्चिमदिसें विजयदेवतानां सात कटकनां धणीना सात नद्रा सनछे, तथा सिंहासननी पूर्वादिक चार दिसायें प्रत्येकें चार चार हजार नद्रासन छे ते विजयदेवताना आत्मरक्षक देवो शोल हजारछे, तेना चारेदिसियें मली शोल हजार नद्राशनछे, अवशेष आठ नूमिने विषे प्रत्येकें प्रत्येकें नद्रासनकह्या छे ते सामानिकादिक देवो योग्य सिंघासन परिवार रहित कह्याछे.

तथा उपरला पोल उपरें शोल प्रकारनां रत्ने करी शोनितछे, तथा घणा आठ आठ मं गलीकछे, तथा उपरें घणा कृष्ण चामर ध्वजा छे सर्व रत्नमयछे तेमज घणा छत्राति छत्र प्रमुख पूर्वपरे जाणवा. ए विजयनामे द्वारें विजयनामे देवता महर्द्धिक, महाकांति नो धणी, महाअनुनावनो धणी, एक पल्योपमने आउखे वसेछे, तेना चार हजार सा मानिक देवता, चार अग्रमहीषी परिवार सहीत, त्रण परखदानां देवो, सात कटकनां धणी, शोल हजार आत्मरक्षक देवता प्रमुख बीजा पण घणा विजया राजध्यानीनां रहेनारा देवता अने देवांगना प्रमुख ठाकुर पणे देवता संबंधीया नोग नोगवता थका विचरे छे तेथी ए विजय द्वारनुं विजय एवुं शाश्वतुं नामछे.

हवे ए विजयनामा द्वारनां विजयनामे देवतानी विजया नामे राजध्यानी ते एज विजयद्वारने पूर्व दिशायें तिहां असंख्याता द्वीप अने समुद्र मूकी जाइयें तिहां बीजो जंबूद्वीपनामे द्वीप आवेछे तेमध्ये बार हजार योजन अवगाही जाइयें तिहां ए विजय देवतानी विजया नामे राजध्यानीछे.

ते विजयानामे राजध्यानी बार हजार योजन लांब पणे तथा पोहोल पणेछे अने (३७ए००) योजन कांइक विशेषाधिक एटली तेनी परिधि फरतीछे ते राजध्यानी एक प्राकारें एटले गढें करी सर्व दिसें चोक फेर वींटीछे ते गढ साडा साडत्रीश योजन उंचोछे, मूलमां शाडाबार योजन पाइये पोहोलोछे मध्यमां सवाउ योजन पोहोल पणें छे तथा

उपर त्रण योजन अने अर्द्धगाउ पोहोल पणेछे एटले मूलमां विस्तार पणेछे, मध्ये सांकडोछे, उपर पातलोछे, बाहेरें गोळछे, मध्ये चोखूणोछे, गायना पूंछने संस्थाने संस्थितछे, सर्व सुवर्णमयछे, निर्मलछे,यावत् प्रतिरूपछे, ते गढ नाना प्रकारनां पंचवर्णी कोसीसायें करी शोभितछे, ते कोसीसा अर्द्धगाउ लांब पणे छे, पांचसें धनुष पोहोळ पणे छे, देसोन अर्द्धकोश उंचपणे छे.

विजया राजध्यानीयें एकेकी दिसियें सवासो सवासो बारणाछे, एम चारे दिसिनां मळी पांचसें दरवाजाछे.ते प्रत्येक दरवाजो साढीबासठ योजन उंच पणेछे,सवाएकत्रीश योजन पोहोल पणेछे, सवाएकत्रीश योजन प्रवेशछे, स्वेतछे, उत्तम सुवर्णमय शिखर थूभिकाछे,तिहां हाथी मृग इत्यादि चित्रामनो अधिकार सर्व विजय द्वारनी परे जाणवो.

तथा एकेक द्वारें उत्तर भूमिछे ते चंद्रुआ तथा पद्मलता प्रमुख चित्रामें करी युक्तछे, तथा तेने विषे सिंहासन कह्याछे इत्यादिक तथा बे पासेना बे ओटला तथा बे बे चोखूणा ओटला तथा प्रासादावतंसक इत्यादिक वातो सर्व जीवाभिगम सूत्रथी जोवी.

विजया राजध्यानीने पूर्वादि चार दिसायें चार वनखंडछे ते आवी रीतेंः—पूर्व दिसायें आशोपालव अशोकवनछे, दक्षणदिसें सडसडो सप्तवर्ण वनछे, पश्चिमदिसें चंपक वनछे, अने उत्तरदिसें आम्रवनछे, ते वनखंड कांइएक जाजेरा बार हजार योजन लांब पणे छे, पांचसें योजन पोहोल पणेछे, प्रत्येकें प्रत्येकें गढें करी सहीतछे, एनी कृष्णशोभाछे एमयावत् तिहां घणा व्यंतरिक देव देवांगनाउ विसामो करेछे इत्यादि सर्व पूर्वपरें कहेवुं तथा चार वनमां चार प्रासादावतंसक छे तेमां तेवेज नामे चार देवता परिवार सहीत रहेछे तेमज मांहेली भूमीनो वर्णन इत्यादि अधिकार सर्व जीवाभिगमसूत्रथी जाणवुं.

विजया राजध्यानीनां मध्य देशभागने विषे एक पडथार रूप चोतरोछे ते बारसो योजन लांब पणे अने पोहोल पणेछे, ३७९५ योजन कांइक विशेषाधिक फरतोछे, अर्द्धकोश जाडपणेछे, सर्व जंबूनंद रत्नमयछे, ते चोतरो एक पद्मवरवेदिका अने वनखंड तेणेकरी सर्व दिसें चोकफेर वींटाणोछे, पद्मवरवेदिकानो वर्णन अने वनखंडनो वर्णन पूर्वपरे जाणवो ते वनखंड दसोन बे योजन फरतुं परिधियें पोहोळुंछे,चोतरा समान फरतुंछे, ते चोतराने चारदिसें चार पगथालीयाछे, पगथालीयाने आगळे प्रत्येकें प्रत्येकें तोरण छे, छत्रातिछत्र छे.

ते चोतराना मध्यभागने विषे एक मूळ प्रासादावतंसकछे, ते साडाबाशठ योजन उंचोछे, अने सवाएकत्रीश योजन लांबो तथा पोहोळोछे, तेना मध्यभागने विषे वळी एक मणिमय पीठिका चोतरोछे, ते मणिपीठिका एक योजन लांबी पोहोळीछे, अर्द्ध योजन जाड पणेछे, तेनी उपर एक महोटुं सिंहासनछे, ते सिंहासननो वर्णन सर्व परि

वार सहीत जाणवो ते मूल प्रसादावतंसक वली बीजा चार प्रासादावतंसके सर्व दिसें चोफेर व्यापछे ते चार प्रासाद सवाएकत्रीश योजन उंचपणेछे, तथा साडापंदर योजन अने अर्द्धगाउ लांबा अने पोहोलाछे, ते एकेको प्रासादावतंसक वली बीजा चार चार प्रासादावतंसकें सर्व दिसें चोखफेर व्यापछे ते प्रासाद साढापंदर योजन अने अर्द्धगाउ उंचपणेछे, तथा पोणा आठ योजन अने पा गाउ लांबा पोहोलाछे वली ते प्रत्येक प्रासादावतंसक वली बीजा चार चार प्रासादावतंसके सर्व दिसें व्यापछे ते प्रासाद पोणाआठ योजन उपर पा गाउ उंचाछे अने साडासातसें धनुषे उंणा चार योजन लांबा अने पोहोला छे, ए सर्व मली ८५ प्रासाद थाय ते आवी रीतें एकतो मध्य प्रासाद तेने चार दिसायें चार प्रासाद ते एकेकानी पछवाडे वली चार चार प्रासाद अने वली ते एकेकानी पाछल चार चार प्रासाद एवं ८५ थाय एनुं पांचमा आंकनुं चित्र आ पुस्तकनां त्रीजा पृष्टमांछे ते जोवुं.

हवे ते मूल प्रासादावतंसक थकी ईशान कूंणे विजय देवतानी सुधर्मा नामे सभा छे ते साढाबार योजन लांबी, सवाछ योजन पोहोली, अने नव योजन उंचपणेछे, अनेक थांभाना शङ्कडा तेणे करी सहीतछे, उंचा थंभ उपरें वज्र रत्नमय उपरली कुंजी छे. तिहां प्रधान रचित तोरण अने पुतलीछे, मनोज्ञ संस्थाने संस्थितछे, वैडूर्य रत्नमय थंभछे, नव नवा प्रकारनां रत्न सुवर्ण मणि प्रमुखें सहीत निर्मल विस्तार पणे अत्यंत समनिविड आश्चर्यकारी मनोहर धरती तलछे, हाथी, मृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य, मगरमत्स,पंखी, सर्प, किन्नरदेव, गेंडो, चमरिगाय, वनहस्ति, वनलता, विद्याधरना युगल, पद्मलता प्रमुखनां चित्रमाछे, सूर्यना सहस्र किरणथी पण अधिक तेजछे, पंचवर्णी घंट अने ध्वजायें करी शोभितछे,चंद्रुआ तथा तोरणे करी सहीतछे,बावनां चंदन रस सहीत नीलुं रक्तवर्णे तेना ठामे ठामे हाथा दीधाछे, स्थानके स्थानके बावना चंदनना कलश मूक्याछे,फूलनी मालानां समुदाय,पंचवर्णी रस सहीत सुगंधि फूल तेना ठाम ठामने विषे पूंजछे, कृष्णागर कुंदरुक प्रमुखनो धूप तेने मघ मघाटें करी मनोहर गंधछे, अपत्सराना समुदाये करी ते सभा संकीर्णछे, देवतानां वाजित्र जे मृदंगादिक तेना स्वरें सहीतछे, तेना त्रण दिसेंयें त्रण द्वारछे, ते द्वार प्रत्येकें बे बे योजन उंच पणे छे अने एक योजन पोहोल पणे छे,तेटलोज प्रवेश छे एटले भींतनुं जाडपणुं जाणवुं ते प्रासादनी उपर स्वेत उत्तम सुवर्णनां शिखरछे, यावत् वनमाला पर्यंत द्वारनुं वर्णन पूर्वपरें जाणवुं.

ते द्वारने आगल प्रत्येकें प्रत्येकें मुखमंडपछे, ते साढाबार योजन लांब पणे अने सवाछ योजन पोहोल पणेछे, कांइक जाजेरा बे योजन उंचपणेछे, ते मंडप अनेक थंभें

करी सहीतछे, तिहां चंद्रोदय अने नूमिनागनो वर्णन पूर्वपरें जाणवुं ते प्रत्येक मुख मंडप उपर आठ आठ मांगलिक छे.

ते मुखमंडप आगले प्रत्येकें प्रत्येकें प्रेक्षाघर मांमवाछे, ते पण तेटलाज लांबा पोहोलाछे ते प्रेक्षाघरना मध्यनागने विषे प्रत्येकें चोखूणा वज्र रत्नमय चोतराछे, ते चोतराना मध्यनागें मणिपीठिकाछे, ते एक योजन लांबी पोहोली अने अर्द्ध योजन जाडीछे ते प्रत्येक मणिपीठिका उपरें एकेक सिंहासन छे.

तथा ते प्रेक्षाघर मंमप आगले त्रण दिसें त्रण मणिपीठिका कहीछे, ते बे योजन लांबी पोहोली अने एक योजन जाडपणे छे ते प्रत्येक मणिपीठिका उपरें चैत्यथूनछे ते चैत्यथूनने आगलें त्रण दिसियें प्रत्येकें मणिपीठिका छे ते प्रत्येक मणिपीठिका उपर चैत्यवृक्ष छे, हवे ते चैत्यवृक्षने आगलें जे त्रण दिसें त्रण मणिपीठिकाछे ते प्रत्येकना उपरें महेंद्रध्वजछे, ते हजारो गमे न्हानी ध्वजाउए करी सहीतछे, तेना उपरें आठ आठ मंगलीकछे, एनुं चित्र छठा आंकनुं त्रीजा पृष्टमां जोवुं.

ते महेंद्रध्वजने आगलें त्रण दिसायें त्रण नंदापुष्करणी छे,ते साढाबार योजन लांबी अने सवाछ योजन पोहोलीछे, दस योजन उंमीछे, ते पुष्करणी प्रत्येकें प्रत्येकें पद्मवर वेदिकायेंकरीतथावनखंमे करी सहीतछे,ते प्रत्येक पुष्करणीनेत्रणदिसेंत्रणपगथालीयाछे

सुधर्मासनायें छ हजार मनोहर चोखूणा उंटला छे,तेमां पूर्वदिसें बे हजार पश्चिमदिसें बे हजार, दक्षिणदिसें एक हजार अने उत्तरदिसें एक हजार छे ते उंटलाने विषे घणा सुवर्णमय अने रूपामय पाटीयां छे, ते पाटीयांने विषे घणावज्रमय नागदंताछे, ते नागदंताने विषे घणा कृष्णादि पांच जातना सूत्रें बद्ध एवी फूलनी मालाना समुदाय छे, ते मालाना सुवर्णना फूवंका छे.

सुधर्मासनायें छ हजार गोमानशीका सय्यारूप स्थानक लांबा उंटलाछे, तेमां पूर्वदिसें बे हजार, पश्चिमदिसें बे हजार, दक्षिणदिसें एक हजार, अने उत्तरदिसें एक हजार छे ते गोमानसीकाने विषे घणा सुवर्ण अने रूपामय पाटीयां छे यावत् वज्र रत्नमय नागदंताने विषे घणा रजतमय शीकाछे, ते शीकाने विषे घणी वैडूर्यरत्नमय धूपघटीछे, ते कृष्णागरु, कुंदरुक, लोबान प्रमुखे करी सहीत छे.

ते सुधर्मासनाना मध्यने विषे एक महोटी मणिपीठिका छे ते बे योजन लांबी अने पोहोलीछे तथा एक योजन जाड पणेछे तेनी उपर मानवक नामे चैत्यथंनछे, ते साढासात योजन उंचो अने अर्द्धकोश नूमिमां उंमोछे, अर्द्धकोश विष्कंन पणेछे, छ हांसछे, छ संधीछे, छ स्थानकें शोनितछे, ते माणवकथंन उपरें दोढ योजन जइयें अने हेठे दोढ योजन मूकीयें तिहां मध्ये साढाचार योजमां घणा सुवर्ण अने रूपामय

पाटीयांछे, तिहां घणा वज्र रत्नमय नागदंताछे, ते नागदंताने विषे रूपामय शीकाछे, ते शीकाने विषे वज्रमय गोळ वृत्ताकारें दाबडाछे ते दाबडाने विषे घणा तीर्थंकर नी दाढाछे तेणेकरी सहीत थका रहेछे, ते दाढा विजयदेवताने अने बीजा पण घणा व्यंतरिक देव अने देवांगनाने अर्चवा योग्यछे, वांदवा योग्यछे, चंदनादिकें पूजवा योग्यछे, वस्त्रादिकें सत्कार करवा योग्यछे, सन्मान एटले बहुमान करवा योग्यछे, कल्याण कारी, मंगलकारी देव संबंधी चैत्यनी परें सेवा करवा योग्य छे, देवता ते दाढानी सेवा केवल मुक्तिना निमित्तें करे छे.

ते माणवक नामा चैत्यथंजनी पूर्वदिसें एक महोटी मणिपीठिकाछे, ते बे योजन लांबी अने पोहोलीछे, एक योजन जाड पणे छे, तेनी उपर एक महोटुं सिंहासन छे.

माणवक चैत्यथंजनी पश्चिम दिसें एक महोटी मणिपीठिकाछे, ते एक योजन लांबी अने पोहोलीछे, अर्द्धयोजन जाड पणेछे, तेनी उपर एक महोटी देव शय्याछे, ते देव शय्याने ईशानकूंणें एक महोटी मणिपीठिका छे, ते एक योजन लांबी पोहोली छे, अने अर्द्ध योजन जाड पणेछे, तेउपर एक पूर्वला महेंद्रध्वजनी अपेक्षायें नाहानो एवो महेंद्रध्वजछे, ते शाडासातयोजन उंचोछे अने अर्द्धकोश पोहोळ पणेछे, ते लघु महेंद्रध्वजने पश्चिमदिसें विजयदेवतानो चोप्याल नामे हथीयारनो भंमार छे.

ते सुधर्मा सभा थकी ईशान कूंणे एक महोटुं सिद्धायतनछे ते सिद्धनुं देहरुं शाडा बार योजन लांब पणेछे, अने सवाछ योजन पोहोळ पणेछे, नव योजन उंच पणेछे, तेना मध्यभागें एक महोटी मणिपीठिकाछे, ते बे योजन लांबी पोहोलीछे अने एक योजन जाड पणेछे, ते पीठिका उपरें एक महोटो देवछंदो एटले गंभारोछे, ते बे योजन लांबो पोहोळो अने एक योजन उंच पणे छे, ते गंभाराने विषे तीर्थंकरनी एकशोने आठ प्रतिमाछे, ते उंचपणे तीर्थंकरनी काया प्रमाणेछे एटले लघु सात हाथ प्रमाण अने उत्कृष्ट पांचशे धनुष प्रमाणे शरीर वाली एवी प्रतिमां थापी रहेछे ते भगवंतनी प्रतिमाने पूठें प्रत्येकें प्रत्येकें छत्र धारकनी प्रतिमां कहीछे ते लीला सहीत छत्र धरती थकी रहेछे तथा ते जिनप्रतिमाने बे पासें प्रत्येकें प्रत्येकें बे चामर धारकनी प्रतिमाछे ते चामरने लीला सहीत वींजती थकी रहेछे तथा ते प्रत्येक प्रतिमाने आगलें बे बे नागदेवतानी प्रतिमा, बे बे यक्षदेवतानी प्रतिमा, बे बे भूत देवतानी प्रतिमा, बे बे कूंमधार देवविशेषनी प्रतिमा एवी आठ प्रतिमा ते विनयें करी नमती पगें लागती थकी हाथ जोडती थकी एवीथकी रहेछे ते प्रतिमा सर्व रत्नमयछे ते जिनप्रतिमाने आगलें १०८ घंटछे, १०८ चंदने चर्चित कलशछे, १०८ भृंगार, १०८ आरीसा, १०८ थाल. १०८ पात्री, १०८ सुप्रतिष्ठक भाजन विशेष, १०८ मनोगुलिका पीठ विशे

प, १०७ वात करंमक नृंगार विशेष, १०७ मनोहर रत्न करंमक १०७ हयकंठक नाज न,यावत् १०७ वृषन्न कंठक नाजन विशेष १०७ फूलनी चंगेरी,यावत् १०७ पूंजणीनी चंगेरी, १०७ यावत् फूलना समूह, १०७ सुगंधि तेलना माबडा, १०७ धूपकडुंबा इत्यादिक पूजानां उपकरण थाप्या थका रहेले, ते सिद्धायतन उपर घणा आठ आठ मंगलीक ले,लत्रातिलत्र ले, ते सिद्धायतननां शिखर शोल प्रकारनां रत्ने करी शोनित ले.

ते सिद्धायतनने इशानकूंणे एक महोटी उपपात सन्ना कहीले ते विजय देवताने उपजवानुं स्थानकले, ते जेवी सोधर्मा सन्ना कही तेवीज ए सन्ना पण जाणवी.

ते उपपात सन्नाने इशानकूंणे एक महोटो इहले ते साढाबार योजन लांबपणे ले, सवाल योजन पोहोल पणे ले, दश योजन उंमो ले ते इह पद्मवरवेदिका तथा वनखंमे सहीत ले, ते जेवो नंदा पुष्करणीनो वर्णन सूत्रोमां कह्युंले तेवोज शोना आश्रयी एनुं पण वर्णन जाणवुं ते इहने इशानकूंणे एक महोटी अनिषेक सन्ना कही ले, तेजेवी सोधर्मी सन्ना कही तेवी जाणवी तेना मध्यनागें एक महोटी मणिपीठिका ले, ते एक योजन लांबी पोहोली अने अर्द्ध योजन जाड पणेले,ते मणिपीठिका उपरें एक मोहोटो सिंहासनले, तेने विषे विजय देवताना अनिषेक करवानां नांम थाप्या थका रहेले,

ते अनिषेक सन्नाने इशानकूंणे एक महोटी अलंकार सन्ना कहीले ते अनिषेक सन्ना सरखी जाणवी. तिहां विजय देवता आनुषण पहेरे ले जिहां विजय देवतानां घणा उत्तम आनुषणनां ठाम आनुषणे नर्यां थकां तिहां थाप्यां थकां रहेले,

ते अलंकार सन्नाने इशानकूंणे एक महोटी व्यवसाय सन्नाले, जिहां विजय देवता पुस्तकरत्न वांचेले ते व्यवसाय सन्ना अलंकार सन्ना सरखी जाणवी. तिहां विजय देवतानुं पुस्तकरत्न थाप्युं थकुं रहे ले, ते पुस्तकरत्ननां अरिष्टरत्नमय पाठां ले,रूपामय पानाले, अरिष्टरत्नमय अक्षरले, राता सुवर्णमय दोरा ले जेणे करी पुस्तक परोइयें. तथा नवनवी मणिमय गांठिले, गांठे पानुं नीकले नही, वैमूर्यरत्नमय स्याहीनो खडीउले ते खडीयाने राता सुवर्णनी शांकलले, ते खडीयानुं अरिष्टमय ढांकणुले, ते खडीया मध्ये अरिष्टरत्नमय स्याही ले, वज्ररत्नमय लखवानी लेखणले, अरिष्टरत्नमय अक्षरले, ते पुस्तकमां केवल धर्मशास्त्र ले, ए सर्व पांचे सन्नानुं चित्र एकसाथेंज आलेख्युं ले.

ते व्यवसाय सन्नाने इशानकूंणे एक महोटी नंदापुष्करणी कही ले तेनो वर्णन इहनी पेरें जाणवुं ते नंदापुष्करणीने इशानकूंणे एक महोटो बलिपीठ ले जिहां बलिपिंम मूके ते बलिपीठ उटलारूप जाणवुं ते बे योजन लांबो अने पोहोलो ले तथा एक योजन जाडपणे ले,आंहीं सुधी विजय राजधानीनो अधिकार संक्षेपथी पूरण थयुं.

हवे ए विजय देवता जेवारें उपजेले तेवारें श्रीजिनप्रतिमानी पूजा प्रमुख केवा के

वा प्रकारनी शुन करणीउं करेछे तेनो अधिकार श्रीजीवाभिगम सूत्रमां सविस्तर ल खेलुंछे तिहांथी जाणी लेवुं ए जंबुद्वीपनां प्रथम द्वारनुं अधिकार संक्षेपथी कह्युं.

हवे विजयंत नामा बीजा द्वारनुं अधिकार कहेछेः—मेरू पर्वतने दक्षणदिसें पीस्ता लीश हजार योजन वेगलूं जंबूद्वीपनी दक्षण दिसिने अंते विजयंत नामे बीजुं द्वारछे तेनुं अधिकार सर्वे विजयद्वारनी परें जाणवुं परंतु एटलुं विशेष जे एनुं अधिकारी वि जयंत नामे देवताछे तेनी राजधानी दक्षण दिसें विजया राज्यधानी जेवी छे.

हवें जयंत नामा त्रीजा द्वारनुं अधिकार कहेछेः—मेरू पर्वतनी पश्चिमदिसें पीस्ता लीश हजार योजन वेगलुं जंबुद्वीपने पश्चिमदिसिने अंते सीतोदा महानदीनी उपरें जयंत नामे त्रीजुं द्वारछे तेनुं अधिकार पण विजयद्वार सरखुं जाणवुं. इहां जयंतनामे देवता छे तेनी राजधानी पश्चिमदिसें विजयराजधानीनां सरखी जाणवी.

हवे चोथुं अपराजित नामे द्वार कहेछेः—मेरू पर्वतने उत्तरदिसें पीस्तालीश हजार योजन वेगलुं जंबू द्वीपनी उत्तरदिसीने अंते अपराजितनामें चोथुं द्वार कह्युंछे ते वि जयद्वार सरखुं जाणवुं इहां अपराजित देवताछे तेनी राजधानी पूर्वोक्त द्वीपनी उत्तर दिसें विजयराजधानी सरखी जाणवी. ए चारे दरवाजानां चारे देवतानी राजधानी अ हींथी असंख्यातमें जंबूद्वीपें चार दिसायें जाणवी. ए चारे दरवाजानां स्वामी तथा सामानिक देवता तेनुं आयु एक पल्योपमनुं जाणवुं. इति द्वार वर्णन समाप्त.

अथ नरतक्षेत्र वर्णन प्रारंन

हवे ए जंबुद्वीपमां नरतक्षेत्र नामे वर्ष (वास) कया स्थानकेछे ते कहेछे चुल्लहेम वंत नामे वर्षधर पर्वत तेथकी दक्षिणदिसें अने दक्षणदिसें जे लवण समुद्र तेथकी उ त्तरदिसें तथा पूर्वदिसें जे लवण समुद्र तेथकी पश्चिमदिसें अने पश्चिमदिसें जे लवण समुद्र तेने पूर्वदिसें ए अवकासने वच्चें जंबुद्वीपने विषे नरतनामे क्षेत्रछे जेने विषे शूका वृक्षना ठूंग घणाछे तथा बोरडी बावल प्रमुखनां कांटा घणाछे तथा उंची नीची विष म नूमि घणी छे तथा डुर्गमस्थानक घणाछे, पर्वत घणाछे, नैरवजांप घणाछे, पाणीना प्रपात घणाछे, पाणीना निऊरणा घणाछे, खाड घणीछे, गुफा, नदी, द्रह, रूंख, गुछा, गुल्म, नवमालिका प्रमुख पद्मलतादि वेलडी, कोहली, अटवी, उजाड, स्वापद हिंसक जीव व्याघ्रादिक, चोर, तस्कर, स्वदेशथी उपना उपद्रव, परकटकनां करेलां उपद्रव, डुर्निक्ष, निक्षाचरने निक्षाडुर्लन नले, डुकाल, पाखंमी जिनमार्गना उत्थापक, कृपण, लोनी, सातइति, इत्यादिक सर्वे वाना जाणवां तथा राजा पण लोकने बहु डुःखना दे नार, रोग घणा, संक्लेष घणा, वारंवार संक्षोन, दंम, आकराकर प्रमुख घणाछे.

ए पूर्वदिसें अने पश्चिमदिसें लांबुछे, उत्तर अने दक्षणे पहोलुंछे, उत्तरदिसें पल्यंकने संस्थाने संस्थितछे, दक्षणदिसें धनुषना पुठला नागने संस्थाने संस्थितछे तथा त्रिधा पूर्वे दक्षण अने पश्चिमे लवण समुद्रने फरस्योछे तथा जे गंगा अने सिंधु ए बे महोटी नदीयें करी तथा वैताढ्य पर्वतें करी छनागें वेहेचाणु छे एटले एना छ खंम थया छे.

जंबूद्वीपनो विष्कंन एक लाख योजननो छे तेने एकसोने नेवुंमे नागे एटले (५२६) योजन अने एक योजनना ओगणीश नाग करीयें एवा छ नाग उपर एटलुं विष्कंन पणे नरत क्षेत्र छे एनां मध्य नागने विषे वैताढ्य पर्वतछे ते नरत क्षेत्रने एक दक्षणार्द्ध नरत अने बीजो उत्तरार्द्ध नरत. एवा बे नागें वेंचतो थको रह्यो छे.

तिहां वैताढ्य पर्वतने दक्षणदिसें जे लवण समुद्र तेने उत्तरदिसें, अने पूर्वदिसें जे लवण समुद्र तेने पश्चिमदिसें अने पश्चिमदिसें, जे लवण समुद्र तेने पूर्वदिसें दक्षणार्द्ध नरतछे ते पूर्वदिसें पश्चिमदिसें लांबो अने उत्तर दक्षणदिसें पहोलो अर्द्ध चंद्रने आकारे छे, पूर्व, दक्षण अने पश्चिम ए त्रण दिसें लवण समुद्रने फरस्योछे, गंगा अने सिंधू ए बे महोटी नदी तेणे त्रण नागें वेहेच्युंछे, ते बशें आडत्रीश योजन अने एक योजननां ओगणीश नाग करीयें तेवा त्रण नाग उपर, एटलुं पहोलपणे दक्षणार्द्ध नरतछे, दक्षणार्द्ध नरतने अंते उत्तरदिसें धनुषना पणछनी परे जीव्हाछे ते पूर्वपश्चिम लांबी बे छेहेडे लवण समुद्रने फरसी रहीछे ते जीवा पूर्वपश्चिमें लांबपणे ए७४८ योजन अने उपर उगणीसीया बार नाग छे ते जीवानुं धनुपृष्ट दक्षणदिसि ए७६६ योजन उपर उगणीसीयो एक नाग कांइक जाजेरो परिधिपणे कह्युं छे ए नरतार्द्धनुं चित्र जोवुं.

हवे दक्षण नरत मांहे अयोध्यानगरीनुं प्रमाण कहेछे.

दक्षणार्द्ध नरतनां मध्यखंमनी वच्चमां बार योजन लांबी अने नव योजन पोहोली एवी अयोध्या (विनिता) नगरीछे ते लवण समुद्रथी अने वैताढ्य पर्वतथी एकशो चौद योजन अने उपर एक योजननां ओगणीश नाग करीयें तेवा अगीआर नाग एटले आंतरेछे केमके दक्षणार्द्ध नरतनां मध्य खंमनो विस्तार बशें आडत्रीश योजन अने त्रण कलाछे तेमांथी अयोध्यानो विस्तार नव योजन काहाडीयें तेवारें बशें उगणत्रीश योजन अने त्रण कला रहे तेनुं अर्द्ध करीयें तेवारे ११४ योजन उपर अगीआर कला थाय तेटली लवणसमुद्र अने वैताढ्य पर्वतथी वेगली अयोध्या नगरीजाणवी.

हवे मागधादि त्रण तीर्थ कया स्थानके छे ते कहे छे.

चक्रवर्त्तिने वसवर्त्ति नरत, ऐरवत अने बत्रीश विजय मली चोत्रीश क्षेत्र चक्रवर्त्तिनां छे तेनी जे गंगा, सिंधू तथा रक्ता अने रक्त वती ए चार नरत ऐरवतनी नदीउं तेने समुद्रमां प्रवेश करतां तथा विजयनी नदीउंने सीतोदा तथा सीतानदी मांहे प्रवेश क

रतां एटले जे स्थानके नरत तथा ऐरवतनी नदीउ समुद्रमां प्रवेस करे तथा जे स्थानकें बत्रीश विजयनी नदीउ सीतानदी अने सीतोदानदी मांहे प्रवेश करे ते स्थानक विशेष नदी सागर संगम उत्तम स्थानक कहीयें तिहां दक्षणार्द्ध नरतमां एक पूर्वदिसियें मागध तीर्थछे बीजुं पश्चिमदिसियें प्रनास तीर्थछे तथा ए बे तीर्थनां वच्चमां एक वरदाम तीर्थ छे एरीतें नरत क्षेत्रमां त्रण तीर्थ छे तेमज ऐरवतमां तथा बत्रीश विजयमां पण प्रत्येकें त्रण त्रण त्रीर्थ गणतां सरवाले जंबुद्वीपमां एकशोने बे तीर्थ छे.

॥ अथ वैताढ्यापर्वत वर्णन ॥

हवे नरतक्षेत्रमां पूर्व पश्चिमें लांबो अने उत्तर दक्षणे पोहोलो वैताढ्यानामे पर्वतछे ते पच्चीश योजन उंचो छे अने पच्चीश योजननो चोथो नाग सवाछ योजन नूमी मांहे छे ए अढीद्वीपमां एक मेरुविना बीजा सर्वपर्वत जेटला उंचपणे होय तेनो चोथो नाग धरतीमां होय तथा पच्चाश योजन पोहोल पणेछे तेनी बाह पूर्व पश्चिमदिसें ४७७ योजन अने उपर एक योजननां ओगणीसीया शोल नाग लांबपणे छे, तेनी जीवा पणछ उत्तरदिसें १०७२० योजन उपर उंगणीसीया बारनाग लांबपणे छे तथा तेनुं धनुष्टष्ट दक्षणदिसें १०७४३ योजन उपर उंगणीसीया पंदरनाग परिधिपणे रुचकनामे जे ग्रीवानुं आनरण तेवा संस्थाने छे ए पर्वत सर्व रजतमय रूप्य मयछे अने स्फाटिकनी परे सुकोमल छे यावत् जोतां थकां प्रतिबिंब देखाय माटे प्रतिरूप छे.

ते दक्षण अने उत्तर ए बे पासें बे पद्मवर वेदिकायें करी अने बे वनखंमे करी सर्वदिसें चोकफेर वींटयो छे, तें पद्मवरवेदिका अर्द्ध योजन उंचपणें अने पांचशें धनुष्य पोहोल पणे छे तथा पर्वत जेटली लांब पणे छे अने वनखंम कांइक उणा बे योजन पोहोल पणे छे तथा पद्मवरवेदिका जेटला लांबा छे, तेनुं काला वर्णे काली कांति छे,

वैताढ्यने पूर्व पश्चिमदिसें बे गुफाछे ते उत्तर दक्षणे पच्चाश योजन लांबीछे, अने पूर्वपश्चिमें मांहेली कोरे पोहोली बार योजन छे, आठ योजन उंच पणे छे, तथा आठ योजन उंचा अने चार योजन पोहोला तथा चार योजन प्रवेश एवा दक्षण अने उत्तरने सन्मुख वज्ररत्नमय निवड एवां बे बारणा तेना कपाटें करी ढांकी छे तथा निरंतर अंधकार अने तिमिश्र तेणेकरी सहीतछे, चंद्र सूर्यादिकनी ज्योति रहीत मार्गछे एवी पश्चिमदिसें तिमिश्रागुफा अने पूर्वदिसें खंमप्रपाता मली बे गुफाछे तेना विषे कृतमाल अने नृत्यमाल एवे नामे बे देवता एक पल्योपमना आउखावाला वसेछे तथा ते गुफाने विषे उमगा अने निमगा एवी बे नदीछे ते त्रण त्रण योजन विस्तारेछे ते नदीउ, पर्वत मांहेला जे महोटा पाषाण ते मांहेथी निकलीने महोटी नदी जे गंगा- सिंधु प्रमुख छे ते मांहे गमन

करेछे ते बे नदी वच्चे वैताढ्यना पच्चाश योजन मांहेला पच्चीशमुं अने छवीशमुं ए बे यो जननुं आंतरुं छे. ते गुफानी बेहु बाजुनी जींतने विषे चक्रवर्त्ति जे थाय ते बे बे साहामा सूर्यमंमल सरखा कांकिणि रत्ननां उंगणपच्चाश मांमला अजुआलुं करवा माटें लखे छे ते प्रत्येक मंमल उत्सेधांगुलें करी पांचशें धनुष्यनुं छे तथा वली ए गुफा प्रमाणांगुलें करी बार योजन पोहोली छे तथा एकेका मांमलाने वचमां एकेक योजननुं आंतरुंछे तथा मांम लाने नीचे अने उपर सर्व थइने आठ योजन गुफा उंचीछे तेमाटे पोहोलपणे बार योजन प्रकाश करेछे अने मंमलने आंतरे एकेक योजन प्रकाश करेछे तथा उंच पणे आठ योजन प्रकाश करेछे ए मांमला बन्ने पासें एकेक योजनने आंतरे गोमुत्रिकाने आकारें करतां एक जींते चोवीश मंमल थाय अने बीजी जींते पच्चीश मंमल थाय तेमां सिंधुनदी पा सें तिमिश्रा नामे गुफाछे ते गुफामांहेथी चक्रवर्त्ति दक्षण मध्य खंमथी उत्तर मध्य खंम मां प्रवेश करेछे अने उत्तर मध्य खंमने साधी त्यांथी पाछो वलतां रुषजकूटने विषे पो तानुं नाम लखीने गंगानदी पासें जे बीजी खंमप्रपाता नामे गुफाछे तेमांथी थइने द क्षण जरत मांहे पाछो वले तथा चक्रवर्त्ति जिहां सुधी जीवतो होय तिहां सुधी ते गु फाउंना कमाड उघाडा रहेछे.

हवे पूर्वोक्त वनखंमने बे पासें दश दश योजन उंचा जइयें तिहां बे विद्याधरनी श्रेणीछे ते दश दश योजन पहोल पणे छे अने पर्वत जेटली लांब पणे छे ते बे पासें बे पद्मवरवेदिका अने बे वनखंमे करी चोकफेर वींटीछे एनुं लंबाइ तथा पहोलाइ आदि कनुं वर्णन पूर्वली परे जाणवुं तिहां दक्षणदिसीनी जे विद्याधरनी श्रेणी छे तेने विषे वि द्याधरोना गगनवल्लज प्रमुख पच्चास महोटा नगर राजधानी रूपछे अने उत्तर दिसीनी जे विद्याधरनी श्रेणीछे तेने विषे विद्याधरोनां रथनुपुर चक्रवाल प्रमुख साठ महोटा नग रावास राजधानी रूपछे एरीतें बे श्रेणीनां मली एकसोने दश नगर थाय ते नगरने विषे देशनी राजधानी सहित विद्याधरनां राजा महोटा बलवंत वशेछे.

वली ते विद्याधरनी श्रेणीना जूमिजाग थकी वैताढ्य पर्वतने बे पासें दश दश योजन उंचा जइयें तेवारें आजियोगिक देवतानी बे श्रेणी आवे ते पण दश दश योजन प होली अने पर्वत सरखी लांब पणे छे ते बेहु श्रेणी बने पासें बे पद्मवरवेदिका अने बे वनखंमेकरी वींटीछे तेनुं वर्णन पूर्वपरें जाणवुं ते जूमिमां घणा व्यंतरिक देवता अने देवांगना यावत् विचरेछे ते श्रेणीने विषे सौधर्मेंद्रनां चार लोकपाल तेना आजियोगि क एटले आज्ञाकारी किंकर देवोना घणा जवन छे ते सर्व जवन बाहेर गोलाकारे छे, मांहे समचतुरस्र छे, यावत् अपत्सराना समूहें करी संकीर्ण छे तेमां ते देवता वसे छे तेनुं एक पल्योपमायु छे.

वली ते आभियोगिक देवोनी श्रेणी थकी पांच पांच योजन ऊंचा जइयें तिहां वैताढ्य पर्वततुं शिखरतलुं छे ते दश योजन पोहोल पणे अने पर्वत जेटलो लांब पणेछे ते शिखर तल एक पद्मवरवेदिकायें करी अने एक वनखंमे करी सर्व दिशियें चोक फेर वींटेलुं छे ते शिखर तलने विषे घणा व्यंतरिक देवता देवांगनाओ जोगजोगवता थका विचरेछे.

वैताढ्य पर्वतने विषे नव कूट एटले शिखरछे तेना नाम कहेछे:–१ सिद्धायतनकूट, २ दक्षणार्द्धजरत नामा कूट, ३ खंमप्रपात गुफा कूट, ४ माणिजद्रकूट, ५ वैताढ्य कूट, ६ पूरणजद्रकूट, ७ तिमिश्रागुफा कूट, ७ उत्तरार्द्धजरत कूट ए वैश्रमणकूट, ए नव कूटछे.

तेमां प्रथम सिद्धायतनकूट सवाछ योजन ऊंचपणे छे अने मूलमां सवाछ योजन पोहोल पणे वचमां कांइक ऊणा पांच योजन पोहोलपणेछे, उपर कांइक जाजेरा त्रण योजन पोहोल पणे छे मूलमां पोहोलो वच्चमां सांकडो अने उपर पातलो गायना पूंछने संस्थाने छे सर्व रत्नमय छे ते कूट पद्मवरवेदिका अने वनखंमें करी चोफेर वींटचुंछे तेना मध्यजागने विषे शाश्वती अरिहंतनी प्रतिमानुं आयतन एटले देहेरुंछे, ते एक कोश लांब पणे, अर्द्धकोश पोहोल पणे अने चौदशे ने चालीश धनुष ऊंच पणेछे तेने विषे रूषज, चंद्रानन, वारिषेण अने वर्द्धमान ए चार नामे तीर्थंकरनी एकशोने आठ प्रतिमाछे.

ए प्रथमना सिद्धायतना कूटनी पश्चिमदिसें बीजो दक्षणार्द्धजरत नामे कूट छे तेपण सिद्धायतन कूट जेटलुं ऊंचो पोहोलोछे ते प्रासादना मध्यजागमां एक प्रलादावतंसकछे ते एक कोश ऊंचो अने अर्द्धकोश पोहोल पणेछे तेना मध्यजागमां एक पीठिका (चोतरोछे) ते पांचसें धनुष लांबो पोहलो अने अढीसें धनुष जाड पणेछे तेनां उपर एक बेसवानुं सिंहासन छे ते हजारो गमे जद्रासनादिके परवस्युं छे ए कूटने विषे दक्षणार्द्धजरतनामे देवता महाकृद्धिवंत एक पल्योपमायुनी स्थितियें वसेछे तेने चार हजार सामानिक देव, चार अग्रमहिषी परिवार सहीत, त्रण परषदा, सात कटक, सात कटकनां स्वामी, चारे दिसीयें चार चार हजार ऊजारहे एवा शोल हजार आत्मारक्षक देवता, दक्षणार्द्ध जरतक्षेत्रनुं दक्षणार्द्ध राजधानीनुं तथा अनेरा पण घणा देवता देवांगनानो आधिपत्य पणु पालतो थको यावत् विचरेछे ए नवे कूट सवाछ योजन ऊंचा जाणवा.

चोथुं माणिजद्रकूट, पांचमुं वैताढ्य कूट अने छठुं पूरणजद्रकूट ए त्रण सुवर्णमय छे शेष छ कूट रत्नमय छे तेमां तिमिश्रागुफा कूटमां कृतमाल देवता वसेछे तथा खंमप्रपातगुफा कूटमां नृतमाल देवता वसेछे एरीतें बे कूटनां देवताना नाम कूटने नामे नथी अने शेष छ कूटनां देवतानां नाम कूटने नामे छे जे कूटनो नाम तेजनाम तेमांवसनार देवतानो पण होय ए सर्व देव एक पल्यायु वाला जाणवा ए सर्व मेरू पर्वतने दक्षण दिसें तिर्छी असंख्याता द्वीप समुद्र व्यतिक्रमी जइयें तिहां बीजो जंबूद्वीप छे तेने बार

हजार योजन अवगाहीयें तिहां ए सर्वे देवोनी राजधानी विजया राजधानी सरखी जाणवी

तथा वैताढ्य गिरिकुमार नामे देवता महर्द्धिक एक पल्योपमायु वालो इहां वसेछे तेथी ए पर्वतनुं पण वैताढ्य एवुं नाम शाश्वतो छे.

हवे उत्तरार्द्ध नरतनामे वास क्षेत्र पूर्व पश्चिमें लांबो उत्तर दक्षणे पोहोलो पल्यंकने संस्थाने संस्थितछे ते गंगा अने सिंधु ए बे महोटी नदी तेणे करी त्रण नागें वेहेंचाणुछे २३८ योजन उपर ओगणीसीया त्रण नाग एटलुं पोहोल पणेछे, एनी बाह पूर्व पश्चिमदिसें १८९२ योजन उपर ओगणीसीया साडासात नाग एटली लांब पणे छे एनी जीवा पणछनी परें उत्तरदिसें १४४७१ योजन उपर ओगणीसीया छ नाग कांइक ओणा एटली लांब पणे छे ते जीवानुं धनुपृष्ट दक्षणदिसें १४५२८ जयोन उपर ओगणीसीया अगीआर नाग एटलुं परधि पणेछे.

हवे ए उत्तरार्द्धनरतमां ऋषनकूटनामे पर्वतछे ते कहेछेः—गंगाप्रपातकूंमनी पश्चिमदिसें अने सिधुंकूंमनी पूर्वदिसें चुल्लहिमवंत पर्वतना दक्षण पासानां नितंब पासें ऋषनकूटछे ते आठ योजन धरतीमां ऊंच पणे, मूलमा आठ योजन पोहोल पणे, वचमां छ योजन पोहोल पणे अने उपर चार योजन पोहोल पणे तथा पाठांतरे मूलमां बार योजन पोहोल पणे मध्यमां आठ योजन पोहोलो अने उपरे चार योजन पोहोलो छे गायना पूंछने संस्थाने सर्व जंबूनंद रत्नमय श्यामवर्णेछे एमां पूर्वली परे नवन प्रमुख जे छे तेशास्त्रांतरथी जाणवा इहां ऋषननामे महर्द्धिक देवता वसेछे तेनो परिवार तथा एनुं अनेरे जंबूद्वीपें राजधानीनो स्थानक यावत् पूर्वपरे सर्व कहेवुं.

ए नरतक्षेत्रने विषे नरत नामे देवता महा ऋद्धिवंत सामानीकादिक देवोयें सहीत एक पल्योपमने आउखे वसेछे तेथी एनुं नरत वर्ष एवुं शाश्वतुं नामछे.

हवे चुल्ल हेमवंत नामे वर्षधर पर्वत कहेछेः—

नरत क्षेत्रने उत्तर दिसें नरतक्षेत्रनी सीमा रूप ए चुल्ल हेमवंत पर्वत छे ते एकशो योजन ऊंच पणे छे अने पच्चीश योजन धरती मांहेछे तथा १०५२ योजन उपर ओगणीसीआ बार नाग एटेलो पोहोल पणे छे,तेनी बाहा पूर्व पश्चिमें प्रत्येकें ५३५० योजन उपर ओगणीसीया साडा पंदर नाग छे, तेनी जीवा पणछ उत्तर तरफ पूर्व पश्चिमें लांबी २४९३२ योजन ओगणीसीयें अर्द्धनागें कांइक ओणो एटली लांब पणे छे तेनुं धनुपृष्ट दक्षणे २५२३० योजन उपर ओगणीसीया चार नाग परिधि पणेछे ए रुचक नामा वस्तुने संस्थाने रह्यो छे, सर्व सुवर्ण मयछे, बे पासें बे पद्मवरवेदिका अने बे वनखंमे करी वींट्योछे ए पर्वत उपर घणा व्यंतरिकदेव देवांगनाओ विचरे छे इत्यादि कहेवुं.

ए पर्वतना मध्यनागे एक महोटो पद्मद्रह नामें द्रहछे ते पूर्वपश्चिम लांबपणे एक हजार योजनछे अने उत्तर दक्षण पोहोलो पांचशो योजन छे, दश योजन उंमोछे, ए द्रहनुं रूपामयतटछे, ते द्रह एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंमे करी चोकफेर वींटयो छे,

ते द्रहना मध्यनागें एक महोटुं कमलछे ते एक योजन लांबो अने पोहोलो छे तथा अर्द्ध योजन जाडो छे एटले बे कोश पाणी थकी उंचो छे अने दश योजन उंमो पाणी मांहे छे एम पाणीमां तथा उपर मली साडा दश योजन उंचो छे ते कमल एक जगतीयें करी चोकफेर वींटेलो छे ते जगती पाणी उपरे जंबूद्वीपनी जगती प्रमाणे छे गवाक्ष गोख पण तेज रीतें जाणवा ए कमलनो वज्ररत्नमय मूलछे, अरिष्टरत्नमय कंद छे, वैडूर्यरत्न मय नालछे, वैडूर्यरत्नमय बाहेरना पत्रछे, कांइक राता सुवर्णमय मांहेली पांखडी छे, रातासुवर्णमय केशराछे, विविध प्रकारनां मणिमय कमलनां बीज नागछे, कनकमय कर्णिका मोमोछे, ते कर्णिका अर्द्धयोजन लांबी तथा पोहोलीछे, एक कोश उंची छे.

ते कर्णिकानी उपरली नूमिना मध्यनागे एक महोटो नवनछे, ते एक कोश लांबो, अर्द्धकोश पोहोलो, चौदशेंचालीश धनुष्य उंचो, अनेक सइकडा गमे थांने करी सहीतछे, ते नवनने त्रणदिसेंयें त्रण बारणाछे ते प्रत्येक पांचशे धनुष उंचाछे, अढीशें धनुष पोहोला छे, स्वेत प्रधान कनकमय थूनिका चोतरो तेणे करी सहीतछे, यावत् वनमाला पर्यंत इहां कहेवुं ते नवनना मध्य नागे एक मणिमय पीठिका छे ते पांचशें धनुष लांबी पोहाली अने अढीशें धनुष जाडीछे तेना उपर श्रीदेवीनी सय्या छे.

ते कमलनी प्रथम परिधियें बीजा एकशोने आठ कमलछे ते सर्वे उंच पणे तथा लांब पणे पूर्वोक्त मूल कमलथी अर्द्ध नागेछे एटले एक कोश पाणीथी बाहेर छे अने दश योजन पाणीमांहे छे मली सवादश योजन उंचाछे अर्द्ध योजन लांबा पोहोला छे, तेनी पण कर्णिका प्रमुख तथा नुवनादिक सर्वे ते मूल कमलनी पेरे अर्द्ध प्रमाण वाला जाणवा. ए एकशोने आठ कमलने विषे श्रीदेवीना नूषणादिक वस्तु रहेछे.

हवे बीजी परिधिना कमलछे ते मुख्य कमलथी वायव्यकूंणे, उत्तर दिसियें अने इशान कूंणे ए त्रण दिसायें श्रीदेवीनी चार हजार सामानिक देवीना चार हजार कमल छे तथा पूर्वदिसें श्रीदेवीनी चार महत्तरिका गुरू स्थानीय देवीना चार कमलछे तथा अग्निकूंणे मांहेली परखदानां आठ हजार देवतानां आठ हजार कमलछे तथा दक्षणदिसियें वचली मध्य परखदानां दश हजार देवतानां दश हजार कमलछे तथा नैरुतकूंणे बाहेरली परखदानां बार हजार देवतानां बार हजार कमलछे तथा पश्चिमदिसें सात कटकना स्वामीनां सात कमलछे, एरीतें ए बीजा वलयमां सरवाले ३४०११ कमल छे.

हजार योजन अवगाहीयें तिहां ए सर्व देवोनी राजधानी विजया राजधानी सरखी जाणवी
तथा वैताढ्य गिरिकुमार नामे देवता महर्द्धिक एक पल्योपमायु वालो इहां वसेछे
तेथी ए पर्वतनुं पण वैताढ्य एवुं नाम शाश्वतो छे.

हवे उत्तरार्द्ध भरतनामे वास क्षेत्र पूर्व पश्चिमें लांबो उत्तर दक्षणे पोहोलो पल्यंकने संस्थाने संस्थितछे ते गंगा अने सिंधु ए बे महोटी नदी तेणे करी त्रण भागें वेहेंचाणुछे २३८ योजन उपर ओगणीसीया त्रण भाग एटलुं पोहोल पणेछे, एनी बाह पूर्व पश्चिमदिसें १८९२ योजन उपर ओगणीसीया साडासात भाग एटली लांब पणे छे एनी जीवा पणछनी परें उत्तरदिसें १४४७१ योजन उपर ओगणीसीया छ भाग कांइक ओणा एटली लांब पणे छे ते जीवानुं धनुपृष्ठ दक्षणदिसें १४५२८ जयोन उपर ओगणीसीया अगीआर भाग एटलुं परधि पणेछे.

हवे ए उत्तरार्द्धभरतमां ऋषभकूटनामे पर्वतछे ते कहेछेः—गंगाप्रपातकुंडनी पश्चिमदिसें अने सिधुंकुंडनी पूर्वदिसें चुल्लहिमवंत पर्वतना दक्षण पासानां नितंब पासें ऋषभकूटछे ते आठ योजन धरतीमां उंच पणे, मूलमा आठ योजन पोहोल पणे, वच्चमां छ योजन पोहोल पणे अने उपर चार योजन पोहोल पणे तथा पाठांतरे मूलमां बार योजन पोहोल पणे मध्यमां आठ योजन पोहोलो अने उपरें चार योजन पोहोलो छे गायना पूंछने संस्थाने सर्व जंबूनंद रत्नमय श्यामवर्णेछे एमां पूर्वली परे भवन प्रमुख जे छे तेशास्त्रांतरथी जाणवा इहां ऋषभनामे महर्द्धिक देवता वसेछे तेनो परिवार तथा एनुं अनेरे जंबूद्वीपें राजधानीनो स्थानक यावत् पूर्वपरे सर्व कहेवुं.

ए भरतक्षेत्रने विषे भरत नामे देवता महा ऋद्धिवंत सामानीकादिक देवोयें सहीत एक पल्योपमने आउखे वसेछे तेथी एनुं भरत वर्ष एवुं शाश्वतुं नामछे.

हवे चुल्ल हेमवंत नामे वर्षधर पर्वत कहेछेः—

भरत क्षेत्रने उत्तर दिसें भरतक्षेत्रनी सीमा रूप ए चुल्ल हेमवंत पर्वत छे ते एकशो योजन उंच पणे छे अने पच्चीश योजन धरती मांहेछे तथा १०५२ योजन उपर ओगणीसीआ बार भाग एटेलो पोहोल पणे छे,तेनी बाहा पूर्व पश्चिमें प्रत्येकें ५३५० योजन उपर ओगणीसीया साडा पंदर भाग छे, तेनी जीवा पणछ उत्तर तरफ पूर्व पश्चिमें लांबी २४९३२ योजन ओगणीसीयें अर्द्धभागें कांइक ओणो एटली लांब पणे छे तेनुं धनुपृष्ट दक्षणे २५२३० योजन उपर ओगणीसीया चार भाग परिधि पणेछे ए रुचक नामा वस्तुने संस्थाने रह्यो छे, सर्व सुवर्ण मयछे, बे पासें बे पद्मवरवेदिका अने बे वनखंडे करी वींट्योछे ए पर्वत उपर घणा व्यंतरिकदेव देवांगनाउ विचरे छे इत्यादि कहेवुं.

ए पर्वतना मध्यनागे एक महोटो पद्मद्रह नामें द्रहछे ते पूर्वपश्चिम लांबपणे एक हजार योजनछे अने उत्तर दक्षण पोहोलो पांचशो योजन छे, दश योजन उंडोछे, ए द्रहनुं रूपामयतटछे, ते द्रह एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंडे करी चोकफेर वींटयो छे,

ते द्रहना मध्यनागें एक महोटुं कमलछे ते एक योजन लांबो अने पोहोलो छे तथा अर्द्ध योजन जाडो छे एटले बे कोश पाणी थकी उंचो छे अने दश योजन उंडो पाणी मांहे छे एम पाणीमां तथा उपर मली साडा दश योजन उंचो छे ते कमल एक जगतीयें करी चोकफेर वींटेलो छे ते जगती पाणी उपरे जंबूद्वीपनी जगती प्रमाणे छे गवाक्ष गोख पण तेज रीतें जाणवा ए कमलनो वज्ररत्नमय मूलछे, अरिष्टरत्नमय कंद छे, वैडूर्यरत्न मय नालछे, वैडूर्यरत्नमय बाहेरना पत्रछे, कांइक राता सुवर्णमय मांहेली पांखडी छे, रातासुवर्णमय केशराछे, विविध प्रकारनां मणिमय कमलनां बीज नागछे, कनकमय कर्णिका मोटोछे, ते कर्णिका अर्द्धयोजन लांबी तथा पोहोलीछे, एक कोश उंची छे.

ते कर्णिकानी उपरली नूमिना मध्यनागे एक महोटो नवनछे, ते एक कोश लांबो, अर्द्धकोश पोहोलो, चौदशेंचालीश धनुष्य उंचो, अनेक सइकडा गमे थांने करी सहीतछे, ते नवनने त्रणदिसेंयें त्रण बारणाछे ते प्रत्येक पांचशे धनुष उंचाछे, अढीशें धनुष पो होला छे, स्वेत प्रधान कनकमय थूनिका चोतरो तेणे करी सहीतछे, यावत् वनमाला पर्यंत इहां कहेवुं ते नवनना मध्य नागे एक मणिमय पीठिका छे ते पांचशें धनुष लांबी पोहाली अने अढीशें धनुष जाडीछे तेना उपर श्रीदेवीनी सय्या छे.

ते कमलनी प्रथम परिधियें बीजा एकशोने आठ कमलछे ते सर्व उंच पणे तथा लांब पणे पूर्वोक्त मूल कमलथी अर्द्ध नागेछे एटले एक कोश पाणीथी बाहेर छे अने दश यो जन पाणीमांहे छे मली सवादश योजन उंचाछे अर्द्ध योजन लांबा पोहोला छे, तेनी पण कर्णिका प्रमुख तथा नुवनादिक सर्व ते मूल कमलनी पेरे अर्द्ध प्रमाण वाला जा णवा. ए एकशोने आठ कमलने विषे श्रीदेवीना नूषणादिक वस्तु रहेछे.

हवे बीजी परिधिना कमलछे ते मुख्य कमलथी वायव्यकूंणे, उत्तर दिसियें अने इशान कूंणे ए त्रण दिसायें श्रीदेवीनी चार हजार सामानिक देवीना चार हजार कमल छे तथा पूर्वदिसें श्रीदेवीनी चार महत्तरिका गुरू स्थानीय देवीना चार कमलछे तथा अग्निकूंणे मांहेली परखदानां आठ हजार देवतानां आठ हजार कमलछे तथा दक्षणदिसियें व चली मध्य परखदानां दश हजार देवतानां दश हजार कमलछे तथा नैरूतकूंणे बाहे रली परखदानां बार हजार देवतानां बार हजार कमलछे तथा पश्चिमदिसें सात कट कना स्वामीनां सात कमलछे, एरीतें ए बीजा वलयमां सरवाले २४०११ कमल छे.

हवे त्रीजी परिधिनां कमल कहेछेः—त्रीजा वलयनी प्रत्येक दिसायें चार चार हजार कमल गणतां चार दिसायें शोल हजार कमल श्रीदेवीना आत्मरक्षक देवोनां छे.

वली ते मूल कमलने चोफेर त्रण बीजा परिक्षेप छे एटले मांहेली, विचली अने बाहिरली एवी त्रण परिधि अर्थात् चोथी, पांचमी अने छठी ए त्रण परिधिनां कमलोमां श्रीदेवीनां आभियोगिक किंकर देवो रहेछें तेनी संख्या कहेछे चोथी मांहेली परिधिमां बत्रीश लाख कमलछे, विचली पांचमी परिधिमां चालीश लाख कमलछे अने बाहेरली छठी परिधिमां अडतालीश लाख कमलछे ए त्रण परिधिना एक करोडने वीश लाख कमल थया तेनी साथें आगली त्रण परिधिनां तथा मुखकमलमलीने ५०१२० कमल मेलवीयें तेवारे सरवाले १२०५०१२० कमल थाय. सर्व कमल जंबुवृक्षनी पेठे शाश्वता पृथवीकाय रूपछे परंतु कमलना आकारे छे माटे कमल कहीने वखाण्या छे अने पहेली परिधिना कमलथी बीजी परिधिना कमल अर्द्ध प्रमाणवाला छे एम आगल पण सर्व परिधियें अर्द्ध अर्द्ध प्रमाण वाला कहेवा तथा ए पद्मद्रहने विषे जेम कमलोनो परिवार वखाण्यो तेम बीजा पर्वतोनां द्रह संबंधी पण एमज परिवार जाणवो. पद्मद्रहने विषे घणा कमल पद्मद्रहने आकारें पद्मद्रह सरिखाछे माटे एनुं पद्मद्रह एवुं शाश्वतुं नाम छे इहां श्रीनामेदेवी महाऋद्धिवंत यावत् एक पल्योपमना आउखावाली वशेछे ए कमलनुं चित्र जोवुं.

हवे ए द्रहना बारणां प्रमुख वखाणतो छतो बीजा पर्वतोनां द्रह संबंधी वक्तव्यतापण साथेज कहेछे.

हिमवंत तथा शिखरी ए बे पर्वतो उपर पद्म तथा पुंडरीक ए बे द्रहने विषे एक पूर्वदिशि, बीजो पश्चिमदिशि, त्रीजो मेरुपर्वतने सन्मुख ए त्रण द्वारछे, ते बारणा पण स्वस्वदिशि द्रहना मानथी, एंशीमे भाग प्रमाणेछे. ते केम? तोके—द्रहनो जे विस्तार पांचसे योजन पूर्व अने पश्चिमदिशिए छे, ते एंसीमे भागे वहेंचीए तेवारे सवाछ योजन आवे; तेमाटे पूर्व अने पश्चिमनां बारणां द्रहने विषे सवाछ योजन पहोलां छे. अने मेरुसन्मुख हजार योजन द्रहछे ते एंसीभागे वहेंचीए तेवारे साढाबार योजन भागे आवे तेमाटे मेरुसन्मुख द्रहनां बारणा साढाबार योजन पहोलां छे एम जाणवुं. ते द्वार तोरणसहित तथा तेमांथी नदीउं नीकली छे तेणे करी सहित छे. शेष बीजा चार द्रहने विषे दक्षिण अने उत्तर दिशाए बे बे बारणां छे तेमना मध्ये जे मेरु सामा बारणाछे ते बारणा स्वदिशि द्रहना एंसीमे भागेछे. जेम महापद्म तथा महा पुंडरीक ए बे द्रह मेरुदिशि सन्मुख बे सहस्र योजन छे, तेमना लांब पणाने एंसीभागे वेहेचतां पचीश योजन आवे, तो जे मेरु सन्मुख बारणुंछे, ते पचीश योजनतुं छे. अने

बाहेरनां दक्षिण तथा उत्तर सन्मुख जे बारणा छे ते, मांहेला मेरु सन्मुख बारणाथी अर्द्धमाने एटले साढाबार योयन प्रमाणे छे. वली एरीते तिगिछि तथा केशरी इह मेरु दिशि लांबा चार हजार योजन छे. ते एंसीभागे वहेंचतां पचाश योजन प्रमाणे मेरु सन्मुखनुं बारणुं छे, अने दक्षिण तथा उत्तरनां जे बारणां छे, ते मांहेला बारणाथी अर्द्ध एटले पचीश योजन प्रमाणना छे. ए सर्व इहना बारणां जे छे. ते तोरण तथा नदीए सहित छे एम जाणवुं.

ए पद्मइहनां पूर्वदिसीने तोरणेथी गंगा नामे महोटी नदी नीकली ते पूर्वदिसि सन्मुख पांचशें योजन पर्वत उपर जइने गंगावर्त्तन नामे कूट फरीने पांचशें त्रेवीश योजन उपर ओगणीसीया साडात्रण भाग एटली दक्षणदिसी साहामी पर्वत उपर जइने जेम मोहोटा घडानां मुख मांहेथी पाणीनो समूह नीकलतो होय ते सरखो मुक्तावलीनां हारने संस्थाने कांइक जाजेरा शो योजननें प्रपातें पाणीने पडवे करीने हेठी पडेछे ए गंगानदी जिहां पडेछे तिहां एक महोटी जीभी प्रणालीछे ते जीभी अर्द्ध योजन लांबी अने सवाछ योजन पोहोली, अर्द्धकोश जाडी, मगरमत्सनुं पसाखुं मुख ते संस्थाने संस्थितछे ए गंगानदी जिहां पडेछे तिहां एक गंगा प्रपात एवे नामे कुंमछे, ते शाठ योजन लांबो अने पोहोलो छे तथा १९० योजन कांइक जाजेरा परिधिछे, दश योजन उंमो छे, गोलाकारे छे. अनेक जातना तिहां कमलछे,ते कुंम एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंम तेणेकरी चोकफेर वींटेलुं छे, ते कुंमने चारेदिसें पगथालीया छे.

ते कुंमना मध्यभागें एक महोटो गंगानामे द्वीपछे ते आठ योजन लांबो अने पोहोलो वृत्ताकारेंछे, कांइक जाजेरा पच्चीश योजन तेनी परिधिछे, बे कोश पाणी थकी उंचो सर्व वज्ररत्नमय छे ते द्वीप एक पद्मवरवेदिका अने वनखंमेकरी चोफेर वींटेलुंछे तेना उपरे गंगा नामक देवीने वसवानो भुवनछे घरछे ते एककोश लांबो,अर्द्धकोश पोहोलो अने १४४० धनुष्य उंचोछे तेमां गंगादेवीनी सय्याछे माटे एनुं गंगाप्रपात नामछे.

ते गंगाप्रपातकुंमने दक्षणदिसिने तोरणे थइने गंगा महानदी नीकली थकी उत्तरार्द्ध भरतक्षेत्र मांहे आवती आवती सात हजार नदीयें पूराती थकी खंमप्रपाता गुफाने हेठे वैताढ्य पर्वतने भेदीने दक्षणार्द्ध भरत मांहे आवती थकी दक्षणार्द्ध भरतनां मध्य भागें जइने पूर्वदिसि साहामी वलती थकी चौदहजार नदीयें पुराती थकी नीचे जंबूद्वीपनी जगतीने भेदीने पूर्वदिसें लवण समुद्रमांहे भले छे.

ए गंगानदी जिहांथी वहेछे तिहांथी मूले सवा छ योजन पोहोली छे अने अर्द्धकोश उंमीछे पछी बे पासें मात्रायें मात्रायें वधती थकी समुद्रमां भलतां शाडीबाशठ योजन पोहोल पणे थइ अने सवा योजन उंम पणे थइ एटले सर्व नदीउने मूल थकी मुखे

समुद्रमां जातां दश गुणो प्रवाह होय तथा पोहोळ पणाथी पच्चाशमो नाग ऊंम्ड पणे होय गंगानदी बे पासें बे पद्मवर वेदिका अने बे वनखंडे करी वींटीछे.

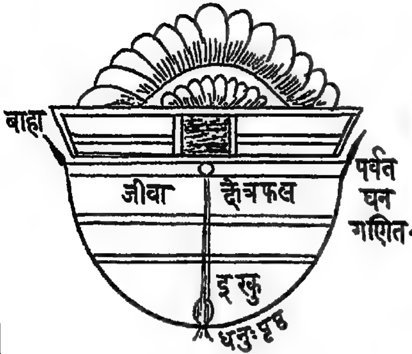
ए गंगानदीनी पेरेज सिंधुनदीनुं स्वरूप पण जाणी लेवुं मात्र ते पद्मद्रहने पश्चिमदिसिने तोरणे नीकळी थकी सिंधुआवर्त्तन नामा कूटने फरीने दक्षणदिसा तरफ चाली थकी सिंधुप्रपातकुंममां पडी तिहां सिंधुदेवीनो सिंधु नामे द्वीप जाणवो यावत् तिमिश्रा गुफा नीचे वैताढ्य पर्वत नेदीने पश्चिमदिसी साहामी वळी थकी चौदहजार नदीयें पुराती लवण समुद्रमां नळी तेनो शेष अधिकार गंगानी परें जाणवुं.

हवे ते पद्मद्रहने उत्तरदिसिने तोरणे रोहितांसा महानदी नीकळी ते २७६ योजन अने उंगणीसीया ठ नाग उत्तर दिसि साहामी पर्वत उपर जइने कांइक जाजेरा शो योजनने प्रपातें रोहीतांशा प्रपात कुंममां जइ पडेछे ते कुंम एकशोने वीश योजन लांबो अने पोहोळोछे कांइक उणा त्रणसो एंसी योजन परिधि पणे छे दश योजन ऊंमो छे, तेना मध्यनागे रोहितांशानामे द्वीपछे ते शोळ योजन लांबो अने पोहोळोछे बे कोश पाणी थकी उंचोछे, तिहां रोहितांशा देवीनुं नवन जाणवुं इत्यादिक एनुं बीजो सर्व अधिकार पूर्वला कुंमनी परे कहेवो.

ते रोहितंसा प्रपातकुंमने उत्तरदिसिने तोरणे रोहितंसा नदी नीकळी थकी, हेमवंत युगलीयानां खेत्र मांहे जाती जाती, चौद हजार नदीयें पुराती पुराती, शब्दापाती नामे वृत्तवैताढ्य पर्वतने अर्द्ध योजने अण पोहोती थकी, पश्चिम दिसि साहामी वळी थकी, हेमवंतखेत्रने बे नागें वेंचती थकी, अठ्ठावीश हजार नदीयें पुराती नराती नीचेथी जगतीने नेदीने लवण समुद्र मांहे नळे छे. ए नदीनो मूळें प्रवाह शाढाबार योजन पोहोळ पणे अने एक कोश ऊंम्ड पणे छे पछी मात्रायें मात्रायें बे पासें वधती वधती समुद्रमांहे पेशतां १२५ योजन पोहोळ पणे प्रवाह छे अने अढी योजन ऊंम्ड पणे छे, ए बे पासें बे पद्मवरवेदिका अने बे वन खंमे करी वींटी छे.

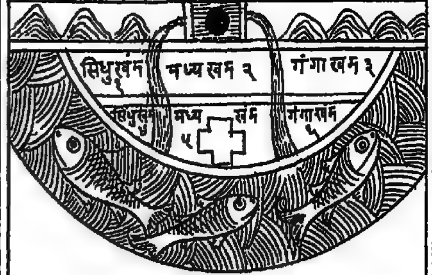
हवे चुल्लहेमवंत पर्वत उपर अगीआर कूटछे तेना नाम कहेछेः— १ सिद्धायतनकूट एना उपर सिद्धनुं देहेरुं छे २ चूल्ल हमवंतगिरि कुमार देवकूट, एना उपर ए पर्वतना ए कूटने नामे देवतानो निवास नुवनछे ३ नरतदेवकूट एना उपर नरतक्षेत्रना नरतदेवतानो निवासछे, ४ इलादेवीकूट, ५ गंगादेवीकूट, ६ श्रीदेवीकूट, ७ रोहितंसादेवीकूट, ८ सिंधुदेवीकूट, ए सुरादेवीकूट, १० हेमवंतदेवकूट, ११ वैश्रमण लोकपाल देवकूट, पूर्वदिसिना लवण समुद्रने पश्चिमदिसें अने चुल्लहेमवंत नामा कूटने पूर्वदिसें प्रथम सिद्धायतन कूटछे ते पांचशें योजन उंचोछे, मूळमां पांचशो योजन पोहोळ पणे, वचें ३७५ योजन पोहोळ पणे, उपर अढीसें योजन पोहोळ पणे, गोपुछने संस्थानेछे, ते कूट पद्मवरवेदिका

१४

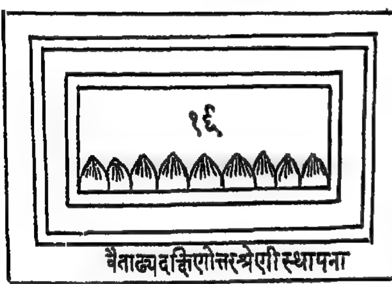


भरतक्षेत्रमांहेला ६ खंडनी स्थापना·

१५



१६



वैताढ्यदक्षिणोत्तरश्रेणी स्थापना

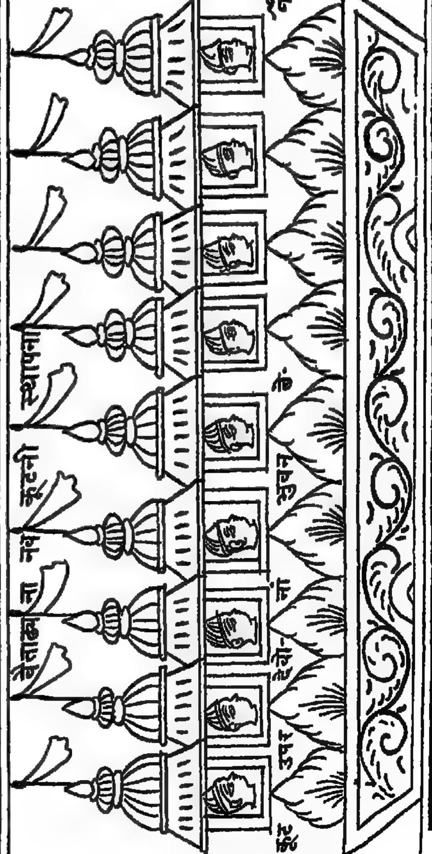
१७



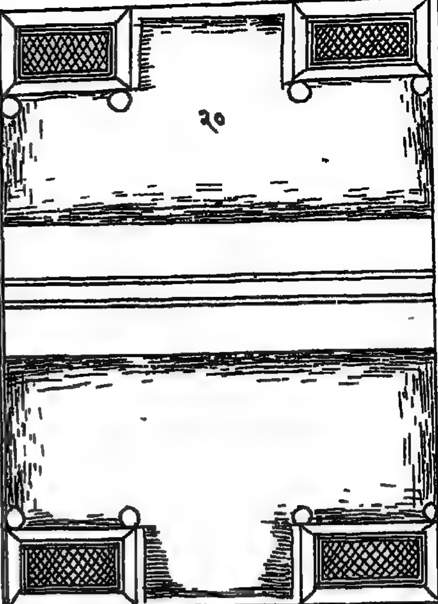
दशजोजन उंचो, पचाशयोजन विस्तृत वै॰ प्रथमखंड स्थापना

ऊर्ध्वाकार वैताढ्य स्थापना·

१८









चक्रवर्त्ति वैताढ्यनी गुफाना कपाट उघाडेछे तेनी स्थापना.



चुल्लहिमवंत पर्वतउपर गंगावर्त्तादिकूटनी स्थापना.
२१

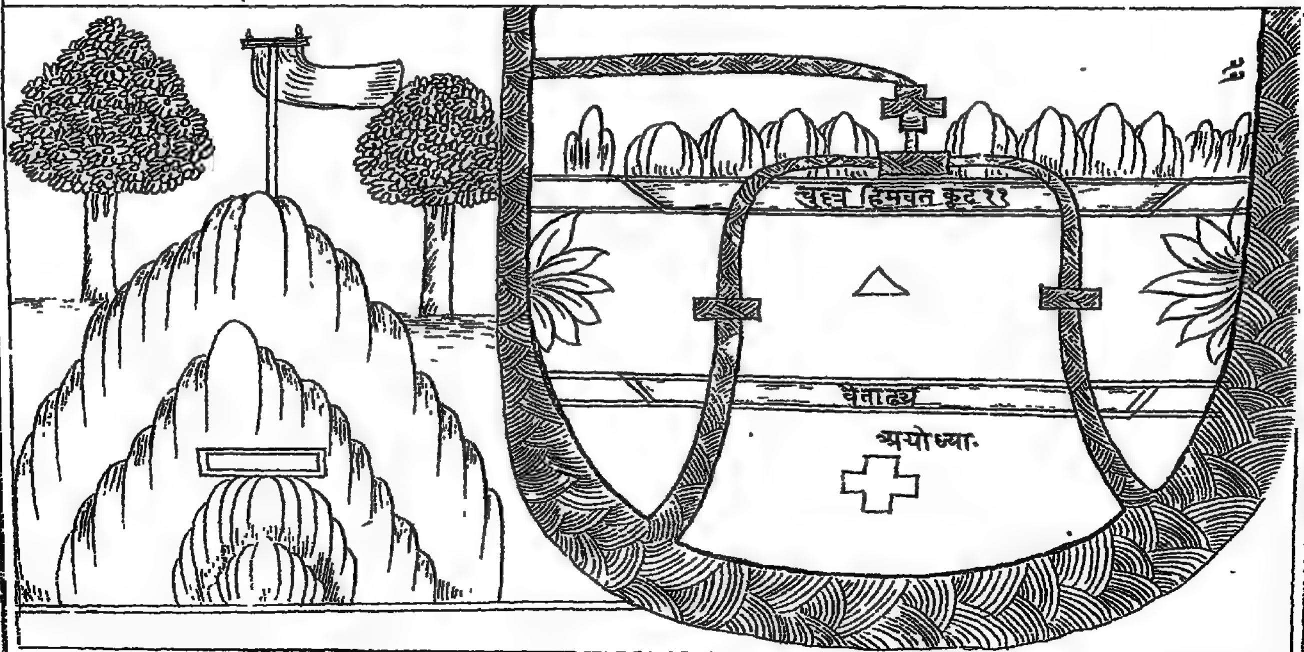


ए आठे दाढाने विषे प्रत्येके सात सात अंतर द्वीपछे

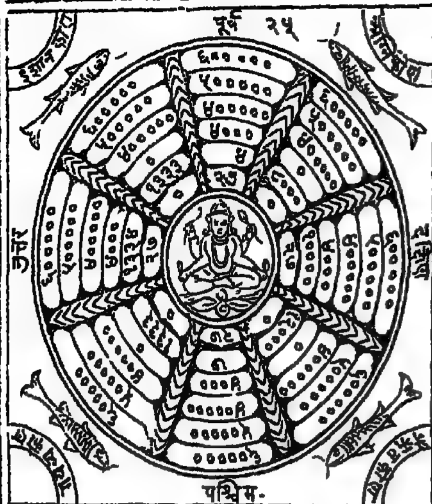
चुल्ल हिमवंत पर्वतनी पासे
ऋषभकूट छे जेनाउपर
चक्रवर्त्ति पोतानुं नाम लखेछे तेनी स्थापना.

२३

भरतक्षेत्र, वैताढ्य पर्वत अने चुल्ल हिमवंत पर्वतनी
स्थापना.



श्रीदेवीना मुख्य कमलने फिरता लघुकमलना ६ वलयनी स्थापना





पद्मद्रहने विषे श्री देवीना कमलनी स्थापना

२६

हिमवंत युगल क्षेत्र स्थापना.

अने वन खंमे करी चोफेर वींटयोछे तेना उपर सिद्धनुं देहेरुंछे तेनुं वर्णन जीवाभिगम सूत्रथी जाणवुं बीजा दश कूट पण एटलाज लांबा पोहोला अने उंचा जाणवां.

एमज चूल्लहेमवंतकूटने विषे चूल्लहेमवंतगिरिकुमार देवनो प्रासादावंतसक प्रमुख तथा तेनी चुल्लहेमवंत नामे राजधानी असंख्यातमे जंबूद्वीपे जाणवी शेष थाकता सर्व कूटोनी वक्तव्यतामां पण देवताना प्रासाद सिंहासन, परिवार प्रमुख ते सर्व कहेवा.

इहां चुल्लहेमवंतकूट, भरतकूट, हेमवंतकूट वैश्रमणकूट ए चार कूटने विषे देवता जाणवा शेष छ कूटने विषे देवांगना जाणवी ए पर्वत महाहेमवंत पर्वत आश्रयी लंबाइ आदिकमां लगारेक न्हानुंछे वली चुल्लहेमवंतनामे देवता एक पल्योपमायुयें इहांवसेछे. तेथी (चूल्ल के०) लघुहेमवंत पर्वत एवुं एनुं शाश्वतुं नाम छे इति ॥

हवे हेमवंत युगलीयाना क्षेत्रनो वर्णन कहेछे चुल्लहेमवंत वर्षधर पर्वतने उत्तरदिसें ए हेमवंत क्षेत्रछे ते २१०५ योजन उपर उगणीसीया पांच भाग एटलुं पोहोल पणेछे एनी बाह ६७५५ योजन उपर उगणीसीया त्रण भागछे तेनी जीवा पणछ ३७६७४ योजन उपर उगणीसीआ पंदर भागछे. एवुं धनुपृष्ट ३८७४० योजन उपर उगणीसी आ दश भाग एटलुं परिधि पणेछे एमां त्रीजा सुखमदुखमा आरा सरखो सरूप जाणवो.

इहां रोहिता नदीनी पश्चिम दिसें अने रोहितांशा नदीनी पूर्व दिसें हेमवंत खेत्रने मध्यभागे शब्दापाती नामे वृत्त वैताढय पर्वत छे ते एक हजार योजन उंचोछे, अढीशो योजन धरतीमां उंमोछे तथा नीचे अने उपर लांबो पोहोलो सर्वत्र सरखो धान भरवा ना पालाने संस्थानेछे, एक हजार योजन लांबो पोहोलोछे अने ३१६२ योजन कांइक झाझेरा एटली परिधिछे, वेदिका अने वनखंमे करी चारे बाजु वींटेलोछे तेनी उपर यावत् सिंहासन प्रमुख परिवार सहित जाणवा तथा ए पर्वतनी न्हानी महोटी वाव्यने विषे यावत् बिल्लने विषे शब्दापाती जेवा वर्णवाला एना सरखा अनेक जातीना कमल छे ते णेकरी तथा इहां स्वाती नामे देवता एक पल्योपमनां आवखावंत, चारहजार सामा नीक देवो आदिक सहित थको वसेछे यावत् विजय देवनी पेरे राजधानी वालो छे तेथी ए पर्वतनुं शब्दापाती वृत्तवैताढय एवुं शाश्वतुं नाम छे.

तथा चुल्ल हेमवंत अने महा हेमवंत ए बे वर्षधर पर्वतें बे पासें दक्षण उत्तर दिसें ए खेत्रने गोपव्युंछे मर्यादा कीधीछे नित्यें सदैव हेम सुवर्ण प्रकाशेछे तथा इहां हेमवंत नामे देवता एक पल्योपमने आवखे वसेछे तेथी हेमवंत क्षेत्र एवुं एनुं शाश्वतुं नामछे.

हवें महा हेमवंत नामे वर्षधर पर्वत कहेछेः—हेमवंत खेत्रने उत्तरदिसें अने हरिवर्ष खेत्रने दक्षणदिसें महाहेमवंत नामे वर्षधर पर्वतछे, ते बसें योजन उंच पणे अने पचाश

योजन धरतीमां ऊंमोछे तथा ४२१० योजन उपर ऊंगणीसीया दश जाग एटलो पोहोल पणेछे एनी बाह पूर्व पश्चिम दिसें ए२४६ योजन उपर ऊंगणीसाया साडानव जागछे, तथा एनी जीवा पणछ उत्तरदिसि तरफ पूर्व पश्चिमें लांबी बे छेहडे लवण समुद्रने फरसी छे ते ५३ए३१ योजन उपर ऊंगणीसीया छ जाग कांइक जाजेरीछे तेनुं धनुपृष्ठ दक्षण दिसी तरफ ५७२ए३ योजन उपर ऊंगणीसीया दश जाग परिधि पणेछे ए पर्वत रुच कने संस्थाने संस्थितछे, सर्व रत्नमयछे, बे बाजुयें बे पद्मवर वेदिकायें करी तथा बे वन खंमे करी वींटयोछे घणु समरमणीक नूमि जागछे यावत् देवता बेसेछे रहेछे इत्यादि.

ते महाहेमवंत पर्वतनां मध्यजागे वच्चोवच्चें महापद्मनामे इह छे ते बे हजार यो जन लांब पणे अने एक हजार योजन पोहोल पणे छे तथा दश योजन ऊंमो छे तेनुं रूपामय तट छे, जे रीते पूर्वे पद्मद्रहनी वक्तव्यता कही तेहिज वक्तव्यता इहां पण जा णवी इहां कमलनुं प्रमाण बे योजननुं छे यावत् ते कमल महापद्मद्रह सरखा छे इहाँहीं नामे देवी एकपल्योपमने आवखे वसे छे तेणे करी एनुं महापद्मद्रह एवुं शाश्वतुं नामछे.

ए इहने दक्षणदिसिने तोरणे रोहिता महानदी निकली ते १६०५ योजन उपर ऊंगणीसीआ पांच जाग एटली दक्षणदिसि साहमी पर्वत उपरें जइने महोटा घडाना मुख सरिखे मुक्तावली हारने संस्थाने कांइ एक जाजेरा बशे योजने प्रपात कुंममां पडे छे ते जिहांथी पडेछे तिहां महोटी जीनी प्रणाली छे ते जीनी एक योजन लांब पणे अने शाडाबार योजन पोहोल पणे तथा एक कोश जाड पणे छे महोटा मगरमत्सनुं मुख विस्तिरयु कर्यो होय ते संस्थाने संस्थित छे सर्व वज्ररत्नमय छे ते जिहां पडेछे तिहां रोहित प्रपात नामे कुंमछे ते एकसो वीश योजन लांबो पोहोलो छे अने त्रणसें एंसी योजन कांइक ऊंणा परिधि पणे छे तथा दश योजन ऊंमो छे तेना मध्यजागें एक रोहिता नामे द्वीपछे ते शोल योजन लांबो पोहोलो अने कांइक जाजेरा पचाश योज न परिधि पणेछे पाणी थकी बे कोश ऊंचोछे वज्ररत्न मयछे ते द्वीप पद्मवरवेदिका अने वनखंमे करी वींटयोछे ते द्वीपने वच्चे एक नवनछे ते एक कोश लांब पणे छे इत्यादि.

ते रोहीत प्रपात कुंमने दक्षणदिसीने तोरणे रोहिता महानदी नीकली थकी हेमवं त खेत्रमांहे जाती जाती शब्दापाती वृत्तवैताढय पर्वतने अर्ध योजने अण पोहोती थ ई पूर्वदिसि सन्मुख वलीने हेमवंत क्षेत्र प्रत्ये बे जागें वेहेचती थकी अठावीश हजार न दीयें पूराती पूराती थकी नीचे जगतीने नेदी पूर्वदिसें लवण समुद्रमांहे नली छे.

तथा ए इहना उत्तरदिसिने तोरणे हरिकांता महानदी नीकली थकी १६०५ योज न उपर ऊंगणीसीया पांच जाग उत्तर दिसिने सामी पर्वत उपरें जइने कांइक जाजेरा बशे योजनने प्रपातें हेगी पडेछे जिहांथी पडेछे तिहां जीनी बे योजन लांब पणे, प

छीश योजन पोहोल पणे अने अर्द्ध योजन जाड पणेछे ते हरिकांत प्रपात नामे कुंडमां पडछे ते कुंड २४० योजन लांबो पोहोलो अने ७५९ योजन परिधि पणेछे तेना मध्यभागे हरिकांता नामे द्वीपछे ते बत्रीश योजन लांबो पोहोलो अने एकशो एक योजन परिधि पणे छे तथा बे कोश पाणीथकी ऊंचो छे ते पद्मवर वेदिका अने वनखंडें करी वींटयुंछे एना मध्यमां भुवनछे तथा ते हरिकांता प्रपात कुंडनां उत्तर दिसिने तोरणे हरिकांता महानदी नीकली थकी हरिवर्षक्षेत्रमां जाती थकी विकटापाती वृत्त वैताढय पर्वत प्रत्यें अर्द्ध योजन अण पोहोती थकी पश्चिमदिसि साहमी वली थकी हरिवर्ष क्षेत्रने बे भागे वेंचती थकी छपन्न हजार नदीयें पूराती थकी नीचें जगती भेदीने पश्चिमदिसियें लवण समुद्र मांहे भलेछे ए हरिकांता महानदी द्रहथकी निकलता प्रवाहे पच्चीश योजन पोहोल पणें अर्द्ध योजन ऊंडपणे पछी मात्रायें मात्रायें अनुक्रमें-योजने योजने एकेक पासे वीश वीश धनुष करतां बे पासें चालीश धनुष वधती वधती समुद्र प्रवेशे अढीशे योजन पोहोल पणे अने पांच जोयण ऊंड पणे पडछे बे पासें पद्मवरवेदिका तथा वनखंडे वींटीछे.

महा हेमवंत पर्वत उपर आठ कूट कहेछेः—एक सिद्धायतन कूट,बीजो महाहेमवंत कूट, त्रीजो हेमवंत कूट, चोथो रोहितादेवी कूट, पांचमो ह्रींदेवी कूट, छठो हरिकांता कूट, सातमो हरिवर्ष कूट, आठमो वैडूर्य कूट, पूर्वें जेम चूल्लहेमवंत पर्वतना कूटोनी वक्तव्यता कही तेम इहां पण देवी देवो प्रमुखना निवाश प्रमुख जाणवा ए महा हेमवंत पर्वत जे छे ते चूल्लहेमवंत पर्वत आश्रयी लांब पणे, पहोल पणे, ऊंच पणे, ऊंड पणे, परिधि पणे, अतिशय महोटो छे तथा इहां महाहिमवंतनामें देवता यावत् एक पल्योपमायुनी स्थितियें वशेछे माटे एनुं महाहिमवंत पर्वत एवुं शाश्वतुं नामछे.

हवे हरिवर्ष युगलीयानां क्षेत्रनी वक्तव्यता कहेछे.

निषध पर्वतने दक्षण दिसें अने महाहेमवंत पर्वतने उत्तरदिसें हरिवर्ष नामे युगल क्षेत्रछे ते ८४२१ योजन उपर ओगणीसीआ एक भाग एटलुं पहोल पणेछे तथा १३३६१ योजन उपर शाडा छ भाग एटली पूर्व पश्चिमदिसें बाहाछे तथा एनी जीवा पणछ उत्तर दिसीयें पूर्वपश्चिमें लांबी ७३९०१ योजनउपर साडासत्तर भाग छे तेनुं धनुपृष्ठ दक्षण दिसीयें ८४०१६ योजन उपर चार भाग एटलुं परिधिपणे छे एनुं घणुज समरमणिक भूमि भाग छे यावत् मणितृणादिके करी शोभावंतछे इत्यादिक सर्व वात इहां पण कहेवी इहां सुखमा नामें बीजा आरानुं अनुभाव सदा सर्वदा वर्त्ते छे.

इहां हरिसलिला महानदीने पश्चिमदिसें अने हरिकांता महानदिने पूर्वदिसियें तथा हरिवर्ष क्षेत्रने मध्यभागें विकटापाती नामे वृत्तवैताढय पर्वत छे तेनुं पोहोल पणु, ऊंच

पणु अने उंडपणु तथा परिधि प्रमुख सर्व पूर्वे कहेला शब्दपाती वृत्तवैताढ्यनी पेरे इहां पण कहेवो परंतु एटलुं विशेष जे ए पर्वतनो अरुणनामे देवता अधिपतिछे तथा इहां विकटापाती सरखा वर्णे करी कमल छे तेथी एनुं विकटापाती एवुं शाश्वतुं नामछे.

ए हरिवर्षक्षेत्रने विषे (हरिके०)सूर्य अने चंद्रमा कहीयें तेथी केटलाएक मनुष्य उगता सूर्यजेवा राते वर्णें रातिकांतिने प्रकाश करेछे तथा केटलां एक तिहांना मनुष्य चंद्रमा तथा शंखनां सरिखां धोले वर्णे छे तेमाटे तथा इहां हरिवर्षनामे महर्द्धिक देवता एक पल्योपमायुयें वशेछे तेथी एनुं हरिवर्ष एवुं नाम शाश्वतुं छे.

हवे निषध नामा वर्षधर पर्वत कहेछे.

महाविदेह क्षेत्रने दक्षणदिसें अने हरिवर्षक्षेत्रने उत्तरदिसें निषध नामे पर्वतछे ते चारसें योजन उंचपणे, शो योजन नीचो धरतीमां छे तथा १६८४२ योजन उपर बे कला पहोलो छे तेनी पूर्वपश्चिमदिसें बाहा २०१६५ योजन उपर अढी नागछे तथा लांबपणे तेनी जीवा पणछ उत्तरदिसें ए४१५६ योजन उपर बे नागछे तथा तेनुं धनुःपृष्ठ दक्षणदिसें १२४३४६ योजन उपर नव नाग परिधिपणे छे, सर्व तपनीय राता सुवर्णमय छे, बे पासें पद्मवरवेदिका अने वनखंडे करी सहित छे.

तेना मध्यनागे एक तिगिछि नामे द्रह छे तिगिछि एटले कमलनो परागद्रह ते तिगिछि द्रह. ए चार हजार योजन लांब पणे अने बे हजार योजन पोहोल पणे तथा दश योजन उंडो छे, एनुं रूपामय तट छे, चारदिसियें चार त्रिसोपान पगथालियाछे, एम जे रीतें महापद्मद्रहनी वक्तव्यता पूर्वे कही तेज रीतें इहां पण कहेवी, इहांकमलनुं प्रमाण तेहिज जाणवुं यावत् तिहां तिगिछि सरखा घणा कमल छे तथा इहां धृतिनामे देवी एक पल्योपमने आउखे वशे छे तेथी एनुं तिगिछिद्रह एवुं नाम छे.

ते तिगिछिद्रहने दक्षण दिसिने तोरणे हरिसलिला महानदी नीकली थकी ७४२१ योजन उपर एक नाग एटली दक्षणदिसि सामी पर्वत उपरे जइने कांइक जाजेरा चारसें योजनने प्रपातें करी हेठी हरिसलीला कुंडमां पडेछे ते कुंडनुं अने द्वीपनुं तथा द्वीपना नवन प्रमुखनुं प्रमाण तेनी वक्तव्यता सर्व हरिकांता नदीनी पेरे जाणवी यावत् हरिवर्ष क्षेत्रने बे नागें वेंचती छपन्न हजार नदीये सहीत थकी नीचें जगती नेदीने पूर्वदिसिनां लवण समुद्रमांहे नलेछे एनुं प्रवाह, मुख, मूले, पहोलपणु, उंडपणु, ए सर्व हरिकांता नदी प्रमाणेज जाणवुं यावत् वेदिका अने वनखंड तेणे करी सहीत छे.

हवे ते तिगिछिद्रहने उत्तरदिसिने तोरणे सीतोदा महानदी निकली थकी ७४२१ योजन उपर एक नाग एटलुं उत्तर साहमी पर्वत उपरे जइने कांइक जाजेरा चारसें योज

नने प्रपातें हेठी पडेछे ए सीतोदा महानदी जिहां थकी पडेछे तिहां एक महोटी जीनी प्रणाली रूपछे ते चार योजन लांब पणे, पचाश योजन पोहोल पणें अने एक योजन जाड पणे महोटा मगर मत्सना मुखने संस्थानें संस्थित छे, सर्व वज्र रत्नमय छे ते जिहां नीची पडेछे तिहां महोटो सीतोदा प्रपात कुंमछे ते चारसें एंसी योजन लांब पणे पोहोल पणे अने १५१७ योजन कांइ एक ऊणा परिधि पणे छे, यावत् तोरण पर्यंत वक्तव्यता जाणवी ते सीतोदा प्रपात कुंमने मध्य नागें सीतोदा नामे द्वीपछे ते चोशठ योजन लांबो पोहोलो अने बशें बे योजन परिधि पणे छे, बे कोश पाणी थकी ऊंचो छे, सर्व वज्र रत्नमय छे, तेमज वेदिका, वनखंम, नूमिनाग, नवनघर, शयनीय ए सर्व पूर्वपरे जाणवा.

तें कुंमने उत्तरदिसिनेतोरणे ए सीतोदा महानदी नीकली थकी, देवकुरु क्षेत्र प्रत्यें आवती थकी, बेहु पर्वत प्रत्यें तथा १ निषध २ देवकुरु ३ सूरेंद्र ४ सुलस ५ विद्यु त्प्रन ए पांचद्रहने बे नागें वहेंचती थकी ते द्रहमांहे वेहेती थकी, देव कुरु मांहेली चो रासी हजार नदीयें पूराती थकी,नद्रशाल वन मांहे आवती थकी, मेरु पर्वत पासें बे यो जन अण पोहोती थकी,तिहांथी पश्चिमदिसि साहमी वली थकी, नीचे विद्युत्प्रन नामा गजदंता पर्वतने नेदीने मेरुपर्वतने पश्चिमदिसें,पश्चिम महाविदेह क्षेत्रने बे नागें वेहेंचती थकी, एकेकी चक्रवर्त्तिनी विजय थकी अठावीश अठावीश हजार नदीयें पूराती पूराती थकी केमके ए नदीने दक्षण तटें आठ विजयछे तिहां एकेकी विजयें गंगा अने सिंधु ए बे बे नदी चौद चौद हजारने परिवारें छे तेवारें अठावीश हजारनुं परिवार थयुं तथा उत्तर तटें पण एजरीते एकेकी विजयें अठावीश अठावीश हजार नदीने परिवारें एरीतें शोल विजयनी बत्रीश नदी ते प्रत्येकने चौद हजारनो परिवार गणता ४४७००० नदी थइ तेनी साथें ८४००० नदी देवकुरुनी मेलवतां ५३२००० नदी सहीत पूराती थकी, जयंतनामा पश्चि मदिसि संबंधी जंबूद्वीपनां द्वारने नीचें जगतीने नेदीने लवण समुद्र मांहे नलेछे ए नदी द्रहमांथी नीकलतां मूलप्रवाहें पचाश योजन पोहोल पणे तथा एक योजन ऊंम पणे छे, पछी मात्रायें मात्रायें अनुक्रमे योजने योजनें एकेक बाजुयें चालीश चालीश धनुष एरीतें बे पासें एंसी धनुषनी वृद्धि वधती वधती मुख मूले समुद्र प्रवेशें पांचशें योजन पोहोल पणे अने दश योजन ऊंम पणे थइछे. बे पासें पद्मवरवेदिका अने वनखंमे करी सहीत छे.

निषध पर्वत उपर नव कूटछे तेनां नाम कहेछेः—एक सिद्धायतन कूट, बीजो निषध कूट, त्रीजो हरिवर्ष कूट, चोथो पूर्वविदेह कूट, पांचमो हरिसलिला कूट, छठो धृतिकूट, सातमो सीतोदा कूट, आठमो अपरविदेह कूट, नवमो रुचक कूट जेरीते चूलहिमवंतना कूटनो ऊंचपणु, पोहोलपणु,परिधिपणु,राजधानी सहीत पूर्वें वर्णव्यो तेरीतें इहां जाणवुं. निषध पर्वतने विषे घणा कूट निषधने संस्थाने छे, निषधने अत्यंत सहन करे, पूठे स्कंधे

नार सहे ते निषध वृषन पर्यायांतरे वृषन बळदने संस्थानें संस्थित ठे तथा इहां निषध नामे देवता यावत् पल्योपमने आउखे वशेठे तेथी एनुं निषध पर्वत एवुं शाश्वतुं नामठे.

इहां नदी द्रह अने कुंम आदिकनो कांइक विशेष कहे ठे.

नरत क्षेत्रनेविषे गंगा अने सिंधूनदी ठे; तथा ऐरवत क्षेत्रनेविषे रक्ता अने रक्तावती नदी ठे. ए बाहेर ठेडे रहेलीउ जे चार नदीउ ठे ते बाहेरनां जे पद्मद्रह तथा पुंमरीक नामे द्रहठे, तेनां पूर्व पश्चिमनां द्वारनो जे विस्तारठे, ते प्रमाणे सवा ठ योजन पहोळ पणे हिमवंत तथा शिखरी पर्वतना शिखरथी नदी वहे ठे. एटले उतरे ठे.

☞ पूर्वोक्त जे चार नदीठे, ते द्रहना बारणाथी पांचसे योजन सुधी पर्वतना शिखर उपर बारणां सन्मुख पूर्व पश्चिमदिशिए जइने पठी पोतपोताना वर्त्तन कूटथी बाहेर ना नरत अने ऐरवत क्षत्रने सन्मुख वळे ते आवीरीते जे गंगानदी ते द्रहना बारणा थी पांचसे योजन सुधी पर्वत उपरे बारणासामी जाय त्यां गंगावर्त्तन ए नामे पर्वतनुं जे कूट ते थकी बाहेरनुं जे नरत क्षेत्र ठे तेने सन्मुख वळे एरीते सिंधूनदी पण सिंधू आ वर्त्तन कूटथी नरतदिशि वळे, तथा रक्तानदी पांचसे योजन बारणा सन्मुख जइने पठी रक्तावर्त्तन कूटथी ऐरवतदिशियें वळे. एम रक्तवती नदी रक्तवत्यावर्त्तन कूटथी ऐरवत दिशि वळे, तो एनदी नरत तथा ऐरवत सामी वळे, ते वारे पर्वतना मध्य नागथी बाहेर आवतां पर्वत उपर केटला योजन चाले? ते कहेठेः—सवाठ योजन नदीनुं मुख ठे ते, पर्वतनो जे विस्तार एक सहस्र बावन योजन,अने बार कला—तेमांहेथी काढीए, तेवारे एक सहस्र ठेतालीश योजन उपर सवा सात कला रहे. तेनुं अर्द्ध पांचसे त्रेवी श योजन अने शाढी त्रण कला झाझेरी जाजे त्यहांलगी पर्वतना शिखर उपर नदीवहे.

शिखरना ठेडाथी मगरमत्स्यना मुखने आकारे, तथा वज्ररत्नमय एवी जे जीनी एनुं जीनी सरखो आकारठे, जीनी एटले परनाळ ते मध्ये थइने वज्रमयठे तळुं जे हने विषे, एहवो जे नदीना पोतपोताने नामे निपात कुंम, तेने विषे मोतीनी त्रूटेली सेर तेने सहश प्रवाहे अवठिन्न धाराएं करी पडे ठे. एटले गंगानदी गंगानिपात कुंममां पडेठे, अने सिंधूनदी सिंधूनिपात कुंममां पडेठे. एम नदिने नामे कुंम जाणवा.

द्रहनां बारणानो विस्तार सवाठ योजन ठे; तेम नदीप्रवाहमांहे जीनीनो विस्तार पण सवा ठ योजन ठे. तेमाटे सरखो विस्तार ठे. अने द्रहनां बारणानो जे पहोळ पणे विस्तार ते विस्तारनां पचाशमे नागे जीनी जाडी ठे. अने ते जाड पणाथी चोगु णी सर्व जीनीउ लांबी ठे. एम सर्व द्रहोनी जीनीनुं प्रमाण जाणवुं, एटले बाहेरना बे पर्वतने विषे सवा ठ योजन जीनी पहोळी ठे, अने मध्यना बे पर्वतनी मांहेली दि

शिनी जीनी पचीस योजन पहोली छे. अने बाहेरनी दिशिनी जीनी साढाबार योजन प्रमाणे छे. तथा माहाविदेह क्षेत्रमां मांहेली जीनी पचास योजन प्रमाणे छे. अने बाहेरनी जे जीनीछे ते पचीश योजन प्रमाण पोहोली छे. तथा ए सर्व जीनीउंनुं जाडपणुछे. ते पोतपोताना विस्तारने पचाशमे जागे छे. अने जाडपणाथी चोगणु लांबपणुछे.

हवे ते कुंम वच्चे जे द्वीपछे तेनुं प्रमाण कहेछे. आठ योजन पोहोलो पाणीमांछे. अने ते पाणी उपर बे कोस उंचो, अने वेदिकाए सहित, एवो नदीनी देवीने वसवानो द्वीपछे; तेमांहि इहनी जे श्री, लक्ष्मी प्रमुख देवी तेहना जवन सरखां जवन ते द्वीपने विषे छे. ते कुंम साठ योजन पहोला छे. अने सवा छ योजन पहोलां वेदिकानां त्रण बारणाछे तथा दशयोजन उंचाछे. ए प्रकारे बीजापण जे कुंम छे तेहनुं जे विशेष छे ते कहेछे

कुंमनुं पहोलपणु अने द्वीपनुं पोहोलपणुं तथा वेदिकानुं पहोलपणु ए त्रण विस्तार ते महाविदेह क्षेत्रमांहि बत्रीश विजयनी बत्रीश नदीछे ते नदीना जे चोशठ कुंमछे, तेनुं तथा तेमांहि जे द्वीपछे तेनुं तथा तेनी वेदिका, तेहनां बारणानो विस्तार, ते जरत अने ऐरवतना कुंम सरखोछे. एटले विदेहना विजयमांहि जे चोसठ कुंमछे, ते साठ योजन पहोलाछे. तेमध्ये आठ योजन द्वीपछे, तिहां वेदिकानां बारणानो विस्तार सवाछ योजन जाणवो. अने हिमवंत क्षेत्रनी बे नदी,हिरण्यवंत क्षेत्रनी बे नदी,वली बत्रीश विजयनी बार अंतर नदी ए सोल नदीमां जे सोल कुंमछे, तेनो तथा तेहनां द्वीपनो तथा तेहनां वेदिकानां द्वारनो विस्तार पहेलानाथी बमणो जाणवो. एटले ए सोल नदीना कुंम, एकसो वीस योजन पोहोला छे अने ए कुंमनां द्वीप, सोल योजन पहोला छे. तथा ए सोल कुंमना वेदिकाना बारणानो विस्तार साढाबार योजन छे. वली हरिवर्ष क्षेत्रनी बे नदी, अने रम्यक्नी बे नदी–ए चार नदीना चार कुंम, तेहना त्रण विस्तार आश्रीने चोगुणो जाणवो. एटले बशेंने चालीश योजन एनां कुंमनो विस्तारछे. अने बत्रीश योजन द्वीपनो विस्तारछे. तथा पचीश योजन वेदिकानां द्वारनो विस्तारछे. तथा माहाविदेहनी बे नदीना बे कुंम, तेहना त्रण विस्तार आश्रीने आठगुणो जाणवो. ते कहेछे. चारसें एंसी योजन कुंमनो विस्तार छे. अने द्वीपनो विस्तार चोसठ योजननो छे. तथा विदेहनां कुंमनी वेदिकानां बारणा पचाश योजन पहोलांछे,एम सर्व एकठा गणीए तो आ जंबूद्वीपमांहे नेवुं कुंम थाय.

बाहेरनी जे चार नदीछे, तेमनी गति कहेछे. चार नदी जे गंगा, सिंधू, रक्ता, अने रक्तवती ते पोतपोताना निपात कुंमथी बाहेरना जरत अने ऐरवतने सन्मुख बारणे नीकले. ते केम ? तोके–गंगा अने सिंधु ए बे दक्षिणने बारणे जरत सामी नीकलेछे. अने रक्ता तथा रक्तवती ए बे उत्तरने बारणे उत्तरना ऐरवत दिशि नीकलेछे, पण ते जेवारे वैताढ्य लगी आवे, तेवारे ते प्रत्येक नदीने सात सहस्र नदीउं बीजी मले छे तेना परि

वारे परिवरीथकी वैताढ्यनी वच्चे थइने नीकलेछे. ते वैताढ्य पर्वत भेदीने नीकल्या पछी बाहेरना भरत तथा ऐरवत खेत्रना अर्द्धभागना वचमांथी पूर्व अने पश्चिमदिशि समुद्र सन्मुख वले एटले भरत क्षेत्र मांहे गंगानदी पूर्वदिशए जाय,अने सिंधुनदी पश्चिमदिशिए जाय तथा ऐरवत मांहे रक्तानदी पूर्वदिशिए जाय अने रक्तवती नदी पश्चिम दिशिए जाय पण, ते चार नदीउं वैताढ्य पर्वतने भेदीने नीकल्या पछी वली बीजी सात सहस्र नदीउंए करी सहित थाय सर्व मली चौदसहस्र नदीने परिवारे परवरी थकी, जेम पूर्वे वैताढ्यने भेदी नीकली छे तेनीपरे जगतीने पण भेदीने समुद्रमांहे जाय छे.

नदीनो विस्तार तथा ऊंडपणुं कहेछे. सर्व नदीउं ने पहेला नीकलतां कुंडना द्वार सरखो विस्तार होय अने अंतने विषे प्रथमना विस्तारथी दशगुणो विस्तारपणे होय ते आ वीरीते के—भरत तथा ऐरवतनी चार नदीउंछे, तेनो प्रथम सवा छ योजन विस्तार छे. अने छेडे समुद्रमांहे भले तेवारे साडी बासठ योजन थाय. तथा बत्रीश विजयनी चोसठ नदीउं छे. तेहनो पण एज आदिअंतनो विस्तार छे, तेहना जे चोसठ कुंड छे, ते बाहेरना कुंड सरखा छे, ते माटे सरखो विस्तार कह्यो. वली हेमवंत तथा हिरण्यवंतनी चार नदी, अने विजयनी बार अंतरनदी, एवं सोल नदीउंनो आदिविस्तार साढाबार योजन छे. तो छेडे एकसो पचीश योजननो विस्तार जाणवो. वली हरिवर्ष तथा रम्यकक्षेत्रमांहे जे चार नदीउं छे तेहनो विस्तार पचीश योजन धुरेछे. तो अंतनेविषे बसे पचाश योजन विस्तार थाय छे. अने विदेह क्षेत्रे जे सीता अने सीतोदा बे नदी छे तेहनो प्रथम विस्तार, पच्याश योजननो छे, तो छेडे पांचसे योजन विस्तारछे. तथा ए सर्वजे मोटी नदी छे, ते विस्तारथी पचासमे भागे ऊंडी छे, जेम गंगानदी आदि विस्तार सवा छ योजन छे, तेने पचाशे भाग देतां योजनो आठमोभाग आवे, तो प्रथम नीकलतां योजनने आठमे भागे ऊंडी छे, अने छेडे साढी बासठ योजन विस्तार छे तेने पचाशे भाग देतां सवा योजन आवे, तेमाटे छेडे सवा योजन ऊंडी जाणवी. एम समस्त नदीनो विस्तार जाणवो.

हवे पांच क्षेत्रनी नदीनी गति कहेछे. पांच क्षेत्रनी जे महानदीउंछे ते पोत पोताना बारणानी दिशियें द्रहनो जे विस्तारछे, ते काढतां जे पर्वतना विस्तारनुं अर्द्ध थाय तेटला योजन नदी पर्वतना शिखर उपर वहे. ते केम ? तो के—हेमवंत अने शिखरीनो विस्तार १०५२ योजन अने बारकला छे. तेमांहेथी द्रहनो विस्तार पांचसे योजन काढीए तेवारे ५५२ योजन अने बारकला रहे. तेनुं अर्द्ध २७६ योजन अने छ कला थाय. तो पोताना द्रहद्वारना मुखथी पर्वतनां शिखर उपर २७६ योजन अने छ कला वहेछे. अने महाहिमवंत तथा रुक्मी पर्वतने विषे चार नदी १६०५ योजन अने पांच कला पर्वतना शिखर उपर चाले, तथा निषध अने नीलवंत संबंधी

चार नदीउं ७४२१ योजन अने एक कला पर्वतनां शिखर उपर चाले ए रीतें इहनो विस्तार पर्वतनां विस्तार मांहेथी काढी अर्द्ध करीए तेवारे एवुं पूर्वोक्त मान लावे तेवार पछी पर्वतना विस्तारने छेडे जइने पोतानी जीनी उपर थइने पोतपोताना निपात कुंमने विषे ते नदीउं पडेछे तथा पोतपोतानी जीनीना पहोलपणाने पची शमे नागे वृतवैताढय तथा मेरु तेने मूकीने जे नदीनुं मुख दक्षण सामुं छे, ते नदी पूर्व समुद्रदिशि तरफ वले अने जे नदीनुं मुख उत्तर सामुं छे, ते पश्चिम समुद्रदिशि वले; एटले हेमवंत तथा हिरण्यवंतनी बे नदी वृतवैताढयने बे कोस वेगलो मूकी पूर्व तथा पश्चिमदिशिए वले तथा हरिवर्ष अने रम्यक्नी बे नदी चार कोश वृत वैताढयने वेगलो मूकीने पूर्व पश्चिम दिशिए वले. तथा महा विदेहनी बे नदी आठ कोस मेरु पर्वतने वेगलो मूकी पूर्व पश्चिम दिशिए वले.

हेमवंत क्षत्रमांहे रोहितांशा तथा रोहिता एवे नामे बे नदीछे, ते प्रत्येकनो गंगानदी करतां बमणो परिवारछे. एटले अठ्ठावीश हजार नदीउंना परिवारे परिवरि छे तेमज हिर ण्यवंत क्षेत्रमांहे सुवर्ण कुला अने रुप्य कुला एवे नामे बे नदी छे, ते पण रोहितांसा न दीनी परे अठ्ठावीश हजार नदीउंए परिवरीछे. तथा हरिवर्ष क्षत्रनेविषे हरिकंता अने हरिसलिला नामे बे नदीछे ते गंगानदीथी चोगणा परिवार वाली छे. एटले छप्पन हजार नदीउंए परिवरीछे. तथा ए पूर्वोक्त नदी सदृश रम्यक् क्षत्रने विषे नरकंता अने नारी कंता ए नामें बे नदीउंछे ते पण एटलीज छप्पन हजार नदीए परिवरी छे. तथा सी तोदा अने सीता ए बे नदी महाविदेह क्षेत्रमां छे ते एकेकी नदीमांहे पांच लाख बत्री स हजारने आडत्रीश नदीउं संबंधी पाणी पडे छे. कुरुक्षत्रनेविषे चोराशी हजार नदी उंछे. वली छ अंतर नदीछे तथा एकेकी विजये गंगा, अने सिंधु ए बे बे महानदीउं छे, तो सोल विजयमांहि बत्रीश महोटी नदीउं थइ ते प्रत्येक नदीनो परिवार चौद हजा रनो गणतां ४४८००० हजार थाय, तेनी साथे पाछली कुरुक्षत्रादिकनी ८४०३८ नदीउं मेलवीए तेवारे ५३२०३८ नदीउंनुं पाणी सीतोदा नदीमांहि चले छे. तथा सीता मांहि पण एटली नदीउंनुं पाणी चले छे. ते माटे बमणी करीए तेवारे १०६४०७६ एटली नदीउं माहा विदेह क्षत्रमांहे जाणवी.

हवे जंबूद्वीपनी सर्व नदीउंनी संख्या कहेछे बत्रीश विजयनी चोसठ नदी, तथा सीतोदा अने सीता ए बे नदी तथा भरतादिकनी गंगा प्रमुख बार नदी ए सर्व एकठी करतां अठ्ठोतेर महोटी नदीउं जाणवी. अने बत्रीश विजयनी बार अंत्तर नदीउं ए नेवुं मूलगी नदी छे. बाकी बीजी परिवारनी नदीउं चौद लाखने छप्पन हजार छे.

हवे महाविदेह क्षेत्रनी वक्तव्यता कहे छे.

नीलवंत नामा वर्षधर पर्वतने दक्षणदिसें तथा निषध नामा वर्षधर पर्वतने उत्तर दिसें महाविदेह नामा क्षेत्र छे ते पल्यंकने संस्थाने संस्थित छे, ३३६८४ योजन उपर चार जाग एटलुं पोहाल पणे छे एनी बाद पूर्व पश्चिमें ३३७६७ योजन उपर सात जाग लांब पणेछे तेनी जीवा पंणछ महाविदेहना मध्य जागने विषे पूर्व पश्चिमदिसें लांबी एक लाख योजन छे एनुं धनुंपृष्ट १५८११३ योजन उपर शोल जाग कांइक जाजेरा एटलुं परिधि पणे एकेकी दिसियें छे एटले जंबूद्वीपनो ३१६२२७ योजन प्रमुख जे पूर्वें परिधि कह्योछे तेनुं अर्द्ध करीयें तेवारें महाविदेहनी एकदिसिनुं धनुपृष्ट थाय अने बे दिसिनां धनुपृष्ट एकठा करीयें तेवारे जंबूद्वीपनी पूर्ण परिधिथाय एमजाणवुं.

महाविदेह क्षेत्र चार प्रकारेछे एक मेरु थकी पूर्वें पूर्व महाविदेह, बीजो मेरु थकी पश्चिमें अपरविदेह, त्रीजो मेरु थकी दक्षणे देवकुरु क्षेत्र, चोथो मेरुथकी उत्तरे उत्तर कुरु क्षेत्र छे. जरत, ऐरवत, हेमवंत, हिरण्यवंत, हरिवर्ष, अने रम्यक् ए छए क्षेत्र थकी लांब पणे, पहोल पणे, परिधि पणे करीने घणु विस्तिरण छे एटले घणु महंत महोटुं छे, अथवा बत्रीश विजयने विषे पांचशे धनुषनी कायानां महोटा शरीर वाला मनुष्य छे तथा देवकुरु अने उत्तरकुरुने विषे त्रणगाउनां शरीर वाला मनुष्य वसे छे एरीते शरीर आश्रयी मनुष्य पण महोटा छे तथा महाविदेह नामे देवता महाऋद्धिवंत यावत् एक पल्योपमने आउखे इहां वसे छे तेथी एनुं महाविदेह एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे ए महाविदेहमां चार गजदंतगिरिछे तेनी वक्तव्यता कहे छेः—

१ नीलवंत पर्वतने दक्षणदिसियें अने मेरुने उत्तर पश्चिमदिसि वच्चें वायुकूंणे तथा गंधिलावती विजयने पूर्वदिसें, उत्तरकुरुने पश्चिम दिसें, इहां गंधमादन नामे गजदंत पर्वत पीले वर्णे छे ३०२०९ योजन उपर छ जाग लांब पणे छे तथा नीलवंत पर्वतनी पासें चारसो योजन उंच पणे छे, शो योजन उंम्ड पणे धरतीमां छे, पांचशें योजन पोहोल पणे छे. पछी मात्रायें मात्रायें अनुक्रमे उंच पणे तथा उंम्ड पणे वधतो वधतो थको अने पोहोल पणानी हाणीयें घटतो घटतो थको मेरु पर्वतनी समीपें पांचशे योजन उंच पणे तथा सवासो योजन उंम्ड पणे धरतीमां अने अंगुलनो असंख्यातमो जाग पोहोल पणे हाथीनां दांतने संस्थाने संस्थित छे, सर्व रत्नमय छे, बे पासें बे पद्मवरवेदिका अने बे वनखंम्डे करी सहीत छे, यावत् उपरे घणा देवता बेशे छे, इत्यादि सर्व पूर्वपरें कहेवुं.

ए गंध मादन पर्वत उपर सात कूटछे तेना नाम कहे छेः—एक मेरु दिसियें सिद्धायतन कूट, तेवार पछी अनुक्रमे नीलवंत सन्मुख बीजो गंधमादनकूट, त्रीजो गंधिलावती कूट, चोथो उत्तरकुरु कूट, पांचमो स्फाटिक कूट, छठो लोहिताक्षकूट, सातमो आ

नंद कूट, तिहां सिद्धायतन कूटने विषे सिद्धनुं देहेरुं छे तथा स्फाटिक कूट अने लोही ताक्ष कूट ए बे कूटने विषे जोगंकरा अने जोगवती ए बे दिक्कुमारिका देवीनो निवास छे शेष चार कूटने विषे कूटने नामे देवता रहे छे. ए सर्वे कूट पांचशें योजन उंच पणे छे.

ए पर्वतनो गंध ते कोष्ठ सुगंधनां पुडाने पीसतां, चूर्ण करतां, उकेरतां थकां, जूजूआ विखेरतां थकां, जोगवतां, गंधलेतां थकां, जेम उत्तम उदार मनोहर गंध नीकले, तेथी पण इष्टतर अति उत्तम गंधछे ते गंधे करी मद छे तथा इहां गंधमादन नामे देवता महाऋद्धिवंत वसे छे तेथी एनु गंधमादन एवुं शाश्वतुं नाम छे.

२ मेरु पर्वतने इशानकूंणे, नीलवंत पर्वतने दक्षण दिसें, उत्तरकुरुने पूर्वदिसें, कछ नामा विजयने पश्चिमदिसें, माल्यवंत नामे गजदंत पर्वत वैडूर्य रत्नमय नीले वर्णे छे ते गंधमादन गजदंता प्रमाणे लांबु पोहोलुं छे शेष अधिकार तेमज जाणवुं.

माल्यवंत गजदंतगिरिना नवकूटनां नाम कहेछे. एक मेरुदिसियें सिद्धायतनकूट, तेवार पछी अनुक्रमें नीलवंत पर्वतने सन्मुख बीजो माल्यवंतकूट, त्रीजो उत्तर कुरुकूट, चोथो कछकूट, पांचमो सागरकूट, छठो रजतकूट, सातमो सीताकूट, आठमो पूरणजद्द कूट, नवमो हरिस्सह कूट, ए सर्वे कूट पांचशें योजन उंचपणे छे तिहां सागरकूट अने रजत कूट ए बे कूटने विषे सुजोगा अने जोगमालिनी नामे देवी वसेछे शेष कूटने नामे तिहां वसनारा देवोना पण तेहीज नाम जाणवा. एमां हरिस्सह कूट उपर हरिस्सह राजधानीनो हरिस्सह नामे देव वशे छे ए कूट हजार योजन पोहोलुं अने हजार योजन उंचो यमक पर्वतने प्रमाणे छे अने माल्यवंत गजदंत पांचशें योजन पोहोलुं छे माटे बे पासे अढीशें अढीशें योजन पर्वतथी बाहेर अधर रह्युं छे ए हरिस्सह देवनी राजधानी अन्य जंबू द्वीपें चोरासी हजार योजननी लांब पणे, पोहोल पणे छे.

ए माल्यवंत गजदंताने विषे घणा सरिकानामे वनस्पतिना गुल्म, नवमालतीना गुल्म, यावत् मगदंतिका वनस्पतिनां गुल्म छे ते गुल्म सर्वदा पंचवर्णना फूलें फूले छे तथा जूमिने विषे वायरे कंपित एवा अग्रशालाने विषे फूलनां पुंज तेने उपचारें करी सहीत करे छे तथा इहां माल्यवंत देव एक पल्यायुयें वशे छे माटे एनुं माल्यवंत नाम छे.

३ निषध पर्वतने उत्तर दिसें, मेरु पर्वतने दक्षण पूर्वने वचें अग्निकूणे, मंगलावती विजयने पश्चिम दिसें अने देवकुरुने पूर्वदिसें, सोमनस नामे गजदंत पर्वत स्वेतवर्णेछे ते लांबो पोहोलो माल्यवंतनी पेरे जाणवुं ए रूप्यमय छे इहां घणा देवता देवांगना कुचेष्टा रहित सौम्य पणे सुमन एटले शोकादि रहीत विचरे छे तथा सोमनस नामे महर्द्धिक देव इहां वशे छे तेथी एनुं सोमनस नाम छे. एनां उपर सात कूट छे तेना नाम कहेछेः— एक मेरुनी दिसिथी सिद्धायतन कूट, तेवार पछी अनुक्रमें निषध पर्वतनी सन्मुख

बीजो सोमनस कूट, त्रीजो मंगवलाती कूट, चोथो देवकुरु कूट, पांचमो विमल कूट, छठो कांचन कूट, सातमो वशिष्ट कूट, ए सर्वे कूट पांचशे योजन उंच पणे पहोल पणे छे तिहां विमल अने कांचन ए बे कूटने विषे सुवत्सा अने वत्समित्रा ए बे दिक्कुमारिका देविनो निवास छे तथा शेष कूटने विषे कूटने नामे देवना निवास जाणवा.

४ तथा निषध पर्वतने उत्तर दिसें अने मरुने दक्षण पश्चिम वच्चे नैऋतकूंणे, पद्मविजयने पूर्वदिसें विद्युत्प्रभ नामे गजदंत पर्वत सर्व तपनीय राता सुवर्ण मय छे यावत् उपर देवता वसे छे इत्यादि सर्व पूर्व परे कहेवुं एनां नव कूटना नाम कहे छेः—प्रथम मेरु दिसियें सिद्धायतन, तेवार पछी अनुक्रमे निषेध पर्वतनी सन्मुख बीजो विद्युत्प्रभ, त्रीजो देव कुरु, चोथो पद्म, पांचमो कनक, छठो सौवस्तिक, सातमो सीतोदा, आठमो शतजवल, नवमो हरि कूट तेमां हरि कूट ते पूर्वोक्त हरिस्सह कूटनी पेरे हजार योजन पोहोलो, उंचोछे, अने शेष आठ कूट पांचशे योजन उंचा जाणवा तथा कनक कूट अने सौवस्तिक ए बे कूटने विषे वारिषेणा अने बलाहिका नामांतरें पुष्पमाला अने अनंदिता दिगूकुमारिका देवी वशेछे, शेष कूटने विषे कूटने नामे देवता जाणवा. तथा ए पर्वत वीजलीनी पेरे रक्तसुवर्ण मयपणा माटे चोफेर अवभासे छे, उद्योत करे छे, कांति करे छे तथा इहां विद्युत्प्रभ नामे देवता एक पल्योपमायुये वशे छे तेथी एनुं विद्युत्प्रभ एवुं शाश्वतुं नाम छे. ए चार गजदंत उपर प्रत्येकें दिक्कुमारि देविनां बे बे कूट कह्या ते अधलोकने विषे वसनारी दिक्कुमारी जाणवी एनां रेखानां नवन गजदंत गिरिने नीचेछे.

कुरुक्षेत्रनी जे सीतोदा तथा सीतानदी तेहनुं पडवा नीकलवानुं स्थानक जे जीनी तिहांथी ३६४३५ योजन बेपासे मेरुपर्वत साह्मामां ए चार गजदंत गिरीछे ए निषध तथा नीलवंत पर्वतमांहेथी नीकल्याछे, हाथीनां दांतने आकारे देखाएछे माटे एने गजदंत गिरी कहिए. अग्नि कूणे सोमनस नामे गजदंतगिरि छे तिहांथी धुरमांडीने प्रदक्षणा वर्त्ते गणतां चार दिशीनेविषे अनुक्रमे चार गजदंत गिरीछे.

हवे ए महाविदेहने विषे उत्तरकुरु नामे युगलीयानुं क्षेत्र वखाणे छे.

मेरु पर्वतने उत्तरदिसें अने नीलवंतनी दक्षणदिसें तथा गंधमादन पर्वतनी पूर्वदिसें अने माल्यवंतनी पश्चिमदिसें इहां उत्तर कुरुनामे क्षेत्र छे ते पुर्वपश्चिमें लांबो अने उत्तर दक्षणे पोहोलो अर्द्ध चंद्रमाने संस्थाने संस्थित छे ११८४२ योजन उपर बे भाग एटलो पोहोल पणे छे एनी जीवा पण छ उत्तरदिसें पूर्वपश्चिमें लांबी, बे दिसायें गजदंता पर्वतने फरसी छे ते ५३००० योजन लांब पणे छे एनुं धनुपृष्ठ ६०४१८ योजन उपर बार भाग परिधि पणे छे. ते आवीरीतेः—३०२०९ योजन उपर छ कला एटलुं

एकेकुं गजदंत गिरिलांबो छे तेवा बे गजदंत गिरिनी वच्चमां ए क्षेत्र अर्द्ध चंद्रकारे छे माटे बे गजदंतना लांब पणानां योजन जेवारें एकठा करियें तेवारें ६०४१८ योजन उपर बार कला एटलो कुरुक्षेत्रनुं धनुपृष्ठ थाय एटले धनुषनुं बाहेरलो पुंठनो भाग अर्द्धचंद्राकारनुं थाय. ए क्षेत्रमां युगलिया मनुष वसे छे तिहां सर्वदा पहेला आरा सरखो भाव वर्त्तेछे तथा ए उत्तरकुरु क्षेत्रमां महाऋद्धिवंत उत्तरकुरुनामे देवता एक पल्यायुयें वशेछे माटेएनुं उत्तरकुरु एवुं शाश्वतुं नाम छे.

उत्तर कुरुने विषे नीलवंत पर्वतना दक्षण दिसिनां चरमांत छेहेडाथी ८३४ योजन उपर सातीआ चार भाग एटली अबाधाये सीता महानदीनि एक पूर्वतटें अने बीजो पश्चिम तटें ए बे तटें बे यमक नामे पर्वत छे ते एक हजार योजन उंच पणे तथा अढीशें योजन उंड पणे धरतीमां तथा मूलमां हजार योजन लांब पणे पोहोल पणे छे, वच्चमां ७५० योजन लांब पणे पोहोल पणे छे अने उपर पांचशें योजन लांब पणे पोहोल पणे छे तथा मूलमां ३१६२ योजन कांइक अधिक परिधि पणे छे, मध्यमां २३७२ योजन कांइक जाजेरा परिधि पणे छे तथा उपर १५८१ योजन कांइक जाजेरा परिधि पणे छे, ए रीते मूलमां विस्तिरण छे, वच्चमां सांकडा छे अने उपर पातला छे, यमक एटले जोडले जण्या भाइ तेने संस्थाने संस्थित छे. एटले बेहु सरखे संस्थाने छे, सर्व कनक सुवर्णमय छे, प्रत्येकें पद्मवरवेदिका अने वनखंडे करी वींट्या छे ते वेदिका वन खंडनुं वर्णन पूर्वली परे जाणवुं तेना उपर बे प्रासादावतंसक छे ते साढा बाशठ योजन उंचा तथा सवाएकत्रीश योजन लांबा अने पोहोला छे तेनो वर्णन विजय देवतानां प्रासादनी परे जाणवो ए पर्वतें न्हानी वावी तथा महोटी वावीने विषे यावत् बिल्ल पंक्तिने विषे घणा कमल यमक पर्वत सरिखे वर्णें छे तथा इहां बे यमक नामे देवता महा ऋद्धिवंत यावत् देव संबंधि भोग भोगवता थका विचरे छे माटे एनुं यमक पर्वत एवुं शाश्वतुं नाम छे ए बे देवोनी अनेरे जंबूद्वीपे जूदी जूदी यमका नामे राजधानीछे तेनो वर्णन सर्व विजय देवनी परे जाणवो.

हवे उत्तर कुरुक्षेत्रनां द्रह कहेछे.

नीलवंत पर्वत थकी ८३४ योजन अने उपर सातीया चार भाग कांइक जाजेरा एटली अबाधायें सीता महानदीनी वच्चमां प्रथम नीलवंतनामे द्रहछे ते जेम पद्मद्रहनो वर्णन कह्यो तेमज एनुं वर्णन पण जाणवो ए बे बाजुयें पद्मवरवेदिका अने बे वनखंडे सही तछे तिहां नीलवंत नामे नागकुमार देव वसेछे.

ते नीलवंत द्रहनी पूर्वे अने पश्चिमदिसियें बेहु पासें दश दश योजनने आंतरे मली वीश कांचन पर्वत छे ते प्रत्येक एकशो योजन उंच पणे अने मूलमां एकशो योजन

लांबा पोहोलाछे तथा वच्चमां पचोतेर योजन अने उपरें पचाश योजन लांबा पोहो ला छे तथा मूलमां ३१६ योजन, मध्यमां २३७ योजन अने उपरें १५८ योजन कांइक अधिक परिधि पणेछे तेम ए प्रथम नीलवंतद्रह थकी वली पूर्वोक्त ८३४ योजननी अ बधाये बीजो उत्तरकुरु द्रह छे वली तेथकी तेटलीज अबाधायें त्रीजो चंद्र द्रह छे वली तेथकी तेटलीज अबाधायें चोथो ऐरवत नामे द्रह छे वली ते थकी तेटलीज अबाधायें पांचमो माल्यवंत नामे द्रह छे ए पांच द्रहनी वक्तव्यता सरखी छे ए पांचे द्रहनां शो कांचनगिरि उत्तर कुरुमां छे. ए द्रहना देवोनी एक पल्योम स्थिति जाणवी.

हवे उत्तर कुरुमां जंबू वृक्ष वखाणे छे.

नीलवंत पर्वतने दक्षण दिसें तथा मेरु पर्वतने उत्तर दिसें अने माल्यवंत गजदंत गिरिने पश्चिम दिसें तथा सीता महानदीनां पूर्वने तटें, उत्तर कुरु क्षेत्रने विषे जंबू पी ठ नामे पीठ छे ते पांचशें योजन लांब पणे पोहोल पणे छे तथा १५८१ योजन कां इक जाजेरा परिधि पणे छे ए पीठ मध्य भागें बार योजन जाड पणे छे एटले उंचपणे छे पछी मात्रायें मात्रायें अनुक्रमें प्रदेशनी हाणीयें घटतुं घटतुं थकुं सर्व चोफेर छेल्ला प्रदेशने विषे बे बे गाउ चारे दिसियें उंच पणे छे, ए पीठ सर्व जांबुनंद रत्नमय छे, उं धा सरावलाने आकारे छे, ते पीठ एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंमे करी चोकफेर वींटघुं छे, ते वेदिका बे कोश उंचा अने एक कोश पोहोला एवा मनोहर चार बारणा तेणे करी सहीत छे. तेनो वर्णन पूर्वली परे कहेवो, ते पीठने चार दिसेंयें चार पग था लीया छे तेनुं वर्णन यावत् तोरण छत्रातिछत्र पर्यंत पूर्वली परे कहेवो, ते पीठनां मध्य भागमां वच्चो वच्च मणिपीठिका छे ते आठ योजन लांब पणे पोहोल पणे अने चार योजन जाड पणे एटले उंच पणे छे ते सर्व मणी मय छे ते उपरें जंबू वृक्ष अपर नाम सुदर्शन कह्यो छे ते नामे वृक्ष छे. ते आठ योजन उंचो छे, अर्द्ध योजन भूमिमां उंमो छे, बे योजननो खंध छे छ योजननी शाखा छे, ते वृक्ष मध्य भागें आठ योजन लांबु पोहोलुं छे, साडा आठ योजन सर्वांगें उंच पणे कह्युं छे.

ते जंबू सुदर्शन वृक्षना वज्ररत्न मय मूल छे, रूपामय प्रतिष्ठित दृढ शाखा छे, अरिष्ठ रत्नमय विस्तिरण कंद छे, वैडूर्य रत्ननो देदीप्यमान खंधछे, उत्तम रूपामय मूलथीज वि स्तिरण शाखा छे, नवा नवा मणि अने रत्न तेनी नवा नवा प्रकारनी शाखा अने प्रशा खा छे, वैडूर्य रत्ननां पानडा छे, तें पानडाना बींट राता सुवर्णना छे, जंबुनंद रत्नमय राता टीसी, कोमल पत्र अने अंकूरा सुकुमाल छे, विचित्र मनोहर मणिरत्ननां फल अने सुगंधित फूल छे, ते फूल अने फलने भारें करीने ते वृक्षनी शाखा नमी छे, छाया सहीत

छे, कांति सहीत छे, सश्रिक छे, उद्योत सहीत छे, अत्यंत मनने सुख उपजावनार छे.

एटले जंबूवृक्षनी मूलने विषे जे जटाछे ते वज्ररत्नमय छे तथा मूलथी उपर जे कंद छे ते श्यामवर्ण रत्ननुं छे,तथा जंबूवृक्षनी माल वैडूर्य रत्न एटले नील वर्ण रत्ननी छे,तथा महोटी शाखा पीला सोनानी छे, तथा लघु शाखा कांइक धोला सोनानी छे तथा एना पानडा जे छे ते वैडूर्य रत्न एटले नीला रत्ननां छे, तथा पत्रनी बींटछे ते तपनीय सुवर्ण समान महा तेजवंत छे तथा जे जे पल्लव एटले नवां उगतां पत्र छे ते रक्त सुवर्णनां छे, तथा नवा पत्र रूपामय छे, तथा मध्य नागनी वच्चेनी महोटी माल ते रूपामय छे तथा फल फूल सर्वे रत्नमय छे. तथा बे कोश नूमीमध्ये उंड पणे जाडो छे तथा थडने विषे अने महोटी शाखाने विषे अने मध्य नागे जे मूल शाखा छे तेने विषे बे कोशनुं पोहोल पणु छे तथा आठ कोश थडनी माल लांबी छे तथा थडनी शाखा थकी चार दिसिये चार म होटी माल जिहांथी नीकली छे तिहांथी पंदर कोश लांबी छे तथा मध्य नागनी मूलगी लांबी माल उंचीछे ते चोवीश कोश लांबी छे तिहां चार दिसिनी चार शाखाने विषे श्रीदे वीना नवन सरखा चार नवनछे तथा जे पांचमी महोटी चोवीश कोशनी मालछे, ते उपर श्री देवीना नवन सदृश जिननवन जाणवुं तिहां पूर्वदिसिनी शाखानां नवनने विषे जंबु द्वीपनुं अनाढित नामे जे अधिष्टायक देव तेने सुवानी सद्या छे तथा शेष जे त्रण दिसि ना त्रण नवन छे तेने विषे अनाढित देवताने बेसवा योग्य सिंहासन छे.

ते जंबू सुदर्शन वृक्षनी जे पीठिका छे ते मूलमां अनुक्रमे बारवेदिकायें करी वींटेली छे ते वेदिकाउनो वर्णन पूर्वली परे जाणवो. ते मूल जंबूवृक्षथी अर्द्ध प्रमाण उंचाइ वाला एवा बीजा १०७ जंबूवृक्षें करी सर्व दिसें चोकफेर वींटेलुं छे, तेमां अनाढित देव ना आनूषणादिक वस्तु रहेछे,तथा बीजी परिधियें वायुकूणे,उत्तरदिसें अने इशाण कूणे अनाढित देवताना चार हजार सामानिक देवना चार हजार जंबूवृक्ष छे, तथा पूर्व दिसें अनाढित देवतानी चार अग्रमहीषीना चार जंबूवृक्ष कह्या छे, इत्यादिक सर्व १२०५०१२० जंबूवृक्षनो पद्मद्रहनी श्रीदेवीना कमलनी पेरे इहां पण परिवार छे.

ते जंबूवृक्ष एक अन्यंतर बीजुं मध्य त्रीजुं बाह्य एवा त्रण वनखंड शो शो योजन ना तेणे करी सर्वदिसें चोफेर वींट्युं छे तेमां प्रथम वनखंडनी चारदिसायें पच्चाश पच्चा श योजन अवगाही जइयें तिहां एकेकुं जिनन्नुवनछे एम चारेदिसाना चार नवन एटले चैत्यगृहछे ते पूर्वदिसिनी शाखा सरखा नवन जाणवा तेमज ते वननी ईशानादिक चार विदिसिने विषे पच्चाश पच्चाश योजन अवगाही जइयें तिहां प्रत्येक विदिसियें चार चार निंदापुष्करणी छे ते प्रत्येके एककोश लांबी,अर्द्धकोश पोहोली अने पांचशें धनुष उंडी

छे ते चार चार पुष्करणीउंनां मध्यमां वच्चोवच्च एकेक प्रासादावतंसक छे, ते प्रासादा वतंसक बीजी त्रण दिसिनी शालने विषे जेवा नवनछे तेवा जाणवा.

ते जिनभुवन तथा प्राशादनां आठ आंतराने विषे श्रीजिनभुवने सहीत आठ कूट जाणवा ते प्रत्येक कूटनो बार योजन मूले विस्तारछे, मध्यमां आठ योजन अने शिखर उपर चार योजन विस्तार छे तथा आठ योजन उंचा छे एवा आठ तरुकूट कह्या छे.

ए जंबू सुदर्शन वृक्षते बीजा घणा तिलकवृक्ष, लवकवृक्ष, यावत् राजरुख प्रमुख वृक्षें करी सर्वदिसियें चोफेर वींटेलोछे ए वृक्ष उपर घणा आठ आठ मंगलिक, तथा कृष्ण, चामर, ध्वजा यावत् छत्रातिछत्र छे.

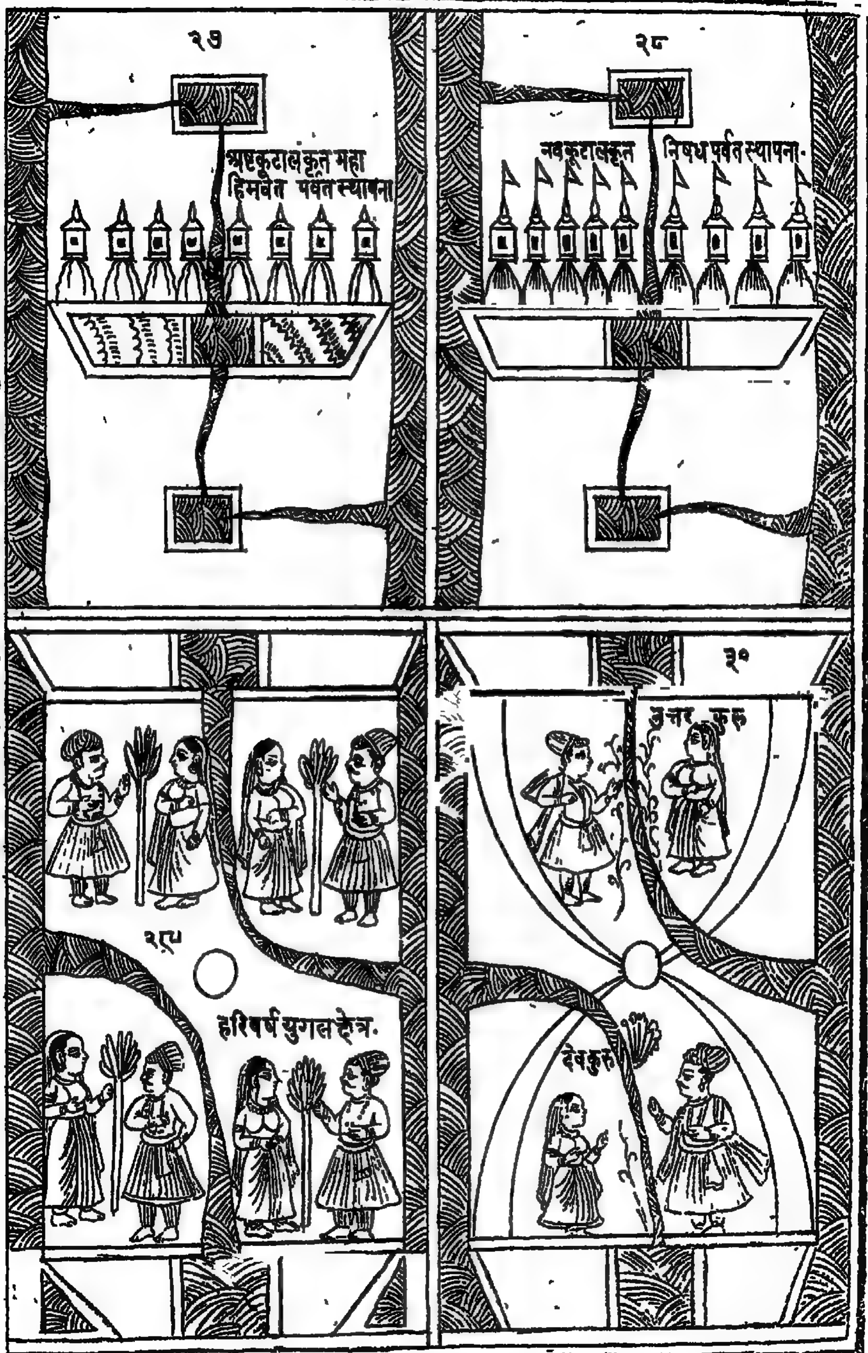
एनां बार नाम अर्थ सहीत कहेछेः—एक शुनदर्शन माटे सुदर्शन, बीजो अनिष्फल मा टे अमोघ, त्रीजो मणिरत्नेकरी बद्ध पीठ माटे सुप्रतिबद्ध, चोथो यशनो धरनार माटे यशो धर, पांचमो जंबूद्वीपनो नाम विस्तारे माटे विदेहजंबू, छठो सोमनस एटले उत्तमवृक्ष जेने देखवाथी केवारे मन दुष्ट नथाय सर्वदा प्रीतिवंत मन थाय, सातमुं शाश्वत नाम माटे नित्य, आठमुं अनादिकालनुं मंमित माटे नित्य मंमित, नवमुं कल्याणकारि उपद्रव रहीत माटे सुनद्र, दशमो विस्तिरणवृक्ष माटे विशाल, अगीआरमुं सुनिष्पन्नरूप माटे सुजात, बारमो एना दर्शनथी शुनमन थाय माटे सुमन, ए वृक्ष उपर जंबूद्वीपनो धणी अनाहत देव एकपल्योपमने आउखे वसे छे माटे एनुं जंबू वृक्ष एवुं शाश्वतुं नामछे.

हवे ए महाविदेहने विषे देवकुरु नामे युगलीयानुं क्षेत्र वखाणे छे.

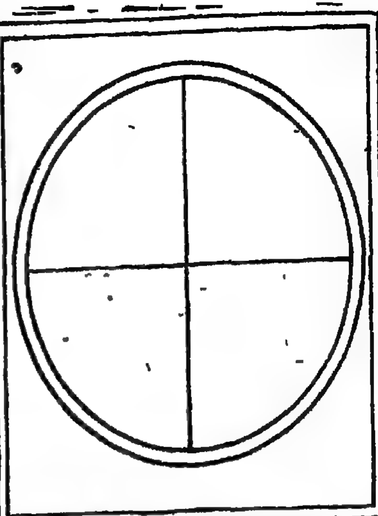
मेरुने दक्षणदिसे अने निषध पर्वतने उत्तर दिशियें देवकुरु नामे युगलियानुं खेत्रछे ते ११८४२ योजन उपर बे नाग पोहोलो छे ते आवी रीतेः—गजदंत गिरिमध्ये मेरुप र्वत थकी दक्षिणदिशिनेविषे देवकुरुक्षेत्रछे, अने मेरुथी उत्तरदिशिनेविषे उत्तरकुरुक्षे त्रछे, ए बे युगलियाना क्षेत्रछे ते अर्धचंद्रमाने आकारे रह्यांछे, तिहां महाविदेह क्षेत्रनुं विस्तार तेत्रीश सहस्र छसेंने चोरासी योजन अने उपर चार कलाछे. तेमांहेथी मेरुनु विष्कंन दशसहस्र योजन काढिए तेवारे तेवीश सहस्र छसेंने चोरासी योजन अने उ पर चार कला उगरे तेहनुं अर्द्ध करीयें तेवारें अगीआर सहस्र आठसेने बेतालीस यो जन उपर कला बे थाय एटलो विष्कंन कुरुक्षेत्रनां मध्यनागनेविषे जाणवो.

एमां चित्रकूट नामे बेपर्वतछे ते निषध प्रवतेनी उत्तरदिसि थकी ८३४ योजन उपर सातीया चार नाग अबाधाये सीतोदा नदीने पूर्वें अने पश्चिमें बें तटने विषे ए बे पर्वत छे तेनुं प्रमाण जेम उत्तर कुरुमां बे यमक पर्वतनो कह्युं तेम जाणवुं.

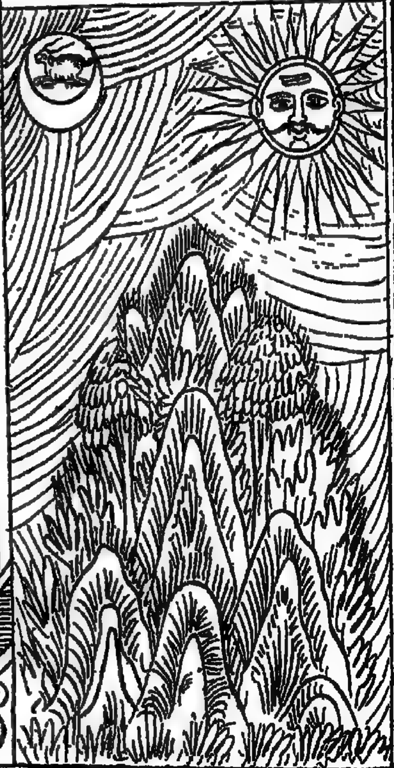
तथा ए बे चित्र कूटनी उत्तरदिसि थकी ८३४ योजन उपर सातीया चार नागनी


२७
अष्टकूटालंकृत महा
हिमवंत पर्वत स्थापना
२८
नवकूटालंकृत निषध पर्वत स्थापना.
२९
हरिवर्ष युगलक्षेत्र.
३०
उत्तर कुरु
देवकुरु

महा विदेह क्षेत्रनी स्थापना.



निषध पर्वतना कूटपासे चंद्र सूर्यनो उदय
थायछे तेनी स्थापना. ८१



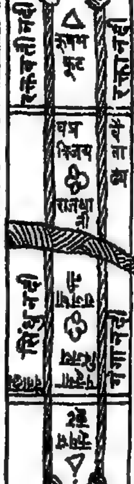
८२

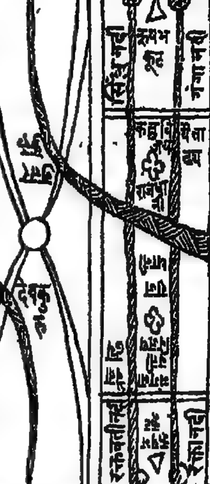


नीलवंत पर्वत

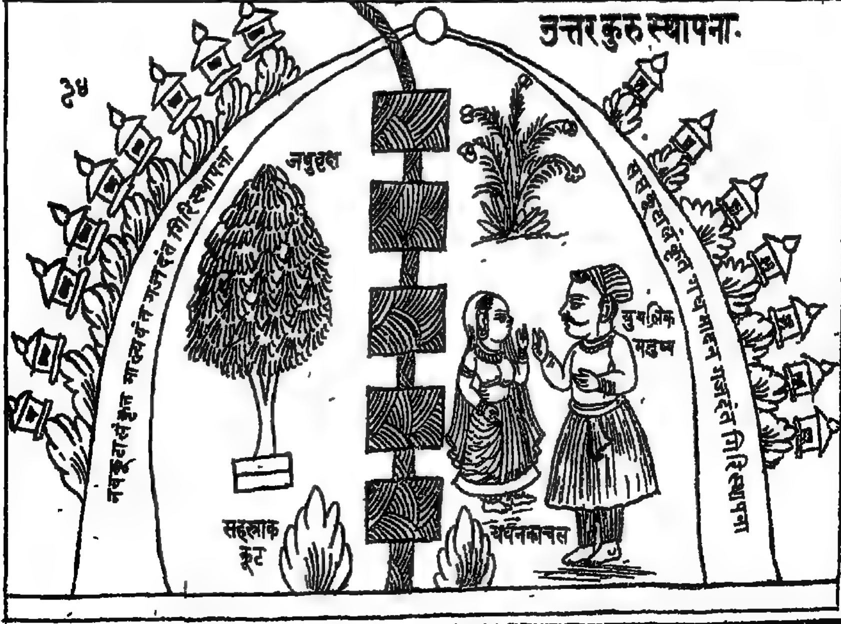
८३

शीता विजयमांहेली एक विजयनी स्थापना.





शीता विजयमांहेली एक विजयनी स्थापना.




जंबुवृक्ष स्थापना.
७५
देवभवन
देवभवन

अबाधायें प्रथम निषध नामे इहछे तेमज तेथकी तेटली अबाधायें बीजो देव कुरु इह, त्रीजो सूरप्रनइह चोथो सुलसइह अने पांचमो विद्युत्प्रन ए पांचे इह देवकुरु क्षेत्रमांहे सीतोदा नदीनां जाणवा ए सर्वइह पद्मइह सरखा एक हजार योजन लांबा अने पांचशें योजन पोहोला अने दश योजन ऊंमा जाणवा तथा प्रत्येक इहना एक दक्षण अने बीजो उत्तर ए बे दिसिनेविषे बे बारणा जाणवा. अने ए इहना जे अधि ष्ठायक देव छे ते सर्वे पोताना इहने नामे जाणवा ए इहथकी पूर्व अने पश्चिमदिशें दस योजन वेगलाइए एकेक इहना एकेक पासाने विषे दस दस कंचनगिरि छे. ते कंचन गिरि वैताढ्यनां कूट सवा छ योजन छे तेथी सोलगुणा मोटाछे. एहवा कंचनगिरि जंबु द्वीपने विषे सर्वे बसे जाणवां ते केम? देवकुरु तथा उत्तरकुरुना दश इहछे ते एकेक इहने बे पासे दश दश गुणतां वीश थाए ते वीशने दशवार गुणतां बसे पूरा थाए.

हवे कुलगिरि, यमकपर्वत, पांचइह अने मेरु एनां सात आंतरा कहेछे.

आठसे चोत्रीस योजन उपर एक कलाना सात नाग करीए एहवे एक नागे सहित अगीआर कला एटलुं कुलगिरि, जमकपर्वत, पांच इह तथा मेरुनो प्रत्येकें अंतर जा णवुं ते केम? देवकुरुनुं विस्तार अगीआर सहस्र आठसे बेतालीश योजन अने बे कला छे ते मांहेथी यमकपर्वत अने पांच इह तेणे रुंधेला जे छ सहस्र योजन छे ते काढिए तेवारे अठावनसे बेतालीस योजन अने बे कला वधे तेने सात नागें वेचतां आठसे चो त्रीश योजन आवे शेष चार उगरे तेने उगणीस साथें गणीए तेवारे छहुत्तेर कला थाए तेनीसाथें मूलगी बे कला एकठी करता अठोत्तर कला थाए ते वली सात नागे वेचतां उगणीसी अगीआर कला आवे. वली एक कला उगरे तेहना सात नाग करिए तेवारें एक नाग आवे एटलुं कुलगिरि, जमलपर्वत, पांच इह तथा मेरुनु अंतर जाणवुं.

तथा ए देवकुरुना पश्चिमार्द्धना मध्यनागें रूपानी पीठउपर शाल्मलीवृक्षछे तेना उ पर गुरुड देवतानो निवासछे तेनो वर्णन सर्व जंबूवृक्षनी पेरे कहेवो. पण एनां बार नाम न कहेवा तथा इहां देवकुरुनामे देव वशेछे तेथी एनुं देवकुरु एवुं शाश्वतुं नामछे.

हवे जंबूद्वीपना मध्यने विषे मेरुपर्वत छे तेनुं स्वरूप कहेछेः—

मेरुपर्वत कनकमय वाटलुं गोलाकारेछे. नवाणु हजार योजन ऊंच पणे अने एक हजार योजन नीचे धरतीमां ऊंम पणे, सरवाले एक लाख योजन ऊंचो छे तथा मूलें धर तीमां कंदे १००९० योजन उपर अगीआरीआ दश नाग एटलो पोहोल पणेछे अने धर ती तलें दश हजार योजन पोहोल पणेछे पछी ऊंचा जातां मात्रायें मात्रायें घटतो गयोछे एटले एक योजन ऊंचो जतां एक योजननो इग्यारमो नाग, इग्यार योजने एक योजन, शो

योजने नव योजन अने उपर अगीआरीआ एक जाग, हजार योजने नेवुं योजन अने अगीआरीआ दश जाग उपर एरीतें पोहोळ पणामां घटतो घटतो थको उपरें शिखरने तळे एक हजार योजन पोहोळ पणे थयो छे.

एनी परिधि मूळमां ३१९१० योजन उपर अगीआरीआ त्रण जाग तथा धरती तळें समजूतळा पासें ३१६२३ योजन अने उपरे शिखरने तळे ३१६२ योजन कांइक जा जेरा छे ए पर्वत उंधो करेलो गोपुछने संस्थाने संस्थित छे, सर्व रत्नमय छे, एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंम तेणे करी चोफेर वींटयो छे, एनां त्रण कांमछे, तिहां प्रथम धरतीमां हजार योजनो कांम ते माटी, पाषाण, वज्ररत्न तथा कांकरा ए चार पदार्थनो छे तथा पृथ्वी थकी सोमनसनामा वन सुधी बीजो कांम त्रेशठ हजार योजन प्रमाण छे ते स्फाटिकरत्न, अंकरत्न, रूप तथा कांचननो छे तथा त्यांथी उपर छत्रीश हजार योजननुं त्रीजो कांम ते रक्तवर्ण कनकनुं छे ए मेरुनां त्रण जाग कह्या.

ए मेरु पर्वतने विषे चार वन छे तेना नाम कहे छे एक जद्दशालवन, बीजुं नंदनवन, त्रीजुं सोमनस वन, चोथुं पंमक वन. तिहां प्रथम संजूतलाने स्थाने जद्दशाल वन छे तेना चारगजदंत गिरियें तथा सीता अने सीतोदा महानदीयें करी आठ जागें वेहेंच्युं थकुं आठ खंम थया छे ते जद्दशाल वन मेरु पर्वतने पूर्व पश्चिम दिसें बावीश बावीश हजार योजन लांब पणे छे अने उत्तर दक्षणे अढीशें अढीशें योजन पोहोळ पणे छे, देवकुरु ने उत्तर कुरु मांहे पेठुंछे ते वन पद्मवर वेदिका अने वन खंमेकरी चोफेर वींटयुंछे.

तथा मेरु पर्वतनी पूर्वादि चारे दिसें जद्दशाल वनमां पचाश पचाश योजन अवगाही जाइयें तिहां प्रत्येक दिसिये सिद्धायतन एटले श्री तीर्थंकर जगवाननुं देहेरुं छे ते पचाश योजन लांब पणे, पचीश योजन पोहोळ पणे अने छत्रीश योजन उंच पणे छे एवा चारेदिसे मळी चार सिद्धायतन छे तथा चारविदिसि ने विषे पचाश योजन अवगाही जाइयें तिहां प्रत्येक विदिसियें चार चार नंदा पुष्करणी शाश्वती वाव्य छे तिहां प्रथम इशान कूंणनी चार वाव्यना नाम कहे छे एक पद्मा,बीजी पद्मप्रजा,त्रीजी कुमुदा, चोथी कुमुदप्रजा ते पुष्करणी पचाश योजन लांब पणे, पचीश योजन पोहोळ पणे अने दश योजन उंम पणे छे, वेदिका वन खंमे सहीत छे ते चार पुष्करणीने वचें इशानेंद्रनो प्रासादावतंसक छे ते पांचशें योजन उंच पणे अने अढीशें योजन पोहोळ पणे छे.

तेमज अग्निकूंणें उत्पलगुल्मा, नलिना, उत्पला अने उत्पलोज्वला ए चार वाव्य पूर्वोक्त प्रमाण वाली तेनी वचें सौधर्मेंद्रनो परिवार सहीत प्रासादावतंसक जाणवो तेमज नैरूतकूंणे जृंगा, जृंगनिजा, अंजना अने अंजनप्रजा ए चार वाव्य वचें पण सौधर्मेंद्रनो परिवार सहीत प्रासादावतंसक जाणवो तथा वायूकूंणे श्रीकांता, श्रीचंदा,

श्रीमहिता अने श्रीनिलया ए चार पुष्करणी वच्चें इशानेंद्रनो प्रासादावतंसक जाणवो.

तेमज ए नद्रशाल वनमां पूर्वोक्त जे जिन नवन अने प्रासाद कह्या तेना आठ आं तराने विषे आठ करिकूट हाथीने आकारे ठे ते प्रत्येक कूट पांचशें योजन ऊंच पणे ठे अने सवासो योजन धरतीमां ठे ते आठे कूटने नामे आठे कूटना देवता प्रमुखनी राजधानी प्रमुख सर्वे कहेवी. ते आठ कूटनां नाम कहे ठे एक पद्मोत्तर दिग्गज हस्ति कूट बीजो नीलवंत दिग् हस्ति कूट, त्रीजो सुहस्तिदिगहस्ति कूट, चोथो अंजनगिरिदिगह स्ति कूट, पांचमो कुमुददिग् हस्ति कूट, ठठो पलासदिग्हस्ति कूट, सातमो अवतंस हस्ति कूट, आठमो रोचना गिरिदिग् हस्ति कूट. ए आठ दिग्गज कूट कह्या. ए नद्रशा लवनने विषे मेरुनी चारदिशि ते सीतोदा तथा सीतानां प्रवाहे रुंधी ठे तेमाटे पूर्वोक्त जिन नवन जे ठे ते नदीनां तट उपरें ठे अने प्रासाद जे ठे ते गजदंतगिरिनी पाशे ठे, अने जिननवन तथा प्रासादनी वच्चे ए आठ करी कूट ठे.

ते नद्रशाल वन थकी पांचशे योजन ऊंचा जइयें तिहां बीजो नंदनवन ठे ते पांचशें योजन चक्रवाल पणे फरतुं पोहोल पणे वलयाकारे मेरु पर्वतने चोफेर वींटीने रह्युं ठे तिहां ए९५४ योजन उपर अगीआरीआ ठ नाग एटलुं नंदन वन थकी बाहेर मेरु पर्व तनुं पोहोल पणु ठे तथा ३१४७ए योजन कांइक जाजेरा एटली परिधि ठे तथा ७ए५४ योजन उपर इग्यारीआ ठ नाग एटलो नंदन वन मांहे मेरु पर्वत पोहोल पणे ठे तथा २०३१६ योजन उपर आठ नाग एटली नंदनवननी मांहे मेरुनी परिधि ठे, ते नंदनवन पद्मवरवेदिका अने वन खंमे करी वींट्युं ठे एनी पण चार दिसायें चार सिद्धायतन नद्र शाल वननी पेरे जाणवा अने चार विदिसिने विषे शोल पुष्करणी जाणवी तेनां नाम कहेठेः–इशान कूणे नंदा, नंदोत्तरा, सुनंदा अने नंदीवर्द्धनी तथा अग्नि कूणे नंदिषेणा, अमोघा, गोस्तूपा अने सुदर्शना तथा नैरुतकूणे नद्रा, विशाला, कुमुदा अने पुंमरिकि णि तथा वायू कूणे विजया, विजयंति, जयंति अने अपराजिता. इहां पण चार चार वाव्यनी वच्चें नद्रशाल वननी पेरेज सौधर्म तथा इशानेंद्रना प्रासादावंतसक जाणवा.

तथा नंदनवनमां जिन नवन अने प्रासादनां आठ आंतराने विषे दिक्कुमारि कानां आठ कूट ठे ते कहे ठे नंदन वन कूट, मेरु कूट, निषध कूट, हिमवंत कूट, रज त कूट. रुचक कूट, सागरचित्र कूट, वज्र कूट, ए आठ कूट ठे तेमां दिग्कुमारिका व से ठे ते संनूतलथी एक सहस्र योजन ऊंची ठे केमके पांचशे योजन नंदन वन तेना उपर वली पांचशे योजन ऊंचा कूट ठे एरीतें हजार योजन उपर नवन मांहे वसे ठे माटे एने ऊर्द्धलोक वासिनी कहीयें तेना नाम कहेठे. मेघंकरी, मेघवती, सुमेघा हेममालिनी, सुवत्सा, वत्समित्रा, वज्रसेना अने बलाहिका ए आठ कुमारिका जाणवी

अने नवमो बलकूटछे ते हजार योजन ऊंचो छे माटे ते सहस्रांककूट मध्ये गण्युं छे ते कूट इशान दिशिना प्रासादथी पण इशान कूंणे नंदन वनने छेडेछे ते माल्यवंत गजदंताना हरिस्सह कूटने प्रमाणे छे इहां पांचशे योजननो पोहोळुं नंदन वन अने पांचशे योजननां कूट मेरुथी पचाश योजन वेगळां छे ते माटे शाढा चारशे योजन नंदवन माथे छे अने पचाश योजन अधर रह्या छे तेम नवमुं बलकूट तो नंदनवन माथे थोडुं रह्युंछे अने अकाशे अधर घणु रह्युंछे ए बलकूट उपर बलनामा देवतानी राजधानी कही छे.

हवे नंदनवन थकी शाढा बाशठ हजार योजन ऊंचा जइयें तिहां त्रीजुं सोमनस वन छे ते पांचशे योजन चक्रवाल पणे पहोळुं मेरुने चोफेर वलयाकारे वींटीने रह्युंछे, ४२७२ योजन उपर अगीआरीआ आठ भाग एटलो मेरु पर्वत बाहेर पोहोल पणेछे तथा १३५११ योजन उपर इग्यारीआ छ भाग एटलो बाहेर परिधि पणे छे, ३२७२ योजन उपर अगीआरीआ आठ भाग एटलो सोमनस वननी मांहेली कोरे मेरु पोहोल पणे छे तथा १०३४९ योजन उपर अगीआरीआ त्रण भाग एटलो मांहे परिधि पणे छे ए सोमनसवन एक पद्मवरवेदिका अने वनखंडे करी चोफेर वींट्युंछे, इहां कूट नथी माटे कूट वर्जीने शेष सिद्धायतन तथा पुष्करणी अने प्रासादावंतसक सर्वेनी वक्तव्यता तेमज नंदनवननी पेरे कहेवी. इहांनी शोल पुष्करणीना नाम कहेछेः—इशानकूंणे सुमना, सोमनसा, सौमनस्या अने मनोरमा तथा अग्निकूंणे उत्तरकुरु, देवकुरु, वारिषेणा अने सरस्वति तथा नैरुतकूंणे विशाला,माघभद्रा,अभयशेना अने रोहिणी तथा वाकूंणे भद्रा, भद्रोत्तरा, सुभद्रा अने भद्रावति ए नाम जाणवा. इहां कूट नथी.

सोमनस वनथकी छत्रीश हजार योजन ऊंचा जइयें तिहां मेरुपर्वतना शिखरतलें पंडक नामे वनछे ते ४९४ योजन चक्रवाल पणे वलयाकारे मेरुनी चूंलीकाने चोफेर वींटीने रह्युं छे तिहां ३१६२ योजन जाजेरा मेरुनी बाहिर परिधि छे.

पंडकवनना मध्यभागें वर्त्ते इहां मेरुपर्वतनी चूलिका चोटली रूप छे ते चालीश योजन ऊंच पणे छे मूलमां बार योजन पोहोळ पणे छे, वच्चमां आठ योजन पोहोळ पणे छे, मूलमां शाडत्रीश योजन जाजेरा परिधि पणे अने उपर बार योजन जाजेरा परिधि पणे छे,एक योयजन मूल थकी ऊंचा जइयें तेवारे पोहोळ पणे योजननो पांचमो भाग घटे, एम पांच योजनने एक योजन घटे, एगोपूछने संस्थाने संस्थितछे, सर्वे वैडूर्य मय नीलीछे, ते चूलीका एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंडे करी चोफेर वींटेली छे, तेना उपरे मध्यभागे एक सिद्धभगवाननुं आयतन एटले घर छे अर्थात् देहरुं छे ते एक कोश लांब पणे,अर्द्धकोश पोहोळ पणे अने १४४० धनुष ऊंच पणे छे,

ते पंडक वनने विषे पूर्वादि चारदिसायें चार सिद्धायतन तथा चार विदिसिनी शोल

पुष्करणीनो तथा चार प्रासादावतंसकनो वर्णन पूर्वेला वननी परे यावत् सौधर्म इशानेंद्रना प्रासाद पर्यंत इहां पण जाणवो इहांनी शोल पुष्करणीना नाम कहेछे इशान कूंणे पुंद्रा, पुंद्रप्रभा, सुरक्ता अनें रक्तवति तथा अग्निकूंणे क्षीररसा, इक्षुरसा, अमृतरसा अने वारुणी तथा नैरुत्यकूंणे शंखोतरा, शंखा, शंखावत्तर अने बलाहिका तथा वायुकूंणे पुष्पोत्तरा, पुष्पवती, सुपुष्पा अने पुष्प मालिनी ए शोल वाव्यनां नाम कह्या.

हवे पंडकवननेविषे श्रीतीर्थंकरने जन्माभिषेक करवानी शिला केटली छे ते कहे छे. तिहां पूर्वदिसिने छेहेडे पांडुसिला छे ते उत्तर दक्षण लांबी पांचसें योजन अने पूर्व पश्चिम अढीसें योजन पोहोल पणे छे, चार योजन जाड पणेछे सर्व अर्जुन सुवर्ण मयछे, अर्द्धचंद्राकारे छे, सिलानी वक्रता चूलिका साहामीछे, वेदिका अने वनखंडे करी चोफेर वींटीछे, तेना चारेदिसें चार सोपान पगथालीयाछे, यावत् तोरण पर्यंत तथा देवता बेसे छे इत्यादि वर्णन जाणवो तेना मध्य भागें एक उत्तरदिसि अने बीजो दक्षणदिसि ए बे सिंहासनछे ते सिल्लाना लंबाइ पोहोलाइ तथा उंचाइने आठ हजारमें भागे छे एटले पांचशें धनुष लांब पणे अढीशो धनुष पोहोलपणे अने चार धनुष उंचपणेछे तिहां उत्तर दिसिना सिंहासन उपर ते दिसितरफना कछादिक आठ विजयना तीर्थंकरनो जन्माभिषेक थाय तथा जे दक्षण दिसिनुं सिंहासन छे ते उपरे ते दिसिना वछादिक आठ विजयना तीर्थंकरनो जन्माभिषेक थाय.

तथा दक्षणदिसिने छेहेडे पांडुकंबल नामे शिलाछे ते पण अर्जुन सुवर्णमयछे ते शिला पांडु शिला प्रमाणे लांबी पोहोली छे तेना उपर एकज सिंहासन छे तिहां दक्षिणदिशि तरफनां भरतक्षेत्रमां उत्पन्न थयला तीर्थंकरनो जन्माभिषेक थाय छे, केमके भरतक्षेत्र मां एक समयें एकज तीर्थंकर उपजे छे माटे एकज सिंहासन छे.

तथा पश्चिमदिसिने छेहेडे रक्तशिला नामे शिला छे ते अर्जुन सुवर्ण मयछे एनी लंबाइ पोहोलाइ पूर्वेली परें जाणवी. तेना उपर बे सिंहासन छे तिहां पश्चिम महाविदेहमां उत्पन्न थयला तीर्थंकरोनो जन्माभिषेक थाय छे ते आवी रीते के दक्षणदिसिना सिंहासन उपर, पद्मादिक आठ विजयना तीर्थंकरोनो जन्माभिषेक थाय अने उत्तरदिसिना सिंहासनें, वप्रादिक आठ विजयना तीर्थंकरोनो जन्माभिषेक थाय.

तथा चूलिकाने उत्तरदिसे पंडकवनना उत्तरदिसिने छेहेडे रक्तकंबल नामे शिला छे तेपण अर्जुन सुवर्णमय छे तेनो वर्णन पूर्वेली परे जाणवो तेना मध्यभागें एक सिंहासन छे तिहां ते दिसिमां आवेला ऐरवत क्षेत्रना तीर्थंकरनो जन्माभिषेक थायछे कारण के ऐरवतमां पण एक समये एकज तीर्थंकरनुं जन्म थाय छे तेथी एकज सिंहासन

उत्तर तरफनी शिला उपर छे अने महाविदेहना पूर्व पश्चिमें प्रत्येकें एक समये एके की बाजुयें बे बे तीर्थंकरनुं जन्म थायछे तेवाले चार तीर्थंकर एक समये जन्मेछे माटे पूर्व पश्चिमनी शिला उपर जन्माभिषेक करवाना बे बे सिंहासन छे तेवाले मेरुनी चार शिला उपर छ सिंहासनछे हवे मेरुने विषे सर्व सिद्धायतनादिकनी संख्या कहेछे.

१ नद्रशालवने.	२ नंदनवने.	३ सोमनसवने.	४ पांडुकवने.
४ सिद्धायतन ४.	४ सिद्धायतन ४	४ सिद्धायतन ४. ४	४ सिद्धायतन ४.
४ प्रासादावतंसक ४	४ प्रासादावतंसक ४	४ प्रासादावतंसक. ४	४ प्रासादावतंसक.
१६ पुष्करणीवाव्य १६	१६ पुष्करणीवाव्य १६	१६ पुष्करणीवाव्य १६	१६ पुष्करणी. १६
८ दिसिहस्तिकूट ८	ए कूट.	१ चूलिकायें सिद्धायतन	४ अभिषेकशिला.

मेरु पर्वतनां शोल नाम हेतु सहीत कहेछे १ मंदरनामे देवता अधिपतिछे माटे मंदरपर्वत २ मेरु ३ मनने रमे ते माटे मनोरम ४ नलुंछे दर्शन जेनुं तेमाटे सुदर्शन ५ पोतेज रत्नादिके करी प्रकाश छे माटे स्वयंप्रन ६ सर्व पर्वत थकी उंचो तथा श्रीतीर्थंकरना जन्माभिषेक थाय छे माटे गिरिराज ७ अनेक प्रकारना रत्ननो समूह एने विषेछे माटे रत्नोच्चय ८ पांडुशिलादिक शिलानो समूह छे माटे शिलोच्चय ए मेरु थकी चारे दिसे लोक सरखो समनागे छे माटे लोकनुं मध्य १० लोकना मध्यपणा माटे लोकनाभि ११ अत्यंत निर्मल पणा माटे आछो १२ सूर्य चंद्रादिक आवर्त्त प्रदक्षणा करेछे माटे सूर्यावर्त्त १३ सूर्यादिक ग्रह, नक्षत्र अने तारा एनी पूठें फरेछे माटे सूर्यावर्त्त १४ सर्व पर्वतथकी उत्तम माटे उत्तम १५ मेरुना मध्यवर्त्ति अष्टप्रदेशिक रुचक थकी दिसि विदिसि नीकली छे माटे दिशादि १६ सर्व गिरिमांहे उंच पणे करी मुकुट सरखो माटे अवतंस. इहां मंदर नामे देवता एक पल्योपमायुयें वसेछे तेथी एवुं मंदर एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे महाविदेह मांहे बत्रीश विजय छे ते वखाणे छे.

मेरु पर्वतना नद्रशाल वन थकी पूर्वदिसि अने पश्चिमदिसिने विषे प्रथम बे विजय पछी बे वक्षस्कारा पर्वत वली बे विजय तेवार पछी बे अंतरनदी वली बे विजय एम अनुक्रमे एकेकि दिसायें शोल विजय तथा आठ वक्षस्कारा पर्वत अने छ अंतरनदी थाय तेवारें बे पासाना बत्रीश विजय तथा शोल वक्षस्कार पर्वत अने बार अंतर नदी थाय.

हवे बत्रीस विजयनुं पोहोलपणानुं प्रमाण कहे छे.

तिहां बावीससें बार योजन तथा एक योजनना आठ नाग करिए तेहवा सात नाग उपर एटलुं एकेका विजयनुं पोहोलपणुं जाणवुं. तथा वक्षस्कार पर्वत शोल छे ते एकेको पांचसे योजन पोहोलो छे. तथा बार अंतरनदी छे ते एकेकी एकसोने पचीस योजन पोहो

छीछे. हवे ए विजयादिनुं पोहोळपणुं जाणवानुं उपाय लखेछे. चउपन्न सहस्र योजन जूमि, मेरु अने जद्रशालवने रुंधीछे. तथा चार सहस्र योजन जूमी, वक्षस्कारा पर्वतोए रुंधीछे, तथा सातसेनें पचास योजन जूमिना अंतरनदीए रुंध्याछे, तथा पांच सहस्र आठसे चुमालीस योजन जूमी, बे वनमुखे रुंधीछे ए सर्व योजन एकठा करिए तेवारें चोसठ सहस्र अने पांचसे चोराणु योजन थाए. तेने एक लक्ष योजन प्रमाण जे जंबूद्वीप छे, ते मांहेथी काहाडीए. तेवारे पांत्रीश सहस्र चारसें ने छ योजन उगरे. तेने सोळ विजय छे, माटे सोळ जागे वेहेंचीए तेवारे बावीससें अने बार योजन लाजे अने उपर चउद योजन उगरें तेना प्रत्येक योजनना आठ जाग करिए तेवारे एकसोने बार जाग थाए. ते सोळ जागे वेचतां आठीआ सात जाग लाजे एटले एकेक विजयनुं परिमाण बावीससे ने बार योजन उपर आठीआ सात जाग एटलुं जाणवुं.

हवे ए विजयादिकनुं लांब पणुं कहेछे.

सोळ हजार पांचसेने बाणु योजन उपर बेकळा एटलुं ए सर्व विजय तथा वक्षस्कार तथा अंतर नदी ए सर्वनुं प्रत्येक लांब पणुं जाणवुं. वळी शीतोदा तथा शीतानें अंते पूर्व तथा पश्चिम दिशें जे चार वनमुख छे, तेहनुं पण एटलुंज लांब पणुं जाणवुं.

हवे वक्षस्कार पर्वतनुं उंचपणु कहे छे.

वक्षस्कार पर्वत गजदंत गिरिनी पेरे उंचाछे, जेम गजदंतगिरि कुलगिरिने समीपे चारसें योजन उंचाछे, छेहेडे मेरुपर्वतनी पाशे पांचसे योजन उंचाछे, तेम ए वक्षस्कार पण कुलगिरिने समीपे चारसें योजन उंचाछे, अने छेहेडे शीतोदा तथा शीताने समीपे पांचसें योजन उंचाछे. हवे सोळ वक्षस्कार पर्वतना तथा बार अंतरनदिना अने बत्रीश विजयना नाम कहेछे. ए सर्व माल्यवंत नामे जे गजदंतगिरिछे, ते थकी प्रदक्षिणावर्त्ते छे.

तिहां प्रथम सोळ वक्षस्कारना नाम कहेछे.

एक चित्रकूट, बीजुं वम्मेकूट, त्रीजुं नळिनीकूट, चोथुं एकशेळकूट, पांचमु त्रिकूट, छठुं वैश्रमणकूट, सातमुं अंजन, आठमुं मातंजन, नवमुं अंकापाती, दशमुं पद्मापाती, अगीआरमुं आशीविष, बारमुं सुखावह, तेरमुं चंड, चौदमुं सूर, पंदरमुं नाग अने सोळमुं देव ए सोळ वक्षस्कार गिरिना नाम जाणवा. ए एकेका वृक्षस्कार उपर चार चार कूटछे तेमां एक तो सिद्धायतनकूट बीजो ते पर्वतने नामेकूट, त्रीजुं पाछला विजयने नामेकूट, अने चोथुं आगला विजयने नामेकूट ए चारकूट सर्व वृक्षस्काराने विषेछे तिहां सिद्धायतनकूट उपर श्रीसिद्धनुं देहेरुं होय अने शेषकूट ने विषे तेते नामे देवताउना प्रासादावंतसक छे. ए सर्व पर्वतना अधिपति देवो पण एज नामे जाणवा अने सर्व पर्वत पद्मवरवेदिका तथा वनखंडे करी वींटेला छे यावत् देवता बेसेछे इत्यादि सर्व कहेवुं.

हवे बार अंतर नदीना नाम कहेछे.

ग्राहावती, द्रहावती, पंकावती, तप्तजला, मत्तजला, उन्मत्ता, खीरोदा, शीतश्रोता, अंतर्वाहिनी, उर्म्मिमालिनी, गंजीरमालिनी, फेनमालिनी, ए नामे बार अंतर नदी जाणवी. ते धुरे तथा छेहडे सर्व नदिउ बशयोजन प्रमाण उंडा एवा जे नीलवंतने नीचें छ कुंड छे, तथा निषेधने नीचे पण छ कुंड छे, ते थकी नीकली एवी ए बार अंतर नदी ते कुंडने नामेज जाणवी. जेम ग्राहावत कुंड थकी ग्राहावती नदी निकली एरीते सर्व नदीने नामे कूंडना नाम पण जाणवा, अहिंआं नदीनो देवीनुं द्वीप प्रमुख जे विशेष प्रकारनी वक्तव्यता छे ते सर्व रोहितांशा नदीने परिमाणे जाणवी. ए सर्व अंतरनदीउ पद्म वर वेदिका अने वनखंडे करी वींटेली छे.

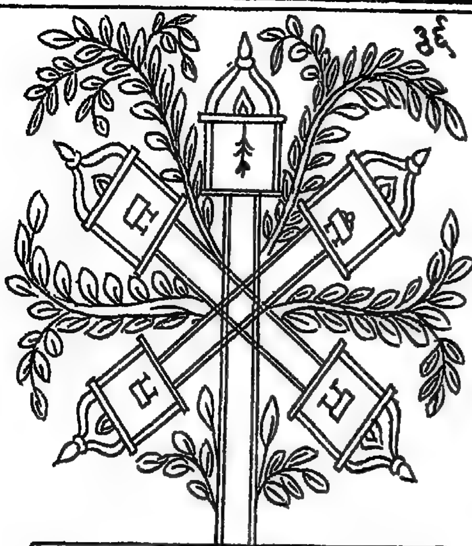
हवे बत्रीश विजयनां नाम कहेछे.

एक कछ, बीजो सुकछ, त्रीजो महाकछ, चोथो कछावती, पांचमो आवर्त्त, छठो मंगलावर्त्त, सातमो पुष्कलावर्त्त, आठमो पुष्कलावती, नवमो वत्स, दशमो सुवत्स, अगीआरमो महावत्स, बारमो वत्सावती, तेरमो रम्य, चउदमो, रम्यक, पंदरमो रमणिक, सोलमो मंगलावती, सत्तरमो पद्म, अढारमो सुपद्म, उगणीशमो महापद्म, वीशमो पद्मावती, एकवीशमो शंख, बावीशमो कुमुद, त्रेवीशमो नलिन, चोवीशमो नलिनावती, पच्चीशमो वप्र, छवीशमो सुवप्र, सत्तावीशमो महावप्र, अठावीशमो वप्रावती, उंगणत्रीशमो वल्गु, त्रीशमो सुवल्गु, एकत्रीशमो गंधिल अने बत्रीशमो गंधिलावती,

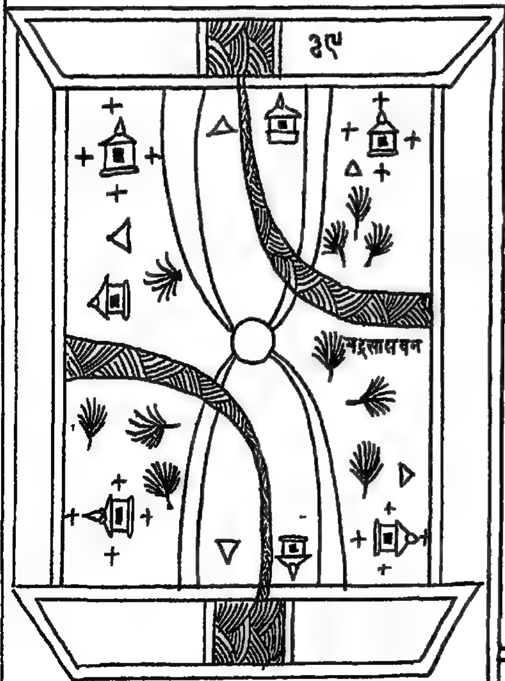
ए कछादिक बत्रीश विजय जेछे तेमां पूर्व अने पश्चिम दिशि गत जे लांबा वैताढ्य पर्वतछे तेणे नरत तथा ऐरवतनी पेरे विजयना अर्द्ध कीधां छे एटले एकेकी विजयना बे बे खंड कीधां छे, वली एकेका विजयने विषे बे बे नदी छे तेणे करी छ खंड कीधां छे तथा ए प्रत्येक विजयमां नदीनी दिशियें दक्षणार्द्ध विजयने विषें दक्षण नरतनी अयोध्या नगरी सरखी बत्रीश विजयने विषे बत्रीश नगरीउ छे.

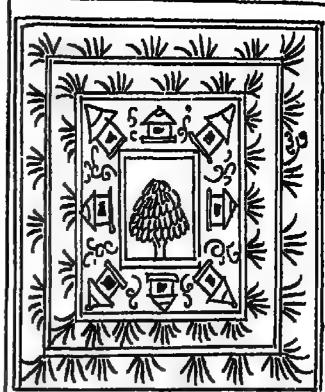
ए बत्रीश नगरीउना नाम अनुक्रमे कहेछे.

क्षेमा, क्षेमपुरा, अरिष्टा, अरिष्टपुरा, खड्गी, मंजूषा, ऋषभपुरी, पुंडरिगिणी, सुसीमा, कुंडला, अपरावती, प्रभंकरा, अंकावती, पद्मावती, शुभा, रत्नसंचया. अश्वपुरा, सिंहपुरा, महापुरा, विजयपुरा, अपराजिता, अपरा, अशोका, वीतशोका, विजया, वैजयंती, जयंती, अपराजिता, चक्रपुरा, खड्गपुरा, अवध्या अने बत्रीसमी अयोध्या नगरी जाणवी. ए बत्रीस नगरी ते नदिनी दिशिए जे विजयनुं अर्द्धछे तेमांहे जाणवी. ए प्रत्येक राजधानिमां ते तें विजयने नामे चक्रवर्त्ति थाय जेम कछविजयनी क्षेमा नामे राजधानीमां कछ चक्रवर्त्ति थाय तेम सर्व विजयोने विषे जाणी लेवुं तथा कछविजयमां

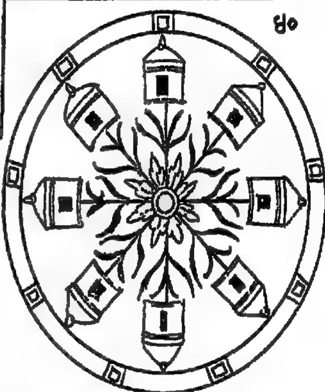


उत्तरकुरुक्षेत्रना पूर्व भागमां जंबुवृक्षपीठिका स्थापना

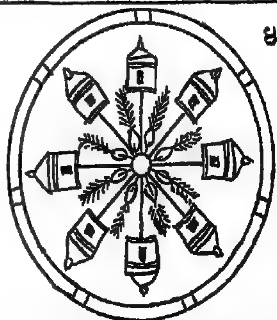




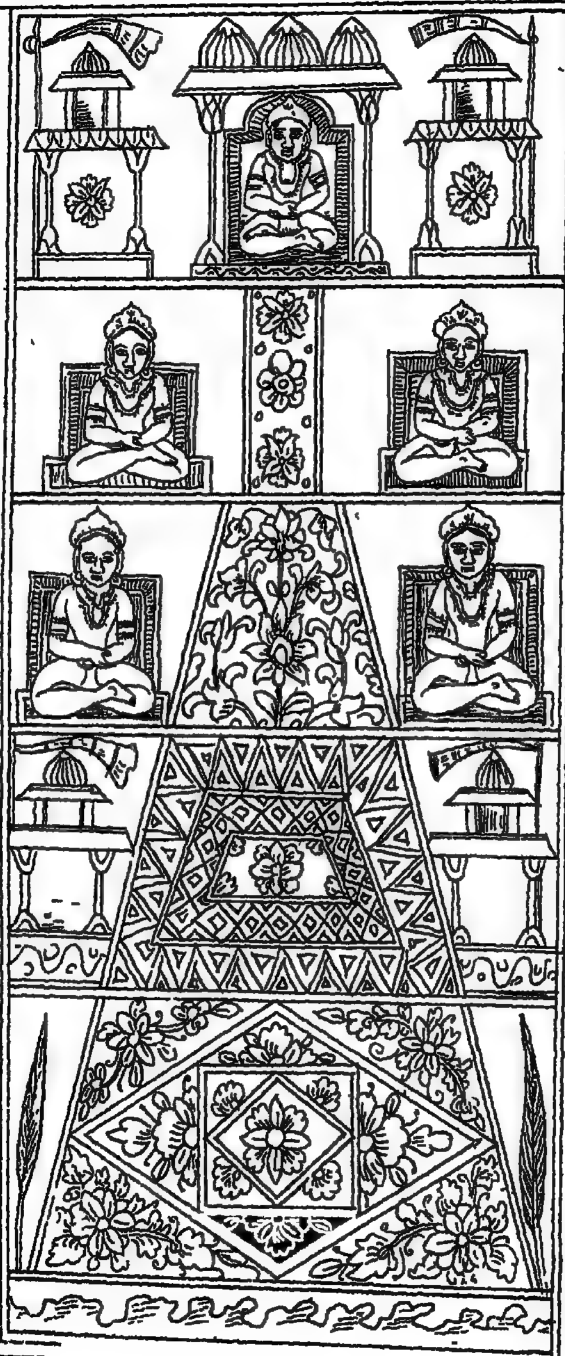
जंबुवृक्षनी पीठिकाने फरती पद्मवरवेदिका तथा वन-
खंड अने प्रासादोनी स्थापना



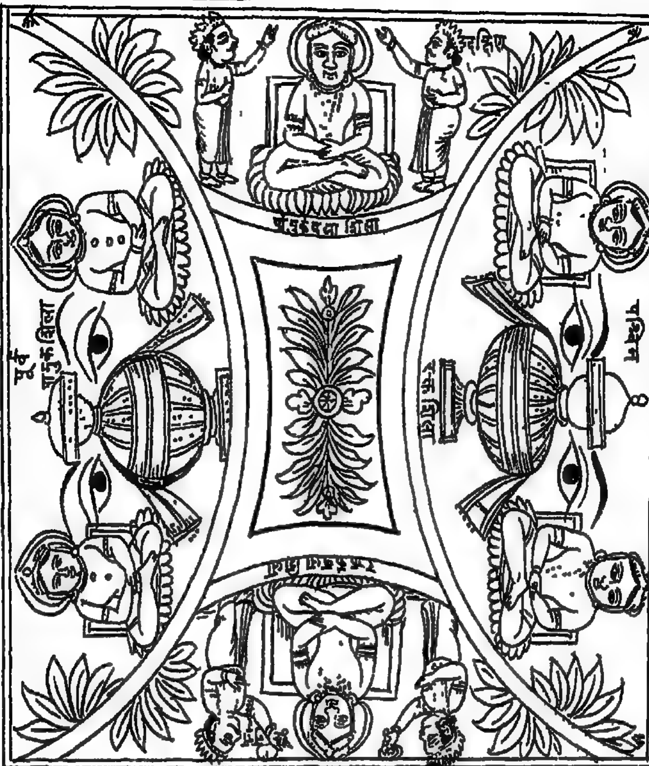
मेरु पर्वत ऊपरना नंदनवननी स्थापना



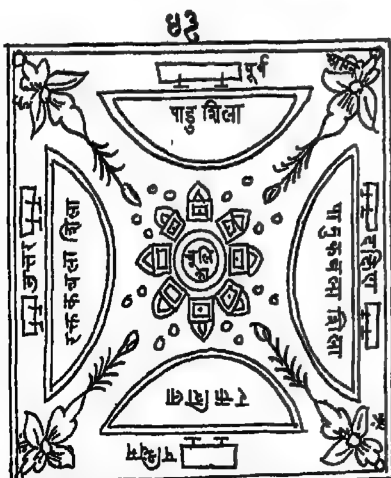
मेरुना सोमनसवननी स्थापना

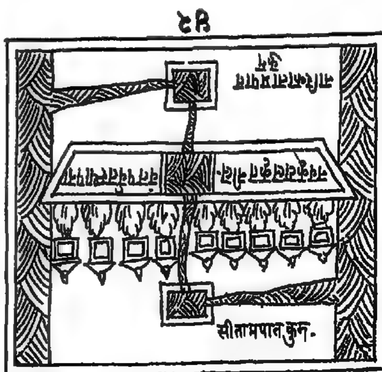


मेरुपर्वत स्थापना.

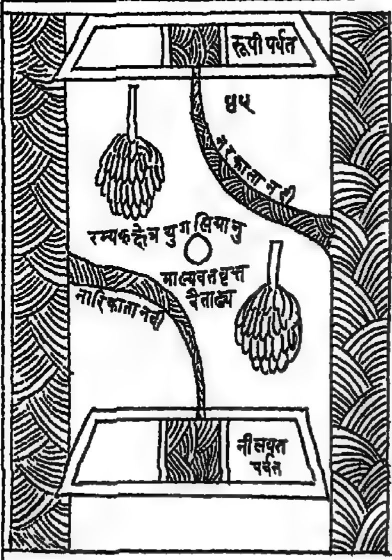


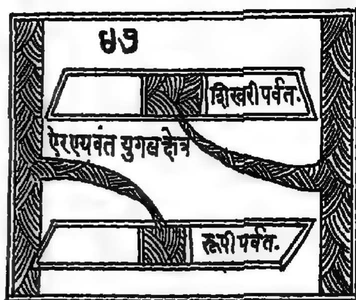
पांडुकवनने विषे श्री तीर्थंकरने जन्माभिषेक करवानी शिला तथा सिंहासननी स्थापना.

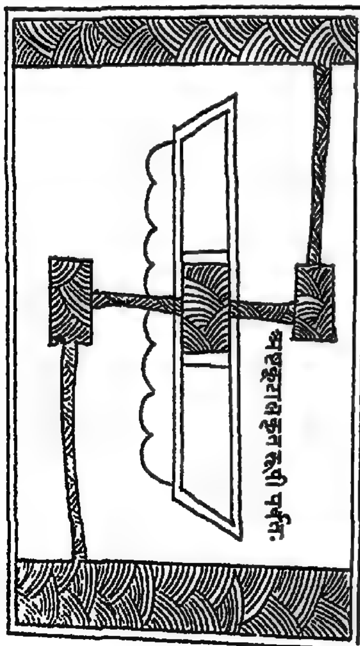


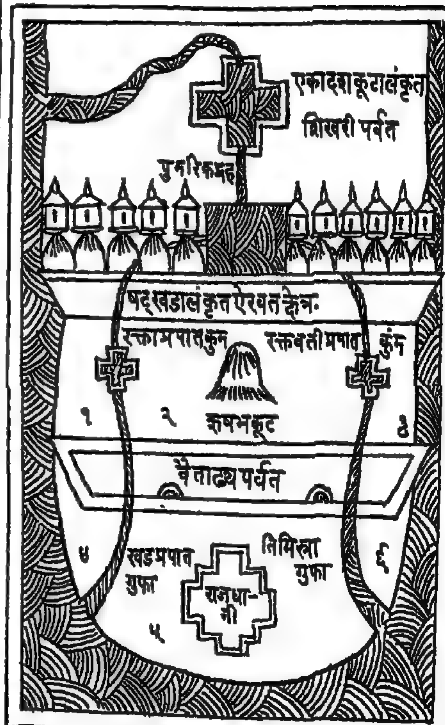


मेरुपर्वत उपर पांडुकवन स्थापना.


रूपी पर्वत
४५
कांता नदी
रम्यक क्षेत्र युगलियानु
माल्यवंत वृत्त
वैताढ्य
नारिकांता नदी
नीलवंत
पर्वत


४७
शिखरी पर्वत.
ऐरण्यवंत युगल क्षेत्र
रूपी पर्वत.


४६
अष्टकूटालंकृत रूपी पर्वत.


४८
एकादश कूटालंकृत
शिखरी पर्वत
पुंडरिक द्रह
षट्खंडालंकृत ऐरवत क्षेत्र
रक्ताप्रपातकुंड
रक्तवती प्रपात कुंड
१
२
ऋषभकूट
३
वैताढ्य पर्वत
४
खंडप्रपात
गुफा
तिमिस्रा
गुफा
६
राजधा-
नी
५

कच्छ नामे देवता एक पल्योपमायु वालो वसे छे तेम सर्व विजयने विषे ते ते विजयने नामे देवता पण कहेवा.

हवे विजयनी नदी कहेछे. निषध तथा नीलवंतने समीपें जे कुंमछे ते थकी नीकली एवी गंगा अने सिंधु, नामे जे नदी छे ते कच्छादिक आठ विजय तथा पद्मादिक आठ विजय मली शोल विजयने विषे ए बे बे नदी जाणवी. अने शेष बीजा जे वच्छादिक आठ विजय तथा वप्रादिक आठ विजय ए शोल विजयने विषे रक्ता अने रक्तवती नामा बे बे नदी छे ते सर्व नदीउं वैताढ्य प्रत्यें नेदीने शीतोदा तथा शीतामांहे प्रवेश करे छे. ए कच्छादिक विजयथी दक्षणावर्त्त गणीयें.

हवे महाविदेह क्षेत्रनेविषे पूर्व तथा पश्चिमदिशिए शीतोदा तथा शीतानदी जगतीने नेदीने ज्यां समुद्रमांहे मले छे. त्यां जगती मांहेनी दिशि शीतोदा तथा शीता नदीने बन्ने बाजु चार वन मुखछे तेनुं जगतीनी विवक्षाविना पहोलपणुं ठंगणत्रीशसेने बावीस योजननुं शीतोदा तथा शीता नदीने समीपे जाणवुं. पछी संकोचता संकोचता निषध तथा नीलवंतने पासे वनमुखनुं विस्तार एककला जाणवी. हवे कुलगिरि थकी नदी दिशि जातां वांछित स्थानकने विषे वनमुखनुं विस्तार जाणवानुं विधि कहेछे. निषध तथा नीलवंतने समीपे वनमुखनुं विस्तार एक कलाछे तो नदीने समीपे निषध तथा नीलवंत थकी सोल हजार पांचसेने बाणु योजन उपर बे कला जइए तेवारे वनमुखनुं विस्तार केटलुं थाय ते जाणवा माटे ए पूर्वोक्त सोल हजार पांचसे ने बाणु योजननी कला करीए ते कला त्रण लाख पंदर हजार बसे ने पचाश थाय, तेने नदीने समीपे वनमुखनुं विस्तार ठंगणत्रीससेने बावीश योजनछे तेनी साथे गुणीए तेवारे बाणुकोडी अगीआर लाख साठ हजारने पांचसे थाय, तेने ते क्षेत्रनुं विस्तार त्रण लाख पंदर हजार बसे ने पचाश साथे नाग आपीए तेवारे ठंगणत्रीशसे ने बावीश योजन वनमुखनुं विस्तार थाय. ए प्रकारे ज्यां वांछिए त्यां वनमुखनुं विस्तार लावे. ए प्रत्येक वनमुख पद्मवरवेदिका अने वनखंमें करी वींटेला छे यावत् देवता बेसे छे. इत्यादि सर्व कहेवुं.

हवे ए विजयादिकनुं विस्तार एकठो करतां लाख योजन पूर्ण थाय ते कहेछे.

पांत्रीस हजार चारसेने छ योजन एटला सर्व विजयनुं विष्कंन जाणवो. अने बे वनमुखनुं विष्कंन अठावनसे ने चुमालीश योजन छे, सातसेने पचास योजन अंतरनदीउंनुं पहोलपणुंछे, अने चोपन हजार योजन मेरु तथा नद्रशाल वन छे, ते केम के नद्रशाल वनजे छे; ते मेरुथकी पूर्वदिशि अने पश्चिमदिशि बावीश बावीश हजार योजनछे. ते माटे बे बाजुना चुमालीश हजार योजन थया अने मेरुनुं मध्य विस्तार दश हजार यो

जन छे. ए एकठा करतां चोपन्न हजार योजन पूरण थाय तथा वक्षस्कार पर्वतनुं वि स्तार चार हजार योजनछे ए सर्व एकठो करिए तेवारें लाख योजन पूर्ण थाय छे.

हवे अधो लोकमांहे गाम वखाणेछे.

मेरुना समभूतलनी अपेक्षाए मात्राएं मात्राएं भूमी नीची थती जायछे. ते मेरुपर्वत थकी पश्चिमदिशियें बेतालीश हजार योजन भूमिने विषे गया पछी त्यां एक हजार यो जन भूमी समभूतलथी ऊंडीछे, त्यां अधोगामी माणस वसेछे. समभूतलथी नवसें योज न हेठा अने नवसें योजन ऊंचा तिहां सुधी तिर्छो लोक कहीयें तथा नवसेंथी ऊंचुं ते ऊर्द्ध लोक कहीयें अने नवसेंथी नीचुं ते अधोलोक कहीयें. ए महाविदेहनो विचारकह्यो.

जंबूद्वीपना माहाविदेह संबंधि पूर्व पश्चिमनां लक्ष योजन मेलक यंत्र.

पूर्वदिसि.			पश्चिमदिसि.		
अं०	स्थानकनां नाम.	योजनसंख्या	अं०	स्थनकनां नाम.	योजनसंख्या
१	सीतामुखवनजगतीसहीत.	२९२२	१९	भद्रशालवन पश्चिम दिसियें.	२२०००
२	आठमी नवमी, विजय.	२२१२ ७/८	२०	बत्रीशमी, सत्तरमी विजय.	२२१२ ७/८
३	वखारो पर्वत.	५००	२१	वखारो पर्वत.	५००
४	सातमी, दशमी विजय.	२२१२ ७/८	२२	एकत्रीशमीअढारमीविजय	२२१२ ७/८
५	अंतर नदी.	१२५	२३	अंतरनदी.	१२५
६	छठी अगीआरमी विजय.	२२१२ ७/८	२४	त्रीशमी,ओगणीशमीविजय.	२२१२ ७/८
७	वखारो पर्वत.	५००	२५	वखारो पर्वत.	५००
८	पांचमी, बारमी विजय.	२२१२ ७/८	२६	ओगणत्रीशमी,वीशमीविज.	२२१२ ७/८
९	अंतर नदी.	१२५	२७	अंतर नदी.	१२५
१०	चोथी, तेरमी विजय.	२२१२ ७/८	२८	अठावीशमी,एकवीशमीवि	२२१२ ७/८
११	वखारो पर्वत.	५००	२९	वखारो पर्वत.	५००
१२	त्रीजी चौदमी विजय.	२२१२ ७/८	३०	सत्तावीशमी,बावीशमीवि०	२२१२ ७/८
१३	अंतर नदी.	१२५	३१	अंतर नदी.	१२५
१४	बीजी, पंदरमी विजय.	२२१२ ७/८	३२	छवीशमी,त्रेवीशमीविजय.	२२१२ ७/८
१५	वखारो पर्वत.	५००	३३	वखारो पर्वत.	५००
१६	पहेली, शोलमी विजय.	२२१२ ७/८	३४	पच्चीशमी,चोवीशमीविजय	२२१२ ७/८
१७	भद्रशालवन पूर्वदिसियें.	२२०००	३५	सीतोदा मुखवनजगतीस०	२९२२
१८	मेरुपर्वतनुं विष्कंभ.	१००००	३६	सरवाळे.	१०००००

हवे तीर्थंकर तथा चक्रवर्त्ति प्रमुख क्यां उपजे ते कहेछे.

आ जंबूद्वीपने विषे जघन्य तो चार तीर्थंकर समकाले होए वली उत्कृष्टतो बत्रीश विजयना बत्रीश अने भरत तथा ऐरवतना बे मलीने चोत्रीश समकाले होए. तथा वासुदेव, चक्रवर्त्ति अने बलदेव ए त्रण पुरुष जघन्यतो समकाले प्रत्येके चार चार होए अने उत्कृष्टा त्रीश होए जेवारे चक्रवर्त्ति होए, तेवारें वासुदेव न होए, अने जेवारे वासुदेव होए, तेवारे चक्रवर्त्ति नहोए तेमाटे त्रीश समकाले होए, पण चोत्रीश नहोए, बत्रीश विजय तथा भरत अने ऐरवत मली चोत्रीश क्षेत्र उपजवाना जाणवा.

हवे नीलवंत पर्वतनो विचार कहेछेः—

महाविदेहने उत्तरदिसें अने रम्यकक्षेत्र युगलीयानुं तेनी दक्षण दिसें नीलवंत नामा वर्षधर पर्वत छे ते जेम निषध पर्वतनी वक्तव्यता कही तेमज लंबाइ पोहोलाइ आदिक एमां पण कहेवी अने इहां केशरी नामे द्रहछे तेनी दक्षणदिसि थकी सीता महानदी नीकली थकी उत्तरकुरु मांहे आवती बे यमक पर्वत तथा पांच द्रह प्रत्यें बे प्रकारें वेहेंचती थकी एनी वच्चें थइने चोरासी हजार नदीयें पूराती पूराती भद्रशालवन प्रत्यें आवती मेरुपर्वत पासें बे योजन अण पोहोती थकी पूर्वदिसि साहामी वली ते माल्यवंत नामे गजदंत पर्वतने नीचें भेदीने मेरुपर्वतनी पूर्वदिसें पूर्वमहाविदेह क्षेत्रने बे भागें वेहेंचती थकी एकेका चक्रवर्त्तिना विजयथकी अठावीश अठावीश हजार नदीयें पूराती पूराती ५३२००० नदीयें सहीत थकी विजय नामा जंबूद्वीपनां द्वारने नीचें जगती भेदीने पूर्वदिसें लवण समुद्रमां मलेछे शेष अधिकार सीतोदा परे जाणवुं.

इहां नारीकांता नदी, केशरी द्रहनी उत्तरदिसि थकी नीकली तेनुं अधिकार हरिकांता नदीनी पेरे जाणवुं पण एटलुं विशेष जे गंधापाती वृत्तवैताढ्य पर्वतने एक योजन अण पोहोती थकी पश्चिम साहामी वली थकी समुद्रमां मले छे शेष तेमज जाणवुं.

नीलवंत पर्वतना नव कूटना नाम कहेछेः—१ सिद्धायतन कूट २ नीलवंत कूट ३ पूर्वविदेह कूट ४ सीता कूट ५ कीर्त्तिदेवी कूट ६ नारीकांता कूट ७ अपरविदेह कूट ८ रम्यककूट ९ उपदर्शन कूट ए सर्वकूट पांचशें योजनना जाणवा तथा ए पर्वतनुं नीलोवर्ण, नीलीकांति, सर्ववैडूर्यरत्नमय नीलो छे अने नीलवंत नामे देवता इहां एक पल्योपमायुयें वसे छे माटे एनुं नीलवंत एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे रम्यक् नामे युगलीयानुं क्षेत्र कहेछेः—नीलवंतपर्वतने उत्तरदिसें अने रूपी पर्वतने दक्षण दिसें रम्यक्क्षेत्र छे तेनो वर्णन जेम पूर्वें हरिवर्ष युगल क्षेत्रनो कह्युंछे तेनी परे जाणवुं. तथा नरकांता नदीने पश्चिमदिसें अने नारिकांता नदीने पूर्वदिसें ए क्षेत्रमां गंधापाती नामा वृत्तवैताढ्य पर्वतछे तेमां घणा कमल गंधापातीना वर्ण सरिखा रक्त

वर्णे छे ते उपर पद्मनामे देवता पल्योपमायु वालो वसेछे तेमज ए रम्यक क्षेत्र पण घणो रम्य मनोहर छे तथा रम्यक् नामे देवता वशेछे तेथी एनुं रम्यक् नाम शाश्वतुं छे.

हवे रुक्मि (रूपी) पर्वत कहेछेः—रम्यक्क्षेत्रने उत्तरदिसें अने हिरण्यवंत क्षेत्रने दक्षण दिसें रुक्मी पर्वतछे ते महाहिमवंतनी वक्तव्यतायें जाणवो इहां महापुंमरिक नामे इहछे तेमांथी नरकांता नामा नदी दक्षणदिसेंथी पूर्वोक्त रोहितानी परे पूर्वदिसें जाय छे तथा रूप कुला नदी उत्तर दिसेंथी नीकली ते हरिकांतानी पेरे पश्चिम दिसें जायछे.

ए रूपी पर्वत उपर आठ कूटछे तेना नाम कहेछेः—१ सिद्धायतनकूट २ रुक्मीकूट ३ रम्यक्कूट ४ नरकांता कूट ५ बुद्धिदेवीकूट ६ रूप्यकुलाकूट ७ हैरण्यवंतकूट ८ मणिकांचनकूट ए सर्व कूट पांचशें पांचशें योजननां छे ए पर्वत रूपामय छे रूपानी पेरे कांती छे अने रुक्मिनामा देवता पल्योपमनी स्थितियें वशेछे माटे एनुं रुक्मि एवुं शाश्वतुं नामछे.

ए रुक्मी पर्वतने उत्तरदिसें अने शिखरी पर्वतने दक्षणदिसें हैरण्यवंत नामे युगल क्षेत्र छे तेनो अधिकार हेमवंत क्षेत्रनी पेरे जाणवुं इहां सुवर्णकुला महा नदीने पश्चिम दिसें अने रूप्यकुला महानदीने पूर्वदिसें हैरण्यवंत क्षेत्रने मध्य भागे, माल्यवंत नामे वृत्तवैताढ्य पर्वत छे तेनो वर्णन शब्दापाती वृत्तवैताढ्यनी पेरे जाणवुं एना कमल ते माल्यवंत सरखा प्रभायें माल्यवंत सरखे वर्णेछे तथा प्रभास नामे देवता पल्योपमनी स्थितियें इहां रहेछे तेथी तथा हैरण्यवंत क्षेत्र ते रुक्मी अने शिखरी पर्वत तेणे करी बे पासे सहीत छे तथा नित्यें हिरण्य एटले सुवर्णरूप प्रकाशेछे तथा आशनादिकें करी नित्यें हिरण्य दीएछे अने इहां हैरण्यवंत नामे देवता वशेछे तेथी एनुं नाम हैरण्यवंतछे.

हैरण्यवंत क्षेत्रने उत्तरदिसें अने ऐरवतक्षेत्रने दक्षणदिसें शिखरी नामे वर्षधर पर्वत छे तेनो लंबाइ आदिक सर्व अधिकार चूल हेमवंत पर्वतनी पेरे जाणवुं इहां पुंमरिक नामे इह छे तेमांथी सुवर्णकुला महानदी दक्षणदिसे नीकली ते रोहीतांसानी पेरे पूर्वदिसि समुद्रमां जायछे अने जेम गंगा अने सिंधु ए बे नदी भरत क्षेत्रमां जायछे तेम इहां रक्ता अने रक्तवती ए बे नदी ऐरवतक्षेत्र मांहे जाय छे तेमां पूर्वदिसियें रक्तानदी अने पश्चिम दिसियें रक्तावती नदी जाणवी शेषअधिकार सर्व चूल्ल हेमवंतनीपेरेजाणवो

शिखरीपर्वतने विषे इग्यारकूट छे तेना नाम कहेछेः—१ सिद्धायतन कूट, बीजो शिखरी कूट, त्रीजो हैरण्यवंत कूट, चोथो सुवर्णकूला कूट, पांचमो सूरादेवी कूट, छठो रक्तावर्त्तन कूट, सातमो लक्ष्मी कूट, आठमो रक्तावत्यावर्त्तन कूट, नवमो इलादेवी कूट, दशमो ऐरवत कूट, अगीआरमो तिगिछि कूट ए सर्व कूट पांचशें योजननां जाणवा तथा ए शिखरी पर्वतने विषे घणा कूट शिखरीवृक्षने संस्थाने संस्थित छे, सर्व रत्नमय छे अने इहां शिखरी नामे देवता वशेछे तेथी एनुं शिखरी एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे ऐरवतक्षेत्रनी वक्तव्यता कहे छे.

उत्तरदिशिना लवणसमुद्रनी दक्षिण दिशें ऐरवत नामें क्षेत्र छे एने विषे तुंग वृक्ष तथा कांटा प्रमुख नरतक्षेत्रनी पेरें घणा छे, तथा एनी बीजी पण सर्व वक्तव्यता नरतक्षेत्रनी पेरें जाणवी. परंतु एटलुं विशेष जे इहां ऐरावत नामें चक्रवर्त्ती जाणवो अने नरतक्षेत्रने विषे नरत नामें चक्रवर्त्ती कहेवो. तथा इहां ऐरवत नामे देवता वसे छे तेथी एनुं ऐरवत एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे ए नरत अने ऐरवत क्षेत्रने विषे कालचक्रनुं स्वरूप कहे छे.

नरत तथा ऐरवत क्षेत्रमांहे छ आरे करी अवसर्प्पिणी अने छ आरे करी उत्सर्प्पिणी रूप बार आरानुं कालचक्र छे. ते सदा काल अनादि अनंत पणे अनुक्रमे न्रमण करे छे.

हवे ए बार आरानां नाम कहे छे. प्रथम सुखम सुखमा, बीजो सुखमा, त्रीजो सुखम दुखमा, चोथो दुखम सुखमा, पांचमो दुखमा, छठो दुखम दुखमा, ए छ आरा छे ते अवसर्प्पिणी कालनेविषे अनुक्रमें प्रथम सुखम सुखमाथी गणीयें अने उत्सर्प्पिणी कालें अवला गणीयें एटले दुखम दुखमाथी धुर मांमी गणीएं. एम बार आरा चडता पडता जाणवा. ए चक्रनी पेठें फिरता आवे माटे एने कालचक्र कहीएं. एमां अवसर्प्पिणी ते घटतो घटतो काल जाणवो अने उत्सर्प्पिणी ते चढतो चढतो काल जाणवो.

हवे ए आराना कालनुं प्रमाण कहे छे. पहेलो आरो चार कोडाकोडी सागरनो, बीजो आरो त्रण कोडाकोडी सागरनो, त्रीजो आरो बे कोडाकोडी सागरनो, ए त्रण आराने विषे अनुक्रमें करी मनुष्योनां आयुष्य कहे छेः—प्रथम आरे त्रण पल्योपमनुं, तथा बीजे आरे बे पल्योपमनुं, त्रीजे आरे एक पल्योपमनुं, ए रीतें मनुष्यनुं आयुष्य जाणवुं. हवे शरीरनुं मान कहे छे. प्रथम आराने विषे त्रण कोश उंचा मनुष्यनां शरीर होय, अने बीजे आरे बे कोश, त्रीजे आरे एक कोश, ए शरीरनुं उंचपणुं जाणवुं.

हवे ए त्रण आराने विषे मनुष्योने जे आहारनी इछा थाय छे,ते कहे छेः—पहेला आराने विषे चोथे दिवसें तुअर प्रमाणे आहारनी वांछा थाय,अने बीजे आरे त्रीजे दिवसें बोर प्रमाणे आहारनी वांछा थाय. तथा त्रीजे आरे एकांतरे आमला प्रमाणें आहारनी वांछा थाय. हवे शरीरने विषे पांसलीनी संख्या कहे छेः प्रथम आरामांहें बशेंने छप्पन्न पिठकरंम एटले पांसली होय, अने बीजे आरे ते पूर्वोक्त पांसलीनुं अर्द्ध एटले एकशोने अठावीश पांसली होय, तथा त्रीजे आरे वली तेनुं अर्द्ध एटले चोशठ पांसली होय.

हवे ए त्रण आराने विषे अपत्य पालना कहे छे. प्रथम आराने विषे युगलने प्रसव्या पछी उंगणपचास दिवस सुधी अपत्य एटले छोरु युगल तेहनी प्रतिपालना करे, तथा

बीजे आरे चोशठ दिवस अपत्यपालना होय, अने त्रीजे आरे ठगणाएंशी दिवससुधी अपत्यपालना जाणवी. तेवार पछी ते युगलनां मातपिता मरण पामे. ए त्रण आराने विषे निश्चयें समस्त पंचेंद्री जीव ते सर्व युगलिया जाणवा. ते युगलिक केहेवा छे? तोके नला मनवाला एटले अल्प कषाय वाला, तथा रूपवंत तथा समचउरंस संस्थान वाला होय तेमाटे सुंदराकार छे, वली ते युगलिया मनुष्य तथा तिर्यंच ते सर्व पोताना आयु ष्यथी ठंठी आयुष्य प्रमाणें अथवा पोताना आयुष्य प्रमाणेंज देवता मांहे जइ उपजे.

हवे ए त्रण आराने विषे युगलियाने मत्तंग प्रमुख दश जातिना कल्पवृक्ष छे ते पानक प्रमुख दश प्रकारना वांछित पदार्थ आपे,ते आवी रीतेंः–प्रथम मत्तंग नामें कल्पवृक्ष ते वृक्ष, खारेक प्रमुखना रस सरखा मीठा रस आपे, बीजो नृंगनामें कल्पवृक्ष, ते थाली तथा वाटली तथा चरु अने कलश प्रमुख नाजन आपे. त्रीजो तुर्यांगनामें कल्पवृक्ष ते महा वाजित्र सहित बत्रीश बद्धनाटक देखाडे छे, चोथो ज्योतिरंगनामें जे कल्पवृक्ष छे ते रात्रिने विषे पण सूर्यनी पेरें प्रकाश करे छे, तथा पांचमो दीपांग नामें जे कल्पवृक्ष छे, ते घरने विषे दीवानी परें अजुआलुं करे छे, तथा छठो चित्रांग नामें जे कल्पवृक्ष छे, ते पंचवर्ण अने सुगंधिक फूल, सहस्रदल कमल, मालती प्रमुख आपे, तथा सातमो चित्ररसा नामें जे कल्पवृक्ष छे ते आहार एटले मनोवांछित मिष्टान्न षट्रस नोजन आपे, तथा आठमो मणितांग नामे जे कल्पवृक्ष छे ते नूषण, आनरण, मुकुट, मुद्रिका, हार, कुंमल अने नेउर प्रमुख आपे. तथा नवमो गेहाकार नामें जे कल्पवृक्ष छे ते सप्तनूमिना, पंचनूमिना तथा त्रिनूमिना मनोहर आवास आपे, तथा दशमो अनितांग नामें कल्प वृक्ष छे ते नलां वस्त्र तथा देवडुष्य चीर, वरपटकूलादि आसन बेसवा योग्य तथा नद्रा सन शय्या प्रमुख आपे. ए दश जातिना कल्पवृक्ष ते ए पूर्वोक्त वांछित पदार्थ पूरे छे.

हवे सर्व आरानेविषे सामान्य पणे तिर्यंचनां पण आयुष्य कहे छे.

मनुष्यना आयुष्य सरखां गज, हाथी, सिंह अने अष्टापद प्रमुखनां आयुष्य होय. मनुष्यना आयुष्यनो चोथो नाग घोडा अने वेसर प्रमुखनुं आयुष्य जाणवुं. तथा बाली, गाडर अने शीयाल प्रमुखनुं मनुष्यना आयुष्यने आठमे नागें आयुष्य जाणवुं. तथा गाय, नेंश, ऊंट अने गर्दन प्रमुखनुं आयुष्य ते मनुष्यना आयुष्यने पांचमे नागें जाणवुं. तथा कूतरा प्रमुखनां आयुष्य ते मनुष्यना आयुष्यने दशमे नागें छे. ए तिर्यंचना आयुष्य प्रमुख प्रायें सर्व आराने विषे ए प्रकारें सरखां होय.हवे त्रीजा आराने अंते नव कुलगर, राजनीति अने सर्व संसार व्यहार तथा जिन धर्म आदि शब्दथी बादर अग्निकाय तथा ज्ञान विज्ञान प्रमुख सर्वनी उत्पत्ति थाय.

अवसर्प्पिणी त्रीजा आरानेविषे नेव्याशी पखवाडा पाछला जेवारें शेष रहे, तेवारे पेहेला तीर्थंकर सिद्धिपद पामे अने चोथा आराना नेव्याशी पखवाडा पाछला जेवारें शेष रहे, तेवारें चोवीशमा तीर्थंकर सिद्धिपद पामे, अने उत्सर्प्पिणी काळना त्रीजा आराना नेव्याशी पखवाडा जेवारें जाय, तेवारें पहेला तीर्थंकर उपजे, तथा चोथा आराना नेव्याशी पखवाडा जेवारें जाय, तेवारें छेल्ला चोवीशमा तीर्थंकर उपजे.

हवे चोथा आरानुं स्वरूप कहे छे.

बेंतालीश सहस्त्र वरसें कणो एक कोडाकोडी सागरोपमनो चोथो आरो होय, तेहने विषे मनुष्यनुं आयुष्य पूर्वकोडि वर्षनुं जाणवुं. अने शरीरनुं मान पांचशें धनुष्यनुं जाणवुं.

हवे पांचमा आरानुं स्वरूप कहे छे.

पांचमा आरानुं प्रमाण एकवीश सहस्त्र वरसनुं छे, ते पांचमा आरानेविषे सात हाथ उंचा मनुष्य होय, एकशोने त्रीश वरसनुं आयुष्य मनुष्यनुं होय, तथा पांचमा आराने अंते जिनधर्मादि पदार्थनो पण अंत एटले नाश थाय. व्यवहार,आचार, नीति, जाति, ए सर्वनो अंत आवशे. ए वात सिद्धांतमां कही छे. तथा केटला बोल विछेद जशे? ते कहे छे ॥गाथा॥ सुय सूरि संघ धम्मो,पुव्वण्हे छिज्जिही अगणि सायं ॥ निव विमलवाहणो सु ह, ममंति तद्धम्म मझण्हे ॥१॥ डुप्पसहो समणाणं, फग्गुसिरि होइ साहुणीणं च ॥ सड्ढो नाइल नामा, सच्चसिरि सावियाणं च ॥ २ ॥ पुव्वाए सझाए, विछेउ होइ चरणधम्मस्स ॥ मझण्हे रायाणं, अवरण्हे जाइ तेयस्स ॥३॥इति॥ तेवार पछी शुं थशे ? ते कहे छे. लवणादि खार तथा अग्नि अने काळकूटादिविष,तेनी वृष्टि तेणें करी पृथ्वी जे छे ते हाहाकार करशे तथा पक्षी जाति प्रमुखनां जे बीज छे, ते वैताढ्य प्रमुख पर्वतने विषे रहेशे तथा मनुष्य अने तिर्यंचना बीज छे ते सर्व बिलादि स्थानकनेविषे रहेशे.

हवे ते बिल वखाणे छे.

वैताढ्यना बे पासानेविषे ज्यां घणां माछलां छे. वली गाडानां चक्रनी धारा सरखो प्रवाह छे जेहनो एहवी गंगा अने सिंधु तथा रक्ता अने रक्तवती नामें जे नदी तेहना बे तटने विषे नव नव बिल ते गुफा सरखां जाणवां. एटले दक्षिणभरत मांहे बे नदीनां चार तट छे. अने उत्तर भरतमांहे बे नदीना चार तट छे, सर्व मली आठ तट छे, ते एकेक तटें नव नव बिल गणिएं, तेवारें बहोंतेर बिल थाय. एम ऐरवतने विषे पण बहोंतेर बिल छे, ते सर्व एकठा करीएं तो एकशोने चुम्मालीश बिल थाय.

हवे छठ्ठा आराने विषे मनुष्यादिकनुं जे स्वरूप छे, ते कहे छे.

एकवीश सहस्त्र वरस प्रमाणें पांचमा आरा सरखो जे छठ्ठो आरो छे,तेहनेविषे बे हाथ उंचा शरीर अने वीश वरस आयुष्यवाला एहवा मनुष्य होय,ते मनुष्य मत्स्यनो आ

हार करे तथा माठा रूपवाला होय वली निर्दय परिणाम वालां होय, बिलने विषे रहेनारां होय, वली नरक तिर्यंचरूप दुर्गतिने विषे गमन करनारां होय. वली लज्जा रहित होय, तथा वस्त्र रहित पशुनी पेठें नग्न फिरे. तथा कठोरवचनना बोलनार होय, तथा ए पिता, ए पुत्र, ए स्त्री, ते ए बहेन, इत्यादि व्यवहार तेने न होय एटले तिर्यंचनी पेरें विवेकरहित होय. तथा छ वरषनी स्त्री गर्भ धारण करे, ते पण अतिदुःखें प्रसव करे. वली ते स्त्रीयोने घणां छोरु होय, एवी स्थीति होय.

ए पूर्वोक्त छ आरा तेणे करी अवसर्प्पिणी काल होय अने तेने विपरीत पणे अव ला गणीएं तेवारें उत्सर्प्पिणीकाल थाय. त्यां अवसर्प्पिणी ते प्रथम आराथी घटतो काल होय अने उत्सर्प्पिणी ते प्रथम आराथी वधतो काल होय. ए अवसर्प्पिणी तथा उत्स र्प्पिणीना बार आराना कालचक्रनेविषे वीश कोडाकोडी सागरोपम थाय.

हवे शेष क्षेत्रने विषे आरानुं सरखापणुं कहे छे.

देवकुरु अने उत्तरकुरु, ए बे क्षेत्रनेविषे अने हरिवर्ष तथा रम्यक् ए बे क्षेत्रनेविषे तथा हेमवंत अने हिरण्यवंत ए बे क्षेत्रनेविषे तथा पूर्वविदेह अने पश्चिमविदेह क्षेत्र नेविषे ए चार क्षेत्रना युगलनेविषे अनुक्रमें करी सदाकालें अवसर्प्पिणी कालना चार आ रानो प्रथम काल जाणवो. ते केम के अवसर्प्पिणी कालनो पेहेलो आरो सुखमसुखमा छे. तेहना धुरनो जेहवो काल होय तेहवो काल सदैव देवकुरु अने उत्तरकुरु, ए बे कुरु क्षेत्रनेविषे होय एम बीजा आरानो जेहवो प्रथम काल होय तेहवो सदैव हरिवर्ष तथा रम्यक् ए बे क्षेत्रनेविषे होय. वली त्रीजा आरानो जेहवो प्रथम काल होय, तेहवो सदैव हेमवंत तथा हिरण्यवंत ए बे क्षेत्रने विषे होय तथा चोथा आरानो जेवो प्रथम काल होय, तेवो काल माहा विदेहक्षेत्रने विषे सदा जाणवो.

हवे चंद्रमा अने सूर्यनां चार क्षेत्र कहे छे.

जंबुद्वीपने विषे बे चंद्रमा अने बे सूर्य छे तेनुं दक्षिण अने उत्तरदिशिनुं जे गमनागमन तेनुं क्षेत्र पांचशें दश योजन उपर एक योजनना एकसठीआ अडतालीश भाग जाणवा.

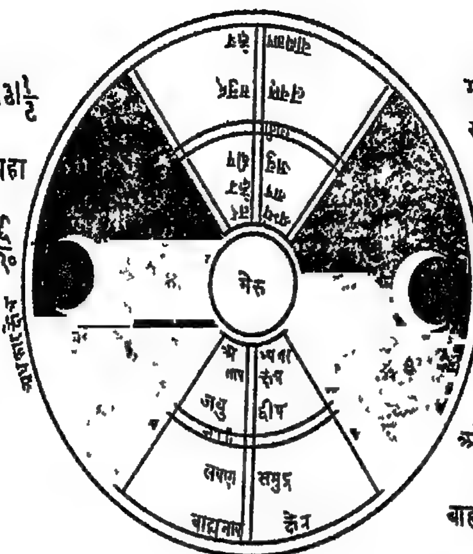
हवे चंद्रमा अने सूर्यना मंडलनी संख्या अने प्रमाण कहे छे. चंद्रमाना पंदर मांड लां छे अने सूर्यना एकशोने चोराशी मांडलां छे, ते एकयोजननां एकशठ भाग करिएं, तेवां छपनभाग प्रमाण चंद्रनां मांडलां छे, अने अडतालीशभाग प्रमाण सूर्यनां मांड लां छे. ए चंद्र सूर्यना विमानें रोधन करेली भूमि तेने मंडल कहीएं, ते मंडलनी संख्या थी मंडलना आंतरा एकेके ओछा जाणवा, एटले चंद्रमाना मांडला पंदरना चउद आंतरा थाय. अने सूर्यना मांडलां एकशोने चोराशीना, आंतरा एकशोने त्र्याशी थाय.

तापक्षेत्रनुं लांबपणुं
जंबुद्वीपे ४५०००

लवणसमुद्रे ३३३३३। $\frac{१}{३}$

तापक्षेत्र अभ्यंतर बाहा
६३२४। $\frac{६}{१०}$

बाह्य बाहा ६३२४५। $\frac{६}{१०}$



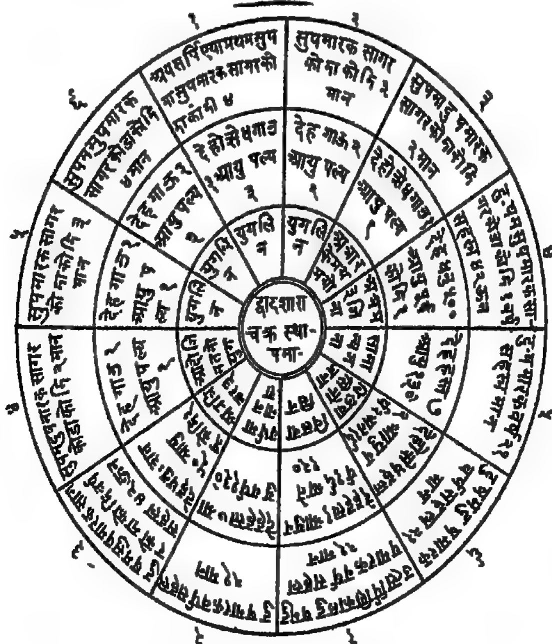
मकर संक्रांते प्रथम दिने
सर्वबाह्यमंडले सूर्यताप
क्षेत्र स्थिति
तथा
अंधकारक्षेत्र स्थिति
स्थापना.

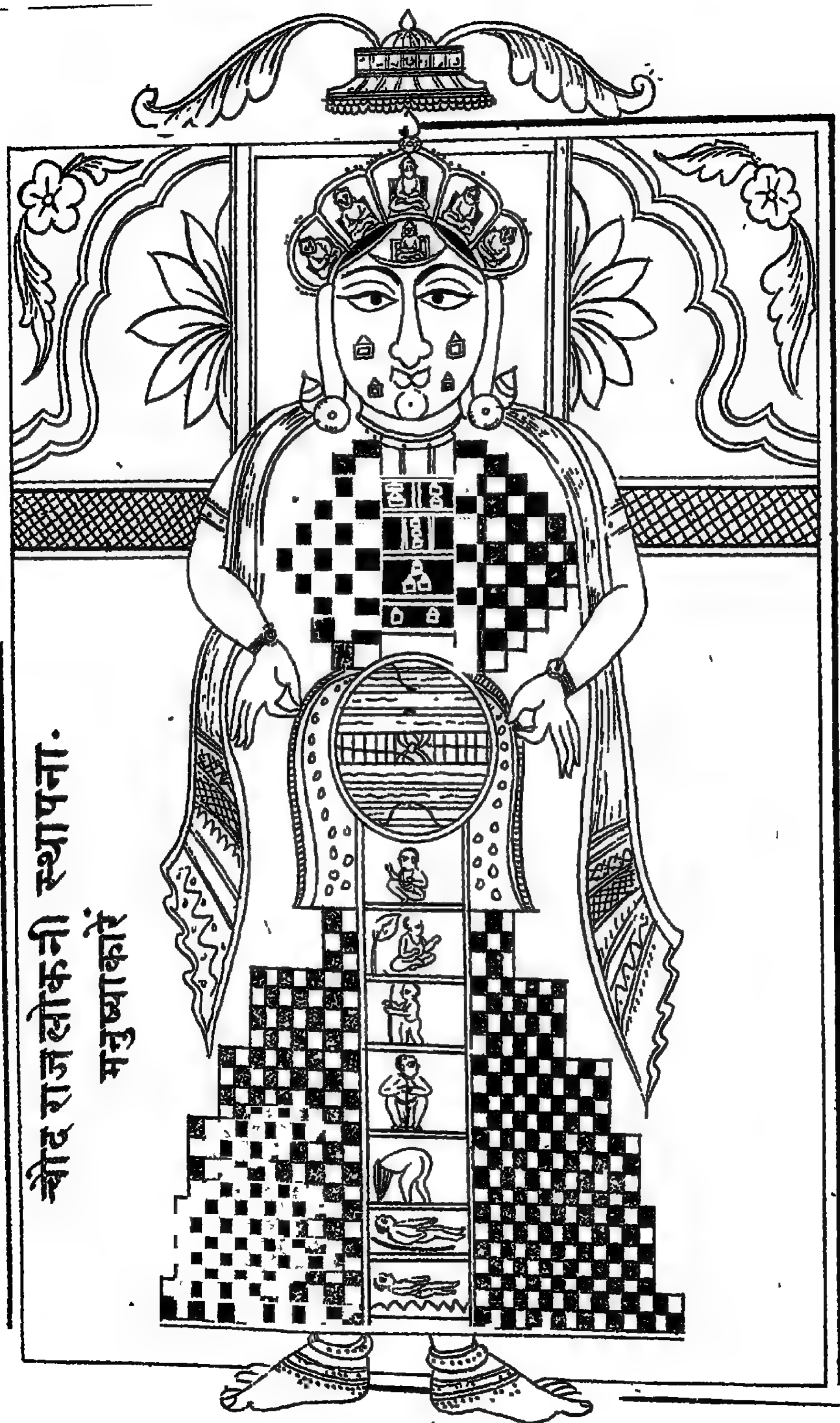
दिनमान मुहूर्त १२
रात्रिमान मुहूर्त १८

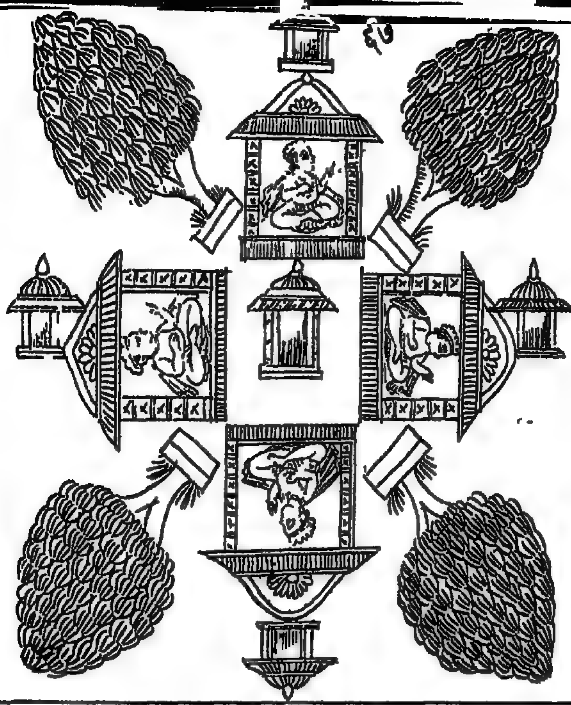
अंधकार क्षेत्र अभ्यंतरबाहा
९४८६। $\frac{९}{१०}$

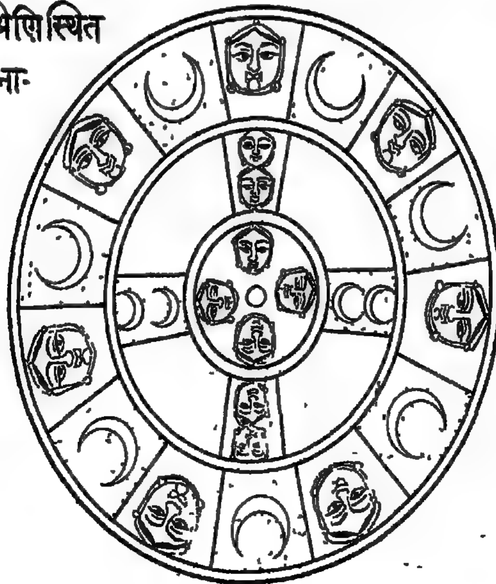
बाह्यबाहा ९४८६८। $\frac{४}{१०}$

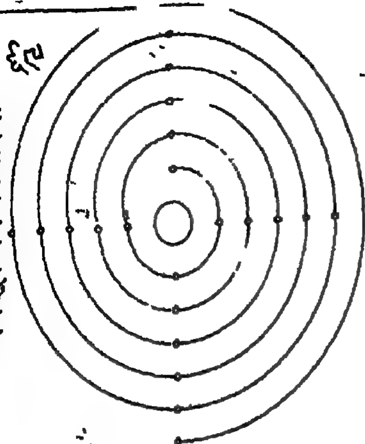
बारा आरानी स्थापना.

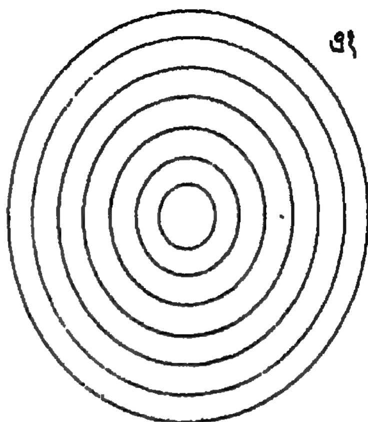


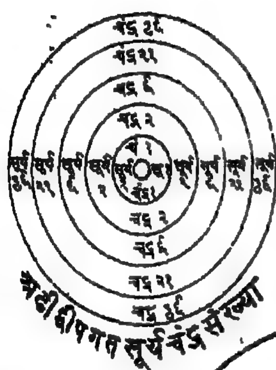

चौद राजलोकनी स्थापना.
मनुष्याकारे

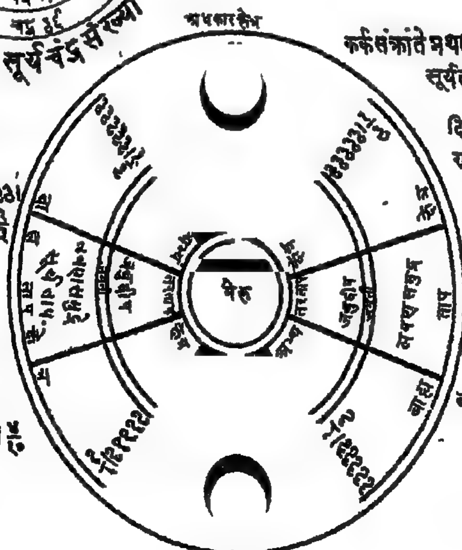

६७
समुद्रवासी च्यार देवतानी स्थापना॰


मनुष्यक्षेत्रे सूचिश्रेणि स्थित
चंद्रसूर्यस्थापना॰
६८


६९
चंद्रसूर्य मंडल स्थापना


७१


७०
चंद्र २६
चंद्र २१
चंद्र ६
चंद्र २
चंद्र १
चंद्र २
चंद्र ६
चंद्र २१
चंद्र २६
जंबूद्वीपगत सूर्य चंद्र संख्या


अंधकार क्षेत्र
कर्क संक्रांते प्रथम दिने सर्वाभ्यंतर मंडले
सूर्यताप क्षेत्र स्थापना
दिनमान मुहूर्त १८
रात्रिमान मुहूर्त १२
तापक्षेत्रनुं लांबपणुं
जंबुद्वीपे ४५०००
लवणसमुद्रे ३३३३३।
मेरु
अंधकार क्षेत्र अभ्यंतर बाहा
वाहबाहा ६३२४५।
तापक्षेत्र अभ्यंतर बाहा
बाहेरली बाहा

हवे चंद्रमाना एक मंमलने बीजा मंमलनी वचमां अंतर कहे छे. पांत्रीश योजन उपर एकसठिआ त्रीश जाग, वली एकसठिआ एक जागना सात जाग करिएं तेवा चार जाग अधिक, एटलुं चंद्रमाना एक मंमलथी बीजा मंमलनी वचमां अंतरनुं प्रमाण जाणवुं. ते जाणवानी परें लखीएं छैयेंः—चंद्रमंमल पंदर छे, ते एकेकानुं परिमाण जे एकसठिआ छप्पन्न जाग छे तेने पंदरमंमल सार्थे गुणीयें तेवारें आठशें चालीश जाग थाय, तेने एकशठ जागें हरतां तेर योजन उपर एकसठिआ सुडतालीश जाग थाय, ते मूलगी जे चारना क्षेत्रनी राशि पांचशें दश योजन उपर एकसठिआ अडतालीश जागनी छे, ते मांहेथी बाद करतां बाकी चारशें सत्ताणुं योजन उपर एक जाग रहे, तेने चौद आंतरे वेहेंचीयें तेवारें पांत्रीश योजन आवे. उपर सात योजन वधे, तेना एकसठिआ चारशेंने सत्तावीश जाग थाय, तेनी सार्थे प्रथमनो उगर्यो एक जाग जेलीएं, तेवारें चारशेंने अठावीश जाग थाय, तेने चउद जागें वेहेंचतां त्रीश जाग आवे, उपर आठ वधे, ते एकेकाना सात प्रतिजाग कल्पीएं तेवारें सात ने आठें गुणतां छप्पन्न थाय, तेने चउदें जाग देतां चार जाग लाजे, ए रीतें चंद्रमाना मंमलनो आंतरो पांत्रीश योजन उपर एकसठिआ त्रीश जाग, तथा एकसठिआ एक जागना सात जाग करीएं तेवा चार जाग, अधिक थाय.

हवे सूर्यमंमलनुं अंतर कहे छे. सूर्यमंमल एकशोने चोराशी छे, ते एकेकनुं परिमाण एकसठिआ अडतालीश जागनुं छे, अने चार क्षेत्रनुं परिमाण पांचशें दश योजन उपर एकसठिआ अडतालीश जाग छे, तेमांथी एकशोने चोराशी मंमलना परिमाणना एकसठिआ आठ हजार आठशोने बत्रीश जाग थाय, तेना योजन एकशो चुम्मालीश उपर एकसठिआ अडतालीश जाग आवे, ते उपली चार क्षेत्रनी राशिमांथी बाद करतां बाकी त्रणशें ने छासठ योजन रहे छे, तेने एकशोने त्र्याशी अंतरे वेंचतां बे योजन आवे तो एक सूर्यमंमल अने बीजा सूर्यमंमलनी वचमां अंतर बे योजननो छे.

चंद्रमा तथा सूर्य जंबूद्वीपमांहे तथा लवण समुद्रमांहे केटला योजन आवे? ते कहे छेः—जंबूद्वीपमांहे एकशोने एंशी योजन प्रमाण क्षेत्रने विषे पांच मंमल चंद्रमानां छे, अने पांसठ मंमल सूर्यनां छे. तथा लवण समुद्रमांहे त्रणशेंने त्रीश योजन प्रमाण क्षेत्रने विषे दश मंमल चंद्रमानां छे, अने एकशोने उंगणीश मंमल सूर्यनां छे, एटले एकशोने एंशी योजन चंद्रमा अने सूर्य जंबूद्वीपमांहे आवे, अने लवण समुद्रमांहे त्रणशेंने त्रीश योजन चंद्रमा अने सूर्य जाय.

हवे चंद्रमानुं मंमल अने सूर्यनुं जे मंमल छे तेनुं परस्पर अंतर कहे छे. सर्व मंमल मांहेला मध्यना मंमलनें विषे रहेलुं जे चंद्रमंमल अने सूर्यमंमल तेनुं परस्पर अंतर नवाणुं हजार छशोने चालीश योजननुं सूर्यमंमल अने चंद्रमंमलनुं मांहोमांहे अं

तर जाणवुं. तदनंतर चंद्रमंडलोना प्रतिमंडलने विषे बहोंतेर योजन अने एक योजनना एकसठ भाग करिएं, तेवा बावन्न भाग उपर एवी अंतर वृद्धि छे, अने सूर्यमंडलोमां प्रतिमंडलने विषे पांच योजन अने एक योजनना एकसठ भाग करिएं, तेवा पांत्रीश भाग उपर, एटली अंतर वृद्धि छे. तेमज बाह्य मंडलने विषे रहेलुं जे चंद्रमंडल अने सूर्यमंडल, तेनुं परस्पर वचमां अंतर एक लक्ष छशेंने साठ योजननुं छे.

हवें चंद्रमाना प्रत्येक मंडलने विषे मुहूर्त्त गति कहे छे.

चंद्रमा जेवारें निषध पर्वतने माथे सर्वाभ्यंतर मंडले उगे, तेवारें एक मुहूर्त्तमांहे पांच हजार तहोंत्तेर योजन,अने ऊपर एक योजनना तेर हजार सातशोने पचीश भाग करीएं तेवा सीत्योतेरसोने चुम्मालीश भाग उपर एटली मुहूर्त्त गति करे. त्यार पछी जेवारें बीजे त्रीजे मांडले जाय, तेवारे प्रतिमंडले पोणा चार योजननी वृद्धि करीएं. एम मंडल मंडलप्रत्यें मुहूर्त्त दीठ पोणा चार योजन वधारतां जेवारें पंदर मंडल सुधी मुहूर्त्त गतिएं चंद्रमा लवण समुद्रमांहे सर्व बाह्य मांडले उगे, तेवारें बावन योजन अधिक करिएं तो एकेक मुहूर्त्तेंपांच हजार एकशोने पचीश योजन उपर एक योजनना तेर हजार सातशेंने पचीश भाग करिएं, तेवा छ हजार नवशेंने नेवुं भाग अधिक जाणवी, एटली बाहेरने मंडले चंद्रमा एक मुहूर्त्तमांहे गति करे.

जे चंद्रमानी मांहेला मांमलानी मुहूर्त्तगति, पांच हजारने तहोंत्तेर योजन जाजेरी कही, तेज सर्वाभ्यंतर मांमले सूर्यनी गति छे, परंतु तेमांहे एकशोने अछोतेर योजन सहित करिएं एटली अधिक सूर्यनी मांहेले मंमले मुहूर्त्त गति जाणवी. एटले जेवारें पांच हजार तहोत्तेर मांहे एकशोने अछोतेर भेलीएं. तेवारें पांच हजार बशेंने एकावन्न योजन, अने एक योजनना साठ भाग करिएं, तेवा उंगणत्रीश भाग जाजेरी सूर्यनी गति जाणवी. अने चंद्रमानी बाहेरने मंमले जे मुहूर्त्त गति एकावनशोने पच्चिश योजन कही छे, तेमहिं एकशोने एंशी योजननी वृद्धि करिएं, तेवारें त्रेपनशेंने पांच योजन अने साठीआ पंदर भाग एटली बाहेरने मांमले सूर्यनी मुहूर्त्त गति जाणवी. कांइक ऊंणा साठीआ अढार भाग एटला मांहिना मंमलथी बाहेरने मंमले आवतां प्रत्येक मंमलें सूर्यनी मुहूर्त्त गतिमांहे वृद्धि जाणवी.

हवे सूर्य उदय पामे त्यांथी केटले योजने अस्त थाय? ते कहे छेः—सूर्य जेवारें मांहिने मंमलें उदय पामे, तेवारें चोराणुं हजार पांचशेंने छवीस योजन उपर साठीआ बेंतालीश भाग एटला योजनने आंतरे वेगलो सूर्य आथमे, तेवारें दिवस अढार मुहूर्त्तनो होय.

हवे मांहेथी बाहेर मंमलें आवतां केटलो दिवस घटे, ते कहे छेः—मांहिना मंमल थकी बाहेर आवतां एकेका मंमल प्रत्यें एक मुहूर्त्तना एकसठ भाग करिएं, एवा बे भाग अ

ढार मुहूर्त्तना दिवसमांहेथी दिन प्रत्यें घटे एम घटाडतां छेहेले एकशोने चोराशीमे मं मलें जेवारें सूर्य आवे, तेवारें दिवस, बार मुहूर्त्तनो होय, अने रात्रि तो ते दिवस थकी विपरीत जाणवी. ते केम? के जेवारें दिवस बार मुहूर्त्तनो होय तेवारें रात्रि अढार मुहूर्त्तनी कर्कसंक्रांतिथी मकर संक्रांति सुधी जाणवी, अने जेवारें मांहिना मंमलथी सूर्य बाहेर आवे, तेवारें दिवसमांहि मुहूर्त्तना एकसठीआ बे नाग घटे, अने जेवारें मकर संक्रांतिथकी धुर मांमीने बाहेरना मंमलथी मांहि आवे, तेवारें मुहूर्त्तना एकसठीआ बे नाग दिवसमांहि वधे, अने रात्रिने विषे घटे, ते विपरीत जाणवुं.

हवे सूर्य बाहेर मांमले आवे, तेवारें उदय अस्तनुं अंतर कहे छेः—सूर्य जेवारें बाहेरने एकशोने चोराशीमें मांमले आवे, तेवारें त्रेशठ हजार छशेंने त्रेशठ योजन वेगलो अस्त थाय, कर्कसंक्रांतिथी धुर मांमीने मकर संक्रांति सुधी एकसोनें अडशठ योजन प्रति मंमले छेठी गति करे. तथा एक चंद्रमाने परिवारें अभिजित् प्रमुख अठावीश नक्षत्र अने अंगारक प्रमुख अठाशी ग्रह जाणवा.

हवे एक चंद्रमानी पछवाडे तारानी संख्या कहे छेः—छाशठ हजार नवशेंने पंचोतेर कोडाकोडी एटला तारा, एक चंद्रमानी पछवाडे जाणवा. ए ताराना बाहुल्यपणाथकी क्षेत्र थोडुं छे, माटे कोइक आचार्य कोडाकोडीने संज्ञांतर एटले कोडीनुं बीजुं नाम कहे छे, अथवा उत्सेधांगुलें जेवारें ताराना विमान लेखवीएं, तेवारें कोडाकोडीनो संनव होय. पछी निश्चयनी वात ज्ञानवंत जाणे.

हवे ग्रहादिकनी संख्या जाणवानुं करण कहे छेः—ग्रह, नक्षत्र अने तारा ए त्रणनी संख्या, एक चंद्रमा आश्री जे कही, ते जे द्वीप समुद्रनेविषे जेटला चंद्रमानी संख्या होय, तेटला चंद्रमानी सार्थे गुणाकार करिएं,एम करतां जे ग्रहादिकनी संख्या आवे, तेटलो परिवार जाणवो. ए रीतें वांछित द्वीप समुद्रने विषे ए ग्रहादिकनुं प्रमाण जाणीयें.

हवे लवण समुद्र प्रमुखने विषे चंद्र सूर्यनी संख्या कहे छे. लवण समुद्रने विषे चार चंद्रमा अने चार सूर्य जाणवा तथा धातकी खंमने विषे बार चंद्रमा अने बार सूर्य जाणवा. तेवार पछी कालोद समुद्र तथा पुष्करवर द्वीप प्रमुखने विषे पूर्वें जे कह्या छे तेणे सहित त्रिगुण जाणवा, ते केम के धातकी खंमने विषे बार चंद्र तथा बार सूर्य कह्या छे, तेने त्रिगुणा करिएं, तेवारें छत्रीश थाय. तेमांहे पहेला जंबूद्वीपना बे अने लवण समुद्रना चार, एवं छ नेलीएं, तेवारें बेंतालीश सूर्य अने बेंतालीश चंद्र कालोद समुद्रने विषे थाय, हवे ए बेंतालीशने त्रिगुणा करिएं, तेवारें एकशोने छवीश थाय. तेनी सार्थे पूर्वोक्त बे, चार अने बार, एवं अढार नेलीएं, तेवारें एकशोने चुम्मालीश चंद्र अने एक

शोने चुम्मालीश सूर्य, पुष्करवर द्वीपने वीषे थाय छे तेनुं अर्द्ध करीयें, तेवारें बहोंत्तेर सूर्य अने बहोंतेर चंद्र पुष्करवर द्वीपना अर्द्धनेवीषे जाणवा.

हवे चंद्र, सूर्य, ग्रह अने नक्षत्र ज्यां सुधी अढी द्वीप छे त्यां सुधी यावत् समश्रेणीएं चाले छे, ते सर्वे शीघ्र शीघ्रतर गति वाला छे, एटले चंद्रमाथकी सूर्यनी गति उतावली छे. सूर्य थकी ग्रहनी गति उतावली छे, ग्रहथकी नक्षत्रनी गति उतावली छे,ते चंद्र सूर्यादिकना क्षेत्रना प्रमाणथकी केटला वेगला मनुष्यनी दृष्टि गोचर आवे, ते कहे छे. एक वीश लाख चोत्रीश हजार पांचशेंने साडत्रीश योजन प्रमाण क्षेत्रथी पुष्करार्द्ध द्वीपना मनुष्य ते पूर्वदिशि उदय पामता अने पश्चिमदिशि अस्त पामता एवा सूर्य चंद्रमा प्रत्यें देखे छे, एटले त्यां तेटला क्षेत्रना वेगला विस्तारथकी देखे छे.

हवे मनुष्य क्षेत्रथकी बाहेर चंद्र सूर्यनो विचार कहे छेः—मनुष्य क्षेत्रथकी बाहेर चंद्र सूर्यनी संख्या प्रथम कही छे, तेमज होय. अथवा बीजुं करण पण होय, ते उपाय शास्त्रांतरथकी जाणवो. पण संघयणी प्रमुख ग्रंथने वषे पूर्वोक्त करण वध आदर्युं छे तथा मनुष्य क्षेत्रथी बाहेर जे ज्योतिषी चंद्र सूर्यादिक छे, ते अचल एटले स्थिर जाणवा. अने मनुष्य क्षेत्रना चंद्र सूर्यना विमानथी तेमना विमान अर्द्ध प्रमाणें जाणवा.

ते पाकी इंटनें संस्थानें रह्या छे,जेम पाकी इंट पोहोल पणाथी लांब पणे बमणी होय अने चोरस होय तेम मनुष्य क्षेत्रथी बाहेरला चंद्रसूर्यना तापक्षेत्र पच्चाश हजार योजन पोहोलपणे अने एक लक्ष योजन लांब पणें होय, तथा मनुष्य क्षेत्रनी पेरें तिहां चंद्रमानुं अत्यंत शीतल तेज न होय अने सूर्यनुं अत्यंत उष्ण तेज पण न होय परंतु सम तेजवंत होय ॥ इति ॥

॥ हवें परिधि प्रमुख आठ बोल कहे छे.

॥ एक तो जंबुद्वीपनी पेरें वाटला क्षेत्रने परिधि कहीयें; बीजुं वृत्त क्षेत्रना जे योजन प्रमाण समचउरंस खंड करीयें, तेने गणितपद कहीयें, त्रीजुं छेहेला खंडादिकनुं जे बाण करीयें तेने इक्षु कहीयें,चोथुं धनुष्यने आकारें भरत वैताढ्य प्रमुखनी जे पणछ तेने जीवा कहीयें, पांचमुं अर्द्ध चंद्रमाने आकारें भरत प्रमुख जे क्षेत्र छे तेना पुंठना भागने धनुःपृष्ठ कहीयें; छठुं वैताढ्य प्रमुख पर्वत तथा क्षेत्र प्रमुख,ना छेहेडानुं जे परिमाण करवुं तेने बाहु कहीयें, सातमुं जिहां लांबपणुं तथा पोहोल पणुं सरखुं होय, तेने प्रतर कहीयें, आठमुं जिहां लांबपणुं, पोहोलपणुं अने जाडपणुं, ए त्रणे सरखां होय, तेने घन कहीयें ए आठ बोल कह्या ॥

॥ हवे ए परिधि प्रमुख आठ बोलना वचारानो विधि कहे छे.

तिहां प्रथम परिधि संबंधि गणित जाणवानो विधि कहे छे.

जे गोल थालीना आकारें पदार्थ होय, तेना मध्यनो विस्तार जो दश योजन होय तो ते पदार्थ गोलाकारें फरतो केटला योजन थाय? एवी रीतनुं जे गणित करवुं, तेने परिधि कहियें, ते परिधि करवानो विधि एक जंबूद्वीपना गणितें करी देखाडीयें छैयें. ते वीज रीतें जे जे स्थानकें परिधि करवो पडे, ते सर्वत्र स्थानकें एमज करवुं.

जंबूद्वीपनो विष्कंभ एटले मध्य विस्तार एक लाख योजननो छे, तेनो वर्ग करीयें एटले ते आंकने तद्गुणो करीयें अर्थात् लाखनें लाख गुणो करीयें तेवारें (१००००००००००) दश अब्ज थाय, ते आंकने वली दश गुणो करीयें, एटले ए वर्गना आंकने आगले एक शून्य आपीयें तेवारें दश गुणो थाय, ते आंक (१०००००००००००) संख्यायें एकशो अबज अर्थात् एक खर्व थाय, हवे ए आंकनुं मूल शोधीयें ते जेम बशेने छपन्ननुं मूल शोधीयें तो शोल शोलें बे छपन्ना एटले शोलनो अंक थाय अथवा दश हजारनुं मूल एकशो थाय अथवा छशेंने पच्चीशनुं मूल पच्ची पच्चीराम छ पच्चीसा ए रीतें मूलनो अंक पच्चीश थाय, तेम इहां एक खर्वनी संख्यानो जे उपरलो आंक छे, तेनुं मूल शोधीयें, तो केटलुं थाय? तेनी रीत देखाडे छे.

उपरला एक खर्वना आंकनो पहेलो आदिनो आंक जे एकडो छे, तेने धुरनो आंक कहियें अने छहेली शून्य छे तेने छहेलो आंक कहियें, ते छहेला आंक थकी विषम सम करतां धुरनां आंक सुधी आवीयें तिहां विषम ते । उभी लीटी करवी, अने सम ते–आवी आडी लीटी करवी. ते आ प्रमाणेः–१̄०।०̄०।०̄०।०̄०।०̄०।०̄०। आ प्रमाणे विषम सम कर्या पछी जो धुरना आंकें विषम एटले (।) आवी उभी लीटी आवे तो धुरनो एकलोज आंक तेने वर्गना आंक सार्थे शोधीयें,अने जो धुरनां आंकें सम एटले (–) आवी आडी लीटी आवे, तो धुरना बे आंकनें वर्गने आंके शोधीयें, तो आ ठेकाणे धुरना, आंके (–) आ प्रकारनी सम लीटी आवेली छे, माटे एक धुरनो आंक एकडो छे, अने तेनी पासें बीजो आंक शून्यनो छे, तेथी एक एकडो अने बीजो शून्य ए बे आंकने वर्गना आंक सार्थे शोधवुं ते आवी रीतेंः–

एकडो अने शून्य मली दशनो आंक थयो, तेने शोधीयें तेवारें त्रण त्रिक नव जाय, शेष एकनो आंक रहे ते एकना आंक उपर वली उपरनी राशि मांहेली बे शून्य चडावीयें, तेवारें फरी (१००) नो आंक थाय अने उपरलो जे एक एकडो अने अगीआर शून्य मली बार आंकनी राशि छे ते मांहेली एक एकडो अने त्रण शून्य मली चार आंक गया बाकी ते राशिमांहेली मात्र आठ शून्य रही.

हवे एकसोना (१००) आंकने भांगवानो विधि कहे छे. पूर्वे जे वर्गनो आंक त्रण नो आव्यो छे, तेने एक बाजु स्थापन करी मूकेलो छे ते आंकने बमणो करीयें तेवारें छनो आंकडो थाय, ते छना आंक सार्थे उपरला एकशोनां आंकने शोधीयें तेवारें छ एकां छ अने एकनो भाग आव्यो माटे छनी नीचे वली एकेकां एकनो आंक चांपी मूकीयें तेवारें (६१) एकशठनो आंक थाय, ते उपरली एकशोनी राशिमांथी बाद करीयें तेवारें शेष (३९) ओगणचालीशनो आंक रहे, अने वर्गना मूलनो आंक जे पूर्वें त्रणनो हतो, तेनी नीचें एकडो मूकाणो, तेवारे एकत्रीशनो आंक थयो.

हवे शेष ओगणचालीशनो आंक वध्यो छे, तेनी नीचे उपरली महोटी राशि मांहेला जे आठ शून्य शेष रहेला छे, तेमांथी बे शून्य लहीयें तेवारे (३९००) नो आंक थाय. अने महोटी राशि मांहेली शेष छ शून्यो रहे.

पछी वर्गनो जे एकत्रीशनो आंक छे, तेने बमणो करीयें तेवारें बाशठनो आंक थाय ते बाशठना आंक साथे पूर्वोक्त (३९००) ना आंकने शोधीयें, तेवारें बाशठ छक्कां ३७२ थाय. अने वली छनो भाग आव्यो छे, माटे छ छकां छत्रीशनो आंक नीचें चांपी मूकीयें तेवारें ३७५६ नो आंक थाय, तेने (३९००) नां आंकमांथी बाद करीयें तेवारें बाकी १४४ वधे अने वर्गना मूलनो आंक जे पूर्वें ३१ नो हतो, तेनी नीचें हमणानी शोधनुं छगडो मूकीयें तेवारे ३१६ नो आंक थाय.

हवे शेष जे १४४ नो आंक वध्यो छे, तेनी नीचें वली उपरली महोटी राशि मांहेली छ शून्यो शेष रहेली छे तेमांथी बे शून्य लही मांमीयें तेवारें (१४४००) नो आंक थाय, अने महोटी राशि मांहेली शेष चार शून्यो रहे.

पछी वर्गनो आंक ३१६ नो छे, तेने बमणो करतां ६३२ नो आंक थाय, तेनी साथें १४४०० ना आंकनें शोधीयें, तेवारें (६३२) डु १२६४ अने वली बेनो भाग आव्यो माटे डुए डुए चारनो आंक थाय, तेने १२६४ ना आंकनी नीचें चांपी मांमीयें, तेवारें १२६४४ नो आंक थाय, ते १४४०० ना आंकमांथी बाद करीयें, तेवारें बाकी १७५६ नो आंक वधे, अने वर्गना मूलनो आंक प्रथम ३१६ नो हतो,तेनी नीचें बगडो मूकीयें तेवारे ३१६२ नो आंक थाय.

हवे जे शेष १७५६ नो आंक वध्यो छे तेनी नीचें उपरली महोटी राशि मांहेली जे चार शून्यो शेष रहेली छे, तेमांथी बे शून्य लहीयें, तेवारें १७५६०० नो आंक थाय अने महोटी राशि मांहेली शेष बे शून्यो रहे.

पछी वर्गनो आंक ३१६२ छे, तेने बमणो करीयें तेवारें ६३२४ नो आंक थाय,ते

आंकनी सार्थे १७५६०० ना आंकने शोधियें, तेवारें ६३२४ छ १२६४८ थाय, अने वली त्रेनो नाग आव्यो माटे छए छए चारनो आंक थाय. तेने १२६४८ ना आंकनी नीचें चांपी मांमीयें, तेवारें १२६४८४ नो आंक थाय, ते १७५६०० ना आंकमांथी वाद करीयें तेवारें बाकी ४९११६ नो आंक वधे, अने वर्गना मूलनो आंक प्रथम ३१६२ नो हतो तेनी नीचें बगडो लखीयें, तेवारें ३१६२२ नो आंक थाय..

हवे शेष जे ४९११६ नो आंक वध्यो छे, तेनी नीचें उपरली महोटी राशि मांहेली जे बे शून्यो शेष रहेली छे, ते लहियें तेवारें ४९११६०० नो आंक थाय, अने महोटी राशिमांहेली शेष रहेली शून्यो सर्वे खपी गइ.

पछी वर्गना मूलनो जे ३१६२२ नो आंक छे, तेने पूर्वली रीतें द्विगुणो करीयें तेवारें ६३२४४ नो आंक थाय. ते आंकनी सार्थे ४९११६०० नां आंकने शोधीयें, ते आवी रीतें के ६३२४४ सातां ४४२७०८ थाय, अने वली सातनो नाग आव्यो माटे सातने सात गुणा करीयें तो सतियो सतियो उंगणपच्चाशनो आंक थाय, ते ४४२७०८ ना आंकनी नीचें चांपी मांमीयें,तेवारे ४४२७१४९ नो आंक थाय, ते ४९११६०० ना आंकमांथी वाद करीयें, तेवारें बाकी ४८४४७१ नो आंक वधे, अने वर्गमूलनो प्रथम ३१६२२नो आंक हतो तेनीनीचें सातडानोआंक लखीयें,तेवारें ३१६२२७नो आंक थाय.

हवे शेष जे ४८४४७१ नो आंक वध्यो छे, तेनी आगल आंक वधारवा माटे महोटी राशिमांहेली शेष कोइ आंकनी संख्या रही नथी. तेमज वर्ग मूलना आंकनी राशि जे ३१६२२७ नी छे, तेने द्विगुणा करीयें तो ६३२४५४ नो आंक थाय, तेनी सार्थे शोधवा मांमीयें तो शोधाय पण नही कोइ नाग पोहोंचे नही. तेमाटे ए योजननी राशिना एकेका योजनना चार चार कोश करी नाखीयें तेवारें १९३७८८४ कोश थाय. तेने वर्गमूलनी जे बमणी करेली ६३२४५४ ना आंकनी राशि छे, तेणे करी नाग आपीयें तेवारें १८९७३६२ नी संख्यामां त्रण गाउ आवे. शेष ४०५२२ गाउ वधे अने मूलना आंकनी संख्या ३१६२२७ योजननी उपर त्रण गाउनी थाय.

हवे शेष रहेला ४०५२२ गव्यूतिनी संख्याने पण ६३२४५४ नां आंकनी राशिनो नाग पहोंचे नही माटे ए प्रत्येक गाउना बे हजार धनुष्य प्रमाणे ८१०४४००० धनुष्यनी संख्या करीने तेने ६३२४५४ नो नाग आपतां ८०९५४११२ नी संख्यामां १२८ धनुष्य आवे शेष ८९८८८ धनुष्यनी संख्या वधे, अने मूलनी राशि ३१६२२७ योजननी उपर त्रण गाउ तथा १२८ धनुष्य एटली थाय.

हवे ८९८८८ धनुष्यनी संख्याना अंगुल करवा सारु एक धनुष्यना ९६ आंगुलें गु

णीयें,तेवारें ७६३९०२४७ अंगुलनी संख्या थाय,तेने ६३२४५४ ने जाग देतां ७५३७१२० नी संख्यामां १३॥ अंगुल आवे, शेष ९१११९ अंगुल वधे अने मूलनी राशि ३१६२२७ योजन, त्रण गाउ, १२८ धनुष्यनी उपर साडातेर अंगुल थाय.

हवे शेष ९११११९ अंगुल वध्या छे,ते प्रत्येक अंगुलना आठ यव थाय छे माटे एने आठे गुणीयें तेवारें ४२८९५२ यव थाय, तेने ६३२४५४ नो जाग देतां एक यव आवे, शेष ९६४९८ नो आंक वधे अने मूल राशिनो आंक ३१६२२७ योजन, त्रण गाउ १२८ धनुष्य, साडातेर अंगुलनी उपर एक यव थाय.

हवे शेष ९६४९८ यवनो आंक रह्यो छे, ते प्रत्येक यवनी आठ यूका (जू) करतां ७७१९८४ यूका थाय तेने ६३२४५४ने जांजतां एक यूका आवे, शेष १३९५३० यूका वधे, तेने वली आठे गुणीयें तेवारे १११६२४० लीख थाय तेने ६३२४५४ नो जाग देतां एक लीख आवे शेष ४८३७८६ लीख उगरे ते प्रत्येक लीखने आठ वालाग्रें गु णतां ३८७०२८८ एटला वाल थाय, तेने ६३२४५४ नो जाग देतां ३७९४७२४ ना आंकमां छ वाल आवे, शेष ७५५६४ वाल वधे, फरी एक वालाग्रना आठ रथरेणु थाय माटें एने आठे गुणतां ६०४५१२ एटला रथरेणु थाय तेने जाग पहोंचे नही माटे एक रथ रेणुना आठ त्रसरेणु थाय छे तेथी त्रसरेणु करवा सारु उपली राशिने आठें गुणीयें तेवारें ४८३६०९६ त्रसरेणुनी संख्या थाय तेने पूर्वोक्त ६३२४५४ ने जाग देतां ४४२७१७८ नी संख्यामां सात त्रसरेणु आवे. शेष ४०८९१८ त्रसरेणु वधे ते एक त्रसरेणुने विषे आठ व्यवहारिक बादर परमाणुआ थाय छे, माटें ए राशिने आठे गुणतां ३२७१३४४ एटला बादर एटले व्यवहारिक परमाणु थाय. तेने ६३२४५४ नो जाग देतां ३१६२२७० ना आंकमां पांच बादर परमाणुआ आवे, शेष १०९०७४ एटला बादर परमाणुआ वधे ए जेवारें अनंता सूक्ष्म परमाणु विस्रसा परिणामें मली एकठा थाय तें एक बादर परमाणु कहेवाय छे, माटे अनंताने जाग कोइ पोहोंचे नही तेथी शेष १०९०७४ बादर परमाणुने १७४ गुणा करीयें तेवारे १८९७७८७६ एटला एक बादर परमाणुना १७४ जाग करीयें, तेवा जाग थाय तेमांथी त्रीश जागमां १८९७३६२० खंम जाय ते बाद करीयें, तो शेष ५२५६ एटला एक परमाणुना १७४ जाग वाला बादर परमाणुना कटका वधें. ते प्रत्येक खंमना वली ६३२४५४ कटका क रीयें,तो तेवा ५२५६ कटका उपर आवे एटलो जंबूद्वीपनो परिधि जाणवो,एटले ३१६२२७ योजन, त्रण गाउ, १२८ धनुष्य, साडातेर अंगुल, एक यव, एक यूका, एकलीख, छ वा लाग्र अने रथरेणु मिल कुल नही परंतु सात त्रसरेणु, पांच बादर परमाणु, तथा एक

बादर परमाणुना १३४ भाग करीयें तेवा त्रीश भाग, तथा ते १३४ भाग मांहेला एकेकाना ६३२४५४ भाग करीयें तेवा (५२५६) भाग उपर एटलो जंबूद्वीपनो परिधि जाणवो.

हवे उपर लख्या मुजबनी हकीगत सर्वे नीचे अंके करी टांकी देखाडीयें छैयें.

१००००० एक लाख योजननो जंबूद्वीपनो विष्कंभ छे.

१००००० एनो वर्ग करवा सारुं लाखने लाख गुणो करीयें.

१०००००००००० लाखने लाखें गुणतां दश अब्जनी संख्या थइ.

१० उपला आंकने दश गुणवा सारु दशना आंके गुणीयें.

१००००००००००० दश गुणो करतां एकशो अब्ज एटले एक खर्वनी संख्या थइ.

१̄ ०' ०̄ ०' ०̄ ०' ०̄ ०' ०̄ ०' ०̄ ०' ए उपरनी राशिने विषम सम आवीरीतें करवो. विषम ते ऊभी लीटी करवी, अने सम ते आडी लीटी करवी. हवे ए विषम सम करेली राशिमांथी मूल शोधवानी रीत देखाडे छे.

१० प्रथम दशनो आंक उपली राशिमांथी लीधो. बाकी दश शून्य रही.

९ —३ दशमांथी त्रणत्रिक नव गया बाकी एक रह्यो.

(६) १००—१ एक रह्यो तेना नीचें शेष रहेली दश शून्य मांहेली बे लीधी.

६ पछी त्रणने बमणा करी छनो भाग आपतां छ एकां छ थया.

१ १ भाग आव्यो, माटे एकेकां एकना आंकने छनीनीचेंचांपीमांड्यो

६१ छनां आंकनी नीचें एकडो चांपी मांडतां एकशठ थया.

३९ ६१ नो आंक उपरला एकशोमांथी बाद करतां बाकी ३९ रह्या.

(६१) ३९०० (६ बाकी रहेला उगणचालीशनी नीचे उपरली राशिमांहेली शेष रहेली आठ शून्यमांथी बे शून्य लीधी तेवारें ३९०० थया.

मूलमां त्रणने नीचें एकडो मांडतां एकत्रीश थया तेने बमणां

३७२ करी बाशठनो भाग आपतां बाशठ छकां ३७२ थया.

३६ छनो भाग आव्यो माटे छ छक छत्रीशनोआंकनीचेंचांपी मांड्यो.

३७५६ छत्रीशनां आंकनें नीचें चांपी मांडतां सरवालानी संख्या थइ.

१४४ ते उपरलां३९००ना आंकमांथी बाद करतां बाकी १४४ वध्या.

(६३२)१४४००(२) वधेला १४४नी नीचें शेष रहेली छ शून्यमांथी बे शून्य लीधी.

१२६४ ३१६ ने बमणा करी ६३२ नो भाग आपतां ६३२ दु १२६४ थया.

४ बेनो भाग आव्यो माटे दुए दुए ४ नो आंक नीचें चांपी मांड्यो.

१२६४४ चारना आंकने नीचें चांपी मांडतां सरवालानी संख्या थइ.

૧૩૫૬ ઉપરના આંકમાંથી બાદ કરતાં બાકી ૧૩૫૬ વધ્યા.

(૬૩૨૪)૧૩૫૬૦૦(૨ વધેલા ૧૩૫૬ ની ઉપર શેષની ૪ શૂન્યમાંથી બે શૂન્ય લીધી. મૂલ શોધવા માટે ૩૧૬૨ ને બમણા કરી ૬૩૨૪ નો ભાગ

૧૨૬૪૮ આપતાં ૬૩૨૪ દુ ૧૨૬૪૮ થયા.

૪ બેનો ભાગ આવ્યો માટે ડુએ ડુએ૪ નો આંક નીચેં ચાંપી માંડ્યો.

૧૨૬૪૮૪ ચારના આંકને નીચેં ચાંપી માંડતાં સરવાળાની સંખ્યા થઇ.

૪૯૧૧૬ ઉપરલા આંકમાંથી બાદ કરતાં બાકી વધ્યા ૪૯૧૧૬.

૬૩૨૪૪(૪૯૧૧૬૦૦(૭ બાકી વધેલા ૪૯૧૧૬ઉપર શેષ બે શૂન્ય રહી હતી તે લીધી. મૂલ શોધવા માટે૩૧૬૨૨ના આંકને બમણાકરતાં૬૩૨૪૪થયા.

૪૪૨૭૦૮ તેનો ભાગ આપતાં ૬૩૨૪૪ સાતાં ૪૪૨૭૦૮ થયા.

૪૯ સાતનો ભાગ આવ્યો માટે સાતું સતિયાં ૪૯ ના આંકને નીચે ચાંપી માંડ્યો.

૪૪૨૭૧૨૯ ઉગણપચાશના આંકને ચાંપી માંડતાં સરવાળાની સંખ્યા થઇ.

૪૮૪૪૭૧ ઉપરલા ૪૯૧૧૬૦૦ ના આંકમાંથી બાદ કરતાં બાકી વધ્યા.

૪ ઉપલા યોજનનાં કોશ કરવાને અર્થેં ચારનાં આંક સાથેં ગુણીયેં.

૬૩૨૪૫૪)૧૯૩૭૮૮૪(૨ ચારે ગુણતાં કોશની સંખ્યા થઇ.

૧૮૯૭૩૬૨ મૂલ શોધવા માટે ૩૧૬૨૨૭ નો આંક આવ્યો છે. તેને બમણો કરતાં ૬૩૨૪૫૪ થાય એ આંકે ભાગ આપતાં ત્રણ ગાઉમાં ૧૮૯૭૩૬૨ ગાઉ નો આંક ગયો.

૪૦૫૨૨ એટલો આંક બાકી ગાઉની રાશિમાંથી વધ્યો.

૨૦૦૦ એના ધનુષ્ય કરવા સારું બે હજારના આંક સાથેં ગુણવો,

૬૩૨૪૫૪)૮૧૦૪૪૦૦૦ બે હજારનાં આંક સાથેં ગુણતાં ૮૧૦૪૪૦૦૦ થયા.

૮૦૯૫૪૧૧૨) ૬૩૨૪૫૪ ને ભાગ દેતાં ૧૨૮ ધનુષ્યમાં૮૦૯૫૪૧૧૨ગયા.

૮૯૮૮૮ બાકી ૮૯૮૮૮ ધનુષ્ય વધ્યા.

૯૬ એના અંગુલ કરવાને છન્નું ગુણા કરવા.

૬૩૨૪૫૪)૮૬૨૯૨૪૮ છન્નું ગુણા કરતાં એટલા અંગુલની રાશિ થઇ.

૮૫૩૮૧૨૯ એને ૬૩૨૪૫૪) ને ભાગ દેતાં સાડાતેર અંગુલમાં આંક જાય.

૯૧૧૧૯ એટલો આંક શેષ અંગુલની રાશિનો ઉગર્યો.

८ तेना यव करवा सारुं एने आठे गुणीयें.

(६३२४५४)७२८९५२) आठे गुणाकार करतां यवनी राशि थइ.

६३२४५४) एक यवना भागाकारमां ६३२४५४ गया.

९६४९८ शेष यवनी राशि रही.

८ तेनी यूका करवाने आठे गुणाकार करीयें,

७७१९८४) एटली यूकानी राशि थइ.

६३२४५४) एने ६३२४५४) ने भाग देतां एक यूका आवे.

१३९५३० शेष १३९५३० यूकानी राशि रहे.

८ तेनी लीख करवाने अर्थे आठ गुणा करीयें,

१११६२४० एटली लीख थाय.

६३२४५४) एटली राशिये भागाकार करतां एक लीख आवे.

४८३७८६ शेष लीखनी राशि वधी.

८ तेना वालाग्र करवानें आठगुणा करीयें.

३८७०२८८ एटली वालाग्रनी राशि थइ.

३७९४७२४ एने ६३२४५४) भागें देतां छ वालाग्र आवे.

७५५६४शेष वालाग्रनी राशि वधी.

८ तेना रथरेणु करवाने आठ गुणा करीयें.

६०४५१२ एटला रथरेणु थाय तेने भाग पहोंचे नही.

८ माटें एना त्रसरेणु करवा सारु आठगुणा करीयें.

४८३६०९६ एटली त्रसरेणुनी संख्या थाय.

४४२७१७८ एने ६३२४५४) ने भाग देतां सात त्रसरेणु आवे.

४०८९१८ शेष एटली त्रसरेणुनी राशि वधी.

८ एना व्यवहारिक बादर परमाणु करवाने आठे गुणीयें.

३२७१३४४ एटली व्यवहारिक बादर परमाणुनी राशी थई.

३१६२२७० ६३२४५४)नो भाग देतां पांच बादर परमाणुमां ए आंक आवे.

१०९०७४ एटली बादर परमाणुनी राशि शेष रही.

१७४ एकेका परमाणुना १७४) खंड करवा सारु १७४ गुणीयें.

१८९७८८७६) एटला एकशो चमोतेरीया भाग थया.

१८९७३६४०) तेने ६३२४५४ नो नाग देतां त्रीश नागमां ए आंक आवे.
५२५६ शेष ५२५६) एकसो चमोतेरीया खंम वध्या.
३६१ प्रत्येक खंमना ३६१) कटका करवा सारु ३६१) गुणीयें.

१८९७४१६ (१७४ तेरीया एक खंमना ३६१) कटकानी राशी थइ.
१८९७३६२) ६३२४५४) नाग देतां त्रण नागमां एटला आंक आव्या.
५४ शेष चोपन कटका रह्या तेने कांइ नाग पहोंचे नही.

योजन.	गाउ.	धनुष्य.	अंगुल.	यव.	यूका.	लीख.	वालाग्र.	रथरेणु.
३१६२२७–	३–	१२८–	१३॥–	१–	१–	१–	६–	०

त्रसरेणु.	बादरपरमाणु.	एक बादर परमाणुना. १७४ नाग करीये तेवा नाग.	एकशो चमोतेरीया एक नागना ३६१) नागकरीयें तेवानाग	शेष. वध्या.
७	५	३०	३	५४

जंबूद्वीपनी परिधि गणवाना करणनो यंत्र लखीयें छैयें.

विष्कंननो योजन.	१०००००
तद्वर्ग योजनराशि.	१००००००००००
तेने दशगुणा करवानी राशि.	१०००००००००००
वर्गमूले लब्धयोजननी राशि.	३१६२२७
शेष राशि.	४८४४७१
छेदराशि.	६३२४५४
कोश करवाने अर्थे शेष राशिने चार गुणा करतां थयेली राशि.	१९३७८८४
छेदांकनो नाग आपवामां लाधा कोश.	३
शेषराशि.	४०५२२
धनुष्य करवाने अर्थे बे हजारनो गुणाकार करतां थयेली राशि.	८१०४४०००
छेदांकनो नाग आपवे करी लाधा धनुष्य.	१२८
शेष राशि.	८९८८८
अंगुल करवाने अर्थे छन्नुं गुणा करतां थयेली राशि.	८६२९२४८
छेदांकनो नाग आपवाथी लाधा अंगुल.	१३ ॥
शेष पूर्ण अंगुल राशि रही.	९१११९

हवे कमलादिक, द्वीपादिक, चूलिका, कूट, कंचनगिरि, कुंमादिक, कूटनां मूल, कूटनां शिखर, मेरुपर्वतनां मूल, मेरुनां शिखर, नंदनवननी बाहिर, नंदनवननी मांहेली कोर इत्यादिक स्थानकोनी परिधिनां गणित उपरली रीति प्रमाणें पोतें करवां, अथवा गुरु मुखथी धारवां, अहीआं मात्र ते मांहेला केटला एक स्थानकोनां नाम संक्षेपथी मांमीने तेनी परिधि करवाने अर्थें ते स्थानकोनो विष्कंभ तथा ते विष्कंभनो वर्ग, पछी ते वर्गने दश गुणो करतां जे संख्या आवे, तेनो आंक तथा तेनुं मूल शोधतां जेटला योजननो आंक लाभे, ते आंक तथा जेटला योजन शेष रहे, तेनो आंक तेमज शेष रहेला योजनना धनुष्य प्रमुख करीने पछी तेने वर्गनी राशिने शोधतां जे लब्धांक आव्यो होय, तेने बमणो करीयें, तेवारें जे राशि थाय ते राशियें करीने छेदीयें एटले भांजीयें तेने छेदराशि कहीयें, ते छेदराशिनो आंक तेनो यंत्र नीचे देखाड्यो छे, तिहांथी सुज्ञोयें जोइने गणित करी मलाववा,

जूदा जूदा स्थानकोनी परिधि विष्कंभादिकनो यंत्र,

अंक	स्थानकोनां नाम,	विष्कंभ.	वर्गनो अंक,	दशगुणो अंक.	लब्धांक,	शेषराशि	छेद,
१	कमलादिक.	१	१	१०	३	१	६
२	,,	२	४	४०	६	४	१२
३	,,	४	१६	१६०	१२	१६	२४
४	द्वीपादिक.	८	६४	६४०	२५	१५	५०-
५	चूलिका मूल.	१२	१४४	१४४०	३७	७१	७४
६	क्रोशकूट.	२५	६२५	६२५०	७९	९	१५८
७	कांचनगिरिशिखर	५०	२५००	२५०००	१५८	३६	३१६
८	कांचनगिरि मूल.	१००	१००००	१०००००	३१६	१४४	६३२
९	कुंमादिक.	१२०	१४४००	१४४०००	३७९	३५९	७५८
१०	,,	२४०	५७६००	५७६०००	७५८	१४३६	१५१६
११	कूटशिखरादिक.	२५०	६२५००	६२५०००	७९०	९००	१५८०
१२	कुंमादिक.	४८०	२३०४००	२३०४०००	१५१७	२७११	३०३४
१३	कूटमूलादिक.	५००	२५००००	२५०००००	१५८१	४३९	३१६२
१४	मेरुशिखर.	१०००	१००००००	१००००००००	३१६२	१७५६	६३२४
१५	मेरुभूतलविष्कंभ	१००००	१०००००००००	१००००००००००	३१६२२	४९११६	६३२४४

१८९७३६२०) तेने ६३२४५४ नो भाग देतां त्रीश भागमां ए आंक आवे.
५२५६ शेष ५२५६) एकसो चमोतेरीया खंड वध्या.
३६१ प्रत्येक खंडना ३६१) कटका करवा सारु ३६१) गुणीयें.
१८९७४१६ (१७४ तेरीया एक खंडना ३६१) कटकानी राशी थइ.
१८९७३६२) ६३२४५४) भाग देतां त्रण भागमां एटला आंक आव्या.
५४ शेष चोपन कटका रह्या तेने कांइ भाग पहोंचे नही.

योजन.	गाउ.	धनुष्य.	अंगुल.	यव.	यूका.	लीख.	वालाग्र.	रथरेणु.
३१६२२७–	३–	१२८–	१३॥–	१–	१–	१–	६–	०

त्रसरेणु.	बादरपरमाणु.	एक बादर परमाणुना. १७४ भाग करीये तेवा भाग.	एकशो चमोतेरीया एक भागना ३६१) भागकरीयें तेवाभाग	शेष. वध्या.
७	५	३०	३	५४

जंबूद्वीपनी परिधि गणवाना करणनो यंत्र लखीयें छैयें.

विष्कंभना योजन.	१०००००
तद्वर्ग योजनराशि.	१००००००००००
तेने दशगुणा करवानी राशि.	१००००००००००००
वर्गमूले लब्धयोजननी राशि.	३१६२२७
शेष राशि.	४८४४७१
छेदराशि.	६३२४५४
कोश करवाने अर्थे शेष राशिने चार गुणा करतां थयेली राशि.	१९३७८८४
छेदांकनो भाग आपवामां लाध्या कोश.	३
शेषराशि.	४०५२२
धनुष्य करवाने अर्थे बे हजारनो गुणाकार करतां थयेली राशि.	८१०४४०००
छेदांकनो भाग आपवे करी लाध्या धनुष्य.	१२८
शेष राशि.	८९८८८
अंगुल करवाने अर्थे छन्नुं गुणा करतां थयेली राशि.	८६२९२४८
छेदांकनो भाग आपवाथी लाध्या अंगुल.	१३ ॥
शेष पूर्ण अंगुल राशि रही,	९१११९

हवे कमलादिक, द्वीपादिक, चूलिका, कूट, कंचनगिरि, कुंमादिक, कूटनां मूल, कूटनां शिखर, मेरुपर्वतनां मूल, मेरुनां शिखर, नंदनवननी बाहिर, नंदनवननी मांहेली कोर इत्यादिक स्थानकोनी परिधिनां गणित उपरली रीति प्रमाणें पोतें करवां, अथवा गुरु मुखथी धारवां, अहीयां मात्र ते मांहेला केटला एक स्थानकोनां नाम संक्षेपथी मांमीने तेनी परिधि करवाने अर्थें ते स्थानकोनो विष्कंन तथा ते विष्कंननो वर्ग, पछी ते वर्गने दश गुणो करतां जे संख्या आवे, तेनो आंक तथा तेनुं मूल शोधतां जेटला योजननो आंक लाने, ते आंक तथा जेटला योजन शेष रहे, तेनो आंक तेमज शेष रहेला योजनना धनुष्य प्रमुख करीने पछी तेने वर्गनी राशिने शोधतां जे लब्धांक आव्यो होय, तेने बमणो करीयें, तेवारें जे राशि थाय ते राशियें करीने छेदीयें एटले नांजीयें तेने छेदराशि कहीयें, ते छेदराशिनो आंक तेनो यंत्र नीचे देखाड्यो छे, तिहांथी सुज्ञोयें जोइने गणित करी मलाववा,

जूदा जूदा स्थानकोनी परिधि विष्कंनादिकनो यंत्र,

अंक	स्थानकोनां नाम,	विष्कंन.	वर्गनो अंक,	दशगुणो अंक.	लब्धांक,	शेषराशि	छेद.
१	कमलादिक.	१	१	१०	३	१	६
२	,,	२	४	४०	६	४	१२
३	,,	४	१६	१६०	१२	१६	२४
४	द्वीपादिक.	८	६४	६४०	२५	१५	५०.
५	चूलिका मूल.	१२	१४४	१४४०	३७	७१	७४
६	क्रोशकूट.	२५	६२५	६२५०	७९	९	१५८
७	कांचनगिरिशिखर	५०	२५००	२५०००	१५८	३६	३१६
८	कांचनगिरि मूल.	१००	१००००	१०००००	३१६	१४४	६३२
९	कुंमादिक.	१२०	१४४००	१४४०००	३७९	३५९	७५८
१०	,,	२४०	५७६००	५७६०००	७५८	१४३६	१५१६
११	कूटशिखरादिक.	२५०	६२५००	६२५०००	७९०	९००	१५८०
१२	कुंमादिक.	४८०	२३०४००	२३०४०००	१५१७	२७११	३०३४
१३	कूटमूलादिक.	५००	२५००००	२५०००००	१५८१	४३९	३१६२
१४	मेरुशिखर.	१०००	१००००००	१०००००००	३१६२	१७५६	६३२४
१५	मेरुनूतलविष्कंन	१००००	१०००००००००	१००००००००००	३१६२२	४९११६	६३२४४

आ उपरथी एम समजवुं के एक योजन विस्कंभवाळो कोइ वाटळो गोळाकारें पदार्थ होय तेनी त्रण योजन जे लब्धांकना कोठामां मूक्या छे, ते तथा उपर शेष राशिमां एक योजन रह्यो छे तेना छेद छ करीयें एटले एक योजननो छठो भाग उपर एटलो फरतो परिधि थाय, अने बे योजनवाळा वाटळा पदार्थनी छ योजन पूरा अने तेनी उपर चार योजनना बारमा भागमा जेटली जगा आवे तेटली लेवी. एटलो परिधि जाणवो ए रीतें सर्व स्थानकोने विषे जाणी लेवुं. लब्धांकने बमणा करीयें तो छेदराशि थाय.

हवे पूर्वला यंत्रनी रीतेज मेरु पर्वतना नीचला तळीयानी तथा नंदनवनादिकनी भूमिमां योजनोनी जे संख्या कही छे, तेना उपर वळी एक योजनना अगीआर भाग करीयें, तेवा भाग प्रत्येक स्थानकें आवे छे, माटें ते स्थानकोना विष्कंभना योजनोना अगीआरीआ भाग करीने परिधीनुं गणित कर्युं छे तेनो यंत्र नीचें लखीये छैयें.

चढतो अंक.	मेरुपर्वत मांहेला जूदाजूदा स्थानकोनां नाम.	मूलयोजन तथा एकयोजनना अगीआरीआभागनी कळा संख्या.	एकंदरअगीआरीआ भाग संबंधी कळानी संख्या.	ते कळानो वर्ग करतां जे आंक आवे तेनी संख्या.
१	मेरुनो नीचेंनो तळीयो.	१००९० १०/११	१११०००	१२३२१००००००
२	नंदनवननीबाहिरनीपरिधि	९९५४ ६/११	१०९५००	११९९०२५००००
३	नंदनवननी मध्यपरिधि.	८९५४ ६/११	९८५००	९७०२२५००००
४	सोमनसवननी बाहिरपरि.	४२७२ ८/११	४७०००	२२०९००००००
५	सोमनसवननी मध्यपरिधि	३२७२ ८/११	३६०००	१२९६००००००

चढतो अंक.	ते वर्गनी कळाने दश गुणी करतां जे आंक आवे तेनी संख्या.	वर्गनुं मूळ काढतां जे कळा लाभे तेनो अंक.	शेष राशि जेटली कळा रही तेनी संख्या.	छेद राशिनी संख्या.	परिधिना योजन तथा कळानो अंक.
१	१२३२१००००००००	३५१०१२	५७५८५६	७०२०२४	३१९१० २/११
२	११९९०२५०००००	३४६२६९	२४९६३९	६९२५३८	३१४७९
३	९७०२२५०००००	३११४८४	२१७७४४	६२२९६८	२८३१६ ८/११
४	२२०९००००००००	१४८६२७	१४८७१	२९७२५४	१३५११ ६/११
५	१२९६००००००००	११३८४२	१९८६३६	२२७६८४	१०३४९ ३/११

॥ इति परिधिगणितं समाप्तम् ॥

॥ आ एकज यंत्रना बे विभाग कीधा छे ॥

॥ अथ द्वितीयगणितपदप्रारंभः ॥

हवे हरेक वाटला क्षेत्रना योजन योजन प्रमाण समचतुरस्र खंम करवा, तेने गणित पद कहीयें. ते करवानी रीति कहे छे. वाटला क्षेत्रनी परिधिनी संख्यानो जेटलो अंक होय, तेने तेज वाटला क्षेत्रनो जे विष्कंभ होय तेना चोथा भागना आंक सार्थे गुणीये, तेवारें तेनुं गणित पद थाय ते एक जंबूद्वीप आश्रयी देखाडे छे.

जंबूद्वीपनो परिधि (३१६२२७) योजन छे, तेने एज जंबूद्वीपनो विष्कंभ एक लाख योजननो छे, तेना चोथा भागना पच्चीश हजार योजन थाय. तेनी सार्थे गुणीयें तेवारें ७९०५६७५००० योजन थाय, अने ते परिधिनी उपर त्रण कोश छे, तेने पच्चीश हजार सार्थे गुणतां ७५००० कोश थाय. ते चार कोशनो एक योजन करतां १८७५० योजन थाय, तथा परिधिना एकशो ने अठावीश धनुष्य छे तेने पच्चीश हजारें गुणतां बत्रीश लाख धनुष्य थाय, ते आठ हजार धनुष्यनो एक योजन गणतां ४०० योजन थाय. ए सर्व एकठा करीयें, तेवारें ७९०५६९४१५० योजननी संख्या थाय. हवें परिधि उपर साडातेर अंगुल छे, तेने पच्चीश हजारें गुणतां ३३७५०० अंगुल थाय. ते एक धनुष्यमां छन्नुं अंगुल आवे, माटे एने छन्नुं भागें वेचतां ३५१५ धनुष्य थाय. उपर शाठ अंगुल वधे तेना एक कोशमां बे हजार धनुष्य प्रमाणे पोणा बे कोश अने पात्रीशशो धनुष्य थाय. तथा उपर पन्नर धनुष्य छे ते एकेका धनुष्यना चार चार हाथ करतां शाठ हाथ थाय, तथा उपर शाठ अंगुल वध्या छे, तेना अढी हाथ थाय, ए सर्व मली ७९०५६९४१५० योजन उपर पोणा बे कोश अने शाढा बाशठ हाथ एटलुं जंबूद्वीपनुं गणित पद थाय, ए एकेक योजनना खंडुक करीने जंबूद्वीपनी जेटली भूमि छे. तेमां थापीयें. तो एटला रही शके. एवी रीतें बीजा पण वाटला खेत्रना सर्व स्थानकें गणितपदना हिसाब करवा, एनो यंत्र नीचें देखाड्यो छे. ए गणित पदनी यंत्रस्थापना,

चढतो अंक.	परिधिनां योजनादि.	विष्कंभनो चोथोभाग.	गुणाकार करतां राशि थइ.	एक योजनमां अंगुलादि.	सरवाळे योजननी संख्या.	गाउ	धनुष्य	अंगुल.
१	३१६२२७	२५०००	७९०५६७५०००	पूरा योजन.	७९०५६७५०००			
२	कोश. ३	२५०००	७५०००	चारगाउयो०	१८७५०			
३	धनुष्य. १२८	२५०००	३२०००००	आठहजारध०	४००			
४	अंगुल. १३॥	२५०००	३३७५००	छन्नुं अंगुलनुं.	०	१॥।	१५	६०
५	एकंदरसंख्या.				७९०५६९४१५०	१॥।	१५	६०

॥ अथ तृतीय जीवा करण प्रारंभः ॥

हवे त्रीजो जीवा करण कहेछे. जेवारें जीवा करीयें तेवारें आ वाटलुं क्षेत्र जे जंबूद्वीप एक लाख योजननुं छे,तेना ओगणीशीआ भाग करीयें,तेवारें (१९०००००) ओगणीश लाख कला थाय,तेमांथी दक्षिणार्द्ध भरतनी इक्षु कला (४५२५) छे ते बाद करीयें, तो (१८९५४७५) कला बाकी रहे, तेने चार गुणी करीयें, तेवारें (७५८१९००) थाय तेने इक्षुनी कला (४५२५) छे तेनी साथे गुणीयें अथवा (१८९५४७५) कला जे बाकी रही छे तेने इक्षुनी कला (४५२५) ने चोगुणी करीयें, तेवारें (१८१००) थाय. तेनी साथें गुणीयें, तेवारें (३४३०८०९७५००) थाय, तेने पूर्वली रीतें विषम सम करीने मूल शोधीयें,तेवारें (१८५२२४) एटलो आंक आवे,अने शेष (१६७३२४) एटली कला वधे, केम के (१८५२२४) आंकने एज आंक साथें गुणीयें, तेवारें ३४३०७९३०१७६ थाय, ते उपरली विषम सम वाली राशिमांथी बाद करीयें; तेवारें शेष (१६७३२४) कला वधे. हवे १८५२२४ कलाना योजन करवा सारु ए राशिने ओगणीश भागें वेचीयें, तेवारें ९७४८ योजननी उपर बार कला थाय, अने १६७३२४, कला वधी छे, तेना धनुष्य प्रमुख करीने पूर्वें जंबुद्वीपनी परिधिनी रीतें जो आनुं मूल शोधीयें, तो छेदकला (३७०४४८) आवे, तेनी साथें भागाकार करतां जेटला धनुष्य प्रमुख उपर आवे,ते ९७४८ योजन अने बार कलानी साथें लेवा एटली दक्षिणार्द्ध भरतनी जीवा जाणवी. एवीज रीतें वैताढ्य प्रमुख सर्व स्थानकोनी जीवा करवी. आंहीं मात्र एनो यंत्रज नीचें लख्युं छे. अने एकज आ दक्षिणार्द्ध भरतनो हिसाब करी बताव्यो छे. परंतु वैताढ्यादिकना हिसाब पोतेंज करीने मेलववा.

१९००००० ओगणीश लाख कलानो जंबूद्वीपनो विष्कंभ छे.
४५२५ तेमांथी दक्षिणार्द्ध भरतना इक्षुनी कला बाद करवी.
१८९५४७५) शेष कला रही.
१८१०० तेने ४५२५) इक्षुनी कलानें चार गुणी करतां १८१००) कला थाय, तेनी साथें गुणवा.
३४३०८०९७५०० एटली गुणाकार करतां कलानी राशि थइ.
३४३०८०९७५०० मूल शोधवा सारु विषम सम करीयें छेयें.
१ (१ धुरना आंके विषम छे माटे धुरना एकज आंकने शोधवो.
२) २४३ (८ एकेका एक गयो बाकी बे रह्या उपर तेंतालीश लीधा.

१६	एक डु बेनो भाग आपतां आठ डु शोळ थया.
६४	आठनो भाग आव्यो माटें आठुं आठुं चोशठ चांपी मांड्या.
२२४	चोशठने चांपी मांडता बशोने चोवीश थया.
१९०८	ते बाद करतां बाकी १९ रह्या नीचे (०८) बे आंक लीधा.
३६) १८० (५	छत्रीशनो भाग आपतां छत्री पांचुं १८० थया.
२५	पांचनो भाग आव्यो माटें पांचुं पांचुं पच्चीश चांपी मांड्या.
१८२५	पच्चीशने चांपी मांडता १८२५ थया.
८३०९	ते बाद करतां बाकी त्र्यासी रह्या नीचे (०९) बे आंक लीधा
३७०) ७४० (२	त्रणशें सीतेरनो भाग आपतां ३७० डु ७४० थया.
४	बे नो भाग आव्यो माटें डुए डुए चार चांपी मांड्या.
७४०४	चारनें चांपी मांडतां ७४०४ थया.
३७०४) ९०५७५ (२	बाद करतां बाकी ९०५ रह्या. नीचे ७५ बे आंक लीधा.
७४०८	३७०४ नो भाग आपतां ३७०४ डु ७४०८ थया.
४	बेनो भाग आव्यो माटे डुए डुए चार चांपी मांड्या.
७४०८४	चारने चांपी मांडतां ७४०८४ थया.
३७०४४) १६४९१००	बाद करतां बाकी १६४९१ रह्या नीचे बे शून्य लीधी.
१४८१७६ (४)	३७०४४नो भाग आपतां ३७०४४ चोकुं १४८१७६ थया.
१६	चारनो भाग आव्यो माटे चार चोक शोळ चांपी मांड्या./
१४८१७७६	शोळने चांपी मांडतां १४८१७७६ थया.
१९) १६७३२४ (८	बाद करतां शेष कला १६७३२४रही लाधी कळा १८५२२४
१५२	एना योजन करवा सारु उंगणी आठुं १५२ गया.
१९) १५३ (८	बाकी पन्नर रह्या. उपर त्रण लीधा.
१५२	वळी उंगणी आठुं १५२ गया.
१९) १२४ (०	बाकी १ रह्यो तेनो भाग नपड्योचें माटे ० लखवी उपर चोवीश लीधा.
११४ (६	उंगणी छकें ११४ गया.
१०	बाकी दश कला रही.
८८०६) १०	ए रीतें ८८०६ योजन उपर दश कळा शेष रही.
८०००	एना धनुष्य करवाने आठ हजारें गुणायें.

७०४४८०००	८८०६योजनने आठ हजारें गुणतां धनुष्य थया.
४२१०॥	दश कलाना ४२१०॥ धनुष्य उपर अडधी कला वधी.
३७०४४८)७०४५२२१०॥	सरवाळे एकंदर धनुष्य थया.
३७०४४८	मूळ १८५२२४ ने बमणा करी भाग आपतां एक आव्यो.
३७०४४८)३३४०७४१(९	बाकी ३३४०७४ रह्या उपर एक लीधो.
३३३४०३२	३७०४४८ नवा ३३३४०३२ गया.
६७०९०॥	शेष धनुष्य ६७०९ रह्या. उपर शून्य लीधो.
९६	अंगुल करवाने छन्नुयें गुणवा.
४०२५४०	उपली राशिने छए गुणतां आंक.
६०३८१०	उपली राशिने नवें गुणतां आंक.
४८	उपली राशिना छहेला अडधा आंके गुणतां.
३७०४४८)६४४०६८८(१	सरवाळे एकंदर अंगुल थया.
३७०४४८	मूळनी राशीने बमणा करी भाग देतां एक आव्यो.
३७०४४८) २७३६२०८ (७	बाकी २७३६२० रह्या उपर आठ लीधा.
२५९३१३६	फरी ३७०४४८ ने सातें गुणतां ए आंक आव्यो.
१४३०७२	शेष अंगुल १४३०७२ रही.
९२६१२	पा आंगुलमां ९२६१२ नो आंक गयो.
५०४६०	शेष अंगुल ५०४६० राशि रही.

ए दक्षिणार्द्ध भरतनी जीवा ९७४८) योजन उपर एक योजनना ओगणीश भाग करीयें, तेवा बार भाग तथा वळी एक योजनना ओगणीशिया १६७३२४ भाग शेष वध्या छे, तेने छेद कला ३०७०४४८ भागे वेंचीयें, तेवारें १९१) धनुष्य अने सवा सतर अंगुल आवतां शेष ५०४६० अंगुल राशि वधे छे, तेने छेद कलानो आंक वधारे छे माटें भाग पोहोचे नही, तेथी तेना वळी यव प्रमुख करीने जे रीतें ते भाग पहोचे तेम पहोंचाडवो अने गणित करी लेवुं जोइयें.

हवे ए जेम दक्षिणार्द्ध भरतनुं जीवाकरण कह्युं, तेम वैताढ्यादिक पर्वतोनी जीवानुं गणित पण करवुं. अहियां सर्वेना जूदां जूदां गणित करतां नथी, पण जंबूद्वीप मां हेला सर्व स्थानकोनी जीवा करवानो यंत्र नीचे लखियें छेयें. ते गणित समजी लेवुं.

नव स्थानकने विषे क्षेत्र विष्कंभ एक लाख योजन छे, तेनी एकेक योजननी उंगणीश कला करतां उंगणीश लाख कला थाय तेने विषे नव स्थानकनी जीवाना यंत्रनी स्थापना.

	जीवा करवानो क्रम नाम पूर्वक,	योजन प्रमाण इक्षु.	उंगणीश जाग करतां इक्षुकला	विष्कंभमांथी बाद करतां शेषकला	इक्षुकलाने चार गुणा करतां.
१	दक्षण जरतार्द्ध.	२३८ $\frac{३}{१९}$	४५२५	१८९५४७५	१८१००
२	वैताढ्य.	२८८ $\frac{३}{१९}$	५४७५	१८९४५२५	२१९००
३	पूरण जरत.	५२६ $\frac{६}{१९}$	१००००	१८९००००	४००००
४	हिमवंत पर्वत.	१५७८ $\frac{१८}{१९}$	३००००	१८७००००	१२००००
५	हिमवंतयुगलक्षे	३६८४ $\frac{४}{१९}$	७००००	१८३००००	२८००००
६	महाहिमवंतप०	७८९४ $\frac{१४}{१९}$	१५००००	१७५००००	६०००००
७	हरिवर्षक्षेत्र.	१६३१५ $\frac{१५}{१९}$	३१००००	१५९००००	१२४००००
८	निषध पर्वत.	३३१५७ $\frac{१७}{१९}$	६३००००	१२७००००	२५२००००
९	महाविदेहमध्य	५००००	९५००००	९५००००	३८०००००

शेष कला रही तेने चार गुणी इक्षु कला साथे गुणतां.	मूल शोधतां शेष राशि रही तेनो आंक.	छेदराशिनो आंक.	मूलमां लाधी कला तेनो आंक.	लाधी कलाना योजन तथा उंगणीशीया जागनी कला.	
३४३०८०९७५००	१६७२२४	३७०४४८	१८५२२४	९७४८	$\frac{१२}{१९}$
४१४९००९७५००	७४०१९	४०७३८२	२०३६९१	१०७२०	$\frac{११}{१९}$
७५६००००००००	२९७८८४	५४९९०८	२७४९५४	१४४७१	$\frac{५}{१९}$
२२४४००००००००	७३०७३६	९४७४१६	४७३७०८	२४९३२	$\frac{१}{२}$
५१२४००००००००	२९५९५९	१४३१६४२	७१५८२१	३७६७४	$\frac{१५}{१९}$
१०५००००००००००	१५६९७५	२०४९३९०	१०२४६९५	५३९३१	$\frac{६}{१९}$
१९७१६०००००००००	२०९३५०४	२८०८२७२	१४०४१३६	७३९०१	$\frac{१७}{१९}$
३२००४०००००००००	६५०८४४	३५७७९३२	१७८८९६६	९४१५६	२
३६१००००००००००	०	०	१९०००००	१०००००	०

आहीं जगानी पहोलाइ न होवाथी एक यंत्रना बे जाग उपर अने नीचे कीधा छे. एज प्रमाणे ऐरवत क्षेत्रमां पण जीवानुं करण जाणवुं. इति तृतीय करणम् ॥

हवे चोथुं इखु गणित कहेछे.

आ जंबूद्वीपने विषे एक देश जे जरत क्षेत्र अथवा ऐरवत क्षेत्र ते चढावेला धनुष्य ने आकारे छे, तिहां बाणना गामनी वच्चेनुं जे विष्कंन तेने इखु कहीयें ते इखुना जेटला योजन होय तेनें योजननो इखु कहीयें, अने ते एकेका योजनना ओगणीश जाग करीने ते जागनो आंकडो जेवारें लखीयें तेवारें कलानो इखु कहेवाय. जेमके दक्षिणार्द्ध जरतनो इखु (२३८) योजननी उपर त्रण कला छे तेने ओगणीशना आंक साथे गुणीयें तेवारे (४५२५) कला थाय ए कलानो इखु जाणवो. एटले दक्षिण जरत क्षेत्रनी सर एटले बाणनी कला. (४५२५) थइ ते आ प्रमाणेः—२३८) योजनने. ओगणीशें गुणतां. ४५२२ कला थाय तेनी साथें उपरनी त्रण कला छे ते मेलवीयें तेवारें ४५२५ कला थाय. एरीते नवे स्थानकना योजननुंइखु तथा कलानाइखु ते सर्वे पाछला यंत्रमां आवी गया छे तेमांथी जोइ लेवा. इति चतुर्थं इखुगणितं समाप्तम् ॥

हवे पांचमो वैताढ्य प्रमुखनो धनुःपृष्ठ एटले पुंठनो जाग तेनुं गणित करवानो उपाय कहे छे. तिहां जे स्थानकनुं धनुःपृष्ठ करवुं होय, तेना इखुनो जे आंक होय, तेने तेटलागुणो करीने वर्ग करीये; पछी ते वर्गने छ गुणो करीयें तथा जीवानो जे आंक होय तेने पण तद्गुणो वर्ग करी पछी ए बेहु वर्गने एकठा करीने तेनुं मूल शोधतां जे आंक आवे, तेटलुं ते स्थानकनुं धनुःपृष्ठ जाणवुं. तेमां प्रथम दक्षिण जरतार्द्धना धनुःपृष्ठनुं गणित करी देखाडे छे.

४५२५	दक्षिणजरतार्द्धनी इखु कला ४५२५ छे.
४५२५	तेनो वर्ग करवा सारुं तद्गुणो करीयें.
२२६२५	उपला आंकने पांच साथें गुणतां संख्या.
९०५०	उपला आंकने बे साथे गुणतां संख्या.
२२६२५	उपला आंकने पांचसाथे गुणतां संख्या.
१८१००	उपला आंकने चार साथे गुणतां संख्या.
२०४७५६२५	एकंदर इखुकलाना वर्गनी राशि थइ.
६	ए राशिने छगुणी करवामाटे छयें गुणवुं.
१२२८५३७५०	ए इखुवर्गने छगुणो करतां एटली राशि थइ.
३४३०८०९७५००	पूर्वोक्त जीवानी राशिना वर्गनो आंक साथे मेलवीयें.
३४४३०९५१२५०	ए बेहुराशिना सरवालानो आंक थयो.

३४४३०९५१२५० एनुं मूळ शोधवा सारु विषम सम करवुं.
१ १) पहेलो अंक विषम छे, माटे एकज आंकने शोध्यो.
२) २४४ (८ शोधतां एकेकां एक गयो, बाकी बे रह्या. उपर चुमालीश लीधा.
१६ एकनो भाग आव्यो तेने बमणा करी बे अठ्ठ शोळ थया.
६४ आठनो भाग आव्यो, माटे आठे अठे चोशठने चांपी मांड्या.
२२४ सरवाळे बशें चोवीश थया, ते बाद करवा.
३६) २०३० (५ बाकी वीश रह्या उपर त्रीश लीधा.
१८० अढारने द्विगुणा करी छत्रीश पंचां १८० थया.
२५ पांचनो भाग आव्यो माटे पांच पञ्चा पच्चीश चांपी मांड्या.
१८२५ सरवाळो १८२५ थयो.
३७०) २०५९५ (५ ते बाद करतां बाकी २०५ रह्या उपर ९५ लीधा.
१८५० १८५ ने द्विगुणा करी ३७० पांचु १८५० थया.
२५ पांचनो भाग आव्यो माटे पांच पञ्चा पचीश चांपी मांड्या.
१८५२५ सरवाळे १८५२५ थया.
३७१०)२०७०१२(५ ते बाद करतां २०७० रह्या उपर बार लीधा.
१८५५० मूळना १८५५ ने द्विगुणा करी ३७१० पंचां १८५५० थया.
२५ पांचनो भाग आव्यो माटे पांच पञ्चां पचीश चांपी मांड्या.
१८५५२५ सरवाळे १८५५२५ थया.
३७११०) २१४८७५० (५ बाद करतां बाकी २१४८७ रह्या उपर पच्चास लीधा.
१८५५५० १८५५५ ने बमणा करी पांचे भाग देतां ए राशि आवी.
२५ पांचनो भाग आव्यो, माटे पंचो पंचो २५ चापी मांड्या.
१८५५५२५ सरवाळे १८५५५२५ थया.
३७१११०) २९३२२५ बाद करतां शेष कळा रही तेने भाग पोहोंचे नही.

ए रीतें १८५५५५ नो आंक आव्यो शेष कळा २९३२२५ वधी तेने १८५५५५ ने बमणा करियें तेवारें ३७१११० थाय. तेनो भाग पाहोंचे नही माटे पूर्वली रीतें कोश धनुष्यादिक करी भाग पहोंचाडवो. ए दक्षिण भरतार्द्धनुं गणित करी देखाड्युं. शेष स्थानकनुं पण ए रीतें गणित करवुं. ए दक्षिण भरतार्द्धादिक स्थानकना धनुःपृष्ठनो यंत्र नीचें लख्यो छे, तिहां महाविदेहना अर्द्धभाग पर्यंत जंबूद्वीपनी परिधिना अर्द्धभागनुं धनुःपृष्ठ आवे.

दक्षिण भरतार्द्धादिक नव स्थानकना धनुःपृष्ठनो यंत्र.

स्थानकोनां नाम.	इषुनी कला.	इषुना वर्गनीकला. नो आंक.	इषुवर्गने छगुणो करतां कला.	जीवाना वर्गनीकला नो आंक.
भरतार्द्धे.	४५२५	२०४७५६२५	१२२८५३७५०	३४३०८०९७५००
वैताढ्ये.	५४७५	२९९७५६२५	१७९८५३७५०	४१४९००९७५००
पूर्ण भरते.	१००००	१०००००००००	६००००००००	७५६००००००००
हिमवंतगिरि.	३००००	९००००००००	५४०००००००००	२२४४०००००००००
हिमवंतक्षेत्रे.	७००००	४९०००००००००	२९४००००००००	५१२४००००००००
महाहिमवं०	१५००००	२२५००००००००	१३५००००००००००	१०५००००००००००
हरिवर्षक्षेत्रे	३१००००	९६१०००००००	५७६६०००००००	१९७१६०००००००
निषधपर्वते.	६३००००	३९६९०००००००	२३८१४०००००००	३२००४०००००००
महाविदेहार्द्धे	९५००००	९०२५०००००००	५४१५००००००००	३६१००००००००००

छ गुणी करेली इषुना वर्गनी कला तथा जीवाना वर्गनी कलानो सरवालो	वर्गमूल आणतां शेषराशि. नो आंक.	वर्गमूल आणतां छेदराशि. नो आंक.	वर्गमूल आणतां लब्धराशि. नो आंक.	लाधेली कलाना योजन तथा कलानी संख्या.
३४४३०९५१२५०	२९३२२५	३७१११०	१८५५५५	९७६६। १
४१६६९९५१२५०	७७८२६	४०८२६४	२०४१३२	१०७४३।१५
७६२००००००००	२६२१५१	५५२०८६	२७६०४३	१४५२८।११
२२९८००००००००	५६८१२४	९५८७४८	४७९३७४	२५२३०। ४
५४१८०००००००	९५५१००	१४७२१४०	७३६०७०	३८७४०।१०
११८५००००००००००	११५०७१	२१७७१५४	१०८८५७७	५७२९३।१०
२५४८२००००००००	७६९१३६	३१९२६१६	१५९६३०८	८४०१६। ४
५५८१८००००००००	१५६८१११	४७२५१६६	२३६२५८३	१२४३४६।९
९०२५००००००००००	४६६९४३१	६००८३२६	३००४१६३	१५८११३।१६॥

आ एकज यंत्र छे पण पुस्तकमां साहामी बाजु जगा न मलवाथी चालता अनुक्रमना कोठाने नीचें लइ लीधा छे. प्रथमना यंत्रोमां पण बे ठेकाणे एमज कर्युं छे.

इति पंचम धनुःपृष्ठगणितयंत्रं समाप्तम् ॥

अथ पृष्ठ बाह्य करण विधि प्रारंभः ॥

हवे बहुं बाहकरण कहे छे. आ ठेकाणे बे धनुपृःष्ठनो विश्लेष करीयें, तिहां दक्षिण भरतार्द्ध अने वैताढ्यपर्वत ए बे धनुष्य छे, तेमां जे न्हानुं धनुष्य होय ते महोटा धनुष्यमांथी काढाडीयें तेने विश्लेष कहीयें, ते काहाडीने पछी जे शेष रहे, तेनुं अर्द्ध करीयें तेवारें वैताढ्य तथा हिमवंत प्रमुख पर्वतनी बाह थाय. बाह एटले पर्वतना तथा क्षेत्रना छेडानो विस्तार जाणवो, ते आवी रीतेंः—

दक्षिणार्द्ध भरतनुं धनुःपृष्ठ (९७६६) योजननी उपर एक कला छे, अने वैताढ्य पर्वतनुं धनुःपृष्ठ (१०७४३) योजनने पन्नर कला उपर छे, माटे वैताढ्यना धनुःपृष्ठनी अपेक्षायें दक्षिणार्द्धभरतनुं लघु धनुःपृष्ठ कहेवाय,अने वैताढ्यनुं महा धनुःपृष्ठ कहेवाय, तेवारें महाधनुःपृष्ठनी राशिमांथी लघु धनुःपृष्ठनी राशि बाद करीयें, तो बाकी (९७७) योजन उपर चौद कला रहे, तेनुं अर्द्ध करीयें तेवारें (४८८) योजन उपर साडीशोल कला आवे. एटला योजन प्रमाण वैताढ्य पर्वतना बेहु तरफनी प्रत्येक एकेकी बाह जाणवी. एवी रीतें हिमवंत महाहिमवंतादिक सर्व पर्वतोनी तथा हिमवंतादिक क्षेत्रोनी बाहनुं गणित स्वयमेव करी लेवुं. आहिं मात्र एनो यंत्रज लखीयें छैयें.

अथ बाह्य करण यंत्रम्.

बाह्य करवाना स्थानकोनां नाम.	वैताढ्यादिकनुं महाधनुःपृष्ठ.		भरतादिकनुं लघुधनुःपृष्ठ.		बेहुनो विश्लेष करतां बाकी.		तेनुं अर्द्धकरतांजे आंकआवे,तेबाह	
	योजन.	कला.	योजन.	कला.	योजन.	कला.	योजन	कला.
१ वैताढ्य पर्वत.	१०७४३	१५	९७६६	१	९७७	१४	४८८	१६॥
२ भरत क्षेत्र.	१४५२८	११	१०७४३	१५	३७८४	१५	१८९२	७॥
३ हिमवंतपर्वत.	२५२३०	४	१४५२८	११	१०७०१	१२	५३५०	१५॥
४ हिमवंतक्षेत्र.	३८७४०	१०	२५२३०	४	१३५१०	६	६७५५	३
५ महाहिमवंतपर्वत	५३२९३	१०	३८७४०	१०	१८५५३	०	९२७६	९॥
६ हरिवर्षक्षेत्र.	८४०१६	४	५३२९३	१०	२६७२२	१३	१३३६१	६॥
७ निषधपर्वत.	१२४३४६	९	८४०१६	४	४०३३०	५	२०१६५	२॥
८ विदेहार्द्ध.	१५८११३	१६॥	१२४३४६	९	३३७६७	७॥	१६८८३	१३।

इति पृष्ठ बाह्य करणविधियंत्रादि संपूर्णम् ॥

अथ सप्तम प्रतरकरण गणितं.

हवें सातमो प्रतर करवानो उपाय कहे छे. जरत क्षेत्र प्रमुखने समचतुरस्त्र करवां, तेने प्रतर कहीयें. तिहां प्रथम छेल्लो खंम जे जरत क्षेत्र छे, तेना प्रतर करवानो उपाय देखाडे छे. जरतार्द्धनी इक्षु साथें जीवा गुणीयें, ते गुणतां जे आंक आवे, तेने चार नागें वहेंची नाखतां चोथा नागमां जे आंक आवे, तेने तद्गुणो करीयें एटले तेनो वर्ग करीनें ते वर्गने दशें गुणीयें. एम करतां जे आंक आवे, तेनुं मूल शोधियें, ते मूल शोधतां जे आंक आवे, ते प्रतिकला जाणवी; पछी ते प्रतिकलाने उगणीश नागें वेंचीयें, तेवारें तेनी कला थाय, अने शेष वधे, ते प्रतिकला कहीयें. फरी ते कलानी राशिने उगणीश नागें वेंचीयें, तेवारें योजननी संख्या थाय. जेम के नरतक्षेत्रनी इक्षुकला ४५२५) छे, तेनी साथें नरतक्षेत्रनी जीवा संबंधी कला १८५२२५) किंचित् न्यून छे, तो पण ते सूक्ष्म गणित नथी करता, माटे एटलीज राशि साथें गुणतां ८३८१४३१२५ थाय, तेने चारनो नाग आपीयें, तेवारें २०९५३५७८१ थाय. शेष एक वधे. पछी ए राशिने एज राशि साथें गुणीने एनो वर्ग करीयें, तेवारें ४३९०५२४३५१९२७९९६१ थाय. अने पछी एने दश गुणा करवा सारु एक मिंडुं नीचें आपीयें. तेवारें ४३९०५२४३५१९२७९९६१० थाय. तेने विषम सम करी मूल शोधीयें ते आवी रीतें:—

४३९०५२४३५१९२७९९६१० (६६२६१०३१९ मूल शोधतां ए राशि आवे.

३६ (६	त्रेंतालीशमांथी छ छक छत्रीश गया.
१२)७९०(६	बाकी सात रह्या उपर नेवुं लीधा.
७२	छने बमणा करी बार छकां बहोंतेर थया.
३६	छनो नाग आव्यो माटे छ छक छत्रीश चांपी मांम्या.
७५६	बेहुनो सरवालो आपतां ७५६ गया.
१३२)३४५२(२	बाकी चोत्रीश रह्या, उपर बावन लीधा.
२६४	छाशठने बमणा करी १३२ डु २६४ थया.
४	बेनो नाग आव्यो माटे डुए डुए चार चांपी मांम्या.
२६४४	सरवाले २६४४ थया, ते बाद करवा.
१३२४)८०८४३(६	बाकी ८०८ रह्या उपर ४३ लीधा.
७९४४	६६२ ने बमणा करी १३२४ छकां ७९४४ थया.
३६	छनो नाग आव्यो माटे छ छकां छत्रीश चांपी मांम्या.

७९४३६ सरवाले ७९४३६ थया ते बाद करवा.

१३२५२)१३६७५१(१ बाकी १३६७ रह्या उपर एकावन्न लीधा.

१३२५२ ६६२६ डु १३२५२) एकुं १३२५२ थया.

१ एकनो भाग आव्यो माटे एकेकुं एक चांपी मांड्यो.

१३२५२१ सरवाले १३२५२१ गया.

१३२५२२)४२३०९२(० बाकी ४२३० रह्या, उपर ९२ लीधा भाग न पहोंचे माटे ० पडी.

१३२५२२०)४२३०९२७९(३ फरी ४२३०९२ नी उपर ७९ नो आंक लीधो.

३९७५६६० (६६२६१०ने बमणा करतां १३२५२२० त्रिकां ३९७५६६० थया.

९ त्रणनो भाग आव्यो माटे त्रण त्रिक नव चांपी मांड्या.

३९७५६६०९ सरवाले ३९७५६६०९ गया.

१३२५२२०६)२५५२६७०९६ (१ बाकी २५५२६७० रह्या उपर छनुं लीधा.

१३२५२२०६ ६६२६१०३ने बमणा करी १३२५२२०६ एकां एटलाज

१ एकनो भाग आव्यो माटे एकेकुं एक चांपी मांड्यो.

१३२५२२०६१ सरवाले १३२५२२०६१ गया.

१३२५२२०६२)१२२३४५०३५१०(९ बाकी १२२३४५०३५ रह्या उपर दश लीधा.

११९२६९८५५८ ६६२६१०३१ने बमणा करतां १३२५२२०६२ नवां ११९२६९८५५८ थया.

८१ नवनो भाग आव्यो माटे नेवे नेवे ८१ चांपी मां०

११९२६९८५६६१ सरवाले ११९२६९८५६६१ गया.

१३२५२२०६३८) ३४७५१७८४९ (शेष ३४७५१७८४९ राशि रही. एने लब्धराशिनो आंक ६६२६१०३१९ ले तेने बमणा करतां १३२५२२०६३८नो आंक थाय, तेनी साथें भाग पहोंचे नही तेने सूक्ष्म गणित नथी माटे एमज पडता मूकवा.

अने ६६२६१०३१९ ए लब्ध प्रतर प्रतिकला थइ, तेने ओगणीश भागें वेंचीयें, तेवारें ३४८७४२२७ कलानी उपर ८ प्रतिकला थाय. हवे एना योजन करवा सारु फरी ओगणीश भागें वेंचियें तेवारें (१८३५४८५) योजननी उपर बार कला अने ८ प्रतिकला तथा ३४७५१७८४९ एटली संख्यानी पूर्वोक्त १३२५२२०६३८ छेद राशि वाली शेष राशि रही, ए दक्षिणभरतार्द्धना प्रतर करी देखाड्या. तेना यंत्रनी स्थापना नीचें करीयें छैयें.

दक्षिण नरतार्द्धना प्रतर करवानो यंत्र.

१ इषु कला.	४५२५
२ किंचित् न्यून जीवा कला.	१८५२२५
३ इषु कलाने जीवा कला साथें गुणतां.	८३८१४३१२५
४ तेने चार नागें वेंचतां कला.	२०९५३५८८१
५ चोथा नागनी कलानो वर्ग करतां	४३९०५२४३५१९२७९९६१
६ तेने दशगुणो करतां	४३९०५२४३५१९२७९९६१०
७ ते वर्गनुं मूल शोधतां लाधेलो आंक.	६६२६१०३१९
८ शेष राशि रही.	२४७५१७८४९
९ छेद राशि.	१३२५२२०६३८
१० लाधेली प्रतिकलाने १९ नागें वेंचतां कला.	२४८७४२२७।६ प्रतिकला.
११ फरी ते कलाना योजन करवा १९ नो नाग आपतां	१८३५४८५

एटला योजननी उपर १२) कला अने ६ प्रतिकला जाणवी.

हवे वैताढ्य प्रमुख मध्यक्षेत्रोना प्रतर करवानो उपाय कहे छे. लघु जीवानो वर्ग अने महोटी जीवानो वर्ग ए बे वर्गनो शरवालो बांधी एकठा करीने तेनुं अर्द्ध करीयें, पछी तेनुं मूल शोधियें, ते मूलनो जे आंक आवे, ते पोताना विस्तार साथें एटले वैताढ्यादिक पर्वतोना पहोल पणा साथें गुणियें, तेवारें वैताढ्यादिक पर्वतोनो प्रतर थाय. तिहां प्रथम वैताढ्य पर्वतना तलीया संबंधि नूमिकानुं प्रतरकरण कहे छे.

॥ अथ वैताढ्यस्य प्रतरकरणं लिख्यते ॥

दक्षिण नरतार्द्धनी लघु जीवानो वर्ग करतां कला.	३४३०८०९७५००
वैताढ्यनी गुरु जीवा कहेवाय तेनो वर्ग करतां कला.	४१४९००९७५००
ए बन्ने जीवानो सरवालो करतां कला.	७५७९८१९५०००
तेनो अर्द्धनाग करतां कला.	३७८९९०९७५००
एनुं मूल शोधतां लाधेली कला.	१९४६७६
शेष राशिनी कला.	३५२५२४
छेद राशिनी कला.	३८९३५२

ए सामान्यथी विधि कह्यो; परंतु विशेष विधि तो आवी रीतें छे, ते आगल लखीयें छैयें.

वैताढ्य पर्वतना दक्षिणना पासानुं जेटलुं लांब पणुं छे, तेने जीवा कहीयें, ते जीवाना योजनना ओगणीशिया भाग करीयें, तेने कला कहियें. ते कलानो वर्ग करियें, तेने लघु जीवा वर्ग कहीयें, अने ए वैताढ्य पर्वतना उत्तरना पासानुं जेटलुं लांबपणुं छे, तेनी कला करीने तेनो वर्ग करियें, ते महोटो जीवा वर्ग कहीयें. पछी लघु जीवाना वर्गनो आंक अने महोटी जीवाना वर्गनो आंक, ए बे आंक एकठा मेलवतां जे आंक आवे, तेने बे भागें वेंचीयें एटले अर्ध करी नाखीयें, तेवारें (३७८९९०९४५००) एटलो आंक आवे, पछी तेनुं पूर्वोक्त रीतें मूल शोधीयें, तेवारें त्रण राशि थाय, तेमां जे आंक उगरे तेने शेष राशि कहीयें, अने जे आंक नीचें लाभे, ते छेद राशि कहेवाय. अने ते छेद राशिनो अर्ध लाभे ते लब्धांक राशि कहेवाय, ए त्रण राशिमांथी जे शेष राशिनो आंक (३५२५२४) आवशे, तेने बारना आंके अपवर्त्तना करीयें. अपवर्त्तना एटले पाछुं ओसरवुं चालवुं विशेष भाषायें बारने आंकें भाग आपीयें तेवारें (२९३७७) नो आंक आवे, ते एक बाजु मांमी राखीयें, तथा वली छेद राशिनो आंक (३८९३५२) छे, तेने पण बारें अपवर्त्तना करीयें, तेवारें (३२४४६) आवे. ए आंक पण एक बाजु मांमी राखीयें, तथा ए करणी करतां जे कला लब्ध थइ छे, तेनो आंक (१९४६७६) नो छे तेनें वैताढ्यनुं पहोल पणुं पच्चास योजननुं छे, तेनी सार्थे गुणाकार करीयें, तेवारें (९७३३८००) नो आंक आवे, ते पण एक बाजु लखी राखीयें, तथा शेष राशिना आंकनें बारनो भाग आपतां जे २९३७७ नो आंक लाधो छे, तेनें पण वैताढ्य पर्वतना तलीयाना पहोल पणाना पच्चाश योजन सार्थे गुणाकार करीयें, तेवारें (१४६८८५०) थाय. ए आंकनें प्रथम छेदराशिना आंकनें बारें भाग आपतां जे (३२४४६) नो आंक आव्यो छे, ते आंके भाग आपीयें, तेवारें (४५) आंक आवे, अनें शेष (८४८०) आंक वधता रहे, हवे पीस्तालीशना आंकने पूर्वोक्त लब्धराशिने पच्चास गुणी करतां जे (९७३३८००) नो आंक आव्यो छे, तेनी सार्थे मेलवीयें तेवारें (९७३३८४५) थाय एटली शेष कलानी राशि उगरी. तेना योजन करवानें अर्थें ओगणीशनो भागाकार आपीयें, तेवारें (५१२३०७) योजन उपर बार कला एटला चोसला एटले समचतुरस्त्र चोखूणा योजनना खांमवा वैताढ्य पर्वतनी नीचली तलीयानी भूमिकामांहे थाय छे.

हवे वैताढ्य पर्वत उपर दश योजन उंचा चढियें, तेवारें पहेली मेखला आवे, तिहां प्रतर गणित केटलुं थाय ? ते कहीयें छैयें.

ए पण वैताढ्य पर्वतनो लघु जीवानो वर्ग तथा महोटी जीवानो वर्ग ए बेहु वर्गने

मेलवी सरवालो करी पछी तेनुं अर्ध करी, ते अर्ध नागमां जे आंक आव्यो तेनी कर णी करवी एटले मूल शोधवुं. पछी तेनी त्रण राशि कलानी लाधी, त्यां सुधी तो बधो पूर्वली रीतें वर्त्तारो वर्त्तवो. तेवार पछी पहेली मेखलाने विषे एटलुं विशेष करवुं, के पूर्वें वैताढ्य पर्वतना तलियानी करणीमां शेष राशिने बारें अपवर्त्तन करतां जे १०४६७६ कला लाधेली छे, तेने वैताढ्यना तलियानुं पहोलपणुं पचास योजननुं छे, ते नी साथें गुणाकार कीधो हतो ते इहां पहेली मेखलायें वैताढ्य पर्वत त्रीश योजन प होलो छे, माटे ए लब्ध कलाने त्रीशे गुणीयें, तेवारें ५०४०२८० नो आंक आवे, ते एक बाजु मांमी राखीयें, अने शेष राशिनी द्वादश अपवर्त्तनायें एटले बारना आंकें नाग दे तां जे १०३७७ नो आंक आव्यो छे, ते आंकनें वैताढ्यनी पहेली मेखलाना त्रीश यो जन सार्थे गुणीयें, तेवारें ८८१३१० नो आंक आवे, ते आंकने छेदराशिना आंकने बारें नाग आपतां जे ३१४४६ नो आंक आव्यो छे, ते आंकें नागाकार आपीयें, तेवा रें (२७) नो आंक आवे, अने उपर ५१६८ नो आंक वधे. ते वधेलो आंक कांइ ना गाकारमां काम न आवे माटे एमज रहेवा दइयें. बाकी मात्र सत्तावीशना आंकने पूर्वो क्त लब्ध कलाने वैताढ्यनी पहेली मेखलाना पहोल पणाना त्रीश योजननी सार्थे गुण तां जे ५०४०२८० नो आंक आव्यो छे, तेनी सार्थे मेलवीयें, तेवारें ५०४०३०७ नो आंक कलानो थाय, तेना योजन करवाने अर्थे ए आंकने उगणीशनो नाग आपीयें, तेवारें (३०७३०४) योजन उपर अगियार कला एटला एकेका योजनना समचतुरस्र खांमवा वैताढ्य पर्वतनी पहेली मेखलानी नूमिकायें थाय.

हवे वैताढ्य पर्वतनी बीजी मेखलायें प्रतर गणित करवानो उपाय कहीयें छैयें. ति हां पहेली मेखलायें जे करणी करतां १०४६७६ कला लब्धमान हती, ते आंकने इहां बीजी मेखला दश योजननी पहोली छे, माटे दशना आंक सार्थे गुणीयें, तेवारें १०४६७६० थाय. ते आंकने एक बाजुयें लखी राखीयें.

पछी शेष राशिने बारें नागतां जे १०३७७ नो आंक आव्यो छे, ते आंकने वैता ढ्यनी बीजी मेखलानुं दशयोजन पहोलपणुं छे, तेनी सार्थे गुणीयें. तेवारें १०३७७० नो आंक थाय. ते आंकने वली छेद राशिना आंकने बार नागें वेचतां जे ३१४४६ नो आंक आवेलो छे, ते आंके नागाकार आपीयें तेवारें ए नो आंक आवे, अने उपर १७५६ अंश वधे, ते अंशने नाग पहोंचे नही माटे एमज रहेवा दइयें. अने नवना आंकने पूर्वोक्त लब्ध राशिना आंकने वैताढ्यनी बीजी मेखलाना पोहोलपणाना दश योजन सार्थे गुणीने जे १०४६७६० कलानो आंक आवेलो छे, तेनी सार्थे मेलवीयें,

तेवारें १०४६७६० कला थाय. पछी कलाना योजन करवा सारु ए आंकने उंगणी शनो नागाकार आपीयें, तेवारें १०२४६१ योजननी उपर दश कला थाय, एटला वैताढ्यनी बीजी मेखलाना सम चोरस खांमवा थाय, ए वैताढ्यपर्वतनी बीजी मेखलानुं प्रतरगणित कह्युं. ए सर्वेना यंत्रनी स्थापना आगल करशुं.

हवे उत्तर नरतार्द्धनुं प्रतरकरण लखीयें ठैयें. इहां वैताढ्य पर्वतना उत्तरना पासानी जे जीवा तेनी कला करीने पछी तेनो वर्ग करीयें, तेने लघु जीवावर्ग कहीयें, अने हिमवंत पर्वतना दक्षिण पासानी लांबपणानी जे जीवा तेनी कला करीने पछी तेनो वर्ग करीयें, तेने गुरुजीवा वर्ग कहीयें. पछी बेहु जीवाना वर्गने एकठा करी शरवालो आपतां जे आंक आवे, तेनुं अर्द्ध करीयें, पछी तेनी करणी करी मूल शोधीयें, तेवारें लब्ध कला २४१०६० आवे. तथा शेष राशि ४००१५० आवे, तथा ठेदराशि ४८३०२० आवे, एवी त्रण राशि थाय.

हवे शेषराशिनो अंक ४००१५० ठे, तेने शून्यें करी अपवर्त्तियें, एटले शेषराशिने ठेहडे शून्य अर्थात् मींडुं ठे, तेने नांजी नाखीयें,तेवारें दशक पड्युं. ए नाव जाणवो. अर्थात् दशने आंके नागाकार कीधो तेवारें ४००१५ नो आंक रह्यो. तथा ठेदराशिनो आंक ४८३०२० ठे, तेने पण शून्यें अपवर्त्तियें, तेवारें ४८३०२ नो आंक रहे.

हवे पूर्वोक्त लब्ध राशिनो आंक २४१०६० ठे, तेने नरतार्द्धना बाणनी कला एटले पहोल पणानी कला ४५२५ ठे. तेनी साथें गुणीयें, तेवारें १०९०४८६५०००० आवे.

वली शेषराशिने शून्यें अपवर्त्तन करीने ४००१५ नो आंक रह्यो ठे, तेने पण नरतार्द्धना पृथुत्व एटले बाणनी कला ४५२५ नी साथें गुणाकार करीयें तेवारें १८४२२५३७५ नो आंक आवे. हवे ए आंकने ठेदराशिना शून्यें अपवर्त्तेलो जे ४८३०२ नो आंक ठे, ए आंके नाग आपीयें, तेवारें ३८०७ नो आंक लाने, शेष ७०३१ एटलो आंक वधे. ते एमज राखीयें अने प्रतिकला ३८०७ लाधी, ते पूर्वोक्त ४५२५ पहोलपणानी राशियें गुणाकार करेली प्रतिकलानी राशि १०९०४८६५००० आंकनी ठे, तेनी साथें मेलवियें, तेवारें १०९०४८७३८०७ एटलो प्रतिकलानो आंक थाय. कारण के, एने पहोलपणाना २३८ योजनथी गुणाकार कर्यो होय तो ए कलानी राशि कहेवाय. परंतु आ ठेकाणें उत्तरार्द्ध नरतना योजन २३८ ने त्रण कलानी सर्व कला ४५२५ करीने तेनी साथें गुणाकार करेलो ठे, माटे एने प्रतिकला कहियें ठैयें.

हवे ए १०९०४८७३८०७ जे प्रतिकला थइ तेने उंगणीशनो नाग आपीयें, तेवारें

५७६४४०७४ कला थाय, अने उपर अगीयार प्रतिकला उगरे तेना योजन करवा सा रु फरी ए कलानी राशिने ओगणीशनो जागाकार आपीयें, तेवारें ३०३१०७७ योजन बार कला अने अगीयार प्रतिकला थाय एटला एकेका योजनना चोसला खांमवा उत्तरार्द्ध जरतना जाणवा. इति उत्तर जरतार्द्धस्य प्रतरकरणविधिः समाप्तः ॥

हवे हिमवंत पर्वतने तलीये प्रतरनी संख्या करवाने अर्थें वरतारो करवानी रीत ल खीयें छेयें. हिमवंत पर्वतनी दक्षिणने पासें जे उत्तरजरतार्द्धनो ७५६०००००००० जी वा वर्ग छे ते लघु जीवा वर्ग जाणवो, अने हिमवंत पर्वतनी उत्तर दिशियें जे २२४४०००००००० जीवावर्ग, ते गुरु जीवावर्ग जाणवो. ए बे वर्ग एकठा मेलवीयें, तेवारें ३०००००००००० ए आंक आवे,तेनुं अर्द्ध करीयें,तेवारें १५०००००००००० थाय. ए आंकने करणी करी मूल शोधियें, तेवारें ३८७२९७७ लब्धराशि थाय. अने शे ष राशि २५९१९६ एटली उगरे, तथा छेदराशि ७७४५९६ थाय. पछी शेष राशिनो २५९१९६ नो आंक आव्यो छे,ते आंकने चारना आंक सार्थे अपवर्त्तन करीयें, एटले चारे जागाकार आपीयें, तेवारें ६४७९९ नो आंक आवे,तथा छेदराशिना आंकने चारे अपवर्त्तन करीयें,एटले चारने आंके जागाकार आपीयें तेवारें १९३६४९नो आंक आवे.

हवे लब्धराशिनो आंक जे ३८७२९७ नो आव्यो छे ते आंकने हिमवंत पर्वतनुं प होलपणुं जे वीश हजार कलारूप छे, तेनी सार्थे गुणीयें, तेवारें ७७४५९६०००० नो आंक आवे, ते एक बाजुयें लखी मूकीयें.

पछी शेष राशिने चारें अपवर्त्तन करतां जे ६४७९९ नो आंक आव्यो छे, ते राशि ने हिमवंत पर्वतना पहोल पणानी वीश हजार कला सार्थें गुणाकार करीयें, तेवारें १२९५९८०००० नो आंक आवे, तेने छेदराशिने चारें अपवर्त्तन करेला १९३६४९ ना आंके जाग आपियें, तेवारें ६६९२ नो आंक आवे, अने उपर ७०७९२ नो आंक शेष रहे,तेने जाग पहोंचे नही मारें ते आंक पडतो मूकीने ए ६६९२ नुं जे आंक छे ते हिमवंत पर्वतना पहोल पणानी वीशहजार कलायें गुणेला लब्धराशिना७७४५९६०००० आंक सार्थें मेलवीयें, तेवारें ७७४५९६६६९२नो आंक प्रतिकलारूप थाय, तेनी कला करवा सारु ए आंकने ओगणीशनो जागाकार आपीयें,तेवारें ४०७६७२४५७नो आंक उपर नव प्रतिकला वधे, वली ए आंकना योजन करवाने अर्थें फरी ओगणीशें जाग आपीयें, तेवारें २१४५६९७१ योजननी उपर आठ कला अने नव प्रतिकला थाय. ए टला एकेक योजनना चोशला खांमवा हिमवंत पर्वतना जाणवा इति ॥

हवे हिमवंत क्षेत्रना प्रतर गणितनो वरतारो कहियें छैयें. इहां हिमवंत पर्वतना उत्तर पासानो जे जीवावर्ग ते लघुजीवावर्ग कहीयें, अने हिमवंत क्षेत्रने छेहडे महाहिमवंत पर्वतने अडतो जे जीवावर्ग,ते महोटो जीवावर्ग जाणवो. ए बे वर्ग एकठा मेळवीने तेनुं अर्द्ध करीयें, तेवारें ३६८४०००००००० एटलीकळानो आंक आवे, तेनुं सम विषम करी करणी करी मूल शोधियें,तेवारें ६०६९५९ कळानो आंक लब्धराशिनो आवे, ते एक बाजुयें लखी राखीयें. अने शेषराशि ७७२३१९ नो आंक रहे, तथा छेदराशि १२१३९१८ नो आंक रहे. पछी लब्ध राशिनो ६०६९५९ नो आंक छे तेने हिमवंतक्षेत्रना पोहोळपणानी ४०००० कळा बाणरूप छे. तेनी सार्थे गुणियें तेवारें २४२७८३६०००० नो आंक आवे, ते एक बाजु मांडी मूकीयें,पछी शेषराशिना आंकने एकें अपवर्त्तन करीयें,तेवारें तेहीज७७२३१९नो आंक आवे तेने हिमवंतक्षेत्रना पहोळ पणानी बाण रूप ४०००० कळा छे तेनी सार्थें गुणीयें तेवारें ३०८९२७६०००० नो आंक आवे. ते आंकने छेदराशिनो १२१३९१८ नो आंक छे, तेने एकें अपवर्त्तन करतां एहीज आंक आवे ते आंके भागाकार आपीयें, तेवारें २५४४८नो आंक आवे, अने शेष ९७४७३६नो आंक रहे तेने भाग पहोंचे नही माटें पडतो मूकीयें. पछी लब्धराशिना चालीश हजारें गुणेला आंकनी सार्थे ए २५४४८ नो आंक मेळवीयें, तेवारें २४२७८३८५४४८ नो आंक आवे एटली प्रतिकळा थइ तेनी कळा करवा सारु एने उगणीशनो भाग आपीयें, तेवारें १२७७८०९७६० कळा अने उपर आठ प्रतिकळा थाय तेना वळी योजन करवा सारु ए आंकने उगणीशनो भाग आपीयें, तेवारें ६७२५३१४५ योजननी उपर पांच कळा अने आठ प्रतिकळा एटला योजनना चोसळा खांभवा हिमवंत क्षेत्रना थाय.

हवे महाहिमवंत पर्वतना प्रतरनुं गणित करवुं, तेनो वरतारो लखीयें छैयें. हिमवंत क्षेत्रना उत्तरनी पासें जे जीवानो वर्ग ते लघु जीवावर्ग कहीयें अने महाहिमवंत पर्वतना छेहडानो जे जीवावर्ग ते गुरु जीवावर्ग कहीयें. ते बेहुने एकठा मेळवीने तेनुं अर्द्ध करीयें, तेवारें ४८१२०००००००० एटलो आंक थाय तेनुं मूल शोधीयें तेवारें लब्धराशि ८८३८५५ आवे अने छेदराशिनो आंक १७६७७१० नो आवे. तथा शेष राशि ३३८९७५ नो आंक आवे, तेने पांत्रीशना आंक सार्थें अपवर्त्तियें, एटलें पांत्रीशें भाग आपीयें तेवारें ९६८५ नो आंक आवे. पछी छेदराशिनो आंक १७६७७१० छे, तेने पांत्रीशें अपवर्त्तियें, तेंवारें ५०५०६ नो आंक आवे.

हवे पूर्वें जे मूल शोधतां ८८३८५५ नो आंक लब्धराशिनो आव्यो छे,ते आंकने महा हिमवंत पर्वतना पहोलपणाना बाण रूप एंशी हजार कला छे, तेनी सार्थे गुणियें, ते वारें ४०३०८४००००० नो आंक थाय.

हवे शेष राशिने अपवर्त्तन करतां जे ७६०५ नो आंक आव्यो छे, तेनें महाहिमवंत पर्वतनी पृथुत्व रूप आठ हजार कलानी सार्थे गुणीयें, तेवारें ४४४८००००० नो आंक थाय, ते आंकने अपवर्त्तन करेलो जे छेदराशिनो ५०५०६ नो आंक छे, ते आंकें नागाकार आपीयें तेवारें १५३४० नो आंक आवे, शेष ३४९६० नो आंक वधे, तेनें नाग पोहोंचे नही माटे पडतो मूकीयें अने १५३४० ना आंकने पूर्वें जे एंशीहजार गुणो करेलो लब्धराशिनो ४०३०८४००००० नो आंक छे, तेनी सार्थे मेलवियें, तेवा रें ७०३०८४१५३४० नो आंक प्रतिकलानो थाय, तेनी कला करवा सारु ए आंकनें ७ गणीशें नाग आपीयें, तेवारें ३४११४९५५४४ एटली कला उपर चार प्रतिकला थाय. वली एना योजन करवा सारुं ए कलाना आंकनें बीजी वार ७गणीशें नाग आपीयें, ते वारें १९५८६८१०८ योजन उपर दश कला अने चार प्रतिकला थाय, एटला सम चोरस योजनना खांफवा महाहिमवंत पर्वतना जाणवा.

हवे हरिवर्षक्षेत्र बीजुं नाम हरिवास क्षेत्र तेनुं प्रतर करवानो वरतारो कहीयें छेयें, महाहिमवंत पर्वतनी उत्तर पासें जे जीवानो वर्ग ते लघु जीवावर्ग कहीयें, अने हरि वास क्षेत्रने छेहडे निषध पर्वतने लगतो लांबपणानो जे जीवावर्ग ते गुरु जीवावर्ग क हीयें. ए बे जीवावर्गनो सरवालो करी एकठो मेलवीने पछी तेनुं अर्द्ध करीयें तेवारें १५१०८००००००००० नो आंक आवे, तेने समविषम करी मूल शोधियें तेवारें वर्ग मूल १२२९१४६ लब्धराशिनो आंक आवे, अने ११०६७४ शेष राशिनो आंक आवे तथा २४५८२९२ एटले छेदराशिनो आंक आवे.

हवे शेषराशिना आंकने चारे अपहरियें तेवारें २७६७१ नो आंक आवे, तेमज छेदराशिना आंकने पण चारें नाग आपीयें, तेवारें ६१४५७३ नो आंक आवे.

हवे मूलनी लब्धराशिना आंकने हरिवासक्षेत्रना पहोलपणानो बाण १६०००० कला रूप छे, तेनी सार्थे गुणीयें तेवारें १९६६६३३६०००० नो आंक आवे, तेने एक बाजु मांमी राखीयें.

पछी शेषराशिना आंकने चारें अपवर्त्तन करतां जे २७६७१ नो आंक आव्यो छे, तेने हरिवर्ष क्षेत्रना पहोल पणानी १६०००० कला सार्थे गुणीयें,तेवारें४४२७३६००००

नो आंक थाय. ए आंकने चारें अपवर्त्तना करेली बेदराशिना जे ६१४५७३ नो आंक बे, ते आंकें जाग आपीयें, तेवारें ७२०३ नो आंक आवे. शेष ५ए०६०१ नो आंक वधे, तेने जाग पहोंचे नही, माटे एमज रहेवा आपीयें. अने ७२०३ ना आंकने एक लाखने शाठ हजारें गुणेला लब्धराशिना आंक साथें मेलवीयें तेवारें १ए६६६३२६७२०३ नो आंक प्रतिकलानो थाय, तेनी कला करवाने अर्थें उंगणीशनो जाग आपीयें, तेवारें १०३५०७०३५३७ कला थाय, तेना योजन करवा सारु फरी बीजीवार उंगणीशें जाग आपीयें, तेवारें ५४४७७३०७० योजननी उपर सात कला थाय. एटला हरिवास क्षेत्रनी जूमिना एक योजनीया समचतुरस्र खंमुक जाणवा.

हवे निषधपर्वतनुं प्रतर करवानुं गणित कहियें बैयें, हरिवासक्षेत्रने बेहडे निषधपर्वतने लगतुं जे लांबपणुं तेनी जीवानो वर्ग ते लघुजीवा वर्ग कहीयें, तथा निषधपर्वतनी उत्तरनी पासें मेरुपर्वत तरफ जे निषधनुं लांबपणुं तेनी जीवानो जे वर्ग, ते गुरुजीवावर्ग जाणवो. ए बे जीवावर्गना आंकनो सरवालो करी तेनुं अर्द्ध करीयें, तेवारें २५०६०००००००००० नो आंक थाय,तेनुं वर्गमूल शोधियें तेवारें १६००१०४ लब्धराशि थाय, अने १५२५१०४ एटली शेषराशि रहे, तथा ३२१६२०० एटली बेदराशि आवे, ए त्रण राशि थइ.

हवे शेषराशिनो आंक मांमीनें तेने शोलने आंके अपवर्त्तियें एटले जागाकार आपीयें, तेवारें ए५३२४ नो आंक आवे. तेमज ते बेदराशिना आंकने शोलें अपवर्त्तियें तेवारें २०१०१३ नो आंक आवे.

पबी लब्धराशिनो आंक जे १६००१०४ नो बे तेने निषध पर्वतना पहोलपणानी ३२०००० कलानी साथें गुणीयें, तेवारें ५१४५ए३२८०००० नो आंक आवे, तेने एक बाजु लखी राखीयें.

हवे शेषराशिने शोलना आंकें अपवर्त्तन करेलो जे ए५३२४ नो आंक बे, तेने निषध पर्वतना पहोलपणानी जे ३२०००० कला बे, तेनी साथें गुणीयें, तेवारें ३०५०३६८०००० नो आंक आवे, तेने शोले अपवर्त्तन करेली बेदराशिनो जे २०१०१३ नो आंक बे, ते आंकें जागाकार आपीयें, तेवारें १५१७४ए नो आंक आवे. शेष १५०२६३ नो आंक वधे, तेने जाग पहोंचे नही माटें पडतो मूकियें, अने त्रण लाख वीश हजारें गुणेला लब्धराशिना आंकनी साथें ए १५१७४ए नो आंक मेलवियें, तेवारें ५१४५ए३४३१७४ए नो आंक प्रतिकलारूप थाय, तेनी कला कर

वानें अर्थें ए आंकनें उंगणीशनो नागाकार आपियें, तेवारें २७००३०६४०२० कला नी उपर सत्तर प्रतिकला थाय तेना योजन करवा सारु फरी पण उंगणीशनो नाग आपीयें, तेवारें १४२५४६६५६ए योजन उपर सत्तर कला अनें सत्तर प्रतिकला था य, एटलुं निषेध पर्वतनुं प्रतर गणित जाणवुं. एटले नूमिना एकेका योजनना सम चतुरस्त्र खंमूक एटला थाय ॥ इति ॥

हवे विदेहार्द्धनुं प्रतर गणित करी देखाडियें छैयें, निषधपर्वतनो मेरु तरफ जे छेहडो तेनो जे जीवावर्ग ते लघुजीवावर्ग जाणवो, अने जंबूद्वीपनी मध्यनो वचमांनो जे अर्द्धनाग तिहां सुधी जे बाण अथवा जीवा तेनो जे वर्ग ते गुरुजीवावर्ग जाणवो. ए बे जीवावर्गने एकठा करतां जे आंक आवे,तेनुं अर्द्ध करीयें, तेवारें ३४०५२०००००००० नो आंक आवे तेनुं मूल शोधियें, तेवारें १०४५३१७ नो आंक आवे, अने १४७००७६ एटली शेष राशि रहे, तथा २६ए०६३६ एटली छेदराशि आवे, ए त्रण राशि थइ.

हवे शेषराशिना आंकने चारें अपवर्त्तन करीयें,तेवारें ३६ए७१ए नो आंक आवे अने छेदराशिने चारें अपवर्त्तन करीयें, तेवारें ए२२६५ए नो आंक आवे.

हवे लब्धराशिनो आंक १०४५३१७ नो छे, ते आंकने विदेहार्द्धनुं जे बाण एटले पहोलपणुं तेनी ३२०००० कला छे, तेणें करी गुणाकार करीयें तेवारें ५ए०५०१७६०००० नो आंक आवे, तेने एक बाजुयें मांमी राखीयें. पछी शेषराशि ने चारें अपवर्त्तन करतां जे ३६ए७१ए नो आंक आव्यो छे, तेने विदेहार्द्धना पहोल पणानी ३२०००० कलानी सार्थे गुणीयें,तेवारें ११७३१००७०००० नो आंक आवे, तेने चारे अपवर्त्तन करेली छेदराशिनो जे ए२२६५ए नो आंक छे,तेणे करी नागाकार आपीयें तेवारें १२०२२७ नो आंक आवे अने उपर २७४४०७ नो आंक वधे, तेने नाग पहोंचे नही, माटे तेनें पडतो मूकीयें, अने १२०२२७ नो जे आंक छे ते पूर्वें अपवर्त्तन करीने विदेहार्द्धनी लंबाइनी कला सार्थें गुणेलो जे लब्धराशिनो आंक तेनी सार्थें मेलवीयें, तेवारें ५ए०५०१७७७२२७ नो आंक प्रतिकलानो थाय. पछी एनी कला करवा सारु उंगणीशें नाग आपियें. तेवारें ३१०७ए०४६७४० एटली कला थाय, उपर पन्नर प्रतिकला वधे, तेना योजन करवाने अर्थें फरी ए आंकने उंगणीशें नाग आपीयें, तेवारें १६३५०७३ए३०१ योजननी उपर दश कला अने पन्नर प्रति कला थाय. एटलुं विदेहार्द्धनुं प्रतर गणित जाणवुं ॥

हवे ए प्रतरना सरवालानो अवशेष कहे छे. ए दक्षिणनरतार्द्ध आदें देइने जे क्षेत्रो

तथा पर्वतो तेना प्रतरनुं गणवुं, एटला चोसठा योजनना गणितपदनुं करवुं ते व्यवहार मार्गें देखाड्युं, तेमज मेरुथकी उत्तरदिशियें जे ऐरवत क्षेत्र आदें देइने क्षेत्रो तथा पर्वतो छे तेनो पण उत्तरविदेहार्द्ध पर्यंत एज रीतें वरतारो वर्त्तवो,पछी सर्वनो सरवाळो एकठो मेळववो अथवा जंबूद्वीपना विदेहार्द्ध पर्यंत अर्द्धनागना चोसठा योजनीथां खंम जेनुं गणित उपर करी आव्या छेयें, तेनें एकठा करी सरवाळो बांधीने पछी बमणा करीयें, तेवारें "सगसयनउय" ए गाथामां कहेली संख्या जेटलां प्रतर थाय. ए प्रतर करवाना यंत्रनी स्थापना नीचें करीयें छेयें.

प्रतरकरणं.	उत्तरभरतार्द्धस्य १	हिमवद्गिरेः २	हिमवंतक्षेत्रस्य ३
लघुजीवावर्गकला.	४१४९००९७५००	७५६००००००००	२२४४००००००००
गुरुजीवा वर्ग कला.	७५६००००००००	२२४४००००००००	५१२४००००००००
उभयमीलनेकला.	११७०९००९७५००	३००००००००००००	७३६८००००००००
तद्दलीकरणेकला.	५८५४५०४८७५०	१५००००००००००	३६८४००००००००
वर्गमूललब्धकला.	२४१९६०	३८७२९८	६०६९५९
शेषराशिः ॥	४०७१५०	२५९१९६	७७२३१९
छेदराशिः ॥	४८३९२०	७७४५९६	१२१३९१८
अपवर्त्तनांक १०	शून्येनापवर्त्तना.	४	०
कृतेऽपवर्त्तनेशेषराशिः	४०७१५	६४७९९	०
कृतेऽपवर्त्तनेछेदराशिः	४८३९२	१९३६४९	०
पृथुत्वकलाः ॥	४५२५	२००००	४००००
तद्गुणोलब्धराशिः	१०९४८६९०००	७७४५९६००००	२४२७८३६००००
पृथुत्वेनशेषांशगुणाः	१८४२३५३७५	१२९५९८००००	३०८९२७६००००
छेदभागेनलब्धकला.	३८०७शेष७०२१	६६९२शेष८०८९२	२५४४८शेष९७४७३६
तासांवृद्धराशिक्षेत्र.	१०९४८७२८०७	७७४५९६६६९२	२४२७८३८५४४८
एकदा १९ भागकला॥	५७६२४८८४प्र०११	४०७६८२४५७ प्र०९	१२७७८०९७६०प्र८
पुनः १९ भागेयो० ॥	३०३२८८८क०१२– प्र०११	२१४५६९७१क०८– प्र०१०	६७२५३१४५क०५ प्र०८

महाहिमवग्गिरेः ४	हरिवर्षक्षेत्रस्य ५	निषधगिरेः ६	विदेहार्द्धस्य ७
५१२४००००००००००	१०५०००००००००००	१९७१६०००००००००	३२००४००००००००
१०५०००००००००००	१९७१६०००००००००	३२०४०००००००००	३६१००००००००००
१५६२४०००००००००	२०२१६०००००००००	५१७२०००००००००	६८१०४००००००००
७८१२०००००००००	१५१०८०००००००००	२५८६०००००००००	३४०५२००००००००
८८३८५५	१२२९१४६	१६०८१०४	१८४५३१८
३३८९७५	११०६८४	१५२५१८४	१४७८८७६
१७६७७१०	२४५८२९२	३२१६२०८	३६६०६३६
३५	४	१६	४
९६८५	२७६७१	९५३२४	३६६७१६
५०५०६	६१४५७३	२०१०१३	९२२६५९
८००००	१६००००	३२००००	३२००००
७०७०८४०००००	१९६६३३६००००	५१४५९३२८००००	५६०५०१७६००००
७७४८०००००	४४२७३६००००	३०५०३६८००००	११८३१००८००००
१५३४०शेष३७९६०	७२०३ शेष.५९०६८१	१५१७४९शे१५८२६३	१२८२२७शेष२८४४०७
७०७०८४१५३४०	१९६६३३६७२०३	५१४५९३४३१७४९	५६०५०१८८८२२७
३७२१४९५५४४प्र०४	१०३५०७०३५३७	२७०८३८६४८२८प्र१७	३१०७६०४६७४८प्र१५
१९५८६८१८६क०१०	५४४७७३८७० क० ७	१४२५४६६५६९क१७	१६३५७३६३०२क०१०
प्र०४		प्र०१७	प्र०१५

हवे घनगणित गणवानी रीत कहे छे.

पूर्वें जे प्रतरगणित कह्युं ते प्रतरनुं गणित भूमिकानुं गणाय छे, तेहीज प्रतर गणितनो आंक मांमीने पर्वतोनुं घन गणित करीयें; केम के, पर्वतनी भूमिकाना तलियां प्रतर गणित जेटलां होय,माटें तेटलो आंक मांमीने ऊंचपणाना आंकें गुणीयें,तेवारें तेनुं घनगणित थाय. ए संक्षेपथी कह्युं.

विशेषार्थ तो आम छे, के वैताढ्यने तलीये भूमिकानुं प्रतर ५१२३०७योजन उपर वार कला एटलुं छे. पहेली मेखला पर्यंत पचास योजन पहोलुं अने दश योजन ऊंचुं छे, माटे ए प्रतरना गणित पदनो आंक तेने दशें गुणाकार करीयें, तेवारें ५१२३०७६ योजन उपर छ कला एटलुं भूमिकाथी मांमीने पहेली मेखला सुधी घनगणित होय.

हवे पहेली मेखलायें पर्वत सांकडो छे. केम के,पचास योजन वैताढ्यनी लंबाइमांथी

दश योजन एक पासें मूक्या, अने दश योजन बीजे पासें मूक्या, तेवारें त्रीश योजन वैताढ्य पहोळो छे, माटें पहेली मेखलायें पर्वतनुं तळियुं त्रीश योजन छे, तिहां प्रतर (३०७३०४) योजन उपर अगीयार कला छे, अने तिहांथी दश योजन ऊंचा चढियें तिहां सुधी ए पर्वत बेहु पासें सरखो त्रीश योजन पहोळो छे, माटें प्रतरना आंकने दश योजननी ऊंचाइ सार्थे गुणीयें, तेवारें (३०७३०४५) योजन उपर पन्नर कला एटलुं पहेल्ली मेखलायें घनगणित जाणवुं.

वळी बीजी मेखलायें ए पर्वतना दश योजन उत्तरनी पासें मूकीयें, अने दश योजन दक्षिणनी पासें मूकीयें, तेवारें वैताढ्य पर्वत दश योजन पहोळो छे, अनें बन्ने पासें मथाळा पर्यंत पांच योजन ऊंचो छे, तेमाटें तिहां दश योजन पहोळो छे, तेना प्रतर गणितनो आंक १०२४६१ उपर दश कलानो छे, तेने ऊंचपणाना पांच योजन सार्थे गुणीयें, तेवारें ५१२३०७ योजन उपर बार कला एटलुं बीजी मेखलायें घनगणित थाय.

हवे समस्त वैताढ्य पर्वतनुं घन गणित कहीयें छैयें. वैताढ्यनुं प्रतर गणित ए२२१५३ योजन उपर चौद कला छे, ए आंकने वैताढ्यनी पच्चीश योजननी ऊंचाइ छे, परंतु तेमां जुदी जुदी त्रण राशिने जुदा जुदा ऊंचाइना योजन सार्थे त्रण प्रकारनो पूर्वोक्त रीतें गुणाकार करीयें, तेवारें सर्व मळी ७४०ए२२ए योजन उपर चौद कला थाय.

हवे हिमवंत पर्वतनुं घन गणित कहे छे. हिमवंतने तळीये २१४५६ए७१ योजन आठ कला अने दश प्रतिकला एटलुं प्रतरगणित छे; तेने हिमवंत पर्वतनी एकशो योजननी ऊंचाइ छे, तेनी सार्थे गुणतां (२१४५६ए७१४४) योजननी उपर शोळ कला अने बार प्रतिकला एटलो आंक घनगणितनो थाय.

महा हिमवंत पर्वतनुं घनगणित कहे छे, एने तळीये प्रतर गणित १ए५७६७१७६ योजन दश कला अने पांच प्रतिकला छे, ए पर्वत बेहु पासें सरखो बशें योजन ऊंचो छे, माटें प्रतर गणितना आंकनें बशें गुणो करतां ३ए१७३६३७३०७ योजन उपर बार प्रतिकला एटलुं घनगणित थाय एटले योजनना चोसला खंडुक थाय.

निषध पर्वतनुं घनगणित कहे छे. निषध पर्वतने तळे १४२५४६६५६ए योजन उपर अढार कला एटलुं प्रतर गणित छे, तेने ए पर्वतनी चारशें योजननी ऊंचाइ सार्थे गुणीयें, तेवारें (५७०१७६६२४ए७७) योजन उपर अढार कला घनगणितनी थाय.

जे मनुष्य पूर्वोक्त गणित प्रमुख करवाने आळसु होय ते मनुष्यने वास्ते यंत्रोनी स्थापनाउ करेली छे, तेना उपरथी जोइ लेवुं, अने जे मनुष्य माह्या निपुणबुद्धिवाला उद्यमवंत हशे, ते तो पोतेंज गणित करी वचीरो करी लेशे.

घनगणितनां यंत्रनी स्थापना.

घनगणित		क.	प्रति	प्रतर प्रमाणम्.	उच्चत्वम्	उच्चपणा साथे गुणवुं.
कला.	१८३५४८५	१२	६			
वैताढ्यभूमौ.	५११२३०७	१२	०	५११२३०७ कला १२	१०	५११२३०७६। ६
वैताढ्य प्र.मे.	३०३२८८८	१२	११	३०७३८४ ।११	१०	३०७३८४५।१५
वैताढ्यद्वि.मे.	२१४५६९७१	८	१०	१०२४६१ ।१०	५	५११२३०७।१२
सकल वैता०	६७२५३१४५	५	८	९२२१५३ ।१४	श्री २५	८७०९२२९।१४
हिमवति.	१९५८६८१८६	१०	५	२१४५६९७१।८।१०	१००	२१४८६९७१४४।१६।१२
महाहिमवति	५४४७७३८७०	७	५	१९६८६८१८६।१०।५	२००	३९१७३९३७३०८।प्र१२
निषधे.	१४२५४६६५६९	१७	१७	१४२८४६६८६९।१८	४००	८७०१८६६२७९७९
विदेहार्द्ध.	१६३५७३९३०२	१०	१			

एवं ३८९५९३८७२८ योजनानि ॥

३८९५९३८७२८ मेरोरुत्तरतः ॥

७७९१८७७४५६ सर्वप्रतराणामेकाद्वयोरपि पार्श्वयोरयमंकः॥

द्वितीयप्रकारे ११३८१६६९५। क्रो. २ ध० ४८५ अं. २६ न्यूनं भवति।

पूर्वोक्तं गणितपदमिदं ७९०५६९४१५८। क्रो. १$\frac{4}{1}$ ह. ६२$\frac{3}{1}$

इषुप्रमुख सर्वना सिद्ध थयेला आंकनो यंत्र.

सिद्धांकाः।	इषवः	जीवाः।	धनुःपृष्ठानि.	बाहवः।
दक्षिणभरतार्द्धे.	२३८।३	९७४८।१२	९७६६ क. १	०
वैताढ्ये.	२८८।३	१०७२०।११	१०७४३।१५	४८८।१६$\frac{1}{2}$
संपूर्णभरते.	५२६।६	१४४७१।५	१४५२८।११	१८९२।७$\frac{1}{2}$
हिमवति.	१५७८।१८	२४९३२।$\frac{1}{2}$	२५२३०।४	५३५०।१५$\frac{1}{2}$
हैमवति.	३६८४।४	३७६७४।१५	३८७४०।१०	६७५५।३
महाहिमवति.	७८९४।१४	५३९३१।६	५७२९३।१०	९२७६।९$\frac{1}{2}$
हरिवर्षे.	१६३१५।१५	७३९०१।१७$\frac{1}{2}$	८४०१६।४	१३३६१।६$\frac{1}{2}$
निषधे.	३३१५७।१७	९४१५६।२	१२४३४६।९	२०१६५।२$\frac{1}{2}$
विदेहार्द्धे.	५००००	१०००००.	यो.१५८१११।$\frac{16}{2}$	१६८८३।१३।$\frac{1}{4}$

प्रतरगणितानि.	क. प्र.	घनगणितानि वैताढ्य भूमौ.
१८३५४८५	१२।६॥	५१२३०७६।६
५० वि० ५१२३०७।१२।१० वि० १०२४		३०७३८४५।१५
३० वि०	३०७३८४॥११६१।१०	५१२३०७।१२
	२०३२८८८।१२।११	सकलवैताढ्यग. ८७०९२२९ क० १४
	२१४५६९७१।८।१०	२१४५६९७१४४१६। प्रतिकला. १२
	६७२५३१४५।५।१०	८
	१९५८६८१८६।१०।५	
	५४४७७३८७००।७	३९१७३६३७३०८। प्रतिकला १२
	१४२५४६६५६९।१७।१७	५७०१८६६२७९७९
	१६३५७३९३०२।१०।१	८

इति अष्टप्रकारगणितं समाप्तं ॥

हवे ए जीवाप्रमुख गणितनी संग्रह गाथा कहे ले ॥ जोयण सहस्स नवगं, सत्ते वसया हवंति अडयाला ॥ बारसय कला सकला, दाहिण भरहद्ध जीवाउ ॥१॥ दसचेव सहस्सा इं, जीवा सत्तय सयाइ वीसाइं ॥ बारसय कला ऊणा, वेयड्ढ गिरिस्स विन्नेया ॥ २ ॥ च उदसय सहस्साइं, सयाइं चत्तारि एग सयराइं ॥ भरहद्धुत्तर जीवा, बच्चकला ऊणिया किंचि ॥ ३ ॥ चउवीस सहस्साइं, नवयसए जोयणाण बत्तीसे ॥ चुल्लहिमवंत जीवा, आयामेणं कलद्धं च ॥ ४ ॥ सत्ततीस सहस्सा, बच्चसया जोयणाण चउ सयरा ॥ हेमवयवासजीवा, किंचूणा सोलस कला य ॥ ५ ॥ तेवन्न सहस्साइं, नवयसया जो यणाण इगतीसा ॥ जीवाय महाहिमवे, अद्धकला चक्कलाउ य ॥६॥ एगुत्तरा नवसया, तेवत्तरिमेव जोयण सहस्सा ॥ जीवा सत्तरस कला, अद्धकला चेव हरिवासे ॥ ७ ॥ चउणवइ सहस्साइं, बप्पन्नहियं सयंकला दोय ॥ जीवा निसहस्सेसें, लक्खं जीवा वि देहद्धे ॥ ८ ॥ ॥ इति जीवासंग्रहगाथा ॥ नवचेव सहस्साइं, बावठाइं सयाइं सत्तेव ॥ सविसेस कलाचेगा, दाहिणभरहद्ध धणुपिठं ॥ ९ ॥ दसचेव सहस्साइं, सत्तेव सया हवंति तेयाला ॥ धणुपिठं वेयड्ढे, कलाय पन्नरस हवंति ॥ १० ॥ सोलस चेव कला उ, अहियाउ हुंति अद्धभागेणं ॥ बाहावेयड्ढस्सउ, अठासीया तहा चउरो ॥ ११ ॥ चउदस य सहस्साइं, पंचेव सयाइं अठवीसाइं ॥ इक्कारसय कलाउ, धणुपिठं उत्तरद्धस्सं ॥ १२ ॥ भरहद्धुत्तर बाहा, अठारस हुंति जोयण सयाइं ॥ बाणउय जोयणाणिय, अद्धकला सत्तय कलाउ ॥ १३ ॥ धणु हिमवेकल चउरो, पणवीस सहस्स डुसय तीस

हिया ॥ बाहा सोलस कला, तेवन्न सयाय पन्नहिया ॥ १४ ॥ अडतीस सहस्स स गसय, चत्ताधणुदस कलाय हेमवए ॥ बाहा सत्तछिसए, पणपन्नेतिन्निय कलाउ ॥ १५ ॥ धणु महहिमवे दसकल, दोसय तेणउ सहस्स सगवन्ना ॥ बाहा बाणउयसए, छहत्तरे नवकलद्धं च ॥ १६ ॥ चुलसी सहसासोलस, धणुहरिवासे कला चउक्कं च ॥ बाहा तेरस हस्सा, तिसयइगसठा छकल सट्ठा ॥ १७ ॥ निसह धणुनवकलालक्खु, सहसचउवीस तिसय बायाला ॥ बाहा पन्नछिसयं, सहस्स वीस्सं इकलअद्धं ॥ १८ ॥ सोलस सहस्स अडसय, तेसीयासद्धतेरस कला य ॥ बाहा विदेहमज्झे, धनुपिटुं परियरस्सद्धं ॥ १९ ॥ ॥ इति धनुःपृष्ठबाहासंग्रहगाथा ॥ लक्खठारसएण, ससहस्सा चउस्सया य पणसीया ॥ बार कल छविकला, दाहिण भरहद्धपयरंतु ॥ २० ॥ सत्तहियातिन्निसया, बार सयस हस्स पंच लक्खा य ॥ बारसय कला पयरं, वेयड्ढगिरिस्स धरणितले ॥२१॥ जोयण ती सं वासे, पढमाए मेहलाइ पयरमिमं ॥ लक्खतिगतिसयरिसया, चुलसी इक्कार सक लाउ ॥ २२ ॥ दस जोयण विक्खंभे, बीयाइ मेहलयपयरमिमं ॥ लक्खोचउवीस सया, इगसठा दस कलाउय ॥ २३ ॥ अडसीया अठसया, बत्तीस सहस्स तीस लक्खा य ॥ कलबार विकलिगारस, उत्तर भरहद्ध पयरमिमं ॥ २४ ॥ दोकोडि चउद लक्खा, सह सा छप्पन्न नवसइग सयरा ॥ अठकला दसविकला, पयरमिमं चुल्लहिमवंते ॥ २५ ॥ हे मवए छक्कोडी, बावत्तरि लक्ख सहस तेवन्ना ॥ पणयालसयं पयरो, पंचकला अठविकला य ॥२६॥ गुणवीसकोडि अडव, न्न लक्ख अडसठि सहस सयमेयं ॥ चुलसीयंदससय कला, पणविकला पयरुमहहिमवे ॥ २७ ॥ चउवन्नं कोडीउ, लक्खासीयालतिसयरि सह स्सा ॥ अठसय सतरिसत्तय, कलाव पयरं तु हरिवासे ॥२८॥ बायालं कोडिसयं, लक्खा चउपन्न सहस छासठी ॥ पणसयगुणत्तरकल, अठारस्स निसहपयरमिमं ॥ २९ ॥ ते सर्ठि कोडिसयं, लक्खा सगवन्न सहस गुणयाला ॥ तिसय इगुत्तर दस्कल, पन्नरसकला विदेहद्धे ॥३०॥ इतिप्रतरप्रमाणसंग्रहगाथा ॥ दस जोयणुसए पुण, तेवीस सहस्स लक्खं इगवन्ना ॥ जोयण छावत्तरि उ, कलाय वेयड्ढ घणगणियं ॥ ३१ ॥ अठसया पणयाला, तीसं लक्खातिहत्तरि सहस्सा ॥ पनरस कलायघणो, दसस्सुए होइ बीयम्मि ॥ ३२ ॥ सत्तहिया तिन्निसया, बारसय सहस्सा पंच लक्खाया ॥ अवराय बारसकला, पणुस्स ए होइ घणगणियं ॥ ३३ ॥ सत्तासीई लक्खा, उणवीसहियाय बिणवइ सयाइं ॥ अउ णावीसयभागा, चउदस वेयड्ढ घणगणियं ॥ ३४ ॥ हिमवंति इसय चउदस, कोडी छप्प न्न लक्ख सग नउई ॥ सहसा चउयाल सयं, सोलस कलबार विकलघणं ॥ ३५ ॥ गुणया ल सयासत्तर, कोडी छत्तीस लक्ख सगतीसा ॥ सहसातिसय अडुत्तर, बारविकलघण

महाहिमवे ॥ ३६ ॥ ङगवन्नसहस्स अडा,र कोडि ङासहि लरक गुणतीसं ॥ सहसानव सयएगु, एसीइनिसहस्स घणगणियं ॥ ३७ ॥ इति घनगणितसंग्रहगाथा ॥ इति जंबुद्विपाधिकारः ॥

हवे लवणसमुइनो अधिकार कहे डे.

जेम गाय पाणी पीवाने तलावमां प्रवेश करे, तेवारें तेनी पाछली बाजु उंची होय, अने आगली बाजु नीची होय तेने गोतीर्थ कहीयें, तेम लवण समुइमांहे पण एक जंबुद्वीपनी जगतीथकी अने बीजो पहेली तरफथी लवणसमुइनी जगती थकी एम बे पासाथी नीकलीने वचमां पंचाणुं पंचाणुं हजार योजन सुधी पाछली नूमि उंची अने आगलीनूमि नीची डे, जगतीथकी लवणसमुइनी दिग्माल तरफ जातां थोडी थोडी जलवृद्धि थतां ज्यां पंचाणुं हजार योजन थाय डे, त्यां समनूतलथकी सातशें योजन पाणीनी उंची वृद्धि डे अने एक हजार योजन पाणी ऊंडुं डे.

नीचें तथा उपर दश हजार योजन पहोली अने मूलथकी सत्तर हजार योजन उंची, एवी लवणसमुइनी मध्यमां पाणीनी शिखा डे, तेनी उपर बे गाउ उंची पाणीनी वेल डे ते एक अहोरात्रमां बे वखत वधे डे.

लवणसमुइने विषे वचमां पाणीनी मेखलायें चार दिशिने विषे वज्रमय चार पाताल कलशा डे, ते कलशानी एक हजार योजन ठींकरी जाडी डे. तथा नीचें अने उपर दश हजार योजन पहोला डे, अने वचमां एक लाख योजननुं पेट पहोलुं डे तथा ते कलशा एक लाख योजननूमिमांहे रह्या डे. ते चारे पूर्वदिशिथी दक्षिणावर्त्त गणतां एक वडवामुख, बीजो केयूप, त्रीजो यूप, चोथो ईश्वर, ए चार नामें चार कलशा जाणवा.

हवे जंबूद्वीपथकी पंचाणुं हजार योजन जातां लवणसमुइना दश हजारयोजन विस्तारवाली पाणीनी शिखा आवे, तिहां बे लाख, नेवुं हजार योजन विष्कंन्न डे. तेनो वर्ग करी ते वर्गने दशें गुणतां जे राशि आवे, तेनुं मूल शोधीयें. तेवारें (९१७०६०) योजन मध्यपरिधि थाय. तेमांथी चार दिशाना चार कलशें चालीश हजार योजन रुंध्या डे, ते बाद करतां बाकी (८७७०६०) योजन रहे, तेने चारे नागें वहेंचतां २१९२६५ योजन थाय, एटलो एकेकी दिशिना महोटा कलशनुं मांहोमांहे अंतर थाय, ते अंतरना योजनमांहे वली एकेकी दिशायें नव नव श्रेणी न्हाना पाताल कलशोनी डे, तेणें (२१५०००) योजन रुंध्या डे, अने (४२६५) योजन ते कलशनी ठींकरीने जाडपणे रुंध्या डे. तिहां प्रथम श्रेणिमां २१५ बीजीमां २१६ त्रीजीमां २१७ एम एकेको कलश वधारतां यावत् नवमी श्रेणिमां (२२३) कलशा डे, ते नवश्रेणिनो सरवालो करतां (१९७१) कलशा एक दिशिना अंतरने विषे डे, तेवी चार दिशिना कलश मेल

वीयें, तेवारें (७८८४) कलश थाय. ते प्रत्येकनी ठींकरी दश योजन जाडी छे, अने एक शो योजन प्रमाण नीचें तथा उपर पहोला छे, अने एक हजार योजन भूमिमांहे उंडा छे, तेटलाज मध्यमां पेटें पहोला छे. एवा न्हाना कलश ते जे स्थानकें महोटा कलशें भूमि रुंधी नथी तेवा जलमेखलाना प्रदेशें ठामें ठामें ए कलशा छे.

महोटा चार पाताल कलशाना अनुक्रमें पूर्वदिशिथी दक्षिणावर्त्त लेतां एक काल, बीजो माहाकाल, त्रीजो वेलंब, अने चोथो प्रभंजन, ए चार नामें चार अधिष्ठायिक देवता छे तेनुं एक पल्योपमायु छे. अने बीजा न्हाना कलशना अधिष्ठायिक देवोनुं अर्द्धपल्योपमायु छे.

महोटा पातालकलशाने अधोभागें वायु छे, अने वचला भागमां वायु तथा पाणी बेहु छे अने उपरला भागमां एकलुं पाणीज छे. ते वायु एक अहोरात्रमां पाणीने बे वखत क्षोभ पमाडे छे, तेथी पाणीना वेलनी वृद्धि थाय छे, जेवारें पाणीना जोरथी कलशा उभराय छे, तेवारें समुद्रनुं पाणी वधे छे, एवो सहेजथी चाल छे.

बहेंतालीश हजार नागकुमार देवता ते मांहे पेसती पाणीनी वेलने धरी राखे छे, वली शाठ हजार नागकुमार देवता तो उपरनी बे कोशथी उपरांत जे वेल वधे छे, तेने वारी राखे छे. तथा बहोंतेर हजार नागकुमार देवता ते बाहिरली धातकीखंडमां प्रवेश करती वेलने निवारण करे छे. ए रीतें (१७४०००) नागकुमार देवो पाणीनी वेलने धरी राखे छे, माटें ए वेलंधर देवो कहेवाय छे.

जंबुद्वीपनी जगतीथकी पूर्वादि चारे दिशायें (४२०००) योजन लवणसमुद्रमांहे जातां अनुक्रमें पूर्वदिशियें गोथुभनामें आवास पर्वत छे, दक्षिणें दिग्भास नामें आवास पर्वत छे, पश्चिमें शंख नामें आवास पर्वत छे, अने उत्तरें दिक्सीम नामें आवास पर्वत छे. ए चारे दिशिना पर्वतोने विषे अनुक्रमें एक गोथूभ, बीजो शिवदेव, त्रीजो शंख अने चोथो मणोसिल, ए नामें वेलंधर देवताना राजा एवा नागकुमार देवो रहे छे. जे दिशियोने विषे रहे छे, तेने वेलंधर कहीयें अने विदिशियोने विषे रहे तेने अनुवेलंधर कहीयें.

ईशान प्रमुख चार विदिशिने विषे कर्कोटक, विद्युत्प्रभ, कैलास अने अरुणप्रभ, ए वे नामें चार आवास पर्वत छे तेने विषे अनुक्रमें कर्कोटक, कर्दम, कैलास अने विद्युत्प्रभ एवे नामें चार वेलंधर देवोना राजा नागकुमार देवता रहे छे.

ए वेलंधर अने अनुवेलंधर नामें जे आवास पर्वतो छे ते (१०२२) योजन मूलने विषे पहोला छे, अने (४२४) योजन शिखरने विषे पहोला छे, तथा (१७२१) योजन उंचा छे, ते आठे पर्वत सर्व वेदिका अने वनखंड तेणें करी सहित छे, तथा पूर्वदिशिथी अनु

क्रमें सुवर्ण, अंकरत्न, रूपुं, अने स्फाटिकरत्नना गोथूभादिक चार पर्वत छे अने विदिशिने विषे जे चार पर्वत छे ते रत्नमय जाणवा.

ए आठ पर्वत जंबुद्वीपनी दिशा तरफ ८८८ योजननी उपर एक योजनना पचाणुं नाग करीयें, तेवा चालीश नाग अधिक एटला पाणीनी उपर देखाय छे, अने मांहेली लवण समुद्रनी शिखानी दिशिथी जोतां ८६३ योजननी उपर एकयोजनना पंचाणुं नाग करीयें, तेवा (३७) नाग जेटला पाणीनी उपर देखाय छे.

लवणसमुद्र मध्यें पंचाणुं हजार योजने जतां सातशें योजननी जलवृद्धि छे. तो बहेंतालीश हजार योजन जइयें, त्यां वेलंधर पर्वत छे, ते स्थानकें केटली जलवृद्धि होय? ते जाणवानी रीति बतावे छे. आहींयां प्रथम श्रेणि पंचाणुं हजारनी, बीजी सातशेंनी, अने त्रीजी श्रेणी बेहेंतालीश हजारनी, एवी आंकनी त्रण श्रेणि मांमीयें, ए त्रण आंकनी राशि मांमया पछी ते राशि "एगमज्झिल्ल ए" गाथाना विधियें गणीयें, ते आवी रीतें के वचमांनी जे सातशेंनी श्रेणि तेने छेल्ली बहेंतालीश हजारनी श्रेणीयें गुणीयें, तेवारें बे क्रोड ने चोराणुं लाख थाय. पछी पहेली श्रेणी जे पंचाणुं हजारनी छे, तेनी सार्थे नाग वेहेंचीयें, तेवारें त्रणशें ने नव योजन उपर एक योजनना पंचाणुं नाग करीयें, तेवा पीस्तालीश नाग आवे, ए रीतें संजूतलें जंबुद्वीपें जोतां बहेंतालीश हजार योजने एटली जलवृद्धि होय.

अने पंचाणुं हजार योजने एक हजार योजन लवण समुद्र उंमो छे, तो बहेंतालीश हजार योजने केटलो उंमो छे? तेनुं गणित आवी रीतें करवुं, के बहेंतालीश हजार योजनने हजारनें आंकें गुणीयें, तेवारें चारकोडीने वीश लाख थाय. तेने पंचाणुं हजार नागें वेहेंचीयें, तेवारें चारशें ने बहेंतालीश योजन उपर एक योजनना पंचाणुं नाग करीयें, तेवा दश नाग आवे. एटलो समुद्र उंमो छे, पछी जलवृद्धि तथा उंमपणुं ए बे एकठां करीयें तेवारें सातशें ने एकावन्न योजन उपर एक योजनना पंचाणुं नाग करियें, तेवा पंचावन नाग थाय, ते सतरशें ने एकवीश योजन वेलंधर पर्वतनुं उंचपणुं छे, तेमांहेथी बाद करीयें तेवारें नवशें उगणोतेर योजन, अने उपर पंचाणुआ चालीश नाग रहे. एटलो जंबू द्वीपथी जतां वेलंधर पर्वत पाणीथी उंचो छे.

हवे त्यां पर्वतनो विस्तार केटलो छे? ते जाणवानो विधि कहे छे. जलवृद्धि अने उंमपणुं ए बे सातशें एकावन योजन उपर पंचाणुआ पंचावन नाग छे, ते सर्वना पंचाणुआ नाग करीयें, तेवारें एकोतेर हजार ने चारशें नाग थाय, पछी "विक्खारद्धगविसेसो" ए करण गाथायें करतां पर्वतनो मूल विस्तार एक हजार ने बावीश योजन छे,

अने शिखर विस्तार चारशें ने चोवीश योजन छे, ते अधिका मांहेथी ओछुं काढतां बाकी पांचशें ने आघणुं रहे, ते पर्वतनुं सत्तरशें ने एकवीश योजन उंचपणुं छे, तेनी सार्थे जाग वेहेंचतां जाग पहोंचे नही, ते माटें एकोतेर हजार ने चारशें एटली जल वृद्धि, तथा उंचपणानां पंचाणुआ जाग छे, तेने पांचशें ने अघाणुं सार्थे गुणीयें, तेवारें चार क्रोड छवीश लाख सत्ताणुं हजार ने बशें थाय, तेने पर्वतना उंचपणाना सत्तरशें ने एकवीश योजन सार्थे जाग वेहेंचीयें, तेवारें चोवीश हजार आठशें ने नव आवे, शेष नवशें ने अगीयार वधे. ते माटें ते चोवीश हजार आठशें ने नव जे छे, तेमांहे एक ने लीयें. पछी पंचाणुं जागें वेहेंचीयें, तेवारें बशें ने एकशठ योजन उपर पंचाणुआ पं दर जाग आवे. हवे पर्वतनो मूल विस्तार एक हजार ने बावीश योजन छे. तेमांहेथी जेवारें ए बशें एकशठ योजन, अने पंचाणुआ पन्नर जाग काढीयें, तेवारें सातशो ने सात योजन उपर पंचाणुआ एंशी जाग रहे, एटलो पर्वतनो विस्तार जाणवो.

हवे मांहेली दिशियें जलनी वृद्धि आणवाने अर्थें ए पर्वतना विस्तारनो आंक जे सातशें शाठ योजन उपर पंचाणुआ एंशी जाग छे, तेने पंचाणुयें गुणीयें, तेवारें बहो तेर हजार बशें ने एंशी एटला पंचाणुआ जाग थाय. पछी एक पंचाणुं हजारनी बीजी सातशेंनी, अने त्रीजी बहोंतेर हजार बशें ने एंशीनी, एवा आंकनी त्रण राशि मांभियें तेमां वचेंनी जे सातशेंनी श्रेणी छे, तेनी सार्थे जेवारें छेहली श्रेणी गुणीयें, तेवारें पांच क्रोड पांच लाख ने छन्नुं हजार एटला प्रतिजंग थाय. पछी जे पहेली राशि पंचाशे ह जारनी छे, तेना प्रतिजंग करवा माटें तेने पंचाणुयें गुणीयें, तेवारें नेवुं लाख ने पचीश हजार थाय. एटला प्रतिजंगें उपरना प्रतिजंगनी राशि वेहेंचीयें, तेवारें योजन पांच आवे, शेष पांच हजार चारशें ने एकोतेर वधे. तेने पंचाणुं जागें वेहेंचतां सत्तावन्न कला आवे, शेष छप्पन उगरे, ते माटें एक जेलीयें तेवारें कला अठावन्न थाय, एटले पांच योजन उपर अठावन्न कला एटली मांहेली दिशियें जलवृद्धि छे, ते जलथकी पर्वतनुं उंचपणुं नवशें ओगणोतेर योजनने उपर पंचाणुआ चालीश जाग छे,तेमांहेथी पांच यो जन ने आठावन्न जाग बाद करीयें, तेवारें नवशें त्रेशठ योजन उपर पंचाणुआ सत्त्यो तेर जाग होय. एटला लवण समुद्रनी शिखादिशिथी जोतां वेलंधर पर्वत उंचा छे. तथा ए आठ पर्वतना मूलने विषे त्रण हजार बशें ने बत्रीश योजननो परिधि छे, अने शिखरने विषे ते रशें ने चौद योजननो परिधि छे, हवे मांहोमांहे ते पर्वतनो आंतरो आणवानो विधि कहे छे.

जंबू द्वीपनी जगतीथकी बहेंतालीश हजार पांचशें ने अगीयार योजन लवण समुद्र मांहे गया पछी पर्वतना विष्कंजनुं मध्य छे, त्यां समुद्रनुं वृत्तविष्कंज एक लाख पं

चाशी हजार ने बावीश योजन छे, तेनो परिधि पांच लाख पंचाशी हजार ने एकाणुं योजन थाय, ते मांहेथी आठ वेलंधरनुं विष्कंभ आठ हजार एकसो ने छहोंतेर योजन बाद करियें, तेवारें पांच लाख छहोंतेर हजार नवशें ने पन्नर योजन बाकी रहे; तेने आठ भागें वेहेंचीयें, तेवारें बहोंतेर हजार एकशो ने चउद योजन उपर एक योजनना तेर भाग करियें, तेवा आठ भाग एटलुं प्रत्येक वेलंधर पर्वतने वचें अंतर जाणवुं ॥२१॥

हवे छप्पन्न अंतरद्वीपनी विवक्षा करे छे.

हेमवंत पर्वतना बन्ने छेडाने विषे समुद्रमांहे बे बे दाढा विदिशिने विषे नीकली छे, ते प्रत्येक दाढाने विषे सात सात अंतरद्वीप छे, ते अंतरद्वीपमांहे पहेला चार अंतर द्वीप जगतीथकी त्रणशें योजन दूर छे, तो तेनो विस्तार पण एकेक अंतरद्वीपनो त्रण शें योजन प्रमाणें जाणवो. बीजुं चतुष्क जगतीथकी चारशें योजन दूर छे, तो तेनो विस्तार पण चारशें योजन छे, एम सर्वने विषे एकशो योजननी वृद्धि करतां सातमुं अंतरद्वीपनुं चतुष्क जगतीथकी नवशें योजन दूर छे, ते एकेकानो विस्तार पण नवशें योजन प्रमाण छे. ते यंत्रथी जाणवो.

हवे ए अंतरद्वीप, पाणी उपर केटला उंचा छे? ते कहे छे.

अंतरद्वीपनुं पहेलुं चतुष्क ते बाहेर जंबुद्वीपनी दिशायें अढी योजन उपर पंचाणुं आ वीश भाग एटलुं पाणीथी उपर उंचुं जाणवुं, बीजा अंतरद्वीपोनां छ चतुष्क अढी योजन उपर पंचाणुआ नेवुं भाग पाणीथी उंचा जाणवा, अने लवणसमुद्रनी शिखानी दिशियें बे कोश प्रमाण सर्वद्वीपनो प्रकाश जाणवो. ते यंत्रमांहे लख्यो छे ॥ २१२ ॥

हवे अंतरद्वीपनां नाम कहे छे.

सर्व अंतरद्वीप, वेदिका अने वनखंडें करी मंडित जाणवा. अंतरद्वीपना पहेला च तुष्कने विषे ईशान कूणथी दक्षिणावर्त्त गणतां एक रुचक बीजुं आभासिक, त्रीजुं वैषाणि क, चोथुं लांगुलिक ए चार नाम अनुक्रमें जाणवां. अंतरद्वीपना बीजा चतुष्कनेविषे हयकर्ण, गजकर्ण, गोकर्ण अने शस्कुलीकर्ण, एवां नाम जाणवां. त्रीजा चतुष्कने विषे आदर्शमुख, मेंढमुख, अयोमुख, अने गोमुख, एवे नामें चार द्वीप छे. चोथा चतुष्कने विषे हयमुख, गजमुख, हरिमुख अने व्याघ्रमुख, एवा चार नामें चार द्वीप छे. अने अ श्वकर्ण, सिंहकर्ण, अकर्ण अने कर्णप्रावरण, एवे नामें पांचमा चतुष्कनेविषे अंतरद्वीप जाणवा. उल्कामुख, मेघमुख, विद्युन्मुख अने विद्युद्दंत. एवे नामें छठा चतुष्कना अंतर द्वीप छे. सातमा चतुष्कनेविषे घनदंत, लष्टदंत, गूढदंत, अने सिद्धदंत, एवां चार नाम जाणवां. ए अठावीश अंतरद्वीपनां नाम कह्यां.

हवे अंतरद्वीपनो परिधि कहे छे. पहेला चतुष्कने विषे नवशें ने उंगणपचास योजननो परिधि छे, पछीना छ चतुष्कने विषे प्रत्येकें त्रणसो ने सोळ योजननी वृद्धि करीयें ॥ यथा॥ सोळुत्तर तिसयजुय, सपढम परिहिं बराबर चउक्कं ॥ पढमे नवगुणवन्ना, साबीए बारपण सही ॥ १ ॥ तइए पनरिक्कारसि, चउत्थए पुणअढार सगणउआ ॥ जोयण बावीस सया, तेरहिया पंचम चउक्कं ॥ २ ॥ पणवीस इगुणतीसा, छठे चरमेडवीस पणयाला ॥ परिहीअंतरदीवा, सत्तचउक्काण नायव्वा ॥ ३ ॥ २१७ ॥

ए पूर्वोक्त प्रकारें वळी शीखरी पर्वतने विषे पण ईशानकूण प्रमुख चार विदिशिने विषे चार दाढा छे, अने एकेकी दाढायें सात सात अंतरद्वीप छे, तेवारें चार दाढाना अठावीश थाय. ए रीतें हेमवंत तथा शिखरीना एकठा गणतां सर्व मळीने छप्पन्न अंतरद्वीप जाणवा. ए सर्व छप्पन्न अंतरद्वीपने विषें युगळ मनुष्य रहे छे. तेनुं पल्योपमने असंख्यातमे नागें आयुष्य जाणवुं.

ते युगळीयाना आवशें धनुष्यनां उंचां शरीर छे, वळी तेना शरीरने विषे चोसठ पांसळी छे. वळी आहारनी इच्छा एकांतरें उपजे छे, अने उंगण्याएंशी दिवस लगें अपत्य पालन करे छे.

मेरुपर्वतथकी पश्चिमदिशिने विषे जगतीथकी बार हजार योजन लवणसमुद्रमांहे सुस्थित एवे नामें जे लवणसमुद्रनो स्वामी देव छे, तेनो गौतम एवे नामें एक द्वीप छे. ते गौतमद्वीपनी बन्ने बाजु जंबुद्वीपना बे सूर्य अने लवणसमुद्रना बे सूर्य, तेना बे बे द्वीप जाणवा. एटले वचमां गौतमद्वीप छे, अने बन्ने पासें बे बे सूर्यद्वीप छे.

जगतीथकी द्वीपनुं वेगळाइपणुं अने द्वीपनो मांहोमांहे अंतर तथा द्वीपनो विस्तार ते बार हजार योजन जाणवो. वळी ए प्रकारेंज पूर्वदिशिने विषे जगतीथकी बार हजार योजन लवणसमुद्रमांहे बे चंद्रमा जंबुद्वीपना अने बे चंद्रमा लवणसमुद्रना. ए रीतें चार चंद्रमाना चार द्वीप छे.

ए प्रकारें बाहेरथकी धातकीखंडनें विषे तथा मंदरपर्वतथकी पूर्वपश्चिम दिशें लवणसमुद्रनी जगतीथकी बार हजार योजन लवण समुद्रमांहे शिखानीदिशि फरे तिहां बे चंद्रमा लवण समुद्रना, अने छ चंद्रमा धातकीखंडना, ए रीतें आठ चंद्रमाना द्वीप पूर्वदिशियें छे, तथा बे सूर्य लवणसमुद्रना, अने छ सूर्य धातकीखंडना एवं आठ सूर्यना द्वीप पश्चिम दिशें छे.

ए चंद्रमा अने सूर्यना द्वीप पाणी उपर केटला छे ? ते कहे छे.

ए पूर्वें कह्या जे चंद्रमा अने सूर्यना द्वीप ते जंबूद्वीप तथा धातकीखंडनी दिशिथी जोतां साडी अठ्याशी योजन उपरें पंचाणुआ चालीश नाग एटला पाणीथी उपर छे,

ते जाणवाने अर्थे प्रथमनी पेरें आंकनी त्रण राशि मांमीयें. एक पंचाणुं हजार, बीजी सातसें, अने त्रीजी चोवीश हजार, सुखनपणा माटें बिंदु टालीने वचेंनी राशि, छे हेली राशि साथें गुणतां सोल हजार ने आठसो थाय, तेने पहेली राशिना पंचाणुं ह जार छे, तेना बिंदु टालतां पंचाणुं जागें वेहेंचीयें, तेवारें एकसो छोंतेर योजन उपर पंचाणुआ एंशी जाग आवे. एटली लवणसमुद्रनी शिखादिशियें जलवृद्धि छे. तेनुं अर्द्ध अध्याशी योजन थाय छे. तेनी साथें पाणीथकी बाहेरनी उंचाइना बे कोश जेलीयें, तेवारें साडी अध्याशी योजन उपर पंचाणुआ चालीश जाग. एटला जंबुद्वीप तथा धातकीखंमनी दिशियी जोतां पाणी उपर द्वीप छे. वली मांहेनी लवणशिखानी दि शाथकी जोतां बन्ने बाजुयें बे कोश पाणीथकी सर्व द्वीप उंचा छे. हवे द्वीपनो प रिधि कहे छे ॥ उक्तं च ॥ सगतीस सहस्स नवसय, इयाल परिहिं जलाउकोस बहिं ॥ उ द्धा अंतो जोयण,अडसी पण नवअ चत्तंसा ॥ १ ॥

हवे ते चंद्र सूर्यद्वीपमांहे प्रासादनां प्रमाण कहे छे.

ए चंद्र सूर्यद्वीपने विषे कुलगिरिना प्रासाद सरखा साडीबासठ योजन उंचा, अने सवाएकत्रीश योजन पहोला, एवा रमवा योग्य पोतपोताना प्रभु एटले स्वामी जे सुस्थि तदेव तथा चंद्र सूर्य, तेमना प्रासाद छे, तथा ए सर्व चंद्रसूर्य प्रमुख जे ज्योतिषीयोनां विमान छे ते स्फाटिक रत्ननां छे. तथा लवणसमुद्रने विषे जे ज्योतिषी छे, तेनां विमान दगपाटन जे स्फाटिकरत्न तेनां छे, ते विमानने संयोगें लवणसमुद्रनो पाणी फाटे छे, ए रत्ननो जातिगुणज छे. वली ते रत्ननी कांति उंची लवणशिखाने विषे पण प्रकाश करें छे. लवणसमुद्रने विषे चार चंद्रमा, चार सूर्य, त्रणसें नें बावन ग्रह, एकशो ने बार न क्षत्र, अने बे लाख सडसठ हजार ने नवशें एटली तारानी कोडा कोडी जाणवी. लव णसमुद्रनो परिधि पन्नर लाख एक्याशी हजार एकसो ने उंगणचालीश योजन जाण वो. समुद्रनी जगतीना द्वार द्वारनुं अंतर, त्रण लाख पंचाणुं हजार बशें ने सवाएंशी यो जन छे. हवें लवणसमुद्रनुं प्रतरघन करवानी गाथा लखे छे ॥ दससहस रहियविष्कंर, अर्द्धदस सहस संजुअं तेण ॥ गणियाय मज्ज परिही, पयरो लवणस्सिमो होइ ॥१॥ नव नवइ कोडिसया, इगसठी कोडिसत्तरस लरका ॥ पन्नरसहसाय इमो, घणोसवे सत्तर सहस्स गुणो ॥ २ ॥ सो सोलकोडिकोडी,तिणवइलरकागुणचत्त सहसाया ॥ नवसय को डीपन्नर, कोडी पन्नास लरकाय ॥ ३ ॥ इति लवणसमुद्राधिकारः ॥

हवे धातकीखंड नामा बीजा द्वीपनो अधिकार वखाणे छे.

लवणसमुद्रनी जगतीथकी बाहेर वलयने आकारें चार लाख योजन पहोलो ए

वो बीजो धातकीखंम नामें द्वीप ढे, ते धातकीखंम, इस्कार नामें जे बे पर्वत तेणें बे जागें वेहेंच्यो ढे, एटले एक पूर्व धातकीखंम, अने बीजो पश्चिम धातकीखंम. ए बे जाग जाणवा. हवे ते इस्कार पर्वत दक्षिणदिशें, अने उत्तरदिशियें, लांबा ढे. वली एक हजार योजन मूलनें विषे, अने शिखरने विषे सरखा पहोला ढे. तथा पांचशें योजन उंचा ढे. लवणसमुद्रनी जगतीना दक्षिण उत्तरदिशिना वैजयंत, अपराजित एवे नामें जे बारणां ढे, तेमांथी इषु एटले बाणने आकारें चार लाख योजन धातकी खंमना विस्तार सुधी लांबा निकल्या ढे, एवा ते पर्वतो ढे.

हवे धातकीना बे खंमने विषे कुलगिरि तथा क्षेत्र वखाणे ढे.

धातकी खंमना पूर्व अने पश्चिम दिशाना एकेका खंमनेविषे ढ ढ कुलगिरि जाणवा, अने सात सात क्षेत्र जाणवां. ते जेम गाडीनां पइडांने विषे, वचेंनी नाजिथकी आराना आंतरा होय, तेम जंबुद्वीप अने लवण समुद्र जे ढे, ते नाजि सरखा ढे. अने धातकी खंममांहे जे इखुकार तथा कुलगिरि प्रमुख पर्वत ढे, ते आरा सरखा ढे, अने क्षेत्र जे ढे ते आराना विवर एटले आंतरा सरखा ढे. वली ते कुलगिरि इस्कार मूलनेविषे अने ढेहडाने विषे सरखा पहोला ढे. वली वासक्षेत्र जे ढे, ते लवणसमुद्रथकी मांमीने पिहुल पिहुलतर ढे.

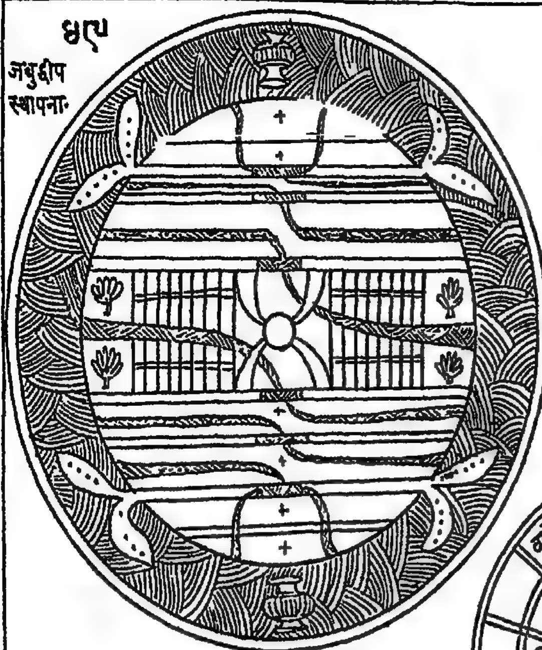
हवे धातकीखंममांहे जे पदार्थ जंबुद्वीप मांहेला पदार्थ सरखा ढे, ते कहे ढे.

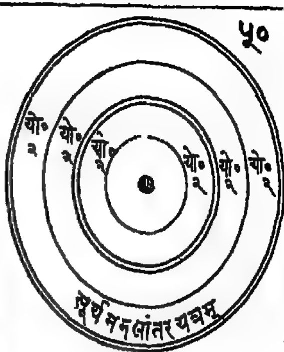
धातकी खंमनेविषे जे इह, कुंमनुं उंमपणुं तथा मेरुपर्वत टालीने कुलगिरि, गयदंतगिरि, वक्षस्कार, यमलगिरि, कांचनगिरि अने वैताढ्य प्रमुख पर्वतनुं उंचपणुं, तथा सुमेरुपर्वत वर्जिने वैताढ्यनो विस्तार अने बीजा वैताढ्य प्रमुख वृत्त पर्वतनो विस्तार ते सर्व पहेला कह्या ढे, तेना सरखो जाणवो, एटले जंबुद्वीपनी पेरें जाणवो.

हवें धातकीखंमनें विषे बे मेरु ढे, ते वखाणे ढे.

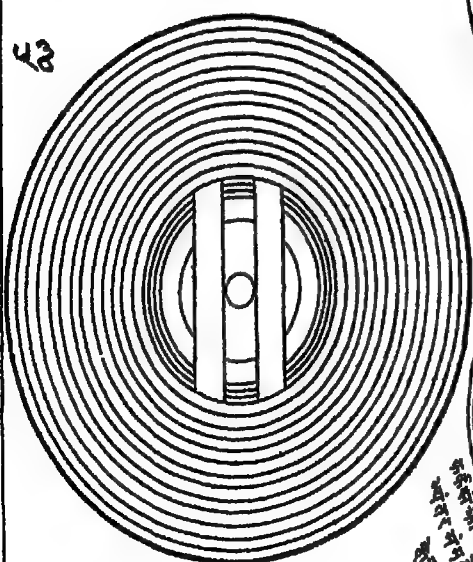
धातकीखंमना जे बे मेरु पर्वत ढे, ते जंबुद्वीपना मेरु सरखा जाणवा. पण एटलुं विशेष ढे के, जंबुद्वीपना मेरुनी जूमिथी पांचशें योजन उपर चडियें, त्यां नंदनवन ढे; तेथकी उपर साडीबासठ हजार योजन चडीयें. तेवारें सौमनस्य वन ढे, त्यांथकी ढत्रीश हजार योजन उंचुं पांडुक वन ढे, अने धातकीखंमना मेरुनुं एटलुं विशेष जे जूमिथकी पांचशें योजन उंचुं नंदनवन ढे, ते थकी साडीपंचावन हजार योजन उंचें चडीयें, त्यां सौमनस्य वन ढे, त्यांथी अठ्यावीश हजार योजन उंचा चडीयें, त्यां पांडुक वन ढे, ए चोराशी हजार योजन थया. अने एक हजार योजन जूमिमांहे उंमा ढे, एम सर्व मली पंचाशी हजार योजन उंचा ढे.

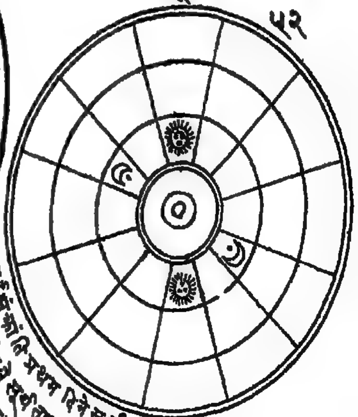
तथा नव हजार ने पांचशें योजन मूलमां नीचें विस्तार ढे, अने नव हजार ने चारशें

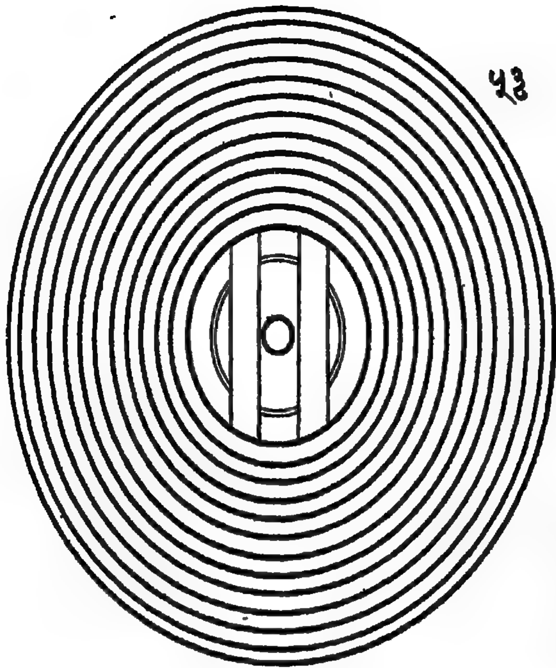

४९
जंबुद्वीप
स्थापना

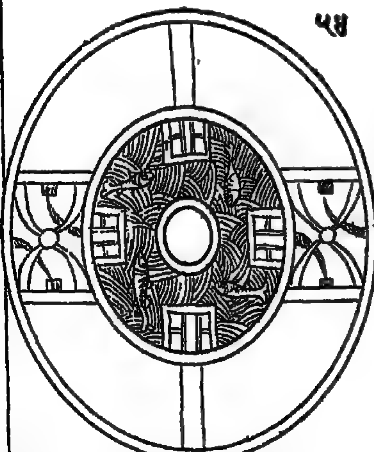

५०
सूर्य मंडलांतर यन्त्रम्


सूर्य
५१
पश्चिम आतप
पूर्व आतप
सूर्य

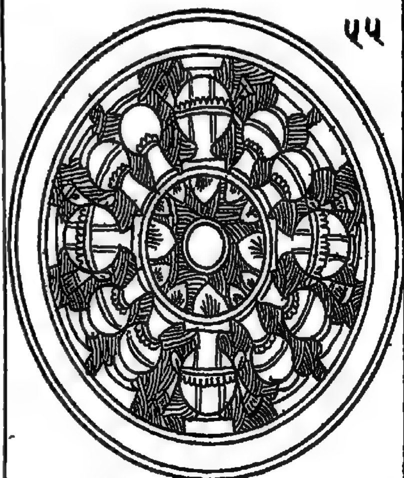

५३


५२

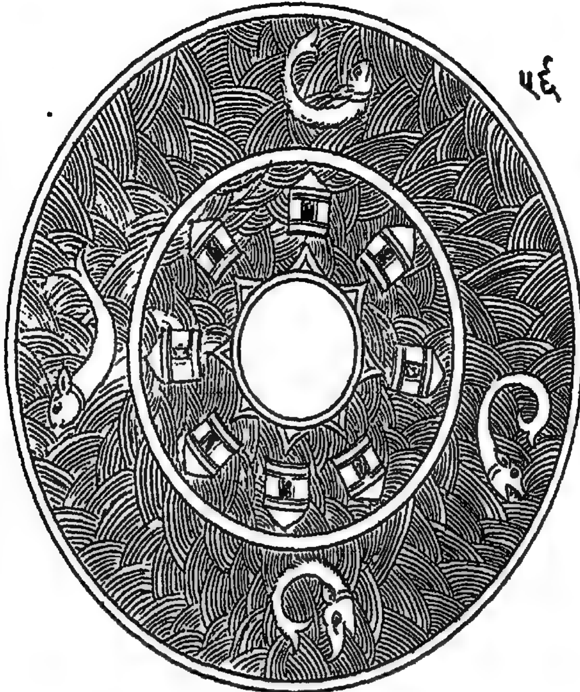




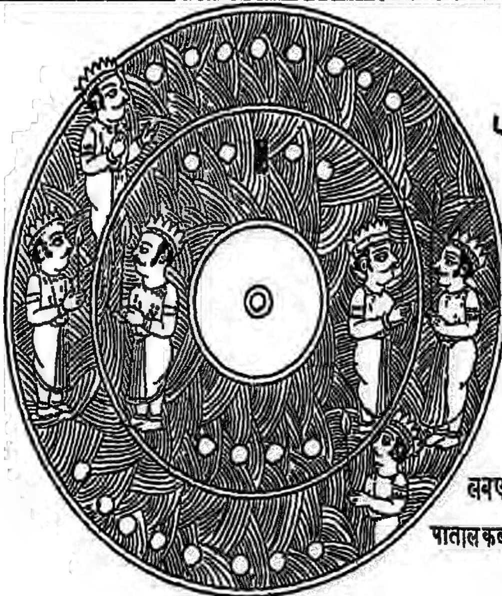
लवण समुद्र अने धातकी खंडनी स्थापना.



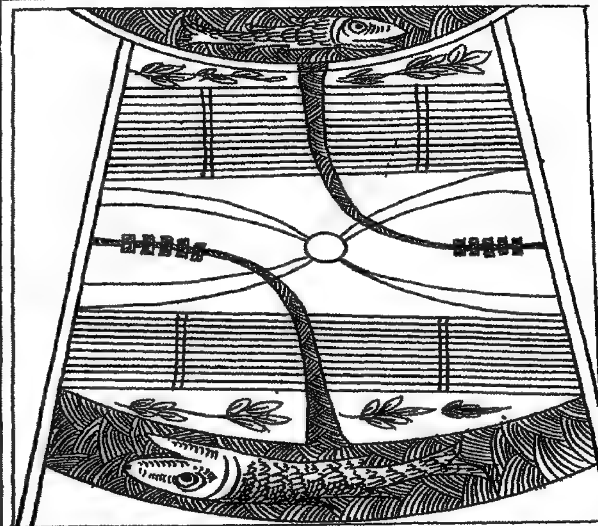
लवण समुद्रे पाताल कलश स्थापना.



लवण समुद्र श्रने तदन्तरगत वेलंधरावास पर्वत स्थापना.

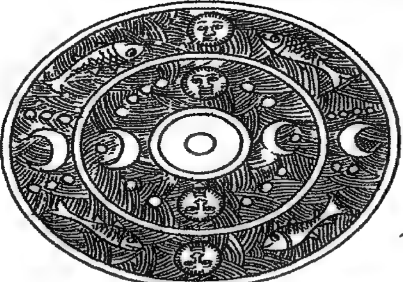


लवण समुद्र गत
पाताल कलश संख्या स्थापना



धातकी खंडमें हैला महाविदेहक्षेत्रकी स्थापना

५७



लवण समुद्रगत सूर्यचंद्राकृति स्थापना.

५८



धातकी खंडने विषे ईक्षुकार पर्वत स्थापना

५९

योजन भूतल विस्तार छे, तथा नव हजार ने साडा त्रणशें योजन नंदनवननो विस्तार जाणवो, त्रण हजार ने आठशें योजन सौमनस्य वननो विस्तार जाणवो, अने एक हजार योजन शिखानो विस्तार जाणवो.

हवे वांछित स्थानकने विषे विस्तार आणवानो विधि आवी रीतें केः—भूतलनुं पहोलपणुं नव हजार ने चारशें योजन छे, तेमांथी शिखरनुं पहोलपणुं एक हजार योजन काढीयें, तो बाकी आठ हजार ने चारशें योजन रहे. ते भूतलथकी उंचुं चोराशी हजार योजन छे, तेनी साथें भाग आपतां, भाग पहोंचे नहीं. तेमाटें आठ हजार चारशेंने दशगुणा करियें, तेवारें चोराशी हजार थाय, ते उंचपणाना चोराशी हजार योजन साथें गुणीयें, तेवारें एक योजननो दशमो भाग आवे. तो भूतलथकी जेवारें एक योजन उंचे चडीयें, तेवारें विष्कंभमांहे एक योजनना दश भाग मांहेलो एक भाग घटे अने उतरतां वधे, एम प्रथमनी पेरें जाणवुं.

प्रथम जंबूद्दीपने विषे जे नदी, प्रपातकुंम, कुंममांहेला द्दीप, वनमुख, द्रह, लांबा पर्वत तथा कमल, एटला पदार्थनो विस्तार तथा नदीनुं उंमपणुं, वली द्रहनुं लांबपणुं जे कह्युं, तेथी आ धातकीखंमने विषे बमणुं जाणवुं.

हवे भद्रशालवननुं परिमाण कहे छे.

एक लाख सात हजार आठशें ने उंगण्याएंशी योजन मेरुपर्वतथकी पूर्व पश्चिम दिशायें लांबपणे भद्रशालवन छे, एने जेवारें अठ्याशी भागें वेहेंचीयें, तेवारें बारशें ने छवीश योजन कांइक कणा आवे; एटलुं मेरुथकी भद्रशालवन उत्तर तथा दक्षिण दिशा पहोलुं छे. कुरुक्षेत्रनी जीवा बे लाख त्रेवीश हजार एकशो ने अठावन योजन जेटली जाणवी.

हवे गयदंत गिरि वखाणे छे.

पूर्व अने पश्चिम दिशाना बेहु धातकीखंमने विषे बाहेरनी दिशायें धातकीखंमनी जगतीना पासाना चार गयदंत गिरि छे. ते पांच लाख उंगणोतेर हजार बशें ने उंगणसाठ योजन लांबा जाणवा. अने बीजा जंबुद्दीपनी जगतीनी दिशाना मांहेला चार गयदंत गिरि जे छे, ते त्रण लाख छप्पन हजार बशे ने सत्तावीश योजन लांबा जाणवा. तथा एक बाहेरनो गयदंतगिरि, अने एक मांहेनो गजदंतगिरि, ए बन्ने एकठा करीयें, तेवारें कुरुक्षेत्रनुं धनुःपृष्ठ थाय, तेनुं प्रमाण नव लाख पच्चीश हजार चारशें ने छयाशी योजन थाय. एटलुं धातकीखंमने विषे कुरुक्षेत्रनुं धनुःपृष्ठ जाणवुं ॥ १३१ ॥

हवे वक्षस्कार अंतर नदी प्रमुखनां प्रमाण कहे छे.

कुलगिरि तथा गजदंतनां प्रमाण कह्यां अने तेथकी अन्य जे वक्षस्कार, अंतरन

दी विजय, अने वनमुख तेनो विस्तार ते क्षेत्रना अनुमानें करी जाणवो. एटले पूर्व धातकी खंम तथा पश्चिमधातकी खंमनुं बन्ने इखुकार दिशियें जेवुं क्षेत्रनुं लांबपणुं छे, तेवुं वक्षस्कारादिकनुं पण लांबपणुं जाणवुं. तथा पूर्व धातकीखंमनां सात क्षेत्र, अने पश्चिम धातकीखंमनां सात क्षेत्र, ते चार लाख योजन लांबां जाणवां.

हवे वासक्षेत्रना विजयनो विस्तार कहे छे.

क्षेत्रना आंक जे एक, चार, सोल ने चोशठ. एनी सायें ध्रुवांक गणीयें, पछी बशें ने बार नागें वेहेंचीयें, तेवारें वासक्षेत्रनो सर्वत्र आदि, मध्य अने अंत्यनो विस्तार होय.

हवे धातकी खंमना ध्रुवांक कहे छे.

प्रथम क्षेत्रना चवद लाख बे हजार बशें ने सत्ताणुं एटला ध्रुवांक जाणवा. तथा मध्यक्षेत्रना छवीश लाख सडसठ हजार बसो ने आठ ध्रुवांक जाणवा. तथा अंतक्षेत्रना ध्रुवांक ३९३२११९ जाणवा.

अंहीयां प्रथम क्षेत्रना ध्रुवांक जे चौद लाख बे हजार बशें ने सत्ताणुं छे अने क्षेत्र नो आंक एक छे, मार्टे एकें गुणीयें, तेवारें तेहीज आंक आवे. तेने बशें ने बार नागें वेहेंचतां छ हजार छसो ने चौद योजन जाफेरा, एटलो नरत तथा ऐरवतनो आदिविस्तार जाणवो. अने बार हजार पांचशें ने एक्याशी योजन जाफेरो मध्यविस्तार छे, तथा अढार हजार पांचशें ने सुडतालीश योजन जाफेरो अंत्यविस्तार छे.

हेमवंतने ऐरण्यवतनो आदिविस्तार छवीश हजार चारशें ने अठावन योजन जाफेरो छे, मध्यविस्तार पचास हजार त्रणशें ने चोवीश योजन जाफेरो छे अने अंत्यविस्तार चम्मोतेर हजार, एकसो ने नेवुं योजन जाफेरो छे ए सर्व चारे गुणतां चौगुणा थया.

हरिवर्ष अने रम्यक क्षेत्रनो आदिविस्तार एक लाख पांच हजार आठशें ने तेत्रीश योजन जाफेरो छे, अने मध्यविस्तार बे लाख एक हजार बशें ने अठाणुं योजन जाफेरो छे, तथा अंत्यविस्तार बे लाख, छन्नुं हजार, सातशें ने त्रेशठ योजन जाफेरो छे.

विदेहनो आदिविस्तार चार लाख, त्रेवीश हजार, त्रणशें ने चोत्रीश योजन जाफेरो छे, अने मध्यविस्तार आठ लाख, पांच हजार एकसो ने चोराणुं योजन जाफेरो छे, तथा अंत्यविस्तार अगियार लाख सत्त्याशी हजार ने चोपन्न योजन जाफेरो छे, ए रीतें ए चार स्थानकनो आदि, मध्य तथा अंत्यनो विस्तार कह्यो. ए ध्रुवांक चोशठांके गुण्या.

अहीयां आदि ध्रुवांक चौद लाख, बे हजार, बशें ने सत्ताणुं योजन जाफेरा छे. तेने एक, चार, सोल, चोसठनी सायें गणीयें, पछी बशें ने बार नागें वेहेंचतां यथोक्त मान लाने. अने मध्यध्रुवांक छवीश लाख, सडसठ हजार, बशें ने आठ छे. तेने एक, चार,

सोल ने चोसठ सार्थे गुणीने पछी बशें बार जागें वेहेंचतां पूर्वोक्त मध्यविस्तार लावे, तथा अंत्यनो विस्तार (३एइ२११ए) छे, तेने एक, चार, सोल, अने चोसठसार्थे गणी यें, पछी बशें ने बार जागें वेहेंचतां पूर्वोक्त क्षेत्रनो अंत्यविस्तार आवे. अने उपर जे योज न रहे, तेनी कला करी बशें ने बार जागें वेहेंचीयें, तेटलुं उपर आवे. तेमाटें जाजेरा छे.

हवे विजयनुं परिमाण कहे छे.

अंतरनदीयें पन्नरशें योजन रुंध्या छे,वक्षस्कारें आठ हजार योजन रुंध्या छे, मेरुथकी पूर्व पश्चिमें जद्रशालवने तथा मेरुपर्वतें बे लाख पच्चीशहजार एकसो ने अठावन्न योज न रुंध्या छे, वनमुखें अगिआर हजार छशें ने अठ्याशी योजन रुंध्या छे,ए सर्व एकठा क रियें, तो बे लाख, छेंताळीश हजार, त्रणशें ने छेंताळीश योजन थाय. ते धातकीखंमनो विस्तार चार लाख योजननो छे. ते मांहेथी काढीयें, तेवारें एक लाख, त्रेपन हजार छशें ने चोपन योजन बाकी रहे. तेने सोलविजय छे.माटेसोल जागें वेहेंचीयें,तेवारें नवहजार छसें ने त्रण योजन उपर सोलहीआ छ जाग आवे. एटलुं एकेका विजयनुं प्रमाण पहोलपणे छे.

ए नदी, गिरि, वन अने विजय ए सर्वनां प्रमाण जेवारें एकठां करियें, तेवारें चार लाख योजन, धातकीखंमनो विस्तार पूर्ण थाय, अने ए धातकी खंमना बत्रीश विज यनां नाम प्रथम जरतक्षेत्रनां सरखां कच्छादिक जाणवां.

हवे नगरी अने वृक्ष वखाणे छे.

ए धातकी खंमने विषे नगरी अने वृक्ष ते पहेला जंबुद्वीपने विषे जे रीतें कह्यां, ते रीतें जाणवां, परंतु एटलुं विशेष छे के जे पूर्व अने पश्चिमना बेहु खंमने विषे बे उत्तर कुरुक्षेत्रमांहे धातकीने महाधातकी एवे नामें जे बे वृक्ष छे, ते बे वृक्षने विषे सुदर्शन अने प्रियदर्शन एवे नामें बे देवता अनुक्रमें वसे छे, अने बे देवकुरुक्षेत्रने विषे तो जंबुद्वीप नी पेरें गरुड देवतानें वसवायोग्य बे शाल्मली वृक्ष छे.

हवे धातकी खंमना त्रण परिधि कहे छे.

प्रथम कही जे ध्रुवांकनी त्रण राशि तेनी सार्थे एक लाख अठ्योतेर हजार आठशें ने बे हेंताळीश. एटला योजन मेलवीयें, तेवारें अनुक्रमें धातकी खंमना त्रणे परिधिनुं परिमा ण थाय, ते यंत्रथी समजवुं. हवे ए ध्रुवांक केवी रीतें नीपजे? तेनो विधि ग्रंथांतरथी कहे छे ॥ यडुक्तं ॥ इगवासहराजंबू, सेलडुगुणविक्खराचवडु आरा ॥ क्खित्तं फुसंति लरको, अडसयरिसहस बियाला ॥ १ ॥ तग्गुणलवणपरिहि, धायइसंमस्सआइ धुवरासी ॥ गिरिपिहुणा तम्मज्क, परिहीसमज्क धुवरासी ॥ २ ॥ अंतस्सविजा परिही, गिरिविक्खर रहिय अंतधुवरासी ॥ गिरिविक्खरेण मिलियं,परिहितिगणुकमेण जवे ॥३॥ इतिधातकी खंमाधिकारः

हवे कालोद समुद्रनो चोथो अधिकार कहे छे.

कालोदधि नामें जे समुद्र ते धातकीखंडनी जगतीबाहेर वलयने आकारें छे,ते सर्वत्र हजार योजन ऊंडो छे एटले गोतीर्थनी परें नथी. वली एमां पाणीनी हानी वृद्धि थती नथी. ते कालोद समुद्रनेविषे लवणसमुद्रना सुस्थितदेव सरखा काल, अने महाकाल नामे जे बे देवता तेने रहेवायोग्य पूर्व अने पश्चिमदिशानेविषे गौतमद्वीप सरखा वे द्वीप छे.

लवण समुद्रनी पेरें धातकी खंडनी जगतीथकी बार हजार योजन कालोद समुद्र मांहे पूर्वदिशानेविषे धातकीखंडना बार चंद्रमाना बार द्वीप छे, अने पश्चिमदिशाने विषे बार सूर्यना बार द्वीप छे, तथा कालोदनी जगतीथकी कालोद समुद्रमांहे बार हजार योजनें पूर्वदिशाने विषे कालोदधिना बहेंतालीश चंद्रमाना बहेंतालीश द्वीप छे, अने पश्चिम दिशायें बहेंतालीश सूर्यना बहेंतालीश द्वीप छे. ते सर्व द्वीप बाहेरनी दिशायें सर्वत्र जोतां पाणीथकी उपर बे कोश ऊंचा छे, तथा एकाणुं लाख सत्त्योतेर हजार छशें ने पांच योजन कालोद समुद्रनो परिधि जाणवो. अने बावीश लाख बाणुं हजार छशें ने बहेंतालीश योजन अने उपर त्रण कोश एटलुं जगतीना द्वार द्वारनुं अंतर जाणवुं ॥

हवे पांचमो पुष्करदल द्वीपनो अधिकार कहे छे. कालोद समुद्रनी जगतीथी बाहेर वलयने आकारें सोल लाख योजन पहोलो पुष्कर द्वीप छे, ते पुष्कर द्वीपनुं अर्द्ध आठ लाख योजन छे, त्यांथकी बाहेरनी दिशायें जगतीनी पेरें वलय सरखो मानुष्योत्तर एवे नामें पर्वत छे, ते वेलंधरगिरिने मानें छे. मूलनें विषे एक हजार बावीश योजन, अनें शिखरने विषे चारशें ने चोवीश योजन पहोलो छे, अने सत्तर शें एकवीश योजन ऊंचो छे. वली जेम सिंह बेसे, तेवारें आगले भागें ऊंचो होय,अने पाछले भागें नीचो होय, तेम मानुष्योत्तर पण मांहेनी दिशायें ऊंचो छे, अने बाहेरनी दिशायें नीचो ढाल मांहे छे. वली निषध पर्वतने वर्णें मानुषोत्तर पण राता सुवर्णनो छे,

हवे त्यां क्षेत्र अने पर्वतनां स्वरूप वखाणे छे.

जेम भरतादिक क्षेत्र अने हेमवंत प्रमुख पर्वत तेनां संस्थान जे आकारविशेष धातकीखंडने विषे कह्यां छे. एटले त्यां जेम चक्रना आरा अने विवर सरखा छे, तेमज ए पुष्करवर द्वीपने विषे पण जाणवा. धातकीखंडना भद्रशाल वनथकी पुष्करार्द्धनुं भद्रशाल वन ते लांबपणे अने पहोलपणे बमणुं जाणवुं. तो मेरुनी पूर्व पश्चिमदिशायें भद्रशालवननो धातकी खंडने विषे विस्तार एक लाख सात हजार आठशें ने छगणाएंशी योजन छे. तेने बमणो करीयें, तेवारें बे लाख पन्नर हजार सातशें ने अठ्ठावन योजन थाय. ने एने जेवारें अठ्ठाशी भागें वेहेंचीयें, तेवारें बे हजार चारशें एकावन्न

योजन उपर एक योजनना अठ्यासी भाग करीयें, तेवा सित्तेर भाग एटलो मेरु थकी दक्षिण उत्तर दिशाना भद्रशाल वननो विस्तार पुष्करार्द्धने विषे जाणवो. तथा पुष्करार्द्धना बे मेरु अने इखुकार पर्वत तेनो विस्तार धातकीखंड सरखो जाणवो.

हवे बाहेरना चार गजदंता वखाणे छे.

ए पुष्करार्द्धने विषे मानुषोत्तर पर्वतनी दिशायें बाहेरना चार गजदंतगिरि जे छे, ते वीश लाख, त्रैंतालीश हजार, बशें ने ओगणीश योजन लांबा छे. कालोद समुद्रनी जग तीनी दिशाना मांहेला चारे गजदंतगिरि जे छे, ते सोल लाख, छवीश हजार, एकशो ने सोल योजन एटला लांबा छे. तथा चार लाख, छत्रीश हजार, नवशें नें सोल योजन एटली कुरुक्षेत्रनी जीवा छे. वली सत्तर लाख, सात हजार, सातशें नें चउद उपर एक योजनना बशें बार भाग करियें, तेवा आठ भाग एटलो कुरुक्षेत्रनो विस्तार जा णवो. त्रणशें तेत्रीश योजन उपर एक योजननो त्रीजो भाग एटलुं कंचनगिरिनुं मा होमांहे अंतर जाणवुं. बे लाख, चालीश हजार, नवशें ने ओगणसाठ योजन उपर सा तीयो एक भाग एटलुं कुलगिरि, जमक अने इहनुं मांहोमांहे अंतर जाणवुं. तथा छ त्रीश लाख, ओगणोतेर हजार, त्रणशें ने पांत्रीश योजन एटलुं कुरुक्षेत्रनुं धनुःपृष्ठ जाणवुं.

हवे शेष, नदी तथा पर्वतनां परिमाण कहे छे.

शेष बीजां क्षेत्र, नदी अने द्रह प्रमुखनुं प्रमाण ते जेम जंबूद्वीपथकी कोइक ब मणा, कोइक सरखा, इत्यादि धातकी खंडने विषे जेम कह्या छे, तेम अहियां पुष्क रार्द्धने विषे पण कोइक धातकीखंडथी बमणा, कोइक धातकीखंड सरखा पण जा णवा. एटले जे जंबूद्वीप सरखा धातकीखंडमांहे छे, ते धातकीखंड सरखा पुष्क रार्द्धमांहे छे, अने जे जंबूद्वीपथकी धातकीखंडमांहे बमणा कह्या छे, ते पुष्करा र्द्धने विषे धातकीखंडथकी बमणा जाणवा ॥ हवे धातकीखंडने विषे दीर्घ वैताढ्य जंबूद्वीप सरखा वखाणे छे ॥ यथा ॥ कंचण यमसुरकुरु नग, वेयड्ढा चेव वट्ट दीहाय ॥ विरकंभवाहसमु, ससएणजह जंबुदीवुत्ता ॥ १ ॥ पुष्करार्द्धने विषे तो दीर्घ वैताढ्यनो वि स्तार बशें योजन कह्यो छे ॥ यथा ॥ छवेहो वेयड्ढाणं, जोयणाइं तु छसय कोसाइं ॥ पण विसं उच्चिट्ठो, दोचेव सयाइं विछिन्ना ॥ २ ॥ अहियां निश्चयनी वात तो ज्ञानी जाणे.

पुष्करार्द्ध क्षेत्रनो ध्रुवांक कहे छे. अठ्यासी लाख, चउद हजार, नवशें ने एकवीश एटला योजन आदिक्षेत्रना ध्रुवांकनी राशि जाणवी. ते सर्व प्रथमनी पेरें क्षेत्रना आंक साथें गणीयें. पछी बशें ने बार भागें वेहेंचतां परिमाण लभ्यमान थाय. एक को डी, तेर लाख, चुम्मालीश हजार, सातशें ने त्रैंतालीश योजन. एटली पुष्करवरद्वीपना

मध्यक्षेत्रनी ध्रुवांकराशि जाणवी. एक करोड,आडत्रीश लाख, चम्मोतेर हजार, पांचशें ने पांशठ, एटली पुष्करार्द्धना अंत्यक्षेत्रनी ध्रुवांकराशि जाणवी. हवे ए ध्रुवांक जाणवा नी पेरें लखीयें बैयें ॥ यथा ॥ पुरकरदलंमिजसुया,र धायइसंमा उ डुगुण वासहरा ॥ खित्तं फुसंति लरकति,पणवन्न सहस्स ढसय चुलसी ॥१॥ तेणूणा कालोयहि,परिही इहपढमहो ध्रुवरासी ॥ दीवद्ध मब परिही,गिरिपीढूणोय मझि धुवो ॥ २ ॥ नरखित्त अंतपरिही, गिरिपिढूणाय अंत ध्रुवरासि ॥ पुवंचगणणहरणो, खित्तपमाणं नवे पयडं ॥ ३ ॥

हवे अनुक्रमें क्षेत्रप्रमाण विवरीने लखीयें बैयें. पुष्करार्द्धने विषे जरत ऐरवतना आदिध्रुवांक अव्याशी लाख, चउद हजार,नवशें ने एकवीश तेने एक साथें गुणीयें,ते वारें तेहीज आंक आवे, तेने बशें ने बार जागें वेहेंचीयें, तेवारें एकतालीश हजार, पांचशें ने उगण्याएंशी योजन लन्यमान थाय. उपर एकशो ने त्रहोंतेर योजन वधे, ते एक योजनना बशें बार जाग करी, तेने बशें ने बार जागें वेहेंचीयें, तेवारें उपर बशें ने वारीया एकशो ने त्रहोंतेर जाग आवे, एटलो प्रथम विस्तार बे. तेमज त्रेपन हजार, पांचशें ने बार योजन उपर बशें बारीया, एकशो ने नवाणुं जाग, एटलो मध्यविस्तार जाणवो. पांसठ हजार चारशें ने बेंतालीश योजन उपर बशें ने बारीया तेर जाग, एटलो अंत्यविस्तार जाणवो.

हेमवंत ऐरण्यवंतनो आदिविस्तार एक लाख,बासठ हजार, त्रणशें ने उगणीश योजन उपर बशें ने बारीया बप्पन जाग बे, अने मध्यविस्तार बे लाख, चउद हजार ने एकावन योजन उपर बशें बारीया एकसो ने साठ जाग बे, तथा अंत्यनो विस्तार बे लाख, एकसठ हजार, सातशें ने चोराशी योजन उपर बशें नें बारीया बावन जाग बे.

हरिवर्ष तथा रम्यकनो आदिविस्तार ब लाख,पांसठ हजार,बशें ने सत्त्योतेर योजन उपर बशें ने बारीया बार जाग बे, अने मध्यविस्तार आठ लाख,बप्पन हजार, बशें ने सात योजन उपर बशें नें बारीया चार जाग बे,तथा अंत्यविस्तार, दश लाख, सुडतालीश हजार,एकशो ने बत्रीश योजन उपर, बशें ने बारीया बशें ने आठ जाग बे.

विदेह क्षेत्रनो आदिविस्तार, बवीश लाख,एकसठ हजार,एकशो ने आठ योजन उपर बशें ने बारीया अडतालीश जाग बे, अने मध्यविस्तार चोत्रीश लाख, चोवीश हजार,आठशें ने अव्यावीश योजन उपर बशें ने बारीया सोल जाग बे,तथा अंत्यविस्तार एकतालीश लाख,अव्याशी हजार, पांचशें नें बेंतालीश योजन उपर बशें ने बारीया एकसो ने बन्नुं जाग बे. ए गुणांक, क्षेत्रांक अने ध्रुवांक, ते सर्व यंत्रथी जाणवा.

हवे प्रथमनी पेरें नदी, गिरि अने वनमुखनुं परिमाण काढीने शेष रहे, तेने सोल

मे नागें एक विजयनुं परिमाण उंगणीश हजार, सातशें ने सवाचोराणुं योजन थाय. तथा ए पुष्करार्द्ध द्वीपने विषे, बाहेरनी दिशायें जेनां पाणी वहे ठे, एवी जें नदी तेनी नजीक कोइ समुद्र नथी, तेमाटें मानुषोत्तरने हेठे मूलमां पेसे ठे.

ए पुष्करार्द्धने विषे बन्ने उत्तर कुरुक्षेत्रमांहे पद्म अने महापद्म एवे नामें बे वृक्ष ठे, तेने विपे पद्म तथा पुंमरीक एवे नामें बे देवता रहे ठे, अने देव कुरुक्षेत्रने विषे तो जंबूद्वीपनी पेरें गरुडदेवने वसवायोग्य बे शाल्मलीनां वृक्षो ठे.

पुष्करार्द्ध क्षेत्रने विपे पूर्व पश्चिम दिशाना बन्ने खंमम्मांहे बे हजार योजन पहोला एवा बे कूट कह्या ठे, ते कूटनां स्थानक गीतार्थ ज्ञानवंत होय ते जाणे.

हवे मनुष्यक्षेत्रमांहे सर्व पर्वतनी संख्या कहे ठे.

एक मेरु, ठ कुलगिरि, चार गयदंता, सोल वक्षस्कार, चोत्रीश लांबा वैताढ्य, चार वृत्त वैताढ्य, चार यमलगिरि, अने बशें कांचनगिरि. ए सर्व मली बशें ने उंगण्योतेर पर्वत जंबूद्वीपमांहे जाणवा. अने आठ पर्वत लवणसमुद्रमांहे ठे, बीजा धातकीखंममांहे जंबूद्वीपना बशें ने उंगण्योतेरने बमणा करीने बे इखुकार पर्वत नेलीयें, तेवारें पांचशें ने चालीश थाय. अने त्रीजा पुष्करार्द्धने विषे पण पांचशें ने चालीश पर्वत जाणवा. एम तेरशो ने सत्तावन पर्वत सर्व मलीने मनुष्य क्षेत्रमांहे जाणवा, तेमां पांच मेरुपर्वत विना सर्व पर्वतो उंचपणाने चोथे नागें नूमिमांहे जाणवा. अनें मानुषोत्तर पर्वत पण एज रीतें उंचपणांने चोथे नागें नूमिमांहे ठे.

पुष्करार्द्ध द्वीपना आदि, मध्य अनें अंत्यना त्रण परिधि कहे ठे.

प्रथम जे ध्रुवांकनी श्रेणी कही ठे, तेमांहे त्रण लाख, पंचावन हजार, ठशें ने चोराशी एटला योजन जेवारें त्रणे परिधिमांहे मेलवीयें, तेवारें अनुक्रमें पुष्करार्द्धना त्रण परिधि होय, ते संख्या यंत्रयकी जाणवी॥ उक्तं च ॥ अड्डाइदीव ड समु, द रूव तप्परिहिं जोयणिग कोडी ॥ बायाल लस्क तीसं,सहसा दोसय इगुणवन्ना ॥ १ ॥ सोलस कोडी लस्का,नव कोडिसयातिकोडि इग लस्का ॥ पणवीस सहस्सासे,गणियपयं पुणसु करणेहिं॥ २॥

हवे मनुष्यक्षेत्र बाहेर जे पदार्थ न होय, ते कहें ठे.

नदी, द्रह, मेघ, मेघनो गर्जारव, बादर, अग्नि काय, तीर्थंकर, बलदेव, वासुदेव, चक्रवर्त्ती अनें बीजा पण सामान्य मनुष्य तेना जन्म अने मरण तथा मुहूर्त्त, प्रहर, दिवस, चंद्र सूर्यनां परिवेष, विजली, चय, अपचय अने उपराग, एटला पदार्थ पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण मनुष्यक्षेत्रमांहे होय. पण बाहेर न होय. एवुं नरक्षेत्रना स्वरूपनुं विशेष जाणवुं ॥ इति पंचमोऽधिकारः ॥ ५ ॥

हवे पुष्करार्द्धादिकना पर्वत प्रमुखनेविषे जिनभवन छे, ते कहे छे.

प्रथम कह्या जे धातकीखंम तेने विषे बे इखुकार, अने बे इखुकार पुष्करार्द्धना,ते चारे इखुकार पर्वतने विषे प्रत्येकें चार कूट छे. तेमांहे छेल्ला सिद्धकूटने विषे चार पर्वतें ए केक जिनभवन छे, बधां मली चार जिनभवन छे. अने मानुषोत्तर पर्वतना चार कूट नी उपर चार जिनभवन छे, ते जिनभवन कुलगिरिना जिनभवनने परिमाणें पचास योजन लांबां, पच्चीश योजन पहोलां अने छत्रीश योजन उंचां जाणवां.

हवे नंदीश्वर, कुंमल अने रुचकद्वीपनेविषे जिनभवन कहे छे.

एकसो योजन लांबां अने पचास योजन पहोलां तथा बहोंतेर योजन उंचा अने चार बारणे सहित एवां, आठमा नंदीश्वरद्वीपनेविषे बावन जिनभवन छे. तथा कुंमल द्वीपनेविषे कुंमलने आकारें जे मध्यगिरि छे, तेने कुंमलगिरि कहे छे, तेनी चारदिशाने विषे एवाज प्रकारना चार जिनभवन जाणवां. एम रुचकद्वीपने विषे पण चार जिनभ वन छे, ए सर्व साठे जिनभवन ते चार बारणानां छे.

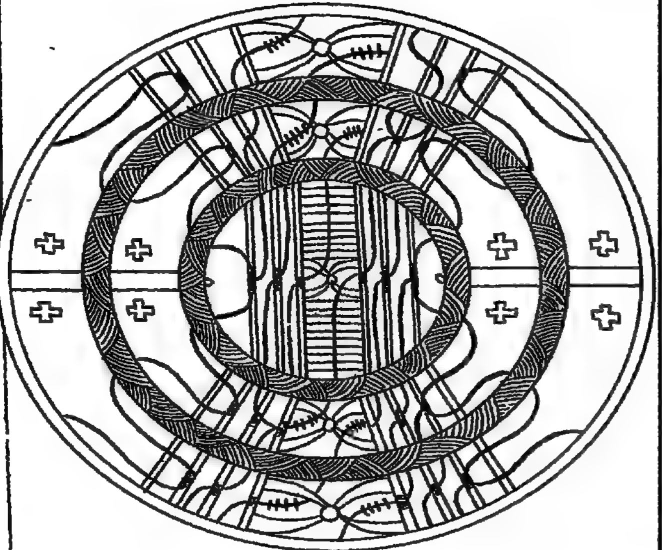
अढीद्वीपने विषे गर्भज मनुष्य संख्यायें केटलां छे ? ते कहे छे.

सात क्रोड कोडाकोडी कोडी, बाणुं लाख कोडाकोडी कोडी,अठ्यावीश हजार कोडा कोडी कोडी, एकशो कोडाकोडी कोडी, बाशठ कोडाकोडी कोडी, एकावन लाख कोडा कोडी, बहेंतालीश हजार कोडाकोडी, छशें कोडाकोडी, त्रेंतालीश कोडाकोडी, साडत्री श लाख कोडी, उंगणसाठ हजार कोडी, त्रणशें कोडी, चोपन कोडी, उंगणचालीश ला ख, पच्चास हजार, त्रणशें ने छत्रीश, एटले आंकें स्त्री पुरुषनी संख्या जाणवी.

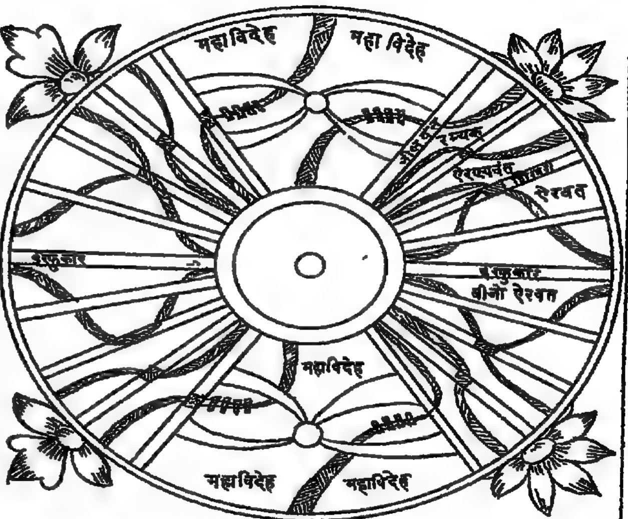
एटले सात क्रोड, बाणुं लाख,अठ्यावीश हजार, एकशो ने बासठ कोडाकोडी कोडी, तथा एकावन लाख, बहेंतालीश हजार, छशें ने त्रेंतालीश कोडाकोडी, तथा साडत्रीश लाख, उंगणशाठ हजार, त्रणशें ने चोपन कोडी, तेनी उपर उंगणचालीश लाख, पच्चा स हजार, त्रणशें ने छत्रीश,एटला आंक स्त्री पुरुषना एकठा साथें जाणवा. एटले ७९२२ ८१६२,५१४२६४३,३७५९३५४,३९५०३३६, ए उंगणत्रीश आंकनी संख्या जाणवी.

ए आंकना अठ्यावीश भाग करीयें,तेवारें एक भागमां २८२९५७७, ३२३६५२२, ९७७७११९, ७९९८२२६,ए अठ्यावीश आंक आवे,एटले अठ्यावीश लाख कोडाको डी कोडी, उंगणत्रीश हजार कोडाकोडी कोडी, पांचशें कोडाकोडी कोडी, सत्त्योतेर कोडाकोडी कोडी, तथा त्रेवीश लाख कोडाकोडी, छवीश हजार कोडाकोडी, पांचशें को डाकोडी, बावीश कोडाकोडी, सत्ताणुं लाख कोडी, सत्त्योतेर हजार कोडी, एकशो को डी अने उंगणीश कोडी, तेनी उपर उंगण्याएंशी लाख, अठाणुं हजार, बशें ने छवीश,

अढी द्वीप स्थापना.



धातकी खंड स्थापना



६३

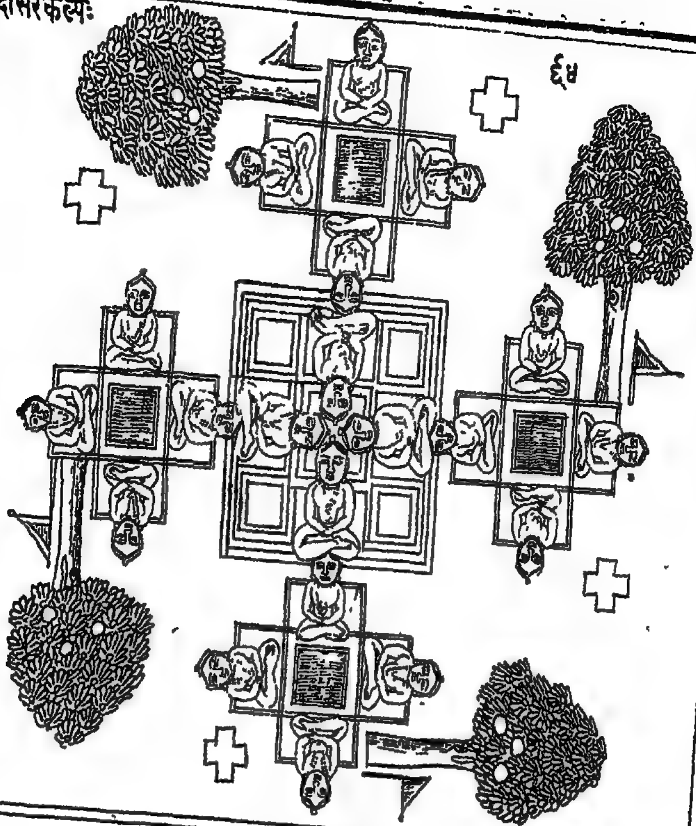
शाश्वत जिन प्रासाद संख्या यंत्र.

एवं मनुष्य लोके चैत्य संख्या.

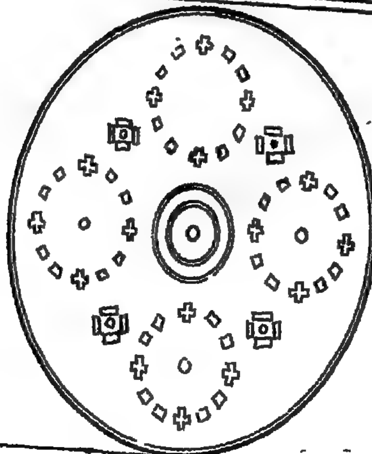
स्थान	प्रासाद	प्रतिमा	अंक	स्थान	प्रासाद	प्रतिमा
सौधर्म	३२०००००	५७६००००००	५	मेरु	८५	१०२००
ईशान	२८०००००	५०४००००००	२०	गजदंत गिरि	२०	२४००
सनत्कुमार	१२०००००	२१६००००००	८०	वखारा पर्वत	८०	९६००
महेंद्र	८०००००	१४४००००००	१००	कांचन गिरि	१०००	१२००००
ब्रह्म	४०००००	७२००००००	५	विचित्र पर्वत	५	६००
लांतक	५००००	९००००००	५	चित्र पर्वत	५	६००
शुक्र	४००००	७२०००००	१०	यमकाचल	१०	१२००
सहस्रार	६०००	१०८००००	३०	वर्षधर पर्वत	३०	३६००
आनत	२००	३६०००	४	इक्षुकार पर्वत	४	४८०
प्राणत	२००	३६०००	२०	वृत्त वैताढ्य	२०	२४००
आरण्य	१५०	२७०००	१७०	दीर्घ वैताढ्य	१७०	२०४००
अच्युत	१५०	२७०००	४०	दिग्गज कूट	४०	४८
प्रथम त्रिक ३	१११	१३३२०	१०	जम्ब्वादि वृक्ष	११७०	१४०४००
द्वितीय त्रिक ३	१०७	१२८४०	३८०	कुंड	३८०	४५६००
त्रितीय त्रिक ३	१००	१२०००	७०	महानदि कुंड	७०	८४००
पंचानुत्तर	५	६००	८०	द्रह चैत्य	८०	९६००
एवमूर्ध्व लोके	८४९७०२३	१५२९४४४७६०	मनुष्यलोके शाश्वत चैत्य संख्या	१ मानुषोत्तर पर्वत	४	४८०
एवं त्रिभुवने	८५७००२८२	१५४२५८३६०८०		१ नंदीश्वर द्वीप	६८	८३६८
				१ रुचक द्वीप	४	४९६
				१ कुंडल द्वीप	४	४९६

स्थान	प्रासाद	प्रतिमा.
असुरकुमार	६४०००००	११५२००००००००
नागकुमार	८४०००००	१५१२००००००००
सुवर्णकु०	७२०००००	१२९६००००००००
विद्युत्कु०	७६०००००	१३६८००००००००
अग्निकु०	७६०००००	१३६८००००००००
द्वीपकु०	७६०००००	१३६८००००००००
उदधिकु०	७६०००००	१३६८००००००००
दिशाकु०	७६०००००	१३६८००००००००
स्तनितकु०	७६०००००	१३६८००००००००
वायुकु०	९६०००००	१७२८००००००००
भवनपति लोके	७७२०००००	१३८९६००००००००

नंदीसरकल्पः

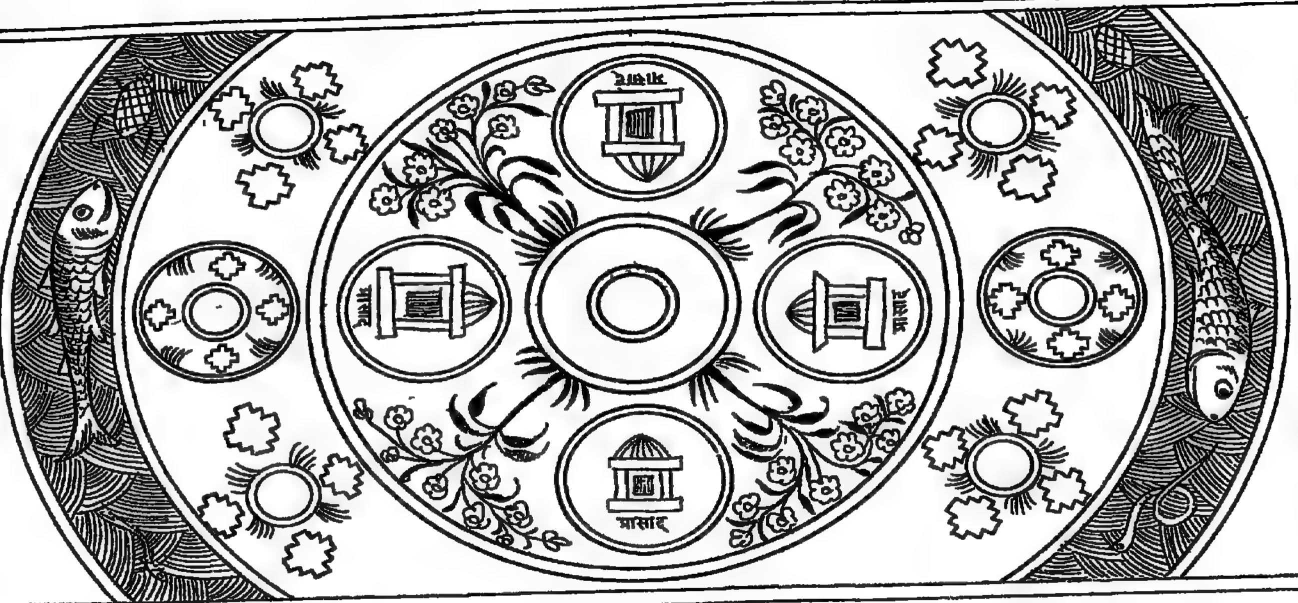


६५



नंदीसर द्वीपस्थापना.

कुंडलद्वीप स्थापना



एटला आंक अठ्यावीशमा जागमां आवे,उपर आठनो आंक वधे. एटली संख्यायें पुरुष जाणवा. एटले २८२९९५७४ एटली कोडाकोडी कोडी, अने २३२६५२२ एटली कोडाकोडी तथा ९७७४११९ एटली कोडी तेनी उपर ७९९८२२६ एटला पुरुष जाणवा.

हवे पुरुषथी सत्तावीश गुणी स्त्री छे,माटें ए आंकने सत्तावीश गुणो करीयें, तेवारें ७६३९८५८५, २८१६१२०, ३९८२२३४, ५९५२१०२ ए ओगणत्रीश आंक आवे, तेटली संख्यायें स्त्री जाणवी. एटलें सात क्रोड कोडाकोडी कोडी, त्रेशठ लाख कोडाकोडी कोडी, अठाणुं हजार कोडाकोडी कोडी, पांचशें कोडाकोडी कोडी, पंचाशी कोडाकोडी कोडी, तथा अठ्यावीश लाख कोडाकोडी,शोल हजार कोडाकोडी, एकशो कोडाकोडी, वीश कोडाकोडी, तथा ओगणचालीश लाख कोडी, बासी हजार कोडी, बशें कोडी, चोत्रीश कोडी, उपर ओगणसाठ लाख, बावन हजार, एकशो ने बे. एटले आंकें स्त्री जाणवी. अर्थात् (७६३९८५८५) एटली कोडाकोडी कोडी, तथा (२८१६१२०) एटली कोडाकोडी, तथा (३९८२२३४) एटली कोडी तेनी उपर (५९५२१०२) एटले आंकें स्त्री छे. ए स्त्रीना आंकनी सार्थे पूर्वोक्त पुरुषना आंकनी संख्यानो आंक तथा जे अठ्यावीशें जाग आपतां उपर आठ वध्या छे,ते सर्व एकठा मेलवीयें,तेवारें पूर्वोक्त ओगणत्रीश आंक पूर्ण थाय. एटला आंकें गर्भज मनुष्य छे. ए प्रकारें गर्भज मनुष्य पूर्वोक्त आंक जेटला होय परंतु आंक न्हाना महोटा न होय, तेमां पुरुषथी स्त्री सत्तावीश गुणी अधिक होय. अल्पबहुत्वमां पुरुषथकी स्त्री संख्यातगुणी अधिक कही छे. इहां पूर्वोक्त आंकने अठ्यावीशें जाग आपतां उपर आठनो आंक वधे छे,पण सत्त्यावीश वधता नथी तेवात गीतार्थगम्य जाणवी. तेनो निर्णय गीतार्थ करी आपे.

वली अल्पबहुत्वना अठाणुं द्वार जोतां सर्वथी थोडा गर्भज मनुष्य कह्यां छे, ते संख्याती कोडाकोडी प्रमाण पूर्वोक्त ओगणत्रीश आंकें संख्या जाणवी.

इहां केटलाएक एम कहे छे के ओगणत्रीश आंकें गर्भज मनुष्य छे, ते आंक खरे खरा छे परंतु तेमां कालविशेषें न्हाना महोटा आंक लेवा जोइयें. जेम बे एकडायें अगीयारनो आंक थाय अने बे नवडायें नवाणुंनो आंक पण थाय. तेम श्रीअजितनाथजीना वखतमां मनुष्यनी संख्या घणी होय तेवारें महोटा आंक लेवा अने छठा आराने विषे माणस स्वल्प होय तेवारें न्हाना आंक लेवा, एवी रीतें केटलाक श्रीजिनशासनना रहस्यना अनभिज्ञपणाथी कहे छे. ते असत्य कहे छे. जेमाटें पंचांगीने विषे एटलाज आंक कह्या छे ते न्हाना महोटा केम थाय ?

जे कारणें श्रीअनुयोगद्वार सूत्रमध्यें कह्युं छे केः— जेवारें जघन्यथी मनुष्य होय, ते

वारें एकडानो आंक मांडी तेने छन्नुं वार बमणो करीयें, तेवारें जे आंक आवे, ते आंक प्रमाण मनुष्य छे. अथवा एकनो वर्ग न होय अने बेनो वर्ग चार थाय, ए प्रथम वर्ग कहेवाय. चारनो वर्ग शोल थाय ए बीजो वर्ग. शोलनो वर्ग बशें छप्पन थाय, ते त्रीजो वर्ग. तेनो वर्ग ६५५३६ थाय ते चोथो वर्ग. तेनो वर्ग ४२९४९६७२९६ थाय ते पांचमो वर्ग. तेनो वर्ग १८४४६७४४०७३७०९५५१६१६ ए छठो वर्ग. इहां पांचमो वर्ग छठा वर्ग साथें गणतां पूर्वोक्त आंक आवे ते आंकप्रमाणें गर्भज मनुष्य छे.

हवे ए पूर्वोक्त ओगणत्रीश आंकप्रमाणें जे गर्भज मनुष्यनी संख्या कही, ते सर्व मनुष्य जो अढीद्वीपमां विचरता लहीयें, तो समाइ शके नहीं. केम के अढीद्वीपनी भूमि पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण छे. तेनी परिधि १४२३०२४९ योजन एक गाउ १७६६ धनुष्य उपर चार अंगुल छे. अने अढीद्वीपनुं गणितपद करीयें, तो पीस्तालीशलाख विष्कंभनो चोथो भाग सवा अगीयार लाख योजन थाय, तेने पूर्वोक्त परिधिना योजन साथें गणीयें, तो १६००९०३०६१९४४५ योजन, त्रण गाउ, ८८१ धनुष्य थाय. ए सर्व प्रमाणांगुलें योजन जाणवा. ते एक प्रमाणांगुल योजन मनुष्य संबंधी दश लाख योजन थाय, तेनी रीत बतावे छे.

उक्तं च ॥ अंगुलसप्ततिकायां ॥ सहस्समाणे चउरं, सजोयणे दीह पिहुल भावाणं ॥ हुंति परुप्परगणणे, लरका दस जोयणाण फुडं ॥ १ ॥ एक प्रमाणांगुल योजन छे, ते उत्सेधांगुल सहस्रगुणुं जाणवुं. तो एक जोयण चउरस्र प्रमाणांगुलें छे, ते सहस्र गुणुं लांबु अने सहस्रगणुं पहोलुं होय, तेवारें सहस्रने सहस्रगणुं करतां माणसना दश लाख योजन स्फुट एटले प्रगट थाय.

हवे एक योजनभूमिना प्रमाणांगुल ५८९८२४०००००००० एटले अठावन हजार कोडी, नवशें कोडी, बासी कोडी, उपर चालीश लाख थाय. ते आवी रीतें केः— एक योजन भूमिनां आठ हजार धनुष्य थाय. तेने एक धनुष्यना छन्नुं अंगुलें गुणतां ७६८००० थाय, ते समचउरस्र योजन छे, माटें तद्गुणा करीयें तेवारें पूर्वोक्त ५८९८२४००००००० प्रमाणांगुल थाय. तेने पूर्वोक्त अढीद्वीप संबंधी गणितपदना जेटला योजन कह्या छे, तेनी साथें गुणीयें तेवारें ९४४२५१०४९६८१२७९४७६८१०९८९७७६ एटला प्रमाणांगुल गणितपदना जे योजन, गाउ, धनुंष्य तथा अंगुल कह्या तेना थाय.

एवुं एक समचउरस्र प्रमाणांगुल ते मनुष्यना हजार आंगुल लांबु अने हजार आंगुल पहोलुं समचउरस्र जाणवुं. माटें हजारने हजार गुणुं करतां दश लाख उत्सेध अंगुल थाय, तेने एक समचउरस्र हाथनी चोवीशआंगुलने चोवीशें गुणतां ५७६ आंगुल

थाय. ते आंगुलें भाग आपीयें, तेवारें १७३६ हाथ लाभे. शेष ६४ अंगुल वधे.

हवे ते पूर्वोक्त गणितपदना अंगुलने सत्तरशें ने छत्रीश हाथे गुणीयें, तेवारें १६३७८१९८२२२४६७०११७१७४३८९२१११३६ एटला हाथ उच्छेद अंगुलें थाय. तथा चोशठनो आंक वध्यो छे, ते गणितपदना अंगुल सार्थे चोशठ गुणो करी ५७६ भागें वहेंचतां १०४९१६७८३२९७९२१०५२९७८९६८२२ हाथ थाय. शेष ४९२ वधे. हवे ए हाथनी राशि पूर्वोक्त मूलहाथनी राशि मध्यें प्रक्षेपियें, तेवारें १६३७९२४७३९०२९९९९०९२७९६८७१०७९५८ एटला हाथ थाय. ते सर्व गणितपदना उच्छेद आंगुलें हाथ जाणवा. आ बे पानाना गणित तपास्या नथी.

हवे ए सर्व त्रीश आंक छे, ते पीस्तालीश लाख योजन मनुष्य क्षेत्र छे, माटें पीस्तालीश लाखने भागें वहेंचीयें, तेवारें एक भागें ३६३९८३२७५३३९९९९७९८३९९३० एटला आवे. शेष २१०७९५८ एटला आंक वधे, तेने भाग पहोंचे नही.

हवें पीस्तालीश लाख योजनमां पण वीश लाख समुद्रनी भूमि छे, अने पच्चीश लाख द्वीपनी भूमि छे, तिहां समुद्रनी भूमिमां माणसनी वस्ती नथी. मात्र अंतरद्वीप छे ते स्वल्प छे तेनी विवक्षा करता नथी. ते माटें समुद्रनी भूमि रहित मात्र द्वीपनी पच्चीश लाख योजन भूमि छे, तेने एक भागमां आवेली पूर्वोक्त हाथनी राशि सार्थे गुणतां ९०९९५८१८८३४९९९९४९५९९८२५००००००० एटली राशि आवे. ए पण उगणत्रीश आंक छे, ते पूर्वोक्त सातकोडी इत्यादि गर्भज मनुष्यना उगणत्रीश आंकनी राशिने वहेंची आपतां एकेका माणसने भागें एकेक हाथ भूमिभाग आवे छे तेमां सुवाय बेसाय नही. तेमज पर्वत, नदी, द्रह, वन, अटवी प्रमुख माणस विनानी भूमि पण घणी बूटी पडेली देखाय छे अने अल्पमात्र भूमिमध्यें मनुष्य रहे छे माटें पूर्वोक्त संख्याना मनुष्य एटली भूमिमां समाइ शके नही? एवी शंका उत्पन्न थाय.

हवे पूर्वोक्त शंकानुं समाधान करे छे. जे माटें श्रीवीतरागना वचनमां कांइ पण संदेह नथी. जे उगणत्रीश आंक प्रमाण गर्भज मनुष्य कह्यां छे. ते सदा सर्वदा काल एटलांज छे, पण ओछां अधिकां नथी. इहां समाधान आ छे, केः—पुरुषथी स्त्री सत्त्यावीश गुणी अधिक छे. अने गर्भ धारण करनारी पण तेज छे अने तेना गर्भमां उत्कृष्टथी नवलाखनी संख्यायें पण गर्भज मनुष्य होय छे. अने जघन्य मध्यम पण होय छे पण स्त्रीनी राशि महोटी छे तेथी तेना गर्भमां गर्भज मनुष्योनी महोटी संख्या सर्वदा रही शके एवो निर्धार छे माटें घणा जीव गर्भमां होवा जोइयें. अने स्वल्पजीव गर्भ बाहेर होवाथी तेटला जीव पृथ्वीमां सुखथी रही शके छे. एम कहेवाथी जैनक्रियानो

लोप न थाय. पछी केवली कहे ते सत्य जाणवुं. पण गोंखवुं, चिंतववुं,अने पूछवुं. एनुं नाम त्रिपक्षीविद्या कहेवाय. जगतमां त्रिपक्षी विद्यानी कहेवत छे तेथी सांशयिक वातोनुं समाधान थाय छे ॥ इति अढीद्वीप मनुष्य संख्याप्रमाणं समाप्तम् ॥

॥ अथ चोवीश दंमक उपर पांत्रीश बोल उतारवानो थोकडो प्रारंनियें बैयें ॥
समस्त संसारीजीव, चारगतिमां रहेला चोवीश दंमकोने विषे परिभ्रमण करे छे. ते चोवीश दंमकनां नाम कहे छे.

१ प्रथम सात नारकीनो एक दंमक, ते साते नारकीनां नाम तथा गोत्र नीचें प्रमाणें छे.
नाम. १ घमा. २ वंसा. ३ सैला. ४ अंजणा. ५ रिठा. ६ मघा. ७ माघवती.
गोत्र. रत्नप्रजा. शर्करप्रजा. वालुकप्रजा. पंकप्रजा. धूमप्रजा. तमःप्रजा. तमस्तमःप्रजा.

॥ ११ त्यार पछी दश जुवनपतिदेवोना जे दश दंमक छे तेनां नाम लखियें बैयें ॥

१ असुरकुमार निकायनो दंमक. २ नागकुमार निकायनो दंमक.
३ सुवर्णकुमार निकायनो दंमक. ४ विद्युतकुमार निकायनो दंमक.
५ अग्निकुमार निकायनो दंमक. ६ द्वीपकुमार निकायनो दंमक.
७ उदधिकुमार निकायनो दंमक. ८ दिशिकुमार निकायनो दंमक.
९ वायुकुमार निकायनो दंमक. १० स्तनितकुमार निकायनो दंमक.

१२ बारमो पृथिवीकायनो दंमक, तेनां मूल नाम ७ छे, ते लखियें बैयें.
१ सुना. २ सुधा, ३ वालुया. ४ मणसिल. ५ शर्करा. ६ खरपुढवी.

॥ हवे ए पृथिवीकायना नेद कहे छे ॥

१ स्फाटिकरत्न. २ मणिरत्न. ३ परवालां. ४ रागरत्न. ५ हिंगलो. ६ हरताल. ७ मणसिल. ८ पारो. ९ सोनुं. १० रूपुं. ११ त्रांबुं. १२ लोढुं. १३ जसत. १४ शीसुं. १५ कथिर. १६ खडीमाटी. १७ हरमजी वानी. १८ अरणेटो पाषाण. १९ पलेवो पाषाण. २० अबरखनी जाति. २१ तूरी माटीनी जाति. २२ खारी माटीनी जाति. २३ माटीनी सर्व जाति. २४ पाषाणनी सर्व जाति. २५ सुरमानी जाति. २६ अंजननी जाति. २७ लूणनी जाति. इत्यादि पृथिवीकायना असंख्य नेद जाणवा.

१३ तेरमो अप्कायनो दंमक, तेना नेद कहे छे.

१ जमीननुं पाणी. २ आकाशनुं पाणी. ३ गरनुं पाणी. ४ हिमनुं पाणी. ५ रोयडानुं पाणी. ६ नीलीवनस्पति उपर पाणीना बिंडु. ७ मांकनुं पाणी. ८ घनोदधि.

१४ चौदमो तेउकायनो दंडक छे. तेना भेद कहे छे.

१ अंगारानो अग्नि. २ ज्वालानो अग्नि. ३ भ्रासडनो अग्नि.
४ उल्कापातनो अग्नि. ५ कणियानो अग्नि. ६ विजलीनो अग्नि.

१५ पंदरमो वाउकायनो दंडक छे, तेना भेद कहे छे.

१ उद्भ्रामकवायु. २ मंदवायु. ३ औत्कलिकवायु. ४ मांडलिकवायु.
५ मुखवच्छ्रवायु. ६ गुंजवायु. ७ घनवात. ८ तनुवात.

१६ शोलमो वनस्पतिकायनो दंडक छे,तेनी मूलजाति पांच छे,ते कहे छे.

१ गुच्छा. २ गुमा. ३ वलया. ४ वल्ली. ५ पतिरण.

हवे एना बे भेद कहे छे.

१ जे एक शरीरमां अनंता जीव होय, ते साधारण वनस्पति. २ जे एक शरीरमां एक जीव होय, ते प्रत्येक वनस्पति. ए रीतें एना पण भेदानुभेद असंख्य छे.

१७ सत्तरमो बेंद्रियनो दंडक छे, तेना भेद कहे छे.

१ शंख. २ कोडा. ३ गंडोला. ४ जलो. ५ अलसीयां.
६ लारीयां. ७ मेहरी. ८ क्रमिया. ए पाणीना पूरा.

१८ अढारमो त्रींद्रियनो दंडक छे, तेना भेद कहे छे.

१ कानखजुरा. २ मांकड. ३ जू. ४ कीडियो. ५ उदेही. ६ मंकोडा
७ ईल. ८ घीमेल. ए सावा. १० गोकीडा. ११ गद्दहीयां. १२ विष्ठाना कीडा.
१३ गोबरना कीडा. १४ धनेडियां. १५ कंथुआ. १६ गोपालिक. १७ इंद्रगोप.

१ए उगणीशमो चौरिंद्रियनो दंडक छे, तेना भेद कहे छे.

१ वींछी. २ ढंकण. ३ भ्रमरा. ४ भ्रमरी. ५ टीड. ६ माखी.
७ डांस. ८ मच्छर. ए पतंगिया. १० कंसारी. ११ कोईवाडा.

२० वीशमो तिर्यंच पंचेंद्रियनो दंडक छे, तेना भेद कहे छे.

१ जलचर. २ स्थलचर. ३ खेचर. ४ उरःपरिसर्प्प. ५ भुजपरिसर्प्प. ए पांच गर्भज तिर्यंच अने एज पांच संमूर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रिय एम सर्व दश भेदें थाय.

२१ एकवीशमो मनुष्यनो दंडक छे, तेना भेद कहे छे.

१५ पंदर कर्मभूमिक्षेत्रना. ३० त्रीश अकर्मभूमिक्षेत्रना. ५६ छप्पन अंतरद्वीपना. ए सर्व मली एकशो ने एक क्षेत्रवासी होवाथी एटलाज भेदो थया.

२२ बावीशमो व्यंतरदेवोनो दंमक छे, ते बे प्रकारें छे.

तिहां एक व्यंतर निकाय, तेना आठ भेद छे.

१ पिशाच. २ भूत. ३ यक्ष. ४ राक्षस. ५ किन्नर. ६ किंपुरुष. ७ महोरग. ८ गंधर्व.

बीजी वाणव्यंतरनिकाय, तेना पण आठ भेद छे.

१ अणपन्नि. २ पणपन्नि. ३ इसिवादी. ४ भूतवादी. ५ कंदी. ६ महाकंदी. ७ कोहंम. ८ पतंग.

२३ त्रेवीशमो ज्योतिषी देवोनो दंमक, पांच प्रकारें छे.

१ चंद्र. २ सूर्य. ३ ग्रह. ४ नक्षत्र. ५ तारा.

२४ चोवीशमो वैमानिक देवोनो दंमक, तेना मूल बे भेद छे.

१ एक कल्प एटले आचारवाला देवो, ते बार देवलोकना भेदें करी बार प्रकारें छे,

ते बार देवलोकनां नाम कहियें छेयें.

१ सौधर्म देवलोक. २ ईशान देवलोक. ३ सनत्कुमार देवलोक. ४ माहेंद्र देवलोक.
५ ब्रह्मदेवलोक. ६ लांतक देवलोक. ७ महाशुक्र देवलोक. ८ सहस्रार देवलोक.
९ आनंत देवलोक. १० प्राणत देवलोक. ११ आरण देवलोक. १२ अच्युत देवलोक.

२ बीजा कल्पातीत एटले जेने विषे स्वामी सेवक संबंध नथी एवा देवो तेनां मूल बे प्रकार छे. एक नव ग्रैवेयकवासी, बीजा पांच अनुत्तरविमानवासी.

तेमां प्रथम नवग्रैवेयकनां नाम कहे छे.

१ सुदर्शन. २ सुप्रतिबद्ध. ३ मनोरम. ४ सर्वतोभद्र. ५ विशाल.
६ सुमनस. ७ सोमनस. ८ प्रितिकर. ९ आदित्य.

हवे पांच अनुत्तरविमाननां नाम कहे छे.

१ विजय. २ विजयंत. ३ जयंत. ४ अपराजित. ५ सर्वार्थसिद्ध.

ए रीतें ए चोवीश दंमकनां भेद सहित नाम कह्यां.

हवें ए प्रत्येक दंमकें पांत्रीश द्वार कहेशे, तेनां नाम लखीयें छेयें.

तिहां पहेलुं शरीरद्वार पांच प्रकारें छे तेना नाम कहे छे.

१ औदारिक शरीर. २ वैक्रिय शरीर. ३ आहारकशरीर. ४ तेजस शरीर. ५ कार्मणशरीर.

२ बीजुं अवगाहनद्वार, ते प्रत्येक दंमकें जघन्य तथा उत्कृष्ट ए बेभेदें शरीरनुं प्रमाण कहेवुं.

३ त्रीजुं संघयणद्वार ते छ प्रकारें छे.

१ वज्रऋषभनाराच संघयण. २ ऋषभनाराच संघयण. ३ नाराच संघयण.
४ अर्द्धनाराच संघयण. ५ कीलिका संघयण. ६ छेवट्ठुं संघयण.

४ चोथुं संज्ञाद्वार, दश प्रकारें छे. तेनां नाम कहे छे.

१ आहारसंज्ञा. २ भयसंज्ञा. ३ मैथुनसंज्ञा. ४ परिग्रहसंज्ञा. ५ क्रोधसंज्ञा. ६ मानसंज्ञा. ७ मायासंज्ञा. ८ लोभसंज्ञा. ९ लोकसंज्ञा. १० ओघसंज्ञा.

तथा नीचें लखेली छ संज्ञा साथें मेळवतां शोळ प्रकार पण थाय छे. तेनां नाम कहे छे.

१ सुखसंज्ञा. २ दुःखसंज्ञा. ३ मोहसंज्ञा. ४ दुगंछासंज्ञा. ५ शोकसंज्ञा. ६ धर्मसंज्ञा.

५ पांचमुं संस्थानद्वार छ प्रकारें छे. तेना नाम कहे छे.

१ समचतुरस्र संस्थान. २ निगोहपरिमंडळ संस्थान. ३ सादि संस्थान. ४ कुब्ज संस्थान. ५ वामन संस्थान. ६ हुंडक संस्थान.

आहीं पंचेंद्रियनां संस्थान कहे छे.

१ स्पर्शेंद्रियनुं नाना प्रकारनुं संस्थान छे. २ रसेंद्रियनुं खुरपा सरखुं संस्थान छे. ३ घ्राणेंद्रियनुं अचंता वृक्षना सरखुं संस्थान छे. ४ चक्षुरिंद्रियनुं मसूरनी दाळ सरखुं अर्द्ध चंद्राकारें संस्थान छे. ५ श्रोत्रेंद्रियनुं कल्पवृक्षना फूल सरखुं संस्थान छे.

६ छठुं कषाय द्वार, ते १ क्रोध. २ मान. ३ माया. अने ४ लोभ. ए चार प्रकारें छे,

७ सातमुं लेश्याद्वार छ प्रकारें छे.

१ कृष्णलेश्या. २नीललेश्या. ३कापोतलेश्या.४ तेजोलेश्या. ५पद्मलेश्या. ६शुक्ललेश्या.

आठमुं इंद्रियद्वार, पांच प्रकारें छे.

१ स्पर्शेंद्रिय. २ रसेंद्रिय. ३ घ्राणेंद्रिय. ४ चक्षुरिंद्रिय. ५ श्रोत्रेंद्रिय.

९ नवमुं समुद्घात द्वार सात प्रकारें छे.

१ वेदना समुद्घात. २ कषाय समुद्घात. ३ मरण समुद्घात. ४ वैक्रिय समुद्घात. ५ तैजससमुद्घात. ६ आहारक समुद्घात. ७ केवलि समुद्घात.

१० दशमुं दृष्टिद्वार. १ सम्यक्दृष्टि. २ मिथ्यादृष्टि. ३ मिश्रदृष्टि. ए त्रण प्रकारें छे.

११ अगीयारमुं दर्शनद्वार, चार प्रकारें छे.

१ चक्षुदर्शन. २ अचक्षुदर्शन. ३ अवधिदर्शन. ४ केवलदर्शन.

१२ बारमुं ज्ञानद्वार आठ प्रकारें छे.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान. ४ मनः पर्यवज्ञान. ५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान. ७ श्रुतअज्ञान. ८ विभंगज्ञान.

ए रीतें पांच ज्ञान ने त्रण अज्ञान मली, आठ प्रकारें ज्ञानद्वार छे.

१३ तेरमुं योगद्वार पन्नर प्रकारें छे.

१ सत्यमनोयोग. २ असत्यमनोयोग. ३ सत्यामृषामनोयोग. ४ असत्यामृषामनोयोग.

५ सत्यवचनयोग. ६ असत्यवचनयोग. ७ सत्यामृषावचनयोग. ८ असत्यामृषावचनयोग.
ए औदारिक काययोग. १० औदारिकमिश्र काययोग. ११ वैक्रियकाययोग.
१२ वैक्रियमिश्र काययोग. १३ आहारक काययोग. १४ आहारकमिश्र काययोग.
१५ कार्मण काययोग. एवं पन्नर योग जाणवा.

चौदमुं उपयोगद्वार. ते पांच ज्ञान, तथा त्रण अज्ञान अने चार दर्शन मली, बार प्रकारें छे.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान. ४ मनःपर्यवज्ञान.
५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान. ७ श्रुतअज्ञान. ८ विभंगज्ञान.
ए चक्षुर्दर्शन. १० अचक्षुर्दर्शन. ११ अवधिदर्शन. १२ केवलदर्शन.

१५ पन्नरमुं उपपात द्वार ते प्रत्येक दंडकने विषे एक समयमां केटला जीव आवी उपजे ? तेनी जघन्य तथा उत्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

१६ सोलमुं च्यवनद्वार ते प्रत्येक दंडकने विषे एक समयमां केटला जीव च्यवे, तेनी जघन्य तथा उत्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

१७ सत्तरमुं आयुष्य ते चार गतिआश्री चार प्रकारें छे. तेमां कया कया दंडकें केटलुं आयुष्य छे ? तेनुं प्रमाण कहेवानुं द्वार.

१८ अढारमुं पर्याप्तिनुं द्वार छ प्रकारें छे.

१ आहारपर्याप्ति. २ शरीरपर्याप्ति. ३ इंद्रियपर्याप्ति.
४ श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति. ५ भाषापर्याप्ति. ६ मनःपर्याप्ति.

१ए उंगणीशमुं दिग्आहार द्वार छ प्रकारें छे.

१ अधोदिशि आहार. २ ऊर्ध्वदिशि आहार. ३ पूर्वदिशि आहार.
४ पश्चिमदिशि आहार. ५ दक्षिणदिशि आहार, ६ उत्तरदिशि आहार.

२० वीशमुं संज्ञा द्वार त्रण प्रकारें छे.

१ दीर्घकालिकी संज्ञा. २ हितोपदेशिकी संज्ञा. ३ दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा.

एकवीशमुं गतिद्वार ते कयादंडकनो जीव मरीने कया कया दंडकमां जाय? ते कहेवानुं द्वार

बावीशमुं आगति ते कया दंडकनें विषे कया दंडकना जीव, आवी उपजे? ते कहेवानुं द्वार.

२३ त्रेवीशमुं वेद द्वार. १ पुरुषवेद. २ स्त्रीवेद. ३ नपुंसकवेद. ए त्रण प्रकारें छे.

२४ चोवीशमुं अल्पाबहुत्वनुं द्वार. अठाणुं प्रकारें छे. ते प्रकार कहे छे.

१ सर्वथकी थोडा गर्भज मनुष्यसंख्याती कोडाकोडी प्रमाण छे, तेमाटें अल्प छे.
२ तेथकी मनुष्यनी स्त्री संख्यातगुणी अधिक छे, एटले सत्त्यावीश गुणी छे. ए बे बोल मली अढीद्वीपमांहेला एकशो ने एक क्षेत्रना मनुष्यनी संख्या कहे छे

(७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६) एटलें सात क्रोड कोडा कोडीकोडी, बाणुं लाख कोडाकोडीकोडी, अठ्यावीश हजार कोडाकोडीकोडी, एक शो कोडाकोडी कोडी, बाशठ कोडाकोडी कोडी, एकावन लाख कोडाकोडी, बहेंता लीश हजार कोडाकोडी, छशो कोडाकोडी, त्रेंतालीश कोडाकोडी, साडत्रीश लाख कोडी, ओगणशाठ हजार कोडी, त्रणशें कोडी, चोपन कोडी, ओगणचालीश लाख, पचास हजार, त्रणशें ने छत्रीश. एटली संख्यायें मनुष्य छे. तेना अठ्यावीश भाग करीयें, तेमां एक भाग जेटला पुरुष छे, अने सत्त्यावीश भाग जेटली स्त्री छे.

३ तेथकी बादर तेउकायपर्याप्ता असंख्यातगुणा एक आवलिकाना समयनो वर्ग करी तेने कांइक न्यून आवलिकाना समयसाथें गुणतां जेटला समय थाय, तेटला छे.

४ तेथकी अनुत्तरविमानवासी देवो असंख्यात गुणा छे. क्षेत्र पल्योपमने असंख्यातमे भागें जेटला आकाशप्रदेश होय तेटला छे.

५ तेथकी उपरला त्रण ग्रैवेयकना देवता संख्यात गुणा छे. विमान घणा छे माटे.

६ तेथकी मध्य त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यात गुणा छे.

७ तेथकी नीचला त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यात गुणा छे.

८ तेथकी अच्युतदेवलोकना देवता संख्यात गुणा छे.

९ तेथकी आरण्यदेवलोकना देवो संख्यात गुणा छे.

१० तेथकी प्राणात देवलोकना देवो संख्यात गुणा छे.

११ तेथकी आनत देवलोकना देवो संख्यात गुणा छे.

१२ तेथकी सातमी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे. घनीकृत लोकनी एक श्रेणिना असंख्याता भागमां जेटला आकाश प्रदेशनी राशि छे, तेटली संख्यायें छे.

१३ तेथकी छठी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे, केम के नरकावासा घणा छे, तथा उत्कृष्ट पापी जीवोथकी हीनपापी जीवो घणा होय ते इहां उपजे.

१४ तेथकी सहस्रार देवलोकना देवो असंख्यात गुणा छे.

१५ तेथकी माहाशुक्र देवलोकना देवता असंख्यात गुणा छे, तिहां विमान घणां छे माटें.

१६ तेथकी पांचमी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे.

१७ तेथकी लांतकदेवलोकना देवता असंख्यात गुणा छे.

१८ तेथकी चोथी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे.

१९ तेथकी ब्रह्मदेवलोकना देवो असंख्यात गुणा छे.

२० तेथकी त्रीजी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे.

५ सत्यवचनयोग. ६ असत्यवचनयोग. ७ सत्यामृषावचनयोग. ८ असत्यामृषावचनयोग.
९ औदारिक काययोग. १० औदारिकमिश्र काययोग. ११ वैक्रियकाययोग.
१२ वैक्रियमिश्र काययोग. १३ आहारक काययोग. १४ आहारकमिश्र काययोग.
१५ कार्मण काययोग. एवं पन्नर योग जाणवा.

चौदमुं उपयोगद्वार. ते पांच ज्ञान, तथा त्रण अज्ञान अने चार दर्शन मली, बार प्रकारें छे.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान. ४ मनःपर्यवज्ञान.
५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान. ७ श्रुतअज्ञान. ८ विभंगज्ञान.
९ चक्षुदर्शन. १० अचक्षुदर्शन. ११ अवधिदर्शन. १२ केवलदर्शन.

१५ पन्नरमुं उपपात द्वार ते प्रत्येक दंमकने विषे एक समयमां केटला जीव आवी उपजे? तेनी जघन्य तथा उत्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

१६ सोलमुं च्यवनद्वार ते प्रत्येक दंमकने विषे एक समयमां केटला जीव च्यवे, तेनी जघन्य तथा उत्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

१७ सत्तरमुं आयुष्य ते चार गतिआश्री चार प्रकारें छे. तेमां कया कया दंमकें केटलुं आयुष्य छे? तेनुं प्रमाण कहेवानुं द्वार.

१८ अढारमुं पर्याप्तिनुं द्वार छ प्रकारें छे.

१ आहारपर्याप्ति. २ शरीरपर्याप्ति. ३ इंद्रियपर्याप्ति.
४ श्वासोश्वासपर्याप्ति. ५ जाषापर्याप्ति. ६ मनःपर्याप्ति.

१९ उंगणीशमुं दिग्आहार द्वार छ प्रकारें छे.

१ अधोदिशि आहार. २ ऊर्ध्वदिशि आहार. ३ पूर्वदिशि आहार.
४ पश्चिमदिशि आहार. ५ दक्षिणदिशि आहार, ६ उत्तरदिशि आहार.

२० वीशमुं संज्ञा द्वार त्रण प्रकारें छे.

१ दीर्घकालिकी संज्ञा. २ हितोपदेशिकी संज्ञा. ३ दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा.

एकवीशमुं गतिद्वार ते कयादंमकनो जीव मरीने कया कया दंमकमां जाय? ते कहेवानुं द्वार.

बावीशमुं आगति ते कया दंमकनें विषे कया दंमकना जीव, आवी उपजे? ते कहेवानुं द्वार.

२३ त्रेवीशमुं वेद द्वार. १ पुरुषवेद. २ स्त्रीवेद. ३ नपुंसकवेद. ए त्रण प्रकारें छे

२४ चोवीशमुं अल्पाबहुत्वनुं द्वार. अढाणुं प्रकारें छे. ते प्रकार कहे छे.

१ सर्वथकी थोडा गर्भज मनुष्यसंख्याती कोडाकोडी प्रमाण छे, तेमाटें अल्प छे
२ तेथकी मनुष्यनी स्त्री संख्यातगुणी अधिक छे, एटले सत्त्यावीश गुणी छे. ए बे बोल मली अढीद्वीपमांहेला एकशो ने एक क्षेत्रना मनुष्यनी संख्या कहे छे

(७९१२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६) एटले सात क्रोड कोडा कोडीकोडी, वाणुं लाख कोडाकोडीकोडी, अठ्यावीश हजार कोडाकोडीकोडी, एक शो कोडाकोडी कोडी, वाशठ कोडाकोडी कोडी, एकावन लाख कोडाकोडी, बहेंताळीश हजार कोडाकोडी, ठशो कोडाकोडी, त्रेंताळीश कोडाकोडी, साडत्रीश लाख कोडी, ठंगणशाठ हजार कोडी, त्रणशें कोडी, चोपन कोडी, ठंगणचालीश लाख, पचास हजार, त्रणशें ने ठत्रीश. एटली संख्यायें मनुष्य ठे. तेना अठयावीश नाग करीयें, तेमां एक नाग जेटला पुरुष ठे, अने सत्त्यावीश नाग जेटली स्त्री ठे.

३ तेथकी बादर तेउकायपर्याप्ता असंख्यातगुणा एक आवलिकाना समयनो वर्ग करी तेने कांइक न्यून आवलिकाना समयसाथें गुणतां जेटला समय थाय, तेटला ठे.

४ तेथकी अनुत्तरविमानवासी देवो असंख्यात गुणा ठे. क्षेत्र पल्योपमनें असंख्यातमे नागें जेटला आकाशप्रदेश होय तेटला ठे.

५ तेथकी उपरला त्रण ग्रैवेयकना देवता संख्यात गुणा ठे. विमान घणा ठे माटे.

६ तेथकी मध्य त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यात गुणा ठे.

७ तेथकी नीचला त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यात गुणा ठे.

८ तेथकी अच्युतदेवलोकना देवता संख्यात गुणा ठे.

९ तेथकी आरण्यदेवलोकना देवो संख्यात गुणा ठे.

१० तेथकी प्राणात देवलोकना देवो संख्यात गुणा ठे.

तेथकी आनत देवलोकना देवो संख्यात गुणा ठे.

१ तेथकी सातमी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा ठे. घनीकृत लोकनी एक श्रेणिना असंख्याता नागमां जेटला आकाश प्रदेशनी राशि ठे, तेटली संख्यायें ठे.

३ तेथकी ठठी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा ठे, केम के नरकावासा घणा ठे, तथा उत्कृष्ट पापी जीवोथकी हीनपापी जीवो घणा होय ते इहां उपजे.

४ तेथकी सहस्रार देवलोकना देवो असंख्यात गुणा ठे.

५ तेथकी महाशुक्र देवलोकना देवता असंख्यात गुणा ठे, तिहां विमान घणां ठे माटें.

६ तेथकी पांचमी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा ठे.

७ तेथकी लांतकदेवलोकना देवता असंख्यात गुणा ठे.

८ तेथकी चोथी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा ठे.

१९ तेथकी ब्रह्मदेवलोकना देवो असंख्यात गुणा ठे.

२० तेथकी त्रीजी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा ठे.

५ सत्यवचनयोग. ६ असत्यवचनयोग. ७ सत्यामृषावचनयोग. ८ असत्यामृषावचनयोग.
ए औदारिक काययोग. १० औदारिकमिश्र काययोग. ११ वैक्रियकाययोग.
१२ वैक्रियमिश्र काययोग. १३ आहारक काययोग. १४ आहारकमिश्र काययोग.
१५ कार्मण काययोग. एवं पन्नर योग जाणवा.

चौदमुं उपयोगद्वार. ते पांच ज्ञान, तथा त्रण अज्ञान अने चार दर्शन मली, बार प्रकारें छे.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान. ४ मनःपर्यवज्ञान.
५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान. ७ श्रुतअज्ञान. ८ विभंगज्ञान.
ए चक्षुर्दर्शन. १० अचक्षुर्दर्शन. ११ अवधिदर्शन. १२ केवलदर्शन.

१५ पन्नरमुं उपपात द्वार ते प्रत्येक दंडकने विषे एक समयमां केटला जीव आवी उपजे? तेनी जघन्य तथा उत्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

१६ सोलमुं च्यवनद्वार ते प्रत्येक दंडकने विषे एक समयमां केटला जीव च्यवे, तेनी जघन्य तथा उत्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

१७ सत्तरमुं आयुष्य ते चार गतिआश्री चार प्रकारें छे. तेमां कया कया दंडकें केटलुं आयुष्य छे? तेनुं प्रमाण कहेवानुं द्वार.

१८ अढारमुं पर्याप्तिनुं द्वार छ प्रकारें छे.

१ आहारपर्याप्ति. २ शरीरपर्याप्ति. ३ इंद्रियपर्याप्ति.
४ श्वासोश्वासपर्याप्ति. ५ भाषापर्याप्ति. ६ मनःपर्याप्ति.

१ए उंगणीशमुं दिग्आहार द्वार छ प्रकारें छे.

१ अधोदिशि आहार. २ ऊर्ध्वदिशि आहार. ३ पूर्वदिशि आहार.
४ पश्चिमदिशि आहार. ५ दक्षिणदिशि आहार, ६ उत्तरदिशि आहार.

२० वीशमुं संज्ञा द्वार त्रण प्रकारें छे.

१ दीर्घकालिकी संज्ञा. २ हितोपदेशिकी संज्ञा. ३ दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा.

एकवीशमुं गतिद्वार ते कयादंडकनो जीव मरीने कया कया दंडकमां जाय? ते कहेवानुं द्वार

बावीशमुं आगति ते कया दंडकनें विषे कया दंडकना जीव, आवी उपजे? ते कहेवानुं द्वार

२३ त्रेवीशमुं वेद द्वार. १ पुरुषवेद. २ स्त्रीवेद. ३ नपुंसकवेद. ए त्रण प्रकारें छे.

२४ चोवीशमुं अल्पाबहुत्वनुं द्वार. अठाणुं प्रकारें छे. ते प्रकार कहे छे.

१ सर्वथकी थोडा गर्भज मनुष्यसंख्याती कोडाकोडी प्रमाण छे, तेमाटें अल्प छे.
२ तेथकी मनुष्यनी स्त्री संख्यातगुणी अधिक छे, एटले सत्त्यावीश गुणी छे. ए बे बोल मली अढीद्वीपमांहेला एकशो ने एक क्षेत्रना मनुष्यनी संख्या कहे छे.

(७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६) एटले सात क्रोड कोडाकोडीकोडी, बाणुं लाख कोडाकोडीकोडी, अठ्यावीश हजार कोडाकोडीकोडी, एक शो कोडाकोडी कोडी, बाशठ कोडाकोडी कोडी, एकावन लाख कोडाकोडी, बहेंतालीश हजार कोडाकोडी, छशो कोडाकोडी, त्रेंतालीश कोडाकोडी, साडत्रीश लाख कोडी, उंगणशाठ हजार कोडी, त्रणशें कोडी, चोपन कोडी, उंगणचालीश लाख, पचास हजार, त्रणशें ने छत्रीश. एटली संख्यायें मनुष्य छे. तेना अठ्यावीश नाग करीयें, तेमां एक नाग जेटला पुरुष छे, अने सत्थावीश नाग जेटली स्त्री छे.

३ तेथकी बादर तेउकायपर्याप्ता असंख्यातगुणा एक आवलिकाना समयनो वर्ग करी तेने कांइक न्यून आवलिकाना समयसाथें गुणतां जेटला समय थाय,तेटला छे.

४ तेथकी अनुत्तरविमानवासी देवो असंख्यात गुणा छे. क्षेत्र पल्योपमनें असंख्यातमे नागें जेटला आकाशप्रदेश होय तेटला छे.

५ तेथकी उपरला त्रण ग्रैवेयकना देवता संख्यात गुणा छे. विमान घणा छे माटे.

६ तेथकी मध्य त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यात गुणा छे.

७ तेथकी नीचला त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यात गुणा छे.

८ तेथकी अच्युतदेवलोकना देवता संख्यात गुणा छे.

९ तेथकी आरण्यदेवलोकना देवो संख्यात गुणा छे.

१० तेथकी प्राणात देवलोकना देवो संख्यात गुणा छे.

तेथकी आनत देवलोकना देवो संख्यात गुणा छे.

१ तेथकी सातमी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे. घनीकृत लोकनी एक श्रेणिना असंख्याता नागमां जेटला आकाश प्रदेशनी राशि छे, तेटली संख्यायें छे.

१ तेथकी छठी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे, केम के नरकावासा घणा छे, तथा उत्कृष्ट पापी जीवोथकी हीनपापी जीवो घणा होय ते इहां उपजे.

४ तेथकी सहस्रार देवलोकना देवो असंख्यात गुणा छे.

५ तेथकी माहाशुक्र देवलोकना देवता असंख्यात गुणा छे,तिहां विमान घणां छे माटें.

६ तेथकी पांचमी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे.

७ तेथकी लांतकदेवलोकना देवता असंख्यात गुणा छे.

८ तेथकी चोथी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे.

१९ तेथकी ब्रह्मदेवलोकना देवो असंख्यात गुणा छे.

२० तेथकी त्रीजी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे.

२१ तेथकी माहेंद्रदेवलोकना देवता असंख्यात गुणा ले.
२२ तेथकी सनत्कुमार देवलोकना देवता असंख्यात गुणा ले.
२३ तेथकी बीजी शर्करप्रना नरक पृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा ले. बारमा बोल थी मांमीने आ त्रेवीशमा बोल पर्यंतना बार बोलमां प्रत्येकें सर्व घनीकृत लोकनी एक श्रेणीने असंख्यातमे नागें जेटला आकाश प्रदेश होय, ते प्रमाणें ले अने एकेकथी असंख्यात गुणा कह्या ले. कारण के असंख्याताना असंख्याता नेद ले तेमाटें एमां विरोधता समजवी नहीं.
२४ तेथकी संमूर्छिम मनुष्य असंख्यात गुणा ले. अंगुल प्रमाण क्षेत्र प्रदेश रासिसंबंधी त्रीजा वर्ग मूलने प्रथम वर्ग मूलसाथे गुणतां जे प्रदेश थाय तेटला ले.
२५ तेथकी ईशानदेवलोकना देवता असंख्यातगुणा ले. अंगुल मात्र आकाश क्षेत्रनी प्रदेशराशि संबंधी बीजो वर्ग मूल तेने त्रीजा वर्ग मूल साथें गुणतां जेटला प्रदेश थाय, तेटली घनीकृत लोकनी एक प्रदेशनी श्रेणियो लेवी, तेने विषे जेटला आकाश प्रदेश होय, तेटला ईशानदेवलोकना देवता ले.
२६ तेथकी ईशानदेवलोकनी वसनारी देवीयो संख्यातगुणी अधिक ले,बत्रीश गुणी ले माटें.
२७ तेथकी सौधर्मदेवलोकना देवता संख्यातगुणा ले, केम के तिहां विमान घणां ले, अने वली दक्षिणदिशियें कृष्णपक्षी जीव घणा ले माटें.
२८ तेथकी सौधर्म देवलोकवासी देवी, बत्रीश गुणी ले, माटें संख्यातगुणी ले.
२९ तेथकी नवनपति देवता असंख्यात गुणा ले. कारण के एक अंगुलमात्र आकाशक्षेत्रनी प्रदेशराशि संबंधी प्रथम वर्गमूल तेने त्रीजा वर्गमूल साथें गुणतां जे प्रदेशराशि थाय, तेटली घनीकृत लोकनी एकप्रादेशिक श्रेणिठने विषे जेटला आकाश प्रदेश होय तेटला ले. इहां यद्यपि प्रदेश असंख्याता ले तथापि असत्कल्पनायें २५६ कल्पीयें तेनो प्रथम वर्ग मूल १६ थाय, बीजो वर्गमूल चार थाय अने त्रीजो वर्गमूल बे थाय माटे शोलने बे साथें गणीयें तेवारें बत्रीश थाय.
३० तेथकी नवनपतिनी देवीयो बत्रीश गुणी ले, माटें संख्यातगुणी ले.
३१ तेथकी पहेला रत्नप्रना नामा नरकपृथ्वीना नारकी असंख्यात गुणा ले, अंगुल प्रमाण आकाशक्षेत्रनी प्रदेशराशि संबंधी प्रथमवर्ग मूल तेने बीजा वर्गमूलनी साथें गणतां जे प्रदेश थाय,तावत् प्रमाण श्रेणियोमां जे आकाश प्रदेश थाय तेटला ले.
३२ तेथकी खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया पुरुष असंख्यात गुणा ले, जेमाटें एकप्रदेशी प्रतरना असंख्यातमा नागमां असंख्याती आकाश प्रदेशनी श्रेणिगत प्रदेश प्रमाण ले.

३३ तेथकी खेंचर पंचेंड्रिय तिर्यंच योनिनी स्त्रीयो त्रिगुणी छे. माटें संख्यात गुणी छे.
३४ तेथकी स्थलचर पंचेंड्रिय योनिया पुरुष संख्यात गुणा छे जेमाटें एक वृहत्प्रतरना असंख्यातमा नागमां जे आकाश प्रदेशनी असंख्याती श्रेणी छे, तेटली श्रेणीमां जेटला आकाश प्रदेश छे, तावत् प्रमाण ए जीवो छे.
३५ तेथकी स्थलचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनि संबंधी स्त्रीयो त्रिगुणी छे, संख्यातगुणी जाणवी.
३६ तेथकी जलचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनिया पुरुष संख्यात गुणा छे,जे माटें अतिप्रचूत एक प्रतरना असंख्यातमा नागमां असंख्य आकाश प्रदेशनी श्रेणीगत जेटला आकाश प्रदेश छे, तावत् प्रमाण छे.
३७ तेथकी जलचर पंचेंड्रिय तिर्यंच योनिवाली स्त्रीयो त्रिगुणी छे, माटें संख्यातगुणी.
३८ तेथकी व्यंतरनिकायना देवो संख्यातगुणा छे, संख्यात कोडाकोडी योजन प्रमाण एक प्रतरनें विषे जेटला सूचीरूप खंम थाय, तावत् प्रमाण छे.
३९ तेथकी व्यंतरदेवीयो संख्यातगुणी छे, बत्रीश गुणी माटें.
४० तेथकी ज्योतिषी देवता संख्यातगुणा छे, एक प्रतरने विषे बसें छप्पन अंगुल प्रमाण एक सूचीरूप खंम एवा जेटला खंम थाय तेटली संख्यायें छे.
४१ तेथकी ज्योतिषिक देवीयो बत्रीश गुणी छे माटें संख्यात गुणी कहेवी.
४२ तेथकी खेचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक संख्यात गुणा छे.
४३ तेथकी स्थलचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक संख्यात गुणा छे.
४४ तेथकी जलचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक संख्यात गुणा छे.
४५ तेथकी चौरिंड्रिय पर्याप्ता संख्यातगुणा छे. एक प्रतरने विषे जेटला एक अंगुलना संख्यातमा नाग प्रमाण वाला जेटला सूचीखंम थाय, तेटला छे.
४६ तेथकी सर्व पंचेंड्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक छे.
४७ तेथकी बेंड्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक छे.
४८ तेथकी त्रींड्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक छे.
४९ तेथकी पंचेंड्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक छे. एक प्रतरमां अंगुलना असंख्यातमा नाग प्रमाण जेटला सूची खंम थाय, तेटला छे.
५० तेथकी चौरिंड्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक छे.
५१ तेथकी त्रींड्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक छे.
५२ तेथकी बेंड्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक छे.
५३ तेथकी प्रत्येक शरीर वाला बादर वनस्पतिकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा छे.

एक प्रनूत प्रतरमां अंगुलना असंख्यातमा नाग प्रमाण जेटला सूचीखंम थायतेटला ढे.
५४ तेथकी बादरनिगोद पर्यासा अनंतकायनां शरीर असंख्यात गुणां ढे. जे माटें संख्याता प्रतरमां एक अंगुलना असंख्याता नाग जेवडा जेटला सूचीखंम समाइ शके, तेटला खंम प्रमाण ढे.
५५ तेथकी बादर पृथ्वीकायिया पर्यासा जीव असंख्यात गुणा ढे, जेमाटें प्रनूत संख्याता प्रतरमध्यें अंगुलना असंख्यात नाग मात्र सूचीखंम जेटला समाइ शके तेटला ढे.
५६ तेथकी बादर अप्कायिया पर्यासा असंख्यात गुणा ढे. जेमाटें अत्यंत प्रनूत संख्याता प्रतर मध्यें अंगुलना असंख्य नागमात्र जेटला सूचीखंम समाइ शके, तेटला ढे.
५७ तेथकी बादरवायुकायिया पर्यासा जीव असंख्यात गुणा ढे, घनीकृत लोकना असंख्याता प्रतरने विषे जेटला आकाश प्रदेश ढे तेटला प्रदेश प्रमाण ढे.
५८ तेथकी बादर तेउकायिया अपर्यासा असंख्यात गुणा ढे, जेमाटें असंख्याता लोकाकाश प्रदेश राशि प्रमाण ढे.
५९ तेथकी प्रत्येक शरीरवाला बादर वनस्पतिकायिया अपर्यासा जीव असंख्यात गुणा ढे.
६० तेथकी बादर निगोदीया अपर्यासाना शरीर असंख्यात गुणा ढे.
६१ तेथकी बादर पृथ्वीकायिया अपर्यासा असंख्यात गुणा ढे.
६२ तेथकी बादर अप्कायिया अपर्यासा असंख्यात गुणा ढे.
६३ तेथकी बादर वायुकायिया अपर्यासा असंख्यात गुणा ढे.
६४ तेथकी सूक्ष्म तेउकायिया अपर्यासा असंख्यात गुणा ढे. सर्वलोक व्यापी माटें.
६५ तेथकी सूक्ष्मपृथ्वीकायिया अपर्यासा विशेषाधिक ढे.
६६ तेथकी सूक्ष्मअप्कायिया अपर्यासा विशेषाधिक ढे.
६७ तेथकी सूक्ष्मवायुकायिया अपर्यासा विशेषाधिक ढे.
६८ तेथकी सूक्ष्म तेउकायिया पर्यासा संख्यात गुणा ढे. इहां ए सूक्ष्म मध्यें स्वनावेंज अपर्यासाथी पर्यासा घणा ढे माटें.
६९ तेथकी सूक्ष्म पृथ्वीकायिया पर्यासा विशेषाधिक ढे.
७० तेथकी सूक्ष्म अप्कायिया पर्यासा विशेषाधिक ढे.
७१ तेथकी सूक्ष्म वायुकायिया पर्यासा विशेषाधिक ढे.
७२ तेथकी सूक्ष्म निगोदनां शरीर अपर्यासा असंख्यात गुणां ढे.
७३ तेथकी सूक्ष्म निगोदनां शरीर पर्यासा संख्यात गुणां ढे.
७४ तेथकी अनव्यसिद्धिया जीव अनंतगुणा ढे. जघन्ययुक्त चोथा अनंता जेटला ढे माटें.

७५ तेथकी पडिवाइ प्रतिपत्ति सम्यग्दृष्टि जीव अनंतगुणा छे.
७६ तेथकी सिद्धना जीव अनंतगुणा छे. मध्यमयुक्त पांचमा अनंता जेटला छे, माटें.
७७ तेथकी बादर वनस्पतिकायिया पर्याप्ता जीव अनंतगुणा छे. जेमाटें एक निगोदने अनंतमे जागें सिद्ध छे,एवा असंख्याता निगोद पर्याप्ता बादर वनस्पतिमांहे छे,माटें.
७८ तेथकी बादर पर्याप्ता जीव विशेषाधिक छे. बादर पर्याप्ता पृथिव्यादिक प्रक्षेपवा थकी.
७९ तेथकी बादर वनस्पतिकायिया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे, जेमाटें एकेक बादर निगोद पर्याप्तानी निश्रायें असंख्याता अपर्याप्ता निश्रें होय, ते माटें.
८० तेथकी बादर अपर्याप्ता विशेषाधिक छे, बादर अपर्याप्ता पृथिव्यादिक प्रक्षेपवाथकी.
८१ तेथकी सर्वपर्याप्ता अपर्याप्ता बादर जीव विशेषाधिक छे.
८२ तेथकी सूक्ष्मवनस्पतिकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा छे,केम के बादर जीवोथी सूक्ष्म घणा छे अने वली सर्व लोकव्यापी छे माटें.
८३ तेथकी सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक छे. केम के सूक्ष्म अपर्याप्ता पृथिव्यादिकने तेमां प्रक्षेपवाथकी विशेषाधिक थाय.
८४ तेथकी सूक्ष्मपर्याप्ता वनस्पतिकायिया जीव संख्यातगुणा छे, केम के सूक्ष्मपर्याप्ता मांहे सूक्ष्म अपर्याप्ता स्वभावें सदैव संख्यात गुणा प्राप्त होय, माटें.
८५ तेथकी सर्व सूक्ष्मपर्याप्ता जीव विशेषाधिक छे.सूक्ष्मपर्याप्ता पृथिव्यादिक साथें भेलवाथी.
८६ तेथकी सर्व पर्याप्ता अपर्याप्ता सूक्ष्मजीव विशेषाधिक छे.
८७ तेथकी भव्यसिद्धिक भव्यजीव विशेषाधिक छे जेमाटें जघन्ययुक्त अनंता प्रमाण अभव्य जीवो छे तेने टालीने बीजा सर्व भव्यजीवो छे ते माटें.
८८ तेथकी निगोदना जीव विशेषाधिक छे, जे भणी निगोदना जीव टाली बीजा सर्व जीव असंख्यात लोकाकाश प्रदेश प्रमाणज छे, माटें.
८९ तेथकी वनस्पतिना जीव विशेषाधिक छे, निगोदमां प्रत्येक वनस्पति प्रक्षेपवाथकी.
९० तेथकी एकेंद्रिय जीव विशेषाधिक छे. वनस्पतिमां वली पृथिव्यादिकना प्रक्षेपवाथकी.
९१ तेथकी तिर्यंचयोनिया विशेषाधिक छे, बेंद्रियादिकना भेलवाथकी.
९२ तेथकी मिथ्यादृष्टि विशेषाधिक छे, ए जीव चारे गतिमां लाभे, माटें.
९३ तेथकी अविरति जीव विशेषाधिक छे, अविरति सम्यग्दृष्टि जीव एमां भलवाथकी.
९४ तेथकी सकषायिजीव विशेषाधिक छे, देशविरत्यादिना भलवाथकी.
९५ तेथकी छद्मस्थ जीव विशेषाधिक छे, उपशांत मोही पण एमां भल्याते थकी.
९६ तेथकी सयोगी विशेषाधिक छे, सयोगी केवलीना भलवा थकी.

८७ तेथकी सर्व संसारी जीव विशेषाधिक छे, एमां अयोगी केवली पण नळ्या.
८८ तेथकी सर्व जीव विशेषाधिक छे, एमां सिद्धना जीव पण नळ्या. इति अल्पबहुत्व समाप्तं॥

२५ पच्चीशमुं चवन द्वार. ते प्रत्येक दंडकने विषे चवन कहेवानुं द्वार जाणवुं.

२६ छवीशमुं विरहकालद्वार. एटले अमुक दंडकें जघन्य तथा उत्कृष्टथी अमुक काल पर्यंत कोइ जीव मरे नहीं अथवा उपजे नही, ते विचार कहेवानुं द्वार.

२७ सत्त्यावीशमुं चवद गुणगणानुं द्वार. चौद प्रकारें छे.

१ मिथ्यात्व. २ सास्वादन. ३ मिश्र गुणगणुं. ४ अविरतिसम्यग्दृष्टि.
५ देशविरति. ६ प्रमत्त. ७ अप्रमत्त. ८ अपूर्वकरण.
९ अनिवृत्ति. १० सूक्ष्मसंपराय. ११ उपशांतमोह.
१२ क्षीणमोह. १३ सयोगीकेवली. १४ अयोगी केवली.

२८ अठ्यावीशमुं प्राणद्वार दश प्रकारें छे.

१ स्पर्शेंद्रिय. २ रसेंद्रिय. ३ घ्राणेंद्रिय. ४ चक्षुरिंद्रिय. ५ श्रोत्रेंद्रिय.
६ कायबल. ७ वचनबल. ८ मनोबल. ९ श्वासोश्वास. १० आयु.

२९ उगणत्रीशमुं संयतिद्वार, त्रिजंगी पूर्वक आठ प्रकारें छे.

१ संयती, २ व्रती, ३ पच्चरकाणी, ४ पंडिया,
५ संवुडा, ६ जगरा, ७ धम्मिया, ८ धम्मविवसाइया.

---

१ असंयति, २ अव्रती, ३ अपच्चरकाणी. ४ बाला.
५ असंवुडा, ६ च्युता, ७ अधम्मिया, ८ अधम्मविवसाइया.

---

१ संयतासंयती, २ व्रताव्रती, ३ पच्चरकाणापच्चरकाणी. ४ बालापंडिया.
५ संवुडाअसंवुडा, ६ च्युताजगरा, ७ धम्माधम्मीया, ८ धम्माधम्मविवसाइया.

---

३० त्रीशमुं आहारद्वार, त्रण प्रकारें छे. १ सचित्ताहार. २ अचित्ताहार. ३ कवलाहार.
३१ एकत्रीशमुं आहारजातिनो द्वार त्रण प्रकारें छे. १ उजाहार. २ लोमाहार. ३ कवलाहार.
३२ बत्रीशमुं आहारनी इच्छानुं द्वार. ते प्रत्येक दंडकवालाने जघन्य तथा उत्कृष्टथी केटले कालें आहार लेवानी इच्छा थाय? तेनो विवरो कहेवो, ते आहार इच्छाद्वार.
३३ तेत्रीशमुं कायस्थितिनुं द्वार. ते प्रत्येक दंडकवालाने पोतानी कायाने विषे अनुक्रमें पुनः पुनः उपजवुं, केटली वार थाय? तेना कालनुं प्रमाण कहेवुं.
३४ चोत्रीशमुं योनिद्वार, ते चोराशी लाख नेदें प्रसिद्ध छे.
३५ पांत्रीशमुं कुलकोडिद्वार, ते प्रत्येक दंडकमां केटला लाख कुलकोडि छे? एम कहेवानुं द्वार. ए रीतें पांत्रीश द्वारनां नाम कह्यां.

हवे पूर्वोक्त चोवीश दंमकमांना प्रत्येक दंमकें ए पांत्रीश घार कहियें बैयें.

१ तिहां प्रथम सात नारकीना दंमकें पांत्रीश घार कहे बे.

१ वैक्रिय, तैजस ने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.

२ अवगाहना नवधारणीय शरीर जघन्य थी मांमीनत्कृष्ट पांचशें धनुष्य होय तथा नत्तर वैक्रिय शरीर तेथी बमणुं होय. तेमां जघन्यथी साडा पन्नर धनुष्य ने बार अंगुल अने नत्कृष्टुं एक हजार धनुष्य होय. नपजतां नवधारणीय अंगुलनो असंख्यातमो नाग होय अने नत्तर वैक्रिय अंगुलनो संख्यातमो नाग होय.

३ नारकीने संघयण नथी. असंघयणी बे.

४ संज्ञा आश्रयी संज्ञा, दश पण होय, अथवा शोल होय.

५ नारकीने हुंमसंस्थान होय.

६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.

७ नारकीने कृष्ण, नील अने कापोत, ए त्रण लेश्या होय.

८ इंड्रियो पांचे होय.

९ वेदना, कषाय, मरण अने वैक्रिय ए चार समुद्घात होय.

१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय. सम्यक्त्व, मिश्र अने मिथ्यात्व.

११ चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन अने अवधि दर्शन, ए त्रण दर्शन होय.

१२ मत्यादि त्रण ज्ञान तथा त्रण अज्ञान होय.

१३ मनना चार योग, वचनना चार योग, तथा कायना त्रण योग, वैक्रियकाययोग, वैक्रियमिश्रकाययोग तथा कार्मण काययोग मलीने अगीयार योग होय.

१४ नपयोग प्रथमना त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने चक्षुरादिक त्रण दर्शन सर्व मलीने नव होय.

१५ नपपात एक समयमां जघन्यथी एक, बे, त्रण, जीव नपजे अने नत्कृष्टथी संख्याता असंख्याता जीव पण नपजे.

१६ नपपातनी परें च्यवनघार पण समजवुं. एटले जेम नपजे, तेम चवे.

१७ आयुष्य जघन्यथी दश हजार वर्ष, नत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपम जाणवुं.

१८ पर्याप्ति ब होय, परंतु नाषा अने मन ए बे पर्याप्ति साथेंज नपजे, तेथी प्रकारांतरें पांच पर्याप्ति पण कहेवाय.

१९ आहार, ब दिशिनो लिये बे.

२० दीर्घकालिकी संज्ञा एकज होय.

२१ चवीने गर्नज मनुष्य तथा गर्नज तिर्यंच ए बे दंमकमां आवे.

२२ तिर्यंच पंचेंड्रिय तथा गर्नज मनुष्य ए दंमकना जीवो नारकीमां आवी नपजे.

२३ वेदघारमां नारकीने एक नपुंसक वेद होय.

२४ अल्प बहुत्वमां सर्वथकी थोडा, सातमी नरकपृथ्वीना नारकी जाणवा. पबी अल्पपापना सेवनार घणा माटें तेथकी बहीना असंख्यातगुणाधिक, तेथकी पांचमीना असंख्यात गुणाधि

क. तेथकी चोथीना असंख्यातगुणा धिक, तेथकी त्रीजीना असंख्यातगुणाधिक, तेथकी बीजीना असंख्यात गुणाधिक. तेथकी पहेलीना असंख्यातगुणाधिक जाणवा.

२५ जवनद्वारआश्री साते नरक पृथिवीना मली, उगणपचास प्रतर अने चोराशी लाख नरकावासा जाणवा.

२६ उवीशमा विरहकाल द्वारमां जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो ब महिनानो विरह जाणवो. प्रथम नरकें जघन्य एक समय उत्कृष्ट चोवीश मुहूर्त. बीजीमां सात दिवस, त्रीजीमां पंदर दिवस, चोथीमां एक मास, पांचमीमां बे मास, उठीमां चार मास, अने सातमीमां ब मास. तथा जघन्यथी सर्वेमां एक समय.

२७ गुणठाणा प्रथमना चार लाजे.

२८ नारकीने दश प्राण जाणवां.

२९ संयतिद्वार आश्री असंयती, अव्रती, अपच्चरकाणी, बाला, असंवुमा, च्युता, अधार्मिक अने अधर्मव्यवसायिका. ए आठ जांगा होय.

३० आहारद्वारमां नारकी जीवो एकज अचेत आहार लिये.

३१ आहार जातिना द्वारमां नारकीने उजाहार अने लोमाहार. ए बे रीतें आहार लेवानुं होय.

३२ आहारनी इन्ना आश्रयी साते नरक पृथ्वीना नारकीने जघन्यथी एक समयें अने उत्कृष्टी अंतर मुहूर्तें उपजे.

३३ कायस्थितिआश्री जेटली जवस्थिति होय, तेटलो काल कायस्थिति पण जाणवी. कारण के नरकनो जीव मरीने फरी नरकमां न जाय.

३४ योनिद्वार आश्रयी नारकी जीवोनी चार लाख योनि उपजवानी जाणवी.

३५ कुलकोडीद्वार आश्रयी नारकी जीवोना पच्चीश लाख कोडी कुल जाणवां.

ए नरकाश्री पांत्रीशद्वारनो विचार कह्यो.

---

११ हवे दश जवन पतिना दश दंमकने विषे पांत्रीश द्वार कहे वे.

१ शरीरद्वार आश्रयी, वैक्रिय तेजस ने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.

२ अवगाहनाद्वार आश्रयी उपजतां वखत, अंगुलनो असंख्यातमो जाग शरीर होय. पढी उत्कृष्ट, सात हाथनुं शरीर होय. अने उत्तरवैक्रिय करे तो एक लाख योजन सुधी करे.

३ संघयण आश्रयी देवोने कोइ पण संघयण नथी असंघयणी बे माटें.

४ संज्ञा आश्रयी दश अथवा शोल होय.

५ संस्थानआश्रयी देवोने एकज समचतुरस्र संस्थान होय.

६ कषायाश्रयी क्रोधादिक चारे कषाय होय.

७ लेश्या आश्रयी कृष्ण, नील, कापोत अने तेजो, ए चार लेश्या होय.

ए इंड्रिय आश्रयी पांचे इंड्रिय होय.
ए समुद्घात आश्रयि वेदना, कषाय, मरण, वैक्रिय अने तैजस, ए पांच होय.
१० दृष्टि सम्यक्त्वादिक सम्यक्व, मिथ्यात्व अने मिश्र. ए त्रणे होय.*
११ दर्शन, आश्रयी चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अने अवधिदर्शन, ए त्रण होय.
१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान.
१३ योग आश्रयी नारकीनी पेरें चार मनना, चार वचनना अने त्रणा कायना मलीने ए अगीयार योग होय.
१४ उपयोगद्वार आश्रयी प्रथमना त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने प्रथमनां त्रण दर्शन. ए रीतें नव उपयोग होय.
१५ जघन्यथी एक समयमां एक,बे, त्रण, उपजे अने उत्कृष्टपणे संख्याता अथवा असंख्याता पण एकसमयमां उपजे.
१६ उपजवानी पेरें च्यवनद्वार पण जाणवुं.
१७ आयुष्यद्वार आश्रयी, जघन्यथी दश हजार वर्ष, अने उत्कृष्ठ, एक सागरोपम जाजेरुं आयुष्य जाणवुं.
१८ पर्याप्ति छ होय परंतु नाषा अने मन, ए बे पर्याप्ति सार्थे होय. तेथी प्रकारांतरें पांच पण कहेवाय.
१ए आहारआश्री नवनपति देवो छए दिशिनो आहार लिये छे.
२० संज्ञामां एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.
२१ च्यवीने मनुष्य, तिर्यंच पंचेंड्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय अनें वनस्पतिकाय, ए पांच दंमकने विषे जाय.
२२ एक गर्नेज मनुष्य अने बीजा तिर्यंच पंचेंड्रिय, ए बे दंमकवाला आवी,नवनपतिनी दशे निकायने विषे उपजे.
२३ वेदमां पुरुषवेद अने स्त्रीवेद,ए बे होय.
२४ अल्पबहुत्वमां सौधर्म, देवलोकनी देवी योथकी असंख्यात गुणा छे.
२५ नवनद्वारमां दशे निकायना वीश इंड्रना नवननी संख्या ७७२०००००छे.
२६ विरहकाल, जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टो चोवीश मुहूर्त्त जाणवो.
२७ गुणगणां आश्रयी प्रथमनां चार होय.
२८ प्राणद्वारआश्रयी एमने दशे प्राण होय.
२ए संयतीना ८ नांगा नारकीनी पेरें होय.
३० आहारआश्री अचित्ताहार लिये.
३१ उंजाहार नें लोमाहार बे आहार करे.
३२ दश हजार वर्षना आयुष्य वालाने चोथ नत्तें आहारनी इछा उपजे. पल्योपमना आयुष्यवालाने दिवस पृथक्त्वें आहारनी इछा उपजे. एक सागरोपम आयुवालाने एक हजार वर्षें आहारनी इछा उपजे. सागरोपम जाजेरा आयुष्यवालाने हजार वर्ष जाजेरे आहारनी इछा उपजे.
३३ नवनपति मरीने नवनपति न थाय. माटें जेटली नवस्थिति होय, तेटली ज एमनी कायस्थिति पण जाणवी,
३४ नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी ने वैमानिक,ए चारे निकायना देवोनी चार लाख योनि उपजवानी कही छे.
३५ ए देवोना तेरे दंमकने विषे छवीश लाख कोडी कुल जाणवां.

१२ हवे बारमा पृथ्वी कायना दंमकने विषे पांत्रीश घार कहे छे.

१ औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ अवगाहना जघन्य तथा उत्कृष्टी अंगुलनो असंख्यातमो जाग होय.
३ एक छेवट्ठुं संघयण होय.
४ संज्ञा, आहार, जय, मैथुन अने परिग्रह,ए चार अथवा दश होय.
५ एक हुंमक संस्थान मसूरने आकारें छे.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ अपर्याप्ताने प्रथमनी चार लेश्याओ होय अने पर्याप्ताने कृष्ण,नील ने कापोत,ए त्रण लेश्या होय.
८ इंडियघारें एक स्पर्शेंडियज होय.
ए समुद्घात घार आश्रयी वेदन, कषाय ने मरण, ए त्रण समुद्घात होय.
१० दृष्टि आश्रयी एक मिथ्यादृष्टि होय.
११ दर्शन आश्रयी एक अचकुदर्शन होय.
१२ ज्ञानघार आश्रयी मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञान, ए बे अज्ञान होय.
१३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग अने कार्मणकाययोग, ए त्रण योग होय. मन अने वचन एने नथी.
१४ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने अचकुदर्शन,ए त्रण उपयोग होय.
१५ उपपात घार आश्रयी एक समयमां असंख्याता पृथिवीकाय जीव उपजे.
१६ एक समयमां असंख्यात जीव च्यवे.
१७ जघन्य, अंतरमुहूर्त अने उत्कृष्ट बावीश हजार वर्षनुं आयुष्य जाणवुं.
१ सुनानुं हजार वर्ष.
२ सुधानुं बार हजार वर्ष.
३ वालुकानुं चौद हजार वर्ष.
४ मणसिलनुं शोल हजार वर्ष.
५ शर्करानुं अढार हजार वर्ष.
६ खरपुढवीनुं बावीश हजार वर्ष.
१८ आहार, शरीर, इंडिय अने श्वासोश्वास. ए चार पर्याप्ति होय.
१ए आहारघारआश्रयी त्रण. चार, पांच अथवा ढ दिशिनो आहार लिये.
२० त्रण संज्ञामांहेली कोइ पण संज्ञा ए दंमकें न होय.
२१ पृथिवीकाय मरीने पांच स्थावरना पांच दंमक तथा विकलेंडियना त्रण दंमक, पंचेंडियतिर्यंचनो दंमक अने मनुष्यनो दंमक, ए दश दंमकमां जइ उपजे.
२२ नारकी वर्जीने बाकी त्रेवीशे दंमकना जीव, पृथिवीकायमां आवी उपजे.
२३ एकज नपुंसक वेद होय. परंतु स्त्री अने पुरुष ए बे वेद एमां नथी.
२४ अल्पबहुत्वमां त्रींडियथकी पृथिवीकायिया जीव अधिक छे.
२५ च्यवनघारें पृथिवीकायमां च्यवन नथी.
२६ ए दंमकने विषे विरहकाल पण नथी.
२७ ए दंमकने विषे एकज मिथ्यात्व गुणगणुं लाजे. केम के सर्वे मिथ्यादृष्टि छे.

२८ स्पर्शेंद्रिय, कायबल. श्वासोश्वास अने आयु, ए चार प्राण होय.
२९ नारकीनी पेरें संयतीना आठ नांगा होय.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ उज अने लोमे करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इछा उपजे.
३३ सूक्ष्म पृथिवीकायनी कायस्थिति जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालनी जाणवी. बादरपृथिवीकायनी कायस्थिति जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टी सितेर कोडाकोडी सागरोपमनी जाणवी.
३४ सात लाख योनि जाणवी.
३५ बार लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१३ हवे तेरमा अप्कायना दंमकने विषे पांत्रीश घार कहे छे.

१ शरीरघार आश्रयी औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य अने उत्कृष्टी अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो नाग होय.
३ एक छेवटुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ एक हुंम संस्थान पाणीना परपोटाने आकारें होय.
६ क्रोधादिक चारे कषाय, ए दंमकें होय.
७ अपर्याप्ताने प्रथमनी चार लेश्या होय, अने पर्याप्ताने प्रथमनी कृष्ण, नील ने कापोत ए त्रण लेश्या होय,
८ एक स्पर्शेंद्रियज होय, एकेंद्रिय छे माटें.
९ समुद्घात आश्रयी वेदना, कषाय ने मरण ए त्रण समुद्घात होय.
१० दृष्टिघारमां एकज मिथ्यादृष्टि होय.
११ दर्शनघारमां एक अचक्षुदर्शन होय.
१२ मति अने श्रुत, ए बे अज्ञान होय.
१३ योगघार आश्रयी औदारिक काययोग, औदारिक मिश्रकाययोग अने कार्मण काययोग, ए त्रण योग होय.
१४ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने अचक्षुदर्शन. ए त्रण उपयोग होय.
१५ एक समयमां असंख्याता जीव उपजे.
१६ एक समयमां असंख्याता मरण पामे.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट सात हजार वर्षायु होय.
१८ पर्याप्ति, आहार, शरीर, इंद्रिय अने श्वासोश्वास, ए चार होय.
१९ आहारआश्रयी त्रण, चार, पांच अथवा छ दिशिनो आहार लीये.
२० दीर्घकालादिक कोइ पण संज्ञा न होय.
२१ ए दंमकवालाजीव पण पृथिवीकायनी पेरें दश दंमकने विषे जाय.
२२ एक नारकी वर्जी बाकी त्रेवीश दंमकना जीवो अप्कायमां आवी उपजे.
२३ वेद आश्रयी एकज नपुंसक वेद होय.
२४ अल्प बहुत्वमां पृथ्वीकायथी अप्कायिक. जीव अधिक छे.
२५ अप्कायनें चवन नथी.
२६ विरहकाल पण नथी.
२७ एकज मिथ्यात्व गुणगाणुं जाणे.

२८ पृथिवीकायनी पेरें चार प्राण होय.
२९ एसंयतीना आठ नांगा, नारकी पेरें जाणवा
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ उंज अने लोमें करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इच्छा उपजे.
३३ कायस्थिति पृथिविकायनी पेरें जाणवी.
३४ सात लाख जीवायोनि जाणवी.
३५ सात लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१४ हवे तेउकायना दंमकें पांत्रीश धार कहे छे.

१ शरीर आश्रयी औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य तथा उत्कृष्टी अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो नाग होय.
३ एकज छेवटुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ हुंम संस्थान सूइनी अणीने आकारें.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील ने कापोत, त्रण लेश्या होय.
८ एक स्पर्शेंद्रिय होय.
९ प्रथमनी त्रण समुद्घात होय.
१० एकज मिथ्यादृष्टि होय.
११ एकज अचक्षुदर्शन होय.
१२ मति अने श्रुत, ए बे अज्ञान होय.
१३ औदारिक काययोग, औदारिक मिश्र काययोग अने कार्मणकाययोग, ए त्रण योग होय.
१४ प्रथमनां बे अज्ञान अने अचक्षुदर्शन ए त्रण उपयोग होय.
१५ एक समयमां असंख्याता जीव उपजे.
१६ एक समयमां असंख्याता जीव च्यवे.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट त्रण अहोरात्रिनुं आयुष्य होय.
१८ प्रथमनी चार पर्याप्ति होय.
१९ आहार आश्रयी त्रण, चार, पांच अथवा छ दिशिनो आहार लीये.
२० दीर्घ कालादिक त्रणे संज्ञारहित होय.
२१ मरीने पांच स्थावर, त्रण विकलेंद्रिय अने एक तिर्यंच, पंचेंद्रियनो दंमक मलीने नवदंमकने विषे जाय.
२२ एमां दश दंमकना जीवो आवी उपजे.
२३ एमां एकज नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्व अछाणुं बोलमां कह्युं छे.
२५ जुवन ए दंमकमां नथी.
२६ विरहकाल नथी. निरंतर उपजे छे.
२७ एकज मिथ्यात्व गुणगणुं लान्ने.
२८ स्पर्शेंद्रिय, कायबल, श्वासोश्वास अने आयु, ए चार प्राण होय.
२९ एसंयतीना नारकीनी पेरें आठ नांगा होय.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ उंज अने लोमें करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इच्छा उपजे.
३३ कायस्थिति पृथिवीकायनी पेरें जाणवी.
३४ सात लाख योनि उपजवानी छे.
३५ त्रण लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१५ हवे पन्नरमा वायुकायना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ औदारिक, वैक्रिय,तैजस अने कार्मण, ए चार शरीर होय.
२ जघन्योत्कृष्ट अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो जाग होय.
३ एकज छेवठुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ हुंमसंस्थान, ध्वजा ने पताकाने आकारें.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण,नील ने कापोत,ए त्रण लेश्या होय.
८ एक स्पर्शेंद्रिय होय.
९ प्रथमना चार समुद्धात होय.
१० एकज मिथ्यादृष्टि होय.
११ एकज अचक्षुदर्शन होय.
१२ मति अने श्रुत, ए बे अज्ञान होय.
१३ औदारिककाययोग, औदारिक मिश्र काययोग, वैक्रियकाययोग, वैक्रियमिश्र काययोग अने कार्मणकाययोग. ए पांच योग होय.
१४ प्रथमनां बे अज्ञान अने एक अचक्षु दर्शन, ए त्रण उपयोग होय.
१५ एक समयमां असंख्याता उपजे.
१६ एक समयमां असंख्याता च्यवे.
१७ जघन्यथी अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टुं त्रण हजार वर्षायु होय.
१८ प्रथमनी चार पर्याप्ति होय.
१९ त्रण, चार, पांच अथवा छ दिशिनो पण आहार लीये.
२० दीर्घकालादिकी त्रणे संज्ञा रहित होय.
२१ तेउकायनी पेरें नव दंमकने विषे जाय.
२२ पांच स्थावर, त्रण विकलेंद्रिय,पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य,ए दश दंमकवाला जीवो एमां आवी उपजे.
२३ वेदद्वारें एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वद्वारमां अप्कायथकी वायुकायिया जीव अधिक छे.
२५ ए दंमकें च्यवन नथी.
२६ विरहकाल नथी.
२७ एकज मिथ्यात्व गुणगणुं लाजे.
२८ तेउकायनी पेरें चार प्राण होय.
२९ नारकीनी पेरें संयतीना आठ बोल छे.
३० सचित्तादिक त्रण प्रकारनो आहार लीये.
३१ उज अने लोमें करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति पृथिवीकायनी पेरें जाणवी.
३४ सात लाख जीवा योनि छे.
३५ बार लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१६ हवे सोलमा वनस्पतिकायना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो जाग उत्कृष्टी एक हजार योजन प्रमाण शरीरनी अवगाहना जाणवी.
३ एकज छेवठुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ हुंमसंस्थान नाना प्रकारना आकारनुं.

६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील, कापोत अने तेजो. ए चार लेश्या अपर्याप्ताने होय, अने पर्याप्ताने पहेली त्रण लेश्या होय.
८ एक स्पर्शेंद्रियज होय.
९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
१० एकज मिथ्यादृष्टि होय.
११ एकज अचक्षुदर्शन होय.
१२ मति अने श्रुत, ए बे अज्ञान होय.
१३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग अने कार्मणकाययोग, ए त्रण योग होय.
१४ तेउकायनी पेरें त्रण उपयोग होय.
१५ एक समयमां अनंता जीव उपजे.
१६ एक समयमां अनंता जीव च्यवे.
१७ जघन्य अंतर मुहूर्त्त अने उत्कृष्ट दश हजार वर्षायु होय.
१८ प्रथमनी चार पर्याप्ति होय.
१९ त्रण, चार, पांच अथवा छ दिशिनो आहार लीये.
२० दीर्घकालादिक संज्ञा रहित होय.
२१ पांच स्थावरना, त्रण विकलेंद्रियना, एक तिर्यंच पंचेंद्रियनो अने एक मनुष्यनो. ए रीतें दश दंरुकने विषे जइ उपजे.
२२ नारकी वर्जिने बाकी त्रेवीश दंरुकवाला जीवो, ए दंरुकमां आवी उपजे.
२३ एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां वायुकायथी वनस्पति कायिया जीव अधिक छे.
२५ च्यवन नथी.
२६ विरहकाल नथी.
२७ एकज मिथ्यात्व गुणगणुं लाने.
२८ तेउकायनी पेरें चार प्राण होय.
२९ संयतीना आठ नेद नारकीनी पेरें.
३० सचित्तादिक त्रण प्रकारनो आहार लीये.
३१ उज अने लोमें करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति प्रत्येक वनस्पति आश्रयी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी होय अने अनंतकाय आश्रयी अनंती उत्सर्पिणी ने अवसर्पिणी होय.
३४ प्रत्येकनी दश लाख अने साधारणनी चौदलाख मली चोवीश लाखयोनि छे.
३५ अठ्यावीश लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१७ हवे सत्तरमा बे इंद्रियना दंरुकें पांत्रीश घार कहे छे.

१ औदारिक, तैजस ने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ अवगाहना जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो नाग अने उत्कृष्टी बार योजन होय.
३ एकज छेवठुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ एकज हुंरुसंस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील अने कापोत, ए त्रण लेश्या.
८ स्पर्शेंद्रिय अने रसेंद्रिय, ए बे इंद्रिय होय.
९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
१० सम्यक् अने मिथ्या, ए बे दृष्टि होय.

११ एकज अचक्षुदर्शन होय.
१२ अपर्याप्तावस्थायें कोइएकने मति अने श्रुत ए बे ज्ञान होय अने एज बे अज्ञान पण होय. तथा पर्याप्तावस्थायें तो बे अज्ञानज होय.
१३ औदारिककाययोग, औदारिक मिश्र काययोग, कार्मणकाययोग अने असत्यअमृषा वचनयोग, ए चार योग होय.
१४ कोइएक अपर्याप्ताने प्रथमनां बे ज्ञान, बे अज्ञान अने अचक्षुदर्शन. ए पांच उपयोग होय, अने पर्याप्ताने बे ज्ञान न होय, माटें त्रणज उपयोग होय.
१५ एक समयमां जघन्य, एक, बे, त्रण जीव उपजे अने उत्कृष्टथी संख्याता अथवा असंख्याता जीव आवी उपजे.
१६ उपजवानी पेरें मरण पण जाणी लेवुं.
१७ आयुष्य आश्रयी जघन्य अंतर मुहूर्त्त अने उत्कृष्टथी बार वर्षायु होय.
१८ मनःपर्याप्ति वर्जीने पांच पर्याप्ति होय.
१९ छ दिशिनो आहार लीये.
२० एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय.
२१ वनस्पतिनी पेरें दश दंडकमां जइ उपजे.
२२ दश दंडकना जीव एमां आवी उपजे.
२३ एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां पंचेंद्रिय तिर्यंचथकी बेंद्रिय जीव अधिक होय.
२५ चवन नथी.
२६ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो एक मुहूर्त्त विरहकाल होय.
२७ एमां मिथ्यात्व अने सास्वादन ए बे गुण ठाणां लाभे.
२८ स्पर्शेंद्रिय, रसेंद्रिय, वचनबल, कायबल, श्वासोश्वास अने आयु. एछ प्राण होय.
२९ संयतीना आठ भेद नारकीनी पेरें.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ उजादिक त्रणे प्रकारें आहार लीये.
३२ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी अंतरमुहूर्त्तें आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति संख्याता वर्षनी जाणवी.
३४ बे लाख योनि जाणवी.
३५ सात लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१८ हवे अढारमा त्रींद्रियना दंडकें पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ औदारिक, तैजस अने कार्म्मण. ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्टो त्रण गाउनी अवगाहना.
३ एकज छेवटुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ एकज हुंडसंस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील अने कापोत. ए त्रण लेश्या होय.
८ स्पर्शेंद्रिय रसेंद्रिय अने घ्राणेंद्रिय, ए त्रण इंद्रियो होय.
९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
१० सम्यक् अने मिथ्या, ए बे दृष्टि होय.

११ एकज अचक्कुदर्शन होय.
१२ ज्ञान द्वींद्रियनी पेरें जाणी लेवुं.
१३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग अने असत्य अमृषा वचनयोग,ए चार योग होय.
१४ द्वींद्रियनी पेरें उपयोग जाणवा.
१५ द्वींद्रियनी पेरें उपपात जाणवो.
१६ उपपातनी पेरें च्यवन पण जाणवुं.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टुं उंगणपचास-दिवसायु जाणवुं.
१८ मनःपर्याप्ति वर्जीने पांच पर्याप्ति होय.
१ए ढ दिशिनो आहार लीये.
२० एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय.
२१ वनस्पतिनी पेरें दश दंमकमां जइ उपजे.
२२ दश दंमकवाला जीवो एमां आवी उपजे.
२३ एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां बेंद्रियथकी तेंद्रियजीव अधिक होय.
२५ नवन नथी.
२६ जघन्य एक समयने उत्कृष्टो एक मुहूर्त्त विरहकाल होय.
२७ प्रथमना बे गुणठाणां लाने.
२८ स्पर्शेंद्रिय, रसेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, वचनबल, कायबल, श्वासोश्वास अने आयु, ए सात प्राण होय.
२ए संयतीना आठ नंग, नारकीनी पेरें.
३० सचित्तादिक त्रणेप्रकारनो आहार लीये.
३१ उंजादिक त्रणे प्रकारें आहार लीये.
३२ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी एक अंतरमुहूर्त्तें आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति संख्याता दिवसनी जाणवी.
३४ बे लाख योनि ढे.
३५ आठ लाख कोडि कुल जाणवां.

१ए हवे उंगणीशमा चउरिंद्रियना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे ढे.

१ औदारिक, तैजस अने कार्मण,ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो नाग अने उत्कृष्टी चार गाउनी अवगाहना.
३ एकज बेवढुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ एकज हुंमसंस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील ने कापोत ए त्रण लेश्या.
८ स्पर्श,रस,घ्राणनेचक्कु,एचार इंद्रियोहोय.
ए प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
१० सम्यक् अने मिथ्या, ए बे दृष्टि होय.
११ चक्कु ने अचक्कु, ए बे दर्शन होय.
१२ ज्ञान, द्वींद्रियनी पेरें जाणी लेवुं.
१३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग अने असत्य अमृषावचनयोग. ए चार योग होय.
१४ अपर्याप्ता लगें कोइकने प्रथमनां बे ज्ञान, बे अज्ञान अने बे दर्शन. ए ढ उपयोग होय, अने पर्याप्ताने प्रथमना बे ज्ञान विना चार उपयोग होय.
१५ द्वींद्रियनी पेरें उपपात जाणवो.

१६ उपपातनी पेरें च्यवन पण जाणवुं.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त, उत्कृष्टुं ब मासायु.
१८ मनःपर्याप्ति वर्जीने पांच पर्याप्ति होय.
१९ ब दिशिनो आहार लीये.
२० एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय.
२१ वनस्पतिनी पेरें दश दंमकमां जाय.
२२ एमां दश दंमकवाला जीवो आवी उपजे.
२३ एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां ज्योतिषी देवोथकी चौरिंड्रिय जीव अधिक होय.
२५ नवन नथी.
२६ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो एक मुहूर्त्त विरहकाल होय.
२७ प्रथमनां बेज गुणागणां लान्ने.
२८ स्पर्शेंड्रिय, रसेंड्रिय, घ्राणेंड्रिय, चक्षुरिंड्रिय, वचनबल, कायबल, श्वासोश्वास अने आयु. ए आठ प्राण होय.
२९ संयतीना आठ नंग नारकीनी पेरें बे.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ उजादिक त्रणे प्रकारें आहार लीये.
३२ जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट एक अंतर मुहूर्त्तें आहारनी इज्ञा उपजे.
३३ कायस्थिति संख्याता मासनी जाणवी.
३४ बे लाख योनि बे.
३५ नव लाख कोडी कुल जाणवां.

---

२० हवे वीशमा पंचेंड्रिय तिर्यंचना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे बे.

१ संमूर्ब्बिमने औदारिक,तैजस अने कार्मण. ए त्रण शरीर होय. तथा गर्नजने औदारिक, वैक्रिय, तैजस अने कार्मण, ए चार शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो नाग अने उत्कृष्टो एक हजार योजन शरीर,तेमां गर्नज जलचरनुं हजार योजननुं, स्थलचरनुं ब गाउ,खेचरनुं धनुष्य पृथक्त्व, उरःपरिसर्पनुं हजार योजन अने नुजपरिसर्पनुं गाउ पृथक्त्व. तेमज उत्तर वैक्रियशरीर करे, तो नवशें योजन प्रमाण जाणवुं. तथा संमूर्ब्बिममां जलचरनुं एक हजार योजन, स्थलचरनुं गाउ पृथक्त्व,खेचरनुं धनुष्यपृथक्त्व, उरःपरिसर्पनुं योजनपृथक्त्व, नुजपरिसर्पनुं गाउपृथक्त्व जाणवुं.
३ संमूर्ब्बिमने एकज बेवटुं संघयण होय. अने गर्नजने बए संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ संमूर्ब्बिमने एक हुंमसंस्थान अने गर्नजने ब ए संस्थान होय.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ संमूर्ब्बिमने प्रथमनी त्रण लेश्या होय. अने गर्नजने बए लेश्या होय.
८ इंड्रिय पांचे होय.
९ संमूर्ब्बिमने प्रथमना त्रण समुद्घात होय अने गर्नजने पांच समुद्घात होय.
१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.

११ चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन अने अवधिदर्शन, ए त्रण दर्शन होय.

१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान मली ठ ज्ञान होय.

१३ संमूर्छिमने औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग अने असत्यअमृषावचनयोग. ए चार योग होय. तथा गर्भजने मनना चार, वचनना चार अने औदारिककाय योग, औदारिकमिश्रकाय योग, वैक्रियकाय योग, वैक्रियमिश्रकाय योग, कार्मणकाय योग. ए तेर योग होय.

१४ संमूर्छिममां कोइएकने अपर्याप्तावस्थायें चौरिंद्रियनी पेरें ठ उपयोग होय अने पर्याप्तावस्थायें चार होय, ने गर्भजने नारकीनी पेरें नव उपयोग.

१५ द्वींद्रियनी पेरें उपपात जाणवो.

१६ उपपातनी पेरें मरण जाणवुं.

१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त आयु होय अने उत्कृष्टुं त्रण पल्योपमायु होय. तेमां गर्भज तिर्यंचनुं आयु आ प्रमाणें ठे.

१ जलचरनुं पूर्वकोटि वर्षायु जाणवुं,
२ खेचरनुं पल्योपमनो असंख्य नाग.
३ स्थलचरनुं त्रण पल्योपमायु.
४ उरःपरिसर्पनुं पूर्वकोडी वर्षायु.
५ भुजपरिसर्पनुं पूर्वकोडी वर्षायु. संमूर्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंचनुं आयु कहे ठे.
१ जलचरनुं पूर्वकोडी वर्षायु.
२ स्थलचरनुं चोराशी हजार वर्षायु.
३ खेचरनुं बहोंतेर हजार वर्षायु.
४ उरःपरिसर्पनुं पूर्वकोडी वर्षायु.
५ भुजपरिसर्पनुं पूर्वकोडी वर्षायु.

१८ संमूर्छिमने मनपर्याप्ति वर्जी बाकीनी पांच पर्याप्ति अने गर्भजने ठ पर्याप्ति होय.

१९ ठ दिशिनो आहार लीये.

२० दीर्घकालादिकी त्रणे संज्ञा होय.

२१ संमूर्छिम,तिर्यंच तो एक ज्योतिषी तथा बीजा वैमानिक,ए बे दंमक वर्जिने बाकीना बावीश दंमकमां जइ उपजे अने गर्भज तिर्यंचतो चोवीश दंमकमां जइ उपजे.

२२ संमूर्छिममां दश दंमकवाला जीवो आवी उपजे अने गर्भजमां चोवीशे दंमकना जीवो आवी उपजे.

२३ संमूर्छिमने एक नपुंसकवेद होय अने गर्भजने त्रणे वेद होय.

२४ अल्पबहुत्वमां चौरिंद्रिय जीवथकी पंचेंद्रिय तिर्यंच जीव अधिक ठे.

२५ नवन नथी.

२६ संमूर्छिमने जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो चोवीशमुहूर्त्त, तथा गर्भजने जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो बार मुहूर्त्त विरहकाल जाणवो.

२७ संमूर्छिममां प्रथमनां बे गुणठाणां लाभे अने गर्भजमां प्रथमनां पांच गुणठाणां लाभे.

२८ संमूर्छिमने मन विना नव प्राण होय, अने गर्भजने दशे प्राण होय.

२९ संमूर्छिममां संयतीना आठ भंग ना

रकीनी पेरें होय अने गर्नजमां संयती तथा असंयतासंयती, ए बे नंग होय.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ उजादिक त्रणे प्रकारें आहार लीये.
३२ संमूर्छिमने जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी एक अंतरमुहूर्त्तें तथा गर्नजने जघन्य, एक अंतरमुहूर्त्तें अने उत्कृष्टी बछ्नकें आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति सात आठ नवनी जाणवी.
३४ चार लाख योनि जाणवी.
३५ साडी त्रेपन लाख कोडी कुल जाणवां.

२१ हवे एकवीशमा मनुष्यना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे ठे.

१ संमूर्छिमने औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय अने गर्नजने पांचे शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो नाग अने उत्कृष्टी त्रण गाउनी अवगाहना.
३ संमूर्छिमने एक ठेवहुं संघयण होय अने गर्नजने ठए संघयण होय.
४ संज्ञा चार, दश अने शोल होय.
५ संमूर्छिमने एक हुंमसंस्थान. अने गर्नजने ठ संस्थान होय.
६ केवली अने क्षीणमोही विना बाकीना सर्व मनुष्यने चारे कषाय होय.
७ गर्नजने ठ लेश्या अने संमूर्छिमने प्रथमनी त्रण लेश्या होय.
८ इंद्रिय पांचे होय.
ए संमूर्छिमने प्रथमनी त्रण समुद्घात होय अने गर्नजने साते समुद्घात होय.
१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.
११ चक्षुआदिक चारे दर्शन होय.
१२ गर्नजने पांच ज्ञान अने त्रण आज्ञान, ए आठे ज्ञान लाने, अने संमूर्छिमने प्रथमनां बे ज्ञान,अने बे अज्ञान होय.
१३ संमूर्छिमने औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग अने कार्मणकाययोग, ए त्रण योग होय अने गर्नजने पन्नरे योग होय.
१४ संमूर्छिमने प्रथमना बे अज्ञान अने प्रथमनां बे दर्शन,ए चार उपयोग होय अने गर्नजने बारे उपयोग होय.
१५ संमूर्छिमनेविषे एक समयमां असंख्याता जीव उपजे. ते सर्वमिथ्यादृष्टि जाणवा अने गर्नजने विषे जघन्यथी एक, बे,त्रण तथा उत्कृष्टा संख्याता उपजे.
१६ उपजवानी पेरें च्यवन पण जाणवुं.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टुं त्रण पल्योपमायु जाणवुं.
१८ संमूर्छिमने प्रथमनी चार पर्याप्ति अने गर्नजने सर्वे ठए पर्याप्ति होय.
१ए ठ दिशिनो आहार लीये.
२० दीर्घकालादिकी त्रणे संज्ञा होय.
२१ संमूर्छिम मरीने वनस्पतिनी पेरें दश दंमकमां जाय अने गर्नज मरीने चोवीशे दंमकमां जाय.
२२ संमूर्छिममां पृथिवी, अप्, वनस्पति,

त्रण विकलेंड्रिय,तिर्यंच अने मनुष्य,ए आठ दंमकवाला जीवो आवी उपजे. अने गर्नजमां तो तेउ अने वाउ,ए बे दंमक वर्जीने शेष बावीश दंमकना जीवो आवी उपजे.

२३ संमूर्छिमने एक नपुंसक वेद होय अने गर्नजने त्रणे वेद होय.

२४ अल्पबहुत्वमां गर्नज मनुष्य, संख्यायें सर्वदंमकथकी स्वल्प ठे.

२५ एमनां नवन नथी.

२६ विरहकाल तिर्यंच पंचेंड्रियनी पेरें ठे.

२७ संमूर्छिममां एकज मिथ्यात्वगुणगणुं लाने अने गर्नजमां चउदे गुणगणां लाने.

२८ संमूर्छिमने मनोबल अने वचनबल विना आठ अथवा सात प्राण होय, अने गर्नजने दशे प्राण होय.

२९ संमूर्छिमने संयतीना आठ नंग नारकीनी पेरें होय,अने गर्नजने विषे संयतीना चोवीश नंग सर्व प्रकारें लाने.

३० सचित्तादिक त्रणेप्रकारना आहार लीये.

३१ उजादिक त्रण प्रकारें आहार लीये.

३२ संमूर्छिमने जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी एक अंतरमुहूर्त्त अने गर्नजने जघन्य एक अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टथी अठमनक्तें आहारनी इड्ढा उपजे.

३३ कायस्थिति सात आठ नवनी जाणवी.

३४ चौद लाख योनि जाणवी.

३५ बार लाख कोडी कुल जाणवां.

---

२२ हवे बावीशमा व्यंतर देवोना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे ठे.

१ वैक्रिय, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.

२ उपजतां जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो नाग अने उत्कृष्टी सात हाथनी अवगाहना होय तथा उत्तरवैक्रिय करे तो जघन्यथी अंगुलनो संख्यातमो नाग अने उत्कृष्ट एक लाख योजन जाणवो.

३ संघयण रहितहोय असंघयणी ठे माटे.

४ संज्ञा चार, दश, शोल, होय.

५ एक समचतुरस्र संस्थान जाणवुं.

६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.

७ तेजो पर्यंत प्रथमनी चार लेश्या होय.

८ पांचे इंड्रिय होय.

९ प्रथमना पांच समुद्घात होय.

१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.

११ प्रथमनां त्रण दर्शन होय.

१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान तथा त्रण अज्ञान मली ठ होय.

१३ मनना चार,वचनना चार तथा वैक्रिय काययोग, वैक्रियमिश्रकाययोग अने कार्मणकाययोग. ए अगीयारयोग होय.

१४ नारकीनी पेरें नव उपयोग होय.

१५ एकसमयें जघन्यथी एक, बे,त्रण अने उत्कृष्टा संख्याता असंख्याता उपजे.

१६ उपपातनी पेरें च्यवन पण जाणवुं.

१७ जघन्य दश हजारवर्ष अने उत्कृष्टुं एक पल्योपमायु जाणवुं.

१८ पर्याप्ति ठ होय परंतु नाषा अने मन सा

थें उपजे माटें पांच पर्याप्ति पण कहियें.
१ए ढ दिशिनो आहार लीये.
२० एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.
२१ पृथिवी,अप्, वनस्पति,तिर्यंच पंचेंड्रिय अने मनुष्य. ए पांच दंरूकमां जइ उपजे.
२२ गर्नज तिर्यंच अने गर्नज मनुष्य. ए बे दंरूकवाला जीवो एमां आवी उपजे.
२३ पुरुष अने स्त्री,ए बे वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां जलचर पंचेंड्रिय तिर्यंचिणीथकी एजीव संख्यातगुणा ढे. अथवा नारकीथकी अधिक ढे.
२५ एमनां नवन असंख्यातां ढे.
२६ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो चोवीश मुहूर्त्त विरहकाल जाणवो.
२७ प्रथमना चारें गुणगणां लान्ने.
२८ प्राण आश्रयी दशें प्राण होय.
२ए संयतीना आठ नंग त्रीजे प्रकारें लान्ने.
३० एकज अचित्ताहार लीये.
३१ उंज अने लोमें करी आहार लीये.
३२ दशहजार वर्षायुवालाने चोथनक्तें आहारनी इच्छा अने पल्योपमायुवालाने दिवस प्रथक्त्वें आहारनी इच्छा उपजे.
३३ कायस्थिति नवस्थिति जेटली जाणवी. ए मरीने फरी देव गतिमां न उपजे.
३४ चारे निकायनी ४ लाखयोनि जाणवी.
३५ कुलकोडी पण चारे निकायनी साथें ज नवनपतिना दंरूकमां कही ढे.

---

२३ हवे त्रेवीशमा ज्योतिषीदेवोना दंरुकें पांत्रीश द्वार कहे ढे.

१ वैक्रिय, तैजस अने कार्मण. ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य तथा उत्कृष्टावगाहना व्यंतर देवोनी पेरें जाणवी.
३ संघयण रहित ढे असंघयणी ढे.
४ संज्ञा, चार, दश, शोल होय.
५ एक समचतुरस्र संस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ एकज तेजोलेश्या होय.
७ पांचे इंड्रियो होय.
ए प्रथमना पांच समुद्घात होय.
१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.
११ चक्षुरादि त्रण दर्शन होय.
१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान.
१३ व्यंतरनी पेरें अगीयार योग होय.
१४ नारकीनी पेरें नव उपयोग होय.
१५ व्यंतरदेवोनी पेरें उपपात जाणवो.
१६ उपपातनी पेरें च्यवन पण जाणवुं.
१७ जघन्य एक पल्योपमनो आठमो नाग अने उत्कृष्टुं एक पल्योपम एक लाख वर्षें अधिक एटलुं आयु जाणवुं.
१८ पर्याप्ति ढ होय परंतु नाषा अने मन साथें लेतां पांच पर्याप्ति पण कहियें.
१ए ढ दिशिनो आहार लीये.
२० एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.
२१ व्यंतरनी पेरें पांच दंरूकमां जइ उपजे.
२२ व्यंतरनी पेरें बे दंरूकना जीवो एमां आवी उपजे.

२३ पुंरुषवेद अने स्त्रीवेद, ए बे वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां व्यंतरिकदेवोथकी ज्योतिषी देवो अधिक ले.
२५ एमनां चवन असंख्यातां ले.
२६ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो चोवीश मुहूर्त्त पर्यंत विरहकाल जाणवो.
२७ प्रथमना चारे गुणगणां लाने.
२० एमने दशे प्राण होय.
२ए संयतीना आव नंग त्रीजे प्रकारें लाने.
३० एकज अचित्ताहार लीये.
३१ उंज अने लोमें करी आहार लीये,
३२ जघन्योत्कृष्ट दिवस पृथक्त्वें आहारनी इछा उपजे.
३३ ज्योतिषी मरी फरी ज्योतिषी न थाय.
३४ योनिद्वार बधा देवोनुं सार्थे कहेवाणुंले.
३५ कुलकोडी द्वार पण सार्थे कहेवाणुं ले.

---

२४ चोवीशमा वैमानिक देवोना दंमकें पांत्रीश घार कहे ले.

१ वैक्रिय तैजस अने कार्मण,ए त्रण शरीर.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो नाग अने उत्कृष्टी सात हाथनी अवगाहना तथा उत्तर वैक्रिय शरीर करे तो जघन्य अंगुलनो संख्यातमो नाग अने उत्कृष्ट लाख योजन सुधी ते बारमा देवलोक सुधीना देवो करे, उपरांतना न करे.
३ संघयण रहित ले असंघयणी ले.
४ संज्ञा चार, दश, शोल होय.
५ एकज समचतुरस्र संस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ तेजो,पद्म अने शुक्ल.ए त्रण लेश्या होय.
० इंडियद्वार आश्रयी पांचे इंडिय होय.
ए प्रथमना पांच समुद्घात होय.
१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.
११ चक्षुरादि त्रण दर्शन होय.
१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान होय.
१३ व्यंतरनी पेरें अगीयार योग होय.
१४ बार देवलोक अने नव ग्रैवेयकना देवोने विषे नारकीनी पेरें नव उपयोग होय अने पांच अनुत्तर विमानवासी देवो,बधा सम्यक्दृष्टि ले,माटें तेमने तो प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण दर्शन मली ल उपयोग होय.
१५ जघन्यथी एक समयमां एक, बे, त्रण उपजे अने उत्कृष्टथी तो आठमा देवलोक पर्यंत संख्याता असंख्याता पण उपजे. परंतु नवमा देवलोकथी मांमीने सर्वार्थसिद्धनामा पांचमा अनुत्तर विमान पर्यंत संख्याताज उपजे, कारण के, त्यां मात्र मनुष्यमांथीज आवी उपजे ले अने फरी च्यवे, तेवारें पण मनुष्यमांज जाय,बीजे क्यांहि न जाय.
१६ उपपातनी पेरें च्यवन पण जाणी लेवुं.
१७ जघन्य एक पल्योपम अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमायु जाणवुं.
१० ल पर्याप्ति होय पण नाषा अने मन. ए बे पर्याप्ति एके वखत सार्थेज उपजे ले तेथी पांच पर्याप्ति पण कहियें.
१ए ल दिशिनो आहार लिये.

२० एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.

२१ पहेला अने बीजा देवलोकना देवो म रीने पृथिवीकायनी पेरें पांच दंमकमां जइ उपजे अने त्रीजाथी आठमा सुधी ठ देवलोकना देवो गर्नज तिर्यंच अने गर्नज मनुष्यमां आवी उपजे.

२२ आठमा देवलोक सुधी गर्नज तिर्यंच अने गर्नज मनुष्य, ए बे दंमकना जी वो जाय अने उपरांतना देवलोकोमां तो एक गर्नज मनुष्यज आवी उपजे.

२३ पहेला अने बीजा देवलोकने विषे पु रुष तथा स्त्री, ए बे वेद होय अने उ परांतना देवोमां एकज पुरुष वेद होय.

२४ अल्पबहुत्वमां बादर अग्निकायिया जी वोथकी वैमानिक देवो अधिक ठे.

२५ नवन(८४९७०२३) ठे पाथडा ६२ ठे.

२६ जघन्य सर्व स्थानकें एक समय अने उत्कृष्टो पल्योपमनो संख्यातमो नाग विरहकाल जाणवो. तिहां जुदे जुदे स्थानकें उत्कृष्टो विरह आ प्रमाणें.

१ पहेला बीजा देवलोकेंचोवीशमुहूर्त्त.
२ त्रीजा देवलोकेंनवदिवसवीशमुहूर्त्त.
३ चोथा देवलोकें बार दिवसदशमुहूर्त्त.
४ पांचमा देवलोकेंसाडीबावीशदिवस.
५ ठ्ठा देवलोकें पीस्तालीश दिवस.
६ सातमा देवलोकें एंशी दिवस.
७ आठमा देवलोकें एकशो दिवस.
८ नवमा तथा दशमा देवलोकें संख्या ता महीनानो विरहकाल जाणवो.
९ अगीयारमा तथा बारमा देवलोकें संख्याता वर्षनो विरहकाल जाणवो.
१० ग्रैवेयकना पहेला त्रिकने विषे संख्या ता शेंकडा वर्षनो विरह जाणवो.
११ बीजा मध्यम ते वचला त्रिकने विषे संख्याता हजार वर्षनो विरह जाणवो.
१२ त्रीजा उपरला त्रिकने विषे संख्याता लाख वर्षनो विरहकाल ठे.
१३ विजयादि चार अनुत्तर विमानें प ल्योपमनो असंख्यातातमो नाग विरह काल जाणवो.
१४ पांचमा सर्वार्थसिद्धविमानें पल्यो पमनो संख्यातमो नाग विरह ठे.

२७ गुणगाणां द्वार आश्री बे नेद ठे.

१ बार देवलोक अने नवग्रैवेयकना दे वोमां प्रथमना चारें गुणगाणां लान्ने.
२ पांच अनुत्तरविमानना सर्व देवोमां एकज चोथुं गुणठाणुं लान्ने.

२८ वैमानिक देवोमां दश प्राण होय.

२९ संयतिना आठबोल त्रीजा प्रकारें लान्ने.

३० एकज अचित्त आहार लीये.

३१ उंज अने लोमें करी आहार लीये.

३२ आहारनी इछा आ प्रमाणें उपजे.

१ एक पल्योपमायुवाला देवोने बे दिवसथी मांमीने नव दिवस पर्यं तें आहारनी इछा उपजे.
२ जेनुं एकसागरोपमायु होय, तेने एक हजारवर्षें आहारनी इछा उपजे.
३ एक सागरोपम उपरांत जेटला सा

गरोपमनुं आयु होय तेटला हजार वर्षें आहारनी इबा उपजे.

४ सर्वार्थसिद्ध विमानें तेत्रीश सागरोपमायु ठे माटें तेने तेत्रीश हजार वर्षें आहारनी इबा उपजे.

३३ वैमानिक देवोनी कायस्थिति तो एमनी नवस्थिति जेटली जाणवी. मरीने वैमानिकमां पाबा उपजता नथी.

३४ चारेनिकायना देवोनी ४ लाख योनि ठे.

३५ चारे निकायना देवो संबंधी तेरे दंमकमां ढवीश लाख कोडी कुल जाणवां.

ए रीतें चोवीश दंमक मांहेला प्रत्येक दंमकने विषे पांत्रीश द्वारनो विचार संक्षेपथी लख्यो अने ए सबंधि देव नरकादिकोनां प्रतरें प्रतरें जूदां जूदां आयु तथा शरीरनी अवगाहना प्रमुख अनेक वातो विस्तारें समजवामां आववा माटें आगल तेना खुलासा पूर्वक यंत्रो दाखल करेला ठे,ते जोइ लेवा.

तिहां चार निकायना देवोमां प्रथम नवनपति देवोनी वक्तव्यता कहे ठे.

एक लाख एंशी हजार योजन रत्नप्रनानो पृथ्वीपिंम ठे, तेमां एक हजार योजन उपर मूकी आपीयें अने एक हजार योजन तलीये मूकी आपीयें, बाकी वच्चेंना १७८००० योजननो पिंम तेमांहे यथायोग्य पणे दश जातिना नवनपति देवतानां नवन ठे.

नवन एटले देवतानी काया प्रमाण महामंमप समान आवास जाणवा. ते बाहेर वाटला गोलाकारें ठे अने मांहे चोखूणां तथा तलीयामां कमलना मोमा सरखां ठे.

ते नवनमध्यें जे न्हानामां न्हानां नवन ठे, ते जंबूद्वीप प्रमाण एक लाख योजन लांबां पहोलां ठे. अने जे मध्यमनवन ठे, ते संख्याता कोटि योजन प्रमाण ठे, तथा जे अत्यंत महोटां नवन ठे, ते असंख्याता कोटाकोटि योजन प्रमाण ठे. ते महोटा एकेका नवनमां असंख्य देवोनो निवास ठे.

मेरुमध्यवर्त्ती जे आव रुचक प्रदेश ठे, तिहांथी अर्धोअर्ध बे खंम करीयें, एक दक्षिण दिशिनुं अर्द्ध अने बीजुं उत्तरदिशिनुं अर्द्ध. एवा बे नागें वहेंचतां एकेक निकायनो एक दक्षिणदिशिना इंद्र अने बीजो उत्तरदिशिनो इंद्र जूदा जूदा गणतां दश निकायना वीश इंद्र ठे. ते दशनिकायमां पहेला निकायनुं नाम असुरकुमार निकाय ठे, केम के वैमानिक देवोने सुर कहीयें, ते वैमानिक ए नही माटें एने असुर कहीयें, तथा बालकनी पेरें क्रीडाना करनार माटें कुमार कहीयें. तेमनुं आयुं आ प्रमाणें ठे, ते कहे ठे.

१ दक्षिणदिशिनो अधिपति असुरकुमारनो राजा चमरेंद्र, तेनुं उत्कृष्टायु एक सागरोपम.

२ उत्तरदिशिनो अधिपति बलींद्र असुरकुमारनो राजा, तेनुं उत्कृष्टायु सागरोपम जाजेरुं.

३ चमरेंद्रनी देवीनुं उत्कृष्टायुं साडा त्रण पल्योपम जाणवुं.

४ बलींद्रनी देवीनुं उत्कृष्टायु साडाचार पल्योपम जाणवुं.
५ शेष दक्षिणदिशिना धरणेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनुं उत्कृष्टायु प्रत्येकें दोढ पल्योपम जाणवुं.
६ उत्तरदिशिना नूतानंदेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनुं उत्कृष्टायु देशें ऊणा बे पल्योपम जाणवुं.
७ धरणेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनी देवीनुं उत्कृष्टायु अर्द्ध पल्योपम जाणवुं.
८ नूतानंदेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनी देवीनुं उत्कृष्टायु देशोन एक पल्योपम जाणवुं.
९ ए सर्वनुं जघन्यायु दश हजार वर्षनुं जाणवुं. अने जघन्यथी उपरांत उत्कृष्टथी नीचुं ज्यां सुधी उत्कृष्ट पूर्ण न थाय, त्यांसुधीनुं सर्व मध्यमायु कहेवुं. एम ए दशे निकायनां नाम तथा प्रत्येक निकायना दक्षिण उत्तरदिशिना बे बे इंद्रोनां नाम तथा दक्षिण उत्तरना भेदें करी प्रतिनिकायना भवननी संख्या तथा ते देवोसंबंधी पोतपोताना निकाय जेथकी उलखाय तेवां चिन्ह, तेमना आभरणोनें विषे होय छे. ते चिन्ह तथा तेमना शरीरना वर्ण, तथा वस्त्रना वर्ण, तथा ते इंद्रोना सामानिक देवो जे इंद्रसरखी ऋद्धिना धणी होय ते प्रत्येक इंद्रने केटला होय ? तेनी संख्या तथा प्रत्येक इंद्रना आत्मरक्षक देवोनी संख्या तथा कटकना देवो इत्यादिक वातो सर्व नीचें लखेला यंत्रोथी जाणवी.

भवनपतिनी दशनिकायनां चिन्ह तथा वर्ण, वस्त्रवर्ण, अने सामानीक देव, तथा आत्मरक्षक देवोनी संख्यानो यंत्र.

निकायनां नाम.	निकाय चिन्ह.	निकाय शरीरवर्ण.	निकायना वस्त्रवर्ण.	दक्षिणश्रेणिसामानिकदेव.	उत्तरश्रेणिसामानिकदेव.	दक्षिणश्रेणिना आत्मरक्षकदेवता.	उत्तरश्रेणिना आत्मरक्षकदेव.
असुरकुमार.	चूडामणि	कृष्णवर्ण.	रक्तवर्ण.	६४०००	६००००	२५६०००	२४००००
नागकुमार.	फणी	धवलवर्ण.	नीलवर्ण.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
सुवर्णकुमार.	गरुड.	कनकवर्ण.	धवलवस्त्र.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
विद्युत्कुमार.	वज्र.	रक्तवर्ण.	नीलांवस्त्र.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
अग्निकुमार.	कलश.	रक्तवर्ण.	नीलांवस्त्र.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
द्वीपकुमार.	सिंह.	रक्तवर्ण.	नीलांवस्त्र.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
उदधिकुमार.	अश्व.	धवलवर्ण.	नीलांवस्त्र.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
दिशिकुमार.	हाथी.	रक्तवर्ण.	धवलांवस्त्र	६०००	६०००	२४०००	२४०००
वायुकुमार.	मकर.	नीलवर्ण.	संध्याराग.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
स्तनितकुमार.	वर्द्धमान.	कनकवर्ण.	धवलांवस्त्र	६०००	६०००	२४०००	२४०००

भवनपति अने व्यंतर देव तथा तेमनी देवीयोनां जे जघन्य उत्कृष्टायु तेनो यंत्र.

इंद्रोनां नाम.	देवोनुं जघन्यायु.	देवोनुं उत्कृष्टायु.	देवीनुं जघन्यायु.	देवीनुं उत्कृष्टायु.
दक्षिण चमरेंद्र.	दश हजार वर्ष.	एक सागरोपम.	दश सहस्र वर्ष.	३॥ पल्योपम.
उत्तरश्रेणि बलींद्र.	दश हजार वर्ष.	१ सागर जाझेरुं.	दश सहस्र वर्ष.	४॥ पल्योपम.
दक्षिण ए निकाय.	दश हजार वर्ष.	दोढ पल्योपमनुं.	दश सहस्र वर्ष.	अर्द्ध पल्योपमनुं.
उत्तर नव निकाय.	दश हजार वर्ष.	बे पल्यदेशें उणो.	दश सहस्र वर्ष.	एकपल्यदेशोंऊणुं.
व्यंतर.	दश हजार वर्ष.	एक पल्योपम.	दश सहस्र वर्ष.	अर्द्ध पल्योपम.
वाणव्यंतर.	दश हजार वर्ष.	एक पल्योपम.	दश सहस्र वर्ष.	अर्द्ध पल्योपम.

दशभवनपतिना तथा दक्षिणोत्तरेंद्रनां नाम तथा दक्षिण उत्तर भवन संख्यानो यंत्र.

दशनिकायनां नाम.	दक्षिणेंद्रनां नाम.	उत्तरेंद्रनां नाम.	दक्षिणेंद्रभवन संख्या.	उत्तरेंद्रभवन संख्या.	उभयमलीने भवन संख्या.
असुरकुमार.	चमरेंद्र.	बलींद्र.	३४०००००	३००००००	६४लाखभवन.
नागकुमार.	धरणेंद्र.	भूतानंदेंद्र.	४४०००००	४००००००	८४लाखभवन.
सुवर्णकुमार.	वेणुदेव.	वेणुदाली.	३८०००००	३४०००००	७२लाखभवन.
विद्युत्कुमार.	हरिकांत.	हरिशिख.	४००००००	३६०००००	७६लाखभवन.
अग्निकुमार.	अग्निशिख.	अग्निमाणव.	४००००००	३६०००००	७६लाखभवन.
द्वीपकुमार.	पूर्णेंद्र.	वशिष्टेंद्र.	४००००००	३६०००००	७६लाखभवन.
उदधिकुमार.	जलकांत.	जलप्रभ.	४००००००	३६०००००	७६लाखभवन.
दिशिकुमार.	अमितगति.	अमितवाहन.	४००००००	३६०००००	७६लाखभवन.
पवनकुमार.	वेलंबक.	प्रभंजन.	५००००००	४६०००००	९६लाखभवन.
स्तनितकुमार.	घोष.	महाघोष.	४००००००	३६०००००	७६लाखभवन.
शरवाले संख्या.			४०६०००००	३६६०००००	७७२०००००.

हवे व्यंतरदेवोनी वक्तव्यता कहे छे.

रत्नप्रभा पृथ्वीनी उपर मूकेलो जे एकहजार योजननो रत्नमयकांम, तेमांथी एक शो योजन नीचेंना तथा शो योजन उपरना मूकीने वचला आठशें योजननी भूमिकामध्यें व्यंतरदेवोनां माहारमणीय असंख्यातां नगर छे, तेमां रह्यां थकां व्यंतरिक देवो वरप्रधान तरुणीयोनां गीत गानना अने वाजित्रो वजाववाना शब्द सांभलवे करी प्रमुदित थया थका गत कालने पण जाणता नथी.

ते व्यंतरदेवोना आठ निकाय छे,तेना पण दक्षिण श्रेणि अनें उत्तर श्रेणिना प्रत्येकें एकेक इंद्र गणतां आठ निकायना शोल इंद्रो छे.

ते व्यंतरोनां नगर, उत्कृष्टां मह्होटां ते जंबूद्वीप जेवडां लांबां पह्होलां छे, अने घणां न्हानां छे, ते नरतक्षेत्र जेवडां (५२६) योजननें छ कला प्रमाण छे. तथा मध्यमविमान ते माहाविदेह समान (३३६८४) योजननी उपर उगणीया चार नाग जेवडा छे, ते आठ व्यंतर निकायनां नाम तथा तेमना इंद्रोनां नाम तेमज चिन्ह प्रमुख पूर्वोक्त नवनपतिनी पेठें सर्व वातो नीचेंना यंत्रथी जोइ लेवी.

हवे जेम व्यंतर देवोना आठनिकाय कह्या तेम वली रत्नप्रनाना उपरलां एकशो योजनना पिंममांहे दश योजन नीचें तलीये मूकीयें अने दश योजन उपर मूकीयें, शेष एंशी योजन पृथ्वीपिंममांहे बीजा वाणव्यंतरना आठ निकाय छे, एटले मेरुमध्यवर्त्ती गोस्तनने आकारें आठ रुचक प्रदेशथी नीचें दश योजन मूकीने नीचला एंशी योजनमां आठ निकायना दक्षिणदिशि अने उत्तरदिशिना नेदें करी बे बे इंद्रो छे, तेमनां नाम तथा निकायनां नाम आदिक चिन्ह वर्ण प्रमुख सर्व, नीचला यंत्रोथकी जाणवां.

इहां व्यंतरना शोल तथा वाणव्यंतरना शोल मली बत्रीश इंद्र व्यंतर देवोना अनें वीश नवनपतिना. तेमज यद्यपि सूर्य अने चंद्र असंख्याता इंद्र छे, तथापि जातिनी अपेक्षायें एक चंद्रमा अने एक सूर्य, ए बे इंद्र ज्योतिषीना लेवा अने पहेला देवलोकथी आठमा देवलोक सुधी एकेक इंद्र छे, अने नवमा दशमा ए बे देवलोकनो एक, तथा अगीयारमा, बारमा, ए बे देवलोकनो एक, मली बार देवलोकना दश इंद्र गणतां सरवाले चोशठ इंद्र संख्यायें जाणवा.

वली एटलुं विशेष छे जे, ज्योतिषी अने व्यंतर, ए बे निकायने विषे इंद्रोना लोकपाल तथा गुरुस्थानीया जे त्रयस्त्रिंशद्देवता, ते नथी.

हवे व्यंतर देव देवीयोनुं जघन्योत्कृष्टायु कहे छे.

व्यंतर अनें वाणव्यंतरना देवो तथा देवीयोनुं जघन्यायु दश हजार वर्ष जाणवुं, अने देवोनुं उत्कृष्टायु संपूर्ण एक पल्योपमनुं जाणवुं. तथा देवीयोनुं उत्कृष्टायु अर्द्ध पल्योपमनुं जाणवुं. अने श्री ह्री धृति, कीर्त्ति, बुद्धि अने लक्ष्मी, ए छ देवीयोनुं जे एक पल्योपमायु कह्युं छे, ते देवीयो नवनपतिनी छे, पण व्यंतरनी नथी. व्यंतरना आयुना यंत्रनी स्थापना नीचें करीयें बैयें, तेथी तेनुं आयु जाणवुं.

आठ जातिना व्यंतरदेवो संबंधि प्रतिभेद कहे छे.

पिशाचनाप्रकार.	१५	१	कूष्मांड १ पटक २ जोष ३ आन्हिक ४ काल ५ माहाकाल ६ मोक्ष ७ आमोक्ष ८ तालपिशाच. ९ पिखरपिशाच १० अधस्तारक ११ देव १२ माहादेव १३ तुष्णिक १४ वनपिशाच १५.
भूतनाप्रकार.	९	२	सुरूप १ प्रतिरूप २ श्वेतभद्र ३ भूतोत्तम ४ स्कंदिक ५ अतिपातकभद्र ६ माहावेग ७ प्रतिवेग ८ आकाशवेग ९.
यक्षनाप्रकार.	१३	३	पूर्णभद्र १ माणिभद्र २ श्वेतभद्र ३ हरिभद्र ४ सुमनोभद्र ५ व्यतिपाकभद्र ६ सुभद्र ७ सर्वतोभद्र ८ मनुष्यभद्र ९ धनाधिपति १० धनहार ११ रूपयक्ष १२ यक्षोत्तम १३.
राक्षसनाप्रकार.	७	४	भीम १ महाभीम २ विघ्नविनायक ३ जलराक्षस ४ रुक्षराक्षस ५ ब्रह्मराक्षस ६ दत्तराक्षस ७.
किन्नरनाप्रकार.	१०	५	किंनर १ किंपुरुष २ किंपुरुषोत्तम ३ हृदयंगम ४ रूपशाली ५ अनिंदतई ६ किंनरोत्तम ७ मनोरम ८ रतिप्रिय ९ रतिश्रेष्ठ १०
किंपुरुषनाप्रकार	१०	६	पुरुष १ सत्पुरुष २ माहापुरुष ३ पुरुषवृषभ ४ पुरुषोत्तम ५ अतिपुरुष ६ माहादेव ७ मरुत ८ मेरुकांत ९ भास्वत १०
महोरगनाप्रकार	१०	७	भुजंग १ भोगशाली २ माहाकाय ३ अतिकाय ४ स्कंधशाली ५. मनोरम ६ माहावेग ७ महेश्वक्ष ८ मेरुकांत ९ भास्वत १०
गंधर्वनाप्रकार.	१२	८	हाहा१ हूहू२ तुंबरु३ नारद४ ऋषिवादक५ भूतवादक६ कादंब७ महाकादंब ८ रैवत ९ विश्वावसु १० गीतरति ११ गीतयशा १२

हवे ज्योतिषी देवोनी वक्तव्यता कहे छे.

मेरुमध्य रुचकथकी नवशें योजन उपर अने नवशें योजन नीचें मली अढारशें योजन प्रमाण तिर्यक् लोक छे. तिहां समभूतला पृथ्वीथकी ७९० योजन उपरांत एकशो ने दश योजनमांहे ज्योतिषचक्र रहे छे, ते केंवी रीतें? तो के प्रथम समभूतलथकी ७९० योजनें तारानां विमान छे ८०० योजनें सूर्यनुं विमान छे, अने ८८० योजनें चंद्रमानुं विमान चाले छे, ८८४ योजने नक्षत्रनां विमान चाले छे, ८८८ योजनें बुधनुं विमान चाले छे, ८९१ योजने शुक्रनुं विमान चाले छे. ८९४ योजने बृहस्पतिनो तारो चाले छे, ८९७ योजने मंगलनुं विमान चाले छे, अने ९०० योजनें शनिनुं विमान चाले छे. एम ११० योजनमां ज्योतिषचक्र चार चाले छे.

१ ज्योतिषीयोनां विमान मेरुपर्वतथकी ११२१ योजन उरहां एटलां दूर मनुष्य

लोकमांहे चरे ले,नमे ले अनें ११११ नुं योजन अलोकथी उरहां एटले चारे दिशायें लोक ना ठेहडाथकी ११११ योजनमांहेली कोरें अलोकनी अबाधायें ज्योतिषचक्र स्थिर रहे ले.

हवे सूर्य, चंड, ग्रह, नक्षत्र अने तारा, ए पांच जातिना ज्योतिषी देव देवीयोनुं ज घन्योत्कृष्टायु कहे ले. ते ज्योतिषी देवो अढी द्वीपमांहे जेटला ले, ते सर्व चर ले, अने अढीद्वीपथी बाहिर जे असंख्याता द्वीप समुड ले, तेमां जेटला ज्योतिषीदेवो ले, ते सर्व स्थिर जाणवा. ए चर तथा स्थिर, बेहु प्रकारना ज्योतिषी देव तथादेवीनुं आयु कहे ले.

१ चंडमानुं तथा चंडमाना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु एक पल्योपम एक लाख वर्षें अधिक तथा तेमनी देवीयोनुं अर्द्धपल्योपम पच्चास हजार वर्षें अधिक जाणवुं.

२ सूर्य तथा तेना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु एक पल्योपम एक हजारवर्षें अधिक तथा तेमनी देवीयोनुं आयु पांचशें वर्षें अधिक अर्द्धपल्योपम जाणवुं.

३ ग्रह तथा ग्रहना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु संपूर्ण एक पल्योपम जाणवुं. तथा तेमनी देवीयोनुं उत्कृष्टायु अर्द्धपल्योपमनुं जाणवुं.

४ नक्षत्र तथा नक्षत्रना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु अर्द्धपल्योपम अने तेमनी देवीयोनुं आयु एक पल्योपमनो चोथो नाग जाणवुं.

५ तारा तथा ताराना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु पल्योपमनो चोथो नाग कांइक जाजेरुं अने तेमनी देवीयोनुं एक पल्योपमनो आठमो नाग विशेषाधिक जाणवुं.

६ जघन्यायुमां चंडमा अने सूर्य, ए बे तो इंड ले,तथा ग्रह, नक्षत्र अने तारा,ए त्रण विमानना धणी ले तेमनुं आयु जघन्य मध्यम न होय परंतु उत्कृष्टज होय,तेथी चंडना विमानवासी देव तथा देवीयो ए एक युगल तथा सूर्यना विमानवासी देव तथा देवीयो ए बीजुं युगल,तथा ग्रहना विमानवासी देव तथा देवीयो. ए त्रीजुं युगल,तथा नक्षत्रना विमानवासी देव तथा देवीयो. ए चोथुं युगल. ए चार युगलनुं जघन्यायु पल्योपमनो चोथो नाग तथा ताराना विमानवासी देव तथा देवीयो. ए पांचमुं युगल ले,तेनुं आयु पल्योपमनो आठमो नाग जाणवुं एना यंत्रो आगल आवशे.

हवे वैमानिकदेवोनुं जघन्य तथा उत्कृष्टायु कहे ले.

१ सौधर्मदेवलोकने लेहला तेरमें प्रतरें उत्कृष्टायु बे सागरोपमनुं जाणवुं अने जघन्यथी तो सर्व तेरे प्रतरें एक पल्योपमायु जाणवुं.

२ ईशान वदेलोकें उत्कृष्ट बे सागरोपम पल्योपमना असंख्यातमे नागें अधिक अनें जघन्यथी पल्योपमने असंख्यातमे नागें अधिक, एक पल्योपमायु जाणवुं.

३ सनत्कुमारें उत्कृष्ट सात सागरोपम अने जघन्य बे सागरोपम जाणवुं.

४ माहेंद्रें उत्कृष्टथी पल्योपमना असंख्यातमे भागें अधिक सात सागरोपम अनें जघन्यथी बे सागरोपम जाजेरुं जाणवुं.

५ ब्रह्मदेवलोकें उत्कृष्ट दश सागरोपम अने जघन्यथी सात सागरोपम.

६ लांतक देवलोकें उत्कृष्ट चौद सगरोपम, अने जघन्यथी दश सागरोपम.

७ शुक्रदेवलोकें उत्कृष्ट सत्तर सागरोपम. अने जघन्यथी चौद सागरोपम.

८ सहस्रारें उत्कृष्ट अढार सागरोपम अने जघन्य सत्तर सागरोपम.

९ आनत देवलोकें उत्कृष्ट उंगणीश सागरोपम अने जघन्यथी अढार सागरोपम.

१० प्राणत देवलोकें उत्कृष्ट वीश सागरोपम अने जघन्यथी उंगणीश सागरोपम.

११ आरण देवलोकें उत्कृष्ट एकवीश सागरोपम अने जघन्यथी वीश सागरोपम.

१२ अच्युत देवलोकें उत्कृष्ट बावीश सागरोपम अने जघन्यथी एकवीश सागरोपम.

१३ पछी नवग्रैवेयकें प्रत्येक एकका ग्रैवेयकें जघन्य उत्कृष्ट बेहुमां अच्युतदेवलो कथी एकेक सागरोपमनी वृद्धि करीयें, तेवारें नवमा ग्रैवेयकें उत्कृष्टा एकत्रीश सागर अने जघन्यथी त्रीश सागरोपमायु थाय.

१४ पांच अनुत्तर विमानमांहेला पहेला विजयादि चार विमानें उत्कृष्ट तेत्रीश सागर अने जघन्य एकत्रीश सागरायु कह्युं छे, अने पांचमा सर्वार्थसिद्ध विमानें तो अज घन्योत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमायु छे, एमां वध घट नथी.

हवे वैमानिक देवीयोनुं जघन्य उत्कृष्ट आयु कहे छे.

वैमानिक देवीयोनी उत्पत्ति मात्र प्रथमना सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोकमांज छे,ते देवीयो बे प्रकारनी छे एक तो परिग्रहीता ते परणेली कुलांगना सरखी जाणवी. अने बीजी अपरिग्रहीता ते वेश्या सरखी जाणवी. ए देववेश्या कहेवाय.

१ तिहां सौधर्मदेवलोकें परिग्रहीता अपरिग्रहीता एबेहुनुं जघन्यायु एक पल्योपम छे, अने ईशान देवलोकें बेहुनुं जघन्यायु एक पल्योपम जाजेरुं जाणवुं.

२ सौधर्म देवलोकें परिग्रहीता देवीयोनुं उत्कृष्टायु सात पल्योपम छे, तथा अपरि ग्रहीतानुं उत्कृष्टायु पच्चास पल्योपम छे, तेमज ईशानदेवलोकें परिग्रहीतानुं उ त्कृष्टायु नव पल्योपम छे अने अपरिग्रहीतानुं पच्चावन पल्योपम छे.

हवे चारे निकायना देवो संबंधि इंद्रोनी सर्व अंतेउरमां प्रधान मुख्य पट्टराणी स रखी जे देवीयो, तेने अग्रमहीषी कहीयें, ते कया कया इंद्रने केटली केटली होय?

१ भवनपतिनी पहेली-निकायना चमरेंद्र तथा बलींद्रने प्रत्येकें पांच पांच होय.

२ नवनपतिनी नागकुंमारादिक नव निकायना धरणींद्र अने नूतानंदेंद्र आदिक अ ढार इंद्रोने प्रत्येकें ब ब अग्रमहीषी होय.
३ व्यंतर देवोना काल महाकालादिक बत्रीश इंद्रोने प्रत्येकें चार चार अग्रमहीषी होय.
४ ज्योतिषीना इंद्र जे चंद्रमा अने सूर्य, तेंने प्रयेकें चार चार अग्रमहीषीयो होय.
५ सौधर्म तथा ईशान, ए बे देवलोकना इंद्रोने प्रत्येकें आव आव अग्रमहीषीयो होय.
६ बे देवलोकथी उपरांतना देवलोकमां देवीयोनी उत्पत्ति नथी मांटें तिहांना इंद्र तथा तिहांना निवासी देवोने जेवारें विषय सेववानी वांबा थाय, तेवारें सौधर्म ईशानवासी अपरिग्रहीता देवीयो यथायोग्य पणे तेमने उपजोगमां आवे.

हवे वैमानिक देवोनुं प्रतरें प्रतरें जूडुं जूडुं आयु कहेवा मांटें प्रतरसंख्या कहे बे. तिहां जेम घरनी उपर जूदा जूदा चार पांच मजला होय, तेम पहेला अने बीजा देव लोकनी उपराउपर तेर नूमिरूप तेर मजला बे, तेंने प्रतर कहीयें. ते आवी रीतें केः– बे देवलोक मल्यां वलयाकारें बे. तिहां पूर्वमहाविदेह अने पश्चिम महाविदेहनी उपर आवेली देवलोकसंबंधी नूमिनी वचमांहे अर्ध्दवलयाकार खंमथकी एक दक्षिणदिशिखंम अने बीजो उत्तरदिशिखंम, एवा बे खंम अर्ध्दोअर्ध्द करीयें, तेमां दक्षिणदिशिखंमना अर्ध्दवलयाकार खंम प्रतर सौधर्मेंद्रना अने उत्तरदिशिना अर्ध्दवलयाकार खंम प्रतर ईशानेंद्रना जाणवा. एम बीजा पण वलयाकार देवलोकना युगलमां एज व्यवस्था करवी. एटले त्रीजा, चोथा, देवलोकना मल्या वलयाकार बार प्रतर बे, तेमां दक्षिण दिशि सनत्कुमारनी अने उत्तरदिशि माहेंद्रनी जाणवी. पांचमे ब प्रतर, बठे पांच प्रतर, सातमे चार प्रतर, आवमे चार प्रतर, नवमा दशमा मली बेहुना चार प्रतर, अगीयारमा बारमाना चार प्रतर, तथा नव ग्रैवेयकें प्रत्येकें एकेक प्रतर गणतां नवप्रतर बे, अने पांच अनुत्तरविमाननो एकज प्रतर बे. एम सर्व मली ऊर्ध्वलोकें बासव प्रतर बे.

हवे ए प्रत्येक प्रतरें जघन्य उत्कृष्ट आयुष्य जाणवां, मांटें प्रथम सौधर्मदेवलोकें उपाय कहे बे. सौधर्मदेवलोकें उत्कृष्टी स्थिति बे सागरोपमनी बे अने प्रतर तेर बे, मांटें एक सागरना तेर नाग करी प्रतरें प्रतरें एकेका सागरोपमें एकेको नाग आपीयें, ते एवी रीतें के तेरैया बे सागरोपमना बवीश नाग थाय, तेंने प्रतरें प्रतरें वहेंचीयें, तो पहेला प्रतरें तेरैया बे नाग आवे, तेटलुं पहेला प्रतरें उत्कृष्टायु जाणवुं. पबी बीजे प्रतरें वे साथें गुणीयें, तेवारें बीजे प्रतरें चार नाग, त्रीजे त्रणथी गुणीयें तेवारें ब नाग, एम यावत् तेरमे प्रतरें वेहु सागरना बवीशे नाग पूर्ण थाय. तिहां उत्कृष्टी स्थिति वे सागरोपम पूर्ण थाय. एम ईशानदेवलोकें पण प्रतरें प्रतरें एज नाग जाजेरा कहेवा.

यावत् तेरमे प्रतरें बे सागरोपम जाजेरा कहेवा. अने जघन्य तो सौधर्म देवलोकना तेरे प्रतरें एक पल्योपम पूर्ण आयु जाणवुं. अने ईशानदेवलोकें जघन्यथी एक पल्योपम उपर पल्योपमनो असंख्यातमो नाग अधिक एटली स्थिति प्रतरें प्रतरें कहेवी.

हवे इंद्रना लोकपालोनुं आयु कहे डे. सघला इंद्रना लोकपाल पोतपोताना देवलोकना बेहला प्रतरें इंद्रना विमाननी फरता चारे दिशायें चार लोकपाल रहे, ते लोकपाल पोतपोताना विमानना धणी डे, तथापि तेमनुं आयु आ प्रमाणें डे.

सौधर्मेंद्रना सोम अने यम ए बे लोकपालनुं उत्कृष्टायु एक पल्योपमनी उपर एक पल्योपमना त्रण नाग मांहेलो एक नाग जाणवुं. अने वरुणनुं देशें ऊणां बे पल्योपमायु जाणवुं तथा वैश्रमणनुं उत्कृष्टायु बे पल्योपम पूर्ण जाणवुं.

ईशानेंद्रना सोम तथा यमनुं उत्कृष्टायु एक पल्योमनी उपर एक पल्योपमना त्रण नाग करीयें, तेवा बे नाग जाणवा. तथा वरुणनुं आयु बे पल्योपम पूर्ण जाणवुं. अने कुबेरनुं बे पल्योपमनी उपर एक पल्योपमना त्रण नाग करीयें तेवुं एक नाग जाणवुं,

तथा सौधर्मेंद्रना पुत्र सरखा अपत्य देवोनुं आयु एक पल्योपम जाणवुं.

हवे सनत्कुमारादि देवलोकें प्रतरें प्रतरें उत्कृष्ट जघन्यस्थिति जाणवा नणी उपाय कहे डे.

जेम के सौधर्मदेवलोकें उत्कृष्टीस्थिति बे सागरोपम डे अने सनत्कुमार देवलोकें उत्कृष्टी स्थिति सात सागरोपम डे, तेमांथी बे सागरोपम काहाढीयें, बाकी पांच सागरोपम रहे,तेने सनत्कुमारना बार प्रतर डे. तेनो नाग पहोंचे नही, माटें एकेक सागरना बार बार नाग करीयें, तेवारें पांच सागरना शाठ नाग थाय, तेने बार नागें वहेंचतां एकेक प्रतरें पांच पांच नाग आवे, तिहां पहेले प्रतरें एक आंक डे, माटे पांच एकां पांच नाग आवे. तेनी सार्थे सौधर्म देवलोकनी उत्कृष्टी स्थिति बे सागरोपम डे,ते नेलीयें,तेवारें पहेले प्रतरें बे सागरोपमनी उपर बारइया पांच नाग आयु जाणवुं. बीजे प्रतरें बे आंक डे तो पांच डु दश नाग बारइया आवे,तेवारें बे सागरोपम उपर दशनागायु जाणवुं, त्रीजे प्रतरें त्रण आंक डे, तो पांच त्रिक पन्नर नाग आवे, तेमां बार नागनुं एक सागरोपम थाय. उपर त्रण नाग वधे, तेनी सार्थे बे सागरोपम नेलतां त्रण सागरने बारइया त्रण नागआयु डे. एम यावत् बारमे प्रतरें सात सागरोपम उत्कृष्टायु थाय. अने जघन्यस्थिति तो बारे प्रतरें सनत्कुमार देवलोकनी बे सागरोपमनी जाणवी. तेमज चोथा माहेंद्र देवलोकें प्रतरें प्रतरें सनत्कुमार देवलोकथी साधिक स्थिति कहेवी. ए प्रमाणें पांचमा ब्रह्म आदिक देवलोकें पण प्रतरें प्रतरें आयु जाणवा, माटें एज उपाय करवो, ए सर्वना यंत्रोनी स्थापना आगल करी डे, ते जोवुं.

बार देवलोक, नवग्रैवेयक, अने पांच अनुत्तरविमान. एटलां स्थानक एक बीजानी उपर केवी रीतें छे? ते देखाडनारो तथा ते प्रत्येक स्थानकें जघन्य उत्कृष्टायु दर्शावनारो यंत्र.

बीजा विजयंत विमानें. जघन्यायु सागर एकत्रीश. अने उत्कृष्ट सागर तेत्रीश. पहेला विजयविमानें.	सर्वार्थ सिद्धिविमानें. अजघन्योत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमायु छे.	त्रीजा जयंतविमानें जघन्य सागर एकत्रीश अने उत्कृष्ट सागर तेत्रीश. चोथा अपराजित विमानें.
नवमा आदित्य ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर ३०	९ उत्कृष्ट सागर ३१
आठमा प्रीतिकर ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २९	८ उत्कृष्ट सागर ३०
सातमा सौमनस्य ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २८	७ उत्कृष्ट सागर २९
छठ्ठा सुमनस ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २७	६ उत्कृष्ट सागर २८
पांचमा विशाल ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २६	५ उत्कृष्ट सागर २७
चोथा सर्वतोभद्र ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २५	४ उत्कृष्ट सागर २६
त्रीजा मनोरम ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २४	३ उत्कृष्ट सागर २५
बीजा शुभंकर ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २३	२ उत्कृष्ट सागर २४
पहेला सुदर्शन ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २२	१ उत्कृष्ट सागर २३
बारमा अच्युत देवलोकें.	जघन्य सागर २१	१२ उत्कृष्ट सागर २२
अगीआरमा आरण्यदेवलोकें.	जघन्य सागर २०	११ उत्कृष्ट सागर २१
दशमा प्राणतदेवलोकें.	जघन्य सागर १९	१० उत्कृष्ट सागर २०
नवमा आनतदेवलोकें.	जघन्य सागर १८	९ उत्कृष्ट सागर १९
आठमा सहस्त्रार देवलोकें.	जघन्य सागर १७	८ उत्कृष्ट सागर १८
सातमा शुक्रदेवलोकें.	जघन्य सागर १४	७ उत्कृष्ट सागर १७
छठ्ठा लांतक देवलोकें.	जघन्य सागर १०	६ उत्कृष्ट सागर १४
पांचमा ब्रह्मदेवलोकें.	जघन्य सागर ७	५ उत्कृष्ट सागर १०
चोथा माहेंद्र देवलोकें.	जघन्य साधिकसागर २	४ उत्कृष्ट साधिक सागर ७
त्रीजा सनत्कुमार देवलोकें.	जघन्य सागर २	३ उत्कृष्ट सागर ७
बीजा ईशान देवलोकें.	जघन्यसाधिकपल्योपम१	२ उत्कृष्ट साधिक सागर २
पहेला सौधर्म देवलोकें.	जघन्य एक पल्योपम.	१ उत्कृष्ट सागर २

ज्योतिषीदेवोना जघन्य उत्कृष्टायुनो यंत्र.

चंद्रउत्कृष्टायु.	एक पल्य एक लक्ष वर्षाधिक.	जघन्य पल्य चतुर्थ भाग.	चंद्रदेवी उत्कृष्टायु.	अर्द्धपल्य पञ्चास ह० वर्षाधिक	जघन्यपल्य चतुर्थ भाग.
सूर्यउत्कृष्टायु.	एक पल्य सहस्त्र वर्षाधिक.	जघन्यपल्य चोथो भाग.	सूर्यदेवी उत्कृष्टायु.	अर्द्धपल्य पांच सोवर्षाधिक.	जघन्यपल्य चतुर्थ भाग.
ग्रहउत्कृष्टायु.	एक पल्योपम.	जघन्यपल्य चोथो भाग.	ग्रहदेवी उत्कृष्टायु.	अर्द्ध पल्योपम ॥	जघन्यपल्य चतुर्थ भाग.
नक्षत्र उत्कृष्टायु.	अर्धपल्योपम.	जघन्यपल्य चोथो भाग.	नक्षत्रदेवी उत्कृष्टायु.	पल्यनो चोथो भाग.	जघन्यपल्य चतुर्थ भाग.
ताराणामुत्कृष्टायु.	पल्य चतुर्थ भाग साधिक.	जघन्यपल्याष्टम भाग.	तारादेवी उत्कृष्टायु.	पल्य अष्टम भाग साधिक.	जघन्यपल्य ० भागसाधिक.

सौधर्म अने ईशानदेवलोकें परिग्रहिता अपरिग्रहीता देवीना आयुनो यंत्र.			चारे निकायना देवोनी अग्र महिषीनुं यंत्र.	
सौधर्मपरि० देवी आ०	जघन्य पल्योपम. १	उत्कृष्ट पल्यो० ७	सौधर्मेंद्र.	अग्रमहिषी०
ईशान परि० देवी आ०	जघन्य पल्यो० जाजेरुं.	उत्कृष्ट पल्यो० ए	ईशानेंद्र.	अग्रमहिषी०
सौधर्म परि० देवी आ०	जघन्य पल्योपम. १	उत्कृष्ट पल्यो० ५०	ज्योतिषी २	अग्रमहिषी४
ईशान परि० देवी आ०	जघन्य पल्यो० जाजेरुं.	उत्कृष्ट पल्यो० ५५	व्यंतरेंद्र ३२	अग्रमहिषी४
सौधर्मइंद्रने आयुष्यमांहे केटली देवी थाय ? तेहनी संख्या कहे छे.			नागकु० १०	अग्रमहिषी६
बे करोड,पच्चासी लाख, एकोतेर हजार,चारशेंने अठावीश कोडी			बलींद्र.	अग्रमहिषी५
उपर सत्तावनलाख चौदहजार बशेंने पच्चासी एटली देवीउ सौधर्म इंद्रना एक जन्मनें विषे चवे.			चामरेंद्र.	अग्रमहिषी५

हवे सौधर्मदेवलोक प्रमुखनें विषे प्रतरनी संख्या कहे छे.

१३ सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोकें प्रतरतेर
१२ सनत्कुमार अने माहेंद्र ए बेना बार प्रतर.
६ ब्रह्मदेवलोकें छ प्रतर.
५ लांतक देवलोकें पांच प्रतर.
४ शुक्रदेवलोकें चार प्रतर.
४ सहस्त्रार देवलोकें चार प्रतर.
४ आणत अने प्राणत बेना चार प्रतर.
४ आरण अने अच्युत ए बेना चार प्रतर.
ए नवग्रैवेयकें मली नव प्रतर.
१ अनुत्तरविमानें एक प्रतर.

एम सर्व मली ऊर्ध्वलोकने विषे ६२ प्रतर छे, ते कह्या.

सौधर्मादि देवलोकें प्रत्येक प्रतरें उत्कृष्टायु दर्शावनारो यंत्र.

त्यां प्रथम सौधर्म अने ईशान, ए बे देवलोकें प्रतर तेर छे तेहनुं आयु लखियें छैयें.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
सागर.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२
एक सागरना तेरीया भाग.	२	४	६	८	१०	१२	१	३	५	७	९	११	०
छेदांक.	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	०

सनत्कुमार अने माहेंद्र, ए बे देवलोकें प्रतर बार छे, तेहने विषे आयु.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सागर.	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७
बारैया भाग.	५	१०	३	८	१	६	११	४	९	२	७	०
छेदांक.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	०

ब्रह्मदेवलोकें छ प्रतरें आयुःप्रमाणं. लांतकदेवलोकें पांच प्रतरें आयुःप्रमाणं ॥

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	प्रतर.	१	२	३	४	५
सागर.	७	८	८	९	९	१०	सागर.	१०	११	१२	१३	१४
छैया भाग.	३	०	३	०	३	०	पांचीयाभाग.	४	३	२	१	०
छेदांक.	६	०	६	०	६	०	छेदांक.	५	५	५	५	०

शुक्रदेवलोकें चार प्रतरें आयुःप्रमाणं. | सहस्रार देवलोकें चार प्रतरेंआयुःप्रमाणं.

प्रतर.	१	२	३	४	प्रतर.	१	२	३	४
सागर.	१४	१५	१६	१७	सागर.	१७	१७	१७	१८
चोथीया भाग.	३	२	१	०	चोथीयाभाग.	१	२	३	०
छेदांक.	४	४	४	०	छेदांक.	४	४	४	०

आणत अने प्राणतना चार प्रतरें आयुमान. आरण अने अच्युतें चार प्रतरें आयु.

प्रतर.	१	२	३	४	प्रतर.	१	२	३	४
सागर.	१८	१९	१९	२०	सागर.	२०	२१	२१	२२
चोथीयाभाग.	२	०	२	०	चोथीयभाग.	२	०	२	०
छेदांक.	४	४	४	०	छेदांक.	४	०	४	०

नव ग्रैवेयकें नव प्रतरें आयुःप्रमाणं. पांच अनुत्तर विमानें आयु.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	प्रतर.	१
सागर.	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	सागर.	३३
जाग.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	जाग.	०
छेदांक.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	छेदांक.	०

वैमानिक देवोमां बाशठ प्रतर छे, ते एकेका प्रतरना मध्यजागने विषे एकेक इंद्रक विमान छे एम सर्व बाशठ प्रतरें बाशठ इंद्रक विमान छे.

हवे पहेला प्रतरना उडु नामें वाटला इंद्रकविमानथकी चारे दिशायें बाशठ बाशठ विमानोनी पंक्ति निकली छे अने बीजा प्रतरना इंद्रक विमानथकी पूर्वादि चारे दिशायें एकशठ एकशठ विमानोनी पंक्ति नीकली छे. एम प्रतरें प्रतरें चारे दिशानी पंक्तियें पंक्तियें प्रत्येकें एकेकुं विमान घटाडतां जइयें, तेवारें छेहले बाशठमे प्रतरें अनुत्तर विमानें इंद्रक विमानथकी चारे दिशायें चार पंक्ति एकेका विमाननी थइ छे.

हवे मध्यनुं विमान वाटलुं होय ते पछी चारे दिशायें पंक्तिनुं पहेलुं एकेकुं विमान त्रिखूणुं होय, पछी चोखूणुं होय, पछी वली वाटलुं होय, पछी वली त्रिखूणुं, वली चोखूणुं होय, पछी वाटलुं होय. ए रीतें त्रण प्रकारनां विमानो पंक्तिमां छे.

अने ए चार पंक्तियोना आंतराने वचें जे विमानो छे ते जेम रायणना फूल बूटां बूटां विखरेलां जेम तेम पड्यां होय, तेनी पेरें नंदावर्त्त, स्वस्तिक प्रमुख विविध संस्थानवालां पुष्पावकीर्ण विमानो छे. तेनी पंक्तियो नथी.

सघला वाटला गोल विमानने एक बारणुं होय अने त्रिखूणा विमाननें त्रण बारणां होय. तथा चोखूणा विमानने चार बारणां होय.

पहेला प्रतरना चारे दिशि संबंधि पंक्तिगत एकेकुं विमान देवद्वीपें छे, तेमज बे बे विमान नाग समुद्रनी चारे दिशायें छे, चार चार विमान यक्ष द्वीपनी चारे दिशायें छे, तथा आठ आठ विमान जूतसमुद्रनी चारे दिशायें छे, शोल शोल विमान, स्वयंजुरमण नामा द्वीपनी चारे दिशिनें विषे छे. तथा एकत्रीश एकत्रीश विमान स्वयंजुरमण समुद्रनी चारे दिशायें छे. एम मेलवतां एक दिशानां बाशठ थाय अने चारे दिशानां २४७ थाय. तेनी सार्थे वच्चमानुं इंद्रक विमान मेलवीयें तेवारें २४९ विमान थाय.

चोखूणा विमानने चारे दिशायें कांगरा विनानो सादो गढ होय तेने वेदिका कहियें. अनें वाटला विमानने कांगरा सहित कोट होय तथा त्रिखूणीया विमानने तो जे दि

शायें वाटलां विमान होय ते दिशायें वेदिका एटले कांगरां विनानो कोट होय अने बाकीनी सर्व दिशायें कांगरां सहित कोट होय.

आवलिकागत विमानोने मांहोमांहे अंतर असंख्याता योजननुं छे अने पुष्पावकीर्णने मांहोमांहे संख्याता तथा असंख्याता योजननुं पण अंतर छे.

सौधर्म तथा ईशान, ए बे देवलोकना तेर प्रतर छे. तेमां प्रथम प्रतरनी चार दिशिनी पंक्तिनां विमान २४९ थाय. तेने मुख्य विमान कहीयें. अने छेहला तेरमा प्रतरनी चार दिशिनां पंक्तिगत विमान २०१ थाय. तेने भूमि कहियें. ए बेहुने एकठां करतां ४५० थाय. तेने समास कहीयें. पछी एनुं अर्द्ध करीनें छेहला तेरमा प्रतर सार्थे गुणीयें तो २९२५ पंक्तिगत विमाननी संख्या थाय. एम सघला देवलोकने विषे गणित करतां वांछित देवलोकना पंक्तिगत विमानोनी संख्या थाय.

हवे जेम सौधर्म तथा ईशान मली बे देवलोकनां पंक्तिगत विमान २९२५ थयां. शेष ५९९७०७५ पुष्पावकीर्ण विमान जाणवां. सर्व मली ६०००००० विमान छे. ते समजवामां आववा माटें सर्व देवलोकोनां वाटलां, त्रिखूणां, तथा चोखूणां अने पुष्पावकीर्ण विमान संबंधि गणतरीनो यंत्र आ पुस्तकमां दाखल कर्यो छे ते जोवो.

हवे वैमानिक देवोने विषे प्रत्येक देवलोकें विमाननी संख्या कहे छे.

देवलोकनां नाम.	विमान संख्या.	देवलोकनां नाम.	विमान संख्या.
सौधर्म देवलोकें.	बत्रीश लाख.	सहस्रार देवलोकें.	छ हजार.
ईशान देवलोकें.	अठावीश लाख.	आणत प्राणत देवलोकें.	चारसो विमान.
सनत्कुमार देवलोकें.	बार लाख.	आरण अच्युत देवलोकें.	त्रणसो विमान.
माहेंद्र देवलोकें.	आठ लाख.	ग्रैवेयकना हेठिमत्रिकें.	एकसो अगियार.
ब्रह्मदेवलोकें.	चार लाख.	ग्रैवेयकना मध्यमत्रिकें.	एकसो सात.
लांतक देवलोकें.	पचास हजार.	ग्रैवेयकना उवरिमत्रिकें.	एकसो विमान.
शुक्र देवलोकें.	चालीश हजार.	पांचेअनुत्तरविमानें मली	पांच विमान.

सर्व मली ऊर्ध्वलोकें ८४९७०२३ विमानो छे. ए विमान अत्यंत सुरभिगंध वाला माखणनी पेरें सुकुमार अने सुखकारी फरस वाला तथा उद्योतवंत मनोहर एवी देवोनी पोतानी कांतियें करीने बिराजमान छे.

लोकपालनां विमान बार लाख योजन लांबां पहोलां देवलोकना प्रत्तरमांहे जिहां इंद्रोनां निजकल्प अवतंसक विमान छे,तेनी चारदिशिने विषे चार लोकपालनां विमान छे.

भवनपतिना वीशे इंद्र जंबूद्वीपने छत्र अने मेरुपर्वतने दंडनी पेठें करवा समर्थ छे.

सौधर्म देवलोकें अपरिग्रहीता देवीयोनां ब लाख विमान बे,ते देववेश्या कहेवाय बे, तेमां पण जे त्रीजा देवलोकनी निश्रायें बे, ते त्रीजे देवलोकेंज जाय.

ईशान देवलोकें अपरिग्रहीता देवीयोनां चार लाख विमान बे, तेमां पण जे चोथा प्रमुख देवलोकना देवताउने नोगयोग्य बे, ते चोथे देवलोकेंज जाय.

बधा देवो केटला प्रकारना बे ? ते कहे बे.

१ इंद्र पोतें सर्वेचारनिकायनाइंद्रोजाणवा.
२ सामानिकदेव जे इंद्रसरखी ऋद्धिना धणी होय तेने कहेवा.
३ इंद्रसरखी ऋद्धिना धणी होय इंद्रने गुरु स्थानीया सलाह पूबवा योग्य,सर्वेने पूज नीय जेदेवो तेने तायत्रिंशक देवो कहीयें.
४ इंद्रोनी बाह्य अन्यंतर अने मध्य एवी त्रण पर्षदाना देवो.
५ इंद्रोना शरीरनी रक्षा करनारा देवो ते अंगरक्षक आत्मरक्षक देवो जाणवा.
६ चारलोकपालना देवो ते सोम,यम,वरुण अने कुबेर ए चार जाणवा.
७ सात प्रकारना कटकना देवो.
८ प्रजाना देवो.
९ आनियोगिक ते किंकर देवो.
१० कैल्बिषिक देवो.

ए दश जातिना देवो नवनपति, व्यंतर तथा वैमानिकमां बे.

नवनपतिनी दश निकायनां आजरण उपर चिन्ह तथा शरीरना वर्ण.

दश निकायनां नाम.	असुर कुमार	नाग कुमार.	सुवर्ण कुमार.	विद्यु त्कुमार	अग्नि कुमार	द्वीप कुमार.	उदधि कुमार	दिशि कुमार	वायु कुमार	स्तनित कुमार.
आजरण उपर चिन्ह.	चूडा मणि.	सर्प.	गरुड पंखी.	वज्र.	पूर्ण क लश.	सिंह.	घोडो.	हाथी	मच्छ.	वर्द्धमा नस०
वस्त्र वर्ण.	रातां	नीलां	उज्ज्वल	नीलां	नीलां	नीलां	नीलां	उज्ज्व	संध्या	उज्ज्वल.
शरीर वर्ण.	कालो	गोर.	कनक	रक्तवर्ण	रक्त.	रक्त.	गोर.	कनक	नीलो	कनक.

कटकना देवो सात प्रकारना बे, ते कहे बे.

पहेला गंधर्वानीक गांधर्वदेवो ते मृदंगधर जाणवा.	बीजा नटानीक ते नाटक करनार.	त्रीजुं घोडानुं कटक.	चोथुं हाथीनुं कटक.	पाचमुं रथनुं कटक.	बठुं पालानुं कटक.	सातमुं वृषन्नुं कटक तथा पाडानुं कटक बे.

एमां प्रथमनां ब कटक सर्व इंद्रोने होय अने सातमुं वृषन्नुं कटक वैमानिक देवोने होय तथा अधोनिवासी जे नवनपति अने व्यंतर देवो बे तेने सातमुं महिषनुं कटक होय. एम साते प्रकारनुं कटक सर्व इंद्रोने होय.

अढीद्वीप समुद्रने विषे चंद्रमा तथा सूर्य केटला छे? तेनी संख्या कहे छे.

१ जंबूद्वीपमां बे सूर्य अने बे चंद्र.
२ लवण समुद्रमां चार सूर्य ने चार चंद्र.
३ धातकी खंममां बार चंद्र ने बार सूर्य.
४ कालोद समुद्रमां धातकी खंमना बारने त्रिगुणा करतां छत्रीश थांय तेमां जंबूद्वीपने लवण समुद्रना छभेलीयें, तेवारें बेहेंतालीश चंद्र अने बेहेंतालीश सूर्य थाय.
५ पुष्करवर द्वीपमां धातकी खंमना बेहेंतालीने त्रिगुणा करतां १२६ थाय तेनी साथें जंबूद्वीपना बे, लवण समुद्रना चार अने धातकीखंमना बार मली अढार में लवीयें, तेवारें १४४ थाय, तेमां अर्द्धद्वीपें ७२ चंद्र अने ७२ सूर्य आवे.

सर्व मेलवतां जंबूद्वीपना बे, लवण समुद्रना चार, धातकीखंमना बार, कालोद समुद्रना बेहेंतालीश अने पुष्करार्द्धना बहोंतेर मली १३२ चंद्र अने १३२ सूर्य थाय. अढीद्वीपमां सूर्यनीपंक्ति बे तथा चंद्रमानी पंक्ति बे एकेक पंक्तिमांएकेकने आंतरें छाशठ छाशठ सूर्य तथा छाशठ छाशठ चंद्र छे.

१ ज्योतिषीनां माहारमणिक स्फाटिकरत्नमय विमान, अर्द्धा कोठफलने आकारें छे.
२ ते विमान व्यंतरना नगरोथकी असंख्यातगुणां छे.
३ लवण समुद्रमां ज्योतिषीनां विमान पाणीने फाडी नाखे एवा दिगस्फाटिक रत्नमय छे तेथी लवण शिखामांथी चाल्या जतां बाधा थती नथी.

हवे ज्योतिषीनी शीघ्रशीघ्रतरगति कहे छे.
१ सर्वथकी थोडो चंद्रमा चाले.
२ तेथकी सूर्य शीघ्र चाले.
३ तेथकी ग्रह शीघ्र चाले.
४ तेथकी नक्षत्र शीघ्र चाले.
५ तेथकी तारा शीघ्र चाले.

हवे ए ज्योतिषीनी रुद्धि कहे छे.
१ सर्वथकी तारानी स्वल्प रुद्धि छे.
२ तेथकी नक्षत्रनी रुद्धि अधिक छे.
३ तेथकी ग्रहनी महोटी रुद्धि छे.
४ तेथकी सूर्यनी महोटी रुद्धि छे.
५ तेथकी चंद्रमानी महोटी रुद्धि छे.

हवे चंद्रसूर्यादिक ज्योतिषीना विमानवाहक देवोनी संख्या कहे छे.

१ चंद्र विमान वाहक शोलहजार देवो छे.
२ सूर्य विमान वाहक शोलहजार देवो छे.
३ ग्रह विमान वाहक आठ हजार देवो छे.
४ नक्षत्र विमान वाहक चार हजार देवो छे.
५ ताराना विमान वाहक बे हजार देवो छे.
६ ए पांचे ज्योतिषीयोना जे विमान वाहक छे ते बरावर सरखे चोथे नागें एकेकी दिशियें जूदे जूदे रूपें वहे छे, तेमां चंद्रमाना पूर्वदिशायें सिंहने रूपें तथा दक्षिणदिशें हाथीने रूपें, पश्चिमदिशियें वृषभने रूपें अने उत्तरदिशियें अश्वने रूपें चार चार हजार किंकर देवो वहे छे.

१ एक चंद्रमानी परवाडे अठाशीग्रह, अठावीश नक्षत्र, ६६९७५ एटली कोडाकोडी तारा, एटलो परिवार चाले.

२ राहुनुं विमान कालुं छे सर्वदा चंद्रमानी हेठें चार अंगुल छेटे चाले छे. तिहां राहु बे प्रकारें छे एक नित्यराहु अने बीजो पर्वराहु छे, ते पर्वराहु जघन्यथी छ महीने चंद्र विमानने ग्रहण करे छे.

ज्योतिषी देवोना विमानोनी लंबाइ पहोलाइ तथा उंचपणानो यंत्र.

ज्योतिषी देवोना प्रकार.	मनुष्य क्षेत्र मांहेला विमानोनी लंबाइ पहोलाइ एक योजनना एकशठिया भाग.	विमानोनुं उच्चपणुं योजनना एकशठिया भाग.	मनुष्यक्षेत्रथी बाहिरला विमानोनी लंबाइपहोलाइयोजनना एकशठिया भाग.	मनुष्यक्षेत्रथी बाहिरला विमानोनुं उच्चपणुं योजनना एकशठिया भाग.
१ चंद्रमा.	छप्पन भाग.	अठावीश भाग.	अठावीश भाग.	चौद भाग.
२ सूर्य.	अडतालीश भाग.	चोवीश भाग.	चोवीश भाग.	बार भाग.
३ ग्रह.	बे गाउ.	एक गाउ.	एक गाउ.	अर्द्ध गाउ.
४ नक्षत्र.	एक गाउ.	अर्द्ध गाउ.	अर्द्ध गाउ.	गाउनोचोथोभाग
५ तारा.	अर्द्ध गाउ.	गाउनोचोथोभाग.	गाउनो चोथो भाग.	गाउनोआठमोभा

ज्योतिषीनां विमानो समभूतलथकी केटलां उंचां छे ? तेना यंत्रनी स्थापना.

समभूतला० पृथ्वी थकी.	तारा.	सूर्य.	चंद्र.	नक्षत्र.	बुध.	शुक्र.	बृहस्पति.	मंगल.	शनि.
	७९०	८००	८८०	८८४	८८८	८९१	८९४	८९४	९००

सर्व नक्षत्रमां सर्वथकी हेठें भरणी नक्षत्र चाले छे अने स्वाति नक्षत्र उपर चाले छे तथा सर्वथी बाहिर मूल नक्षत्र चाले छे अने सर्वनी वचाले अभिजित् नक्षत्र चाले छे.

केटला एक समुद्र संबंधी पाणीना स्वाद तथा तेमां रहेला मत्स्योना अल्प बहुत्व अने तेमत्स्यना शरीर माननो यंत्र.

समुद्रनां नाम.	वारुणिवर समुद्र.	क्षीरवर समुद्र.	घृतवर समुद्र.	लवण समुद्र.	कालोदधिसमुद्र.	पुष्करवर समुद्र.	स्वयंभूरमण समुद्र.	बाकीअसंख्याता स०
पाणी. नो स्वाद.	मदिरासमान.	क्षीरदुधनो स्वाद.	चोखाघृतनोस्वाद	लुणनो स्वाद.	मधनो स्वाद.	मेहनुं पाणी.	मेहनुं पाणी.	इक्षुरस जेवो स्वाद.
मत्स्यसं०	अल्प.	अल्प.	अल्प.	बहु.	बहु.	अल्प.	बहु.	अल्प.
मत्स्यदेह मान.	तुछदेह मान.	अल्पदेह मान.	तुछदेह मान.	५०० योजन.	७०० योजन.	छोटोदेह मान.	१००० योजन.	तुछदेह. मान.

हवे वैमानिक देवोना शरीरनुं प्रमाण, तेमना आयु उपर कहे छे. जेम के सौधर्म तथा ईशान देवलोकें बे सागरोपम उत्कृष्टायु छे तेमनुं शरीर सात हाथ प्रमाण छे. तो सनत्कुमार तथा माहेंद्रें सात सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति छे. तेमांथी पूर्वोक्त बे सागरोपम काढीयें,तेवारें शेष पांच सागरोपम रहे, तेमांथी पण वली त्रण सागरोपमायु वालानुं शरीर मान कहेवुं छे माटे बीजो पण एक आंक उंगो करीयें,तेवारें शेष चार आंक रहे.

तिहां सौधर्म तथा ईशान देवलोकना देवोनुं शरीर सात हाथनुं छे,तेमांथी छ हाथ पूरा राखीयें बाकी एक हाथना अगीयार भाग करीयें, ते मांहेला चार भाग कांहाढी लइयें. बाकी सात भाग पडता मूकीयें तेवारें सनत्कुमार तथा माहेंद्र देवलोकना त्रण सागरोपमायुवाला देवोनुं छ हाथ पूरा अने तेनी उपर एक हाथना अगीयार भाग करीयें तेवारें चार भाग, एटलुं देहमान थाय. एम आयुष्यनुं एकेको सागरोपम वधारतां शरीरना मानमांथी एक हाथनो अगीयारियो एकेको भाग घटाडतां संपूर्ण सात सागरोपम आयुवाला देवोनुं पूरुं छ हाथ देहमान थाय.

तथा ब्रह्मदेवलोकें अने लांतकदेवलोकें चौद सागरोपमनी उत्कृष्टी स्थिति छे. तेमांथी त्रीजा चोथा देवलोकना आठ सागरवाला देवोनुं आयु कहेवुं छे, माटें आठ कांहाढी नाखीयें शेष छ आंक रहे. हवे एक हाथना अगीयार भाग करीयें, तेमांथी पांच भाग पडता मूकीयें बाकी छ भाग राखीयें,तेवारें पांचमा,छठा देवलोकना आठ सागरोपम आयुवाला देवोनुं पांच हाथनी उपर एक हाथना अगीआरीया छ भाग एटलुं देहमान जाणवुं.ए रीतें सर्व देवलोकोनेविषे वत्तीरो करवो,एनो यंत्र नीचें लखेलो छे ते जोइ लेवो.

सामान्यपणे भवनपति, व्यंतर, जोतिषी, अने सौधर्म, ईशान, पर्यंत सात हाथ शरीर छे. उपरांत सनत्कुमारथी मांमी बारमो अच्युतदेवलोक तथा नवग्रैवेयक अने पंचानुत्तरें ज्यां जेटला सागरोपमायु छे, त्यां आ प्रमाणें शरीनुं मान कहेवुं.

सागर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
हस्त.	७	७	६	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५	४	४
भाग.	०	०	४	३	२	१	०	६	५	४	३	२	१	०	३	२
छेदांक.	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११

सागर.	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
हस्त.	४	४	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१
भाग.	१	०	३	२	१	०	८	७	६	५	४	३	२	१	०	१	०
छेदांक.	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११

सर्व इंद्रोना सामानिक देवो, गुरुस्थानीया तायत्रिंशक देवो, आत्मरक्षक देवो, लोकपाल तथा पर्षदानी संख्या, कटकना प्रकार कटकाधिपनी संख्यानो यंत्र.

इंद्रोनां नाम	सामानिकदेव.	ताय०	आत्मरक्ष.	लोकपा.	पर्षदा.	अनीक.	अनीकाधि
चमरेंद्र.	६४०००	३३	२५६०००	४	३	७	७
बलींद्र.	६००००	३३	२४००००	४	३	७	७
धरणेंद्रप्रमुख१८	६०००	३३	२४०००	४	३	७	७
व्यंतरेंद्र बत्रीश.	४०००	०	१६०००	०	३	७	७
चंद्रसूर्य २.	४०००	०	१६०००	०	३	७	७
सौधर्मेंद्र.	८४०००	३३	३३६०००	४	३	७	७
ईशानेंद्र.	८००००	३३	३२००००	४	३	७	७
सनत्कुमारेंद्र.	७२०००	३३	२८८०००	४	३	७	७
माहेंद्र.	७००००	३३	२८००००	४	३	७	७
ब्रह्मेंद्र.	६००००	३३	२४००००	४	३	७	७
लांतकेंद्र.	५००००	३३	२०००००	४	३	७	७
शुक्रेंद्र.	४००००	३३	१६००००	४	३	७	७
सहस्रारेंद्र.	३००००	३३	१२००००	४	३	७	७
आनतप्राणत.	२००००	३३	८००००	४	३	७	७
आरण अच्युत.	१००००	३३	४००००	४	३	७	७

व्यंतर तथा वाणव्यंतर देवोना दक्षिण उत्तर इंद्र तथा चिन्ह अने शरीरना वर्ण.

वाणव्यंतर	दक्षिणेंद्र.	उत्तरेंद्र.	व्यंतरनि०	दक्षिणेंद्र.	उत्तरेंद्र.	चिन्ह.	वर्ण.
अणपन्नी.	सन्निहित.	सन्मान.	पिशाच.	काल.	माहाकाल.	कदंबवृक्ष.	कालेवर्णे.
पणपन्नी.	धाता.	विधाता.	भूत.	सुरूप.	प्रतिरूप.	सुलसवृक्ष.	कालेवर्णे.
ऋषिवादी	ऋषि.	ऋषिपाल.	यक्ष.	पूर्णभद्र.	मणिभद्र.	वडवृक्ष.	कालेवर्णे.
भूतवादी.	ईश्वर.	महेश्वर.	राक्षस.	भीम.	माहाभीम.	खट्वांग.	धवलवर्णे.
कंदी.	सुवत्स.	विशाल.	किन्नर.	किन्नर.	किंपुरुष.	अशोकवृक्ष.	नीलवर्णे.
माहाकंदी	हास्य.	हास्यरति.	किंपुरुष.	सुपुरुष.	माहापुरुष.	चंपकवृक्ष.	धवलवर्णे.
कोहंडग.	श्वेत.	माहाश्वेत.	महोरग.	अतिकाय	माहाकाय.	नागवृक्ष.	कालेवर्णे.
प्लवक.	प्लवक.	प्लवकपति.	गंधर्व.	गीतरति.	गीतयश.	टींबरुवृक्ष.	कालेवर्णे.

प्रत्येक देंवलोकें प्रतरें प्रतरें चतुरस्र प्रमुख जुदी जुदी जातना विमानोनी संख्यानो यंत्र.

सौधर्मईशानें प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	८४	८४	८०	८०	८०	७६	७६	७६	७२	७२	७२	६८	६८	९८८
चतुरस्र विमान.	८४	८०	८०	८०	७६	७६	७६	७२	७२	७२	६८	६८	६८	९७२
वृत्त विमान.	८१	८१	८१	७७	७७	७७	७३	७३	७३	६९	६९	६९	६५	९६५
सर्व संख्या.	२४९	२४५	२४१	२३७	२३३	२२९	२२५	२२१	२१७	२१३	२०९	२०५	२०१	२९२५

सनत्कुमार माहेंद्रें प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	६८	६४	६४	६४	६०	६०	६०	५६	५६	५६	५२	५२	७१२
चतुरस्र विमान.	६४	६४	६४	६०	६०	६०	५६	५६	५६	५२	५२	५२	६९६
वृत्त विमान.	६५	६५	६१	६१	६१	५७	५७	५७	५३	५३	५३	४९	६९२
सर्व विमान संख्या.	१९७	१९३	१८९	१८५	१८१	१७७	१७३	१६९	१६५	१६१	१५७	१५३	२१००

ब्रह्मदेवलोकेंप्रतर.	१	२	३	४	५	६	सर्वसं०	शुक्रदेव० प्र०	१	२	३	४	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	५२	४८	४८	४८	४४	४४	२८४	त्र्यंश विमान.	३६	३६	३२	३२	१३५
चतुरस्र विमान.	४८	४८	४८	४४	४४	४४	२७६	चतुरस्रविमान.	३६	३२	३२	३२	१३२
वृत्त विमान.	४९	४९	४५	४५	४५	४१	२७४	वृत्त विमान.	३३	३३	३३	२९	१२८
सर्व विमानसंख्या.	१४९	१४५	१४१	१३७	१३३	१२९	८३४	सर्वविमानसं०	१०५	१०१	९७	९३	३९६

लांतकदेवलोकें प्र०	१	२	३	४	५	सर्वसं०	सहस्रारदे०प्र०	१	२	३	४	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	४४	४०	४०	४०	३६	२००	त्र्यंशविमान.	३२	२८	२८	२८	११६
चतुरस्र विमान.	४०	४०	४०	३६	३६	१९२	चतुरस्रविमान.	२८	२८	२८	२४	१०८
वृत्त विमान.	४१	४१	३७	३७	३७	१९३	वृत्तविमान.	२९	२९	२५	२५	१०८
सर्वविमानसंख्या.	१२५	१२१	११७	११३	१०९	५८५	सर्वविमानसं०	८९	८५	८१	७७	३३२

आनत,प्राणतदे०प्र.	१	२	३	४	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	२४	२४	२४	२०	९२
चतुरस्र विमान.	२४	२४	२०	२०	८८
वृत्त विमान.	२५	२१	२१	२१	८८
सर्वविमानसंख्या.	७३	६९	६५	६१	२६८

आरणअनेअच्युतदे.	१	२	३	४	सर्वसंख्या.
त्र्यंशविमान.	२०	२०	१६	१६	७२
चतुरस्र विमान.	२०	१६	१६	१६	६८
वृत्त विमान.	१७	१७	१७	१३	६४
सर्वविमानसंख्या.	५७	५३	४९	४५	२०४

ग्रैवेयकपहेलात्रिकें प्र०	१	२	३	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	१६	१२	१२	४०
चतुरस्र विमान.	१२	१२	१२	३६
वृत्तविमान.	१३	१३	९	३५
सर्वविमानसंख्या.	४१	३७	३३	१११

ग्रैवेयकउपरिमत्रिकें प्र.	१	२	३	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	८	४	४	१६
चतुरस्र विमान.	४	४	४	१२
वृत्त विमान.	५	५	१	११
सर्वविमानसंख्या.	१७	१३	९	३९

ग्रैवेयकमध्यत्रिकें प्रतर.	१	२	३	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	१२	८	८	२८
चतुरस्रविमान.	८	८	८	२४
वृत्त विमान.	९	९	५	२३
सर्वविमानसंख्या.	२९	२५	२१	७५

पंचानुत्तरविमानें प्रतर.	१	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	४	४
चतुरस्रविमान.	०	०
वृत्त विमान.	१	१
सर्वविमानसंख्या.	५	५

वैमानिकमां प्रत्येक देवलोकें वाटलां, त्रिखूणां, चौखूणां अने पुष्पावकीर्ण विमानोनी संख्यानो यंत्र.

देवलो०	सौधर्म.	ईशान.	सनत्कु०	माहेंद्रें	ब्रह्मे.	लांतकें	शुक्रें.	सहस्रा.	आ.प्रा.	आ.	अधो	मध्य	उप०	पंचा०	सर्व संख्या.
वाटलां०	७२७	२३८	५२२	१७०	२७४	१९३	१२८	१०८	८८	६४	३५	२३	११	१	२५८२
खूणां.	४९४	४९४	३५५	३५६	२८४	२००	१३६	११६	९२	७२	४०	२८	१६	४	२६८८
चोखूणां	४८६	४८६	३४८	३४८	२७६	१९२	१३२	१०८	८८	६८	३६	२४	१२	०	२६०४

वैमानिक देवोनां चिन्ह तथा मुख्य विमाननुं नाम तथा विमानोना वर्ण अने विमानोनुं उंचपणुं तथा पृथ्विपिंड ते कया देवलोकें केटलो उंचपणे छे? तथा तेमनां विमान शेने आधारें रह्यां छे? तेनो यंत्र.

२देंवलोकनुंनाम.	शेनेआधारेंरह्या.	चिन्ह.	इंद्रविमान.	पृथ्विपिंड.	उंचपणुं.	विमान वर्ण.				
						कालो.	नीलो.	रातो.	पीलो.	धोलो.
सौधर्मदेवलोक.	घनोदधि आधारें.	मृगनुं.	सर्वतोभद्र.	२७००	५००	कालो.	नीलो.	रातो.	पीलो.	धोलो.
ईशानदेवलोक.	घनोदधि आधारें.	महिष.	विमल.	२७००	५००	कालो.	नीलो.	रातो.	पीलो	धोलो.
सनत्कुमारदेव.	घनवात आधारें.	वाराह.	मनोरम.	२६००	६००	०	नीलो.	रातो.	पीलो.	धोलो.
माहेंद्रदेवलोक.	घनवात आधारें.	सिंह.	प्रियंगम.	२६००	६००	०	नीलो.	रातो.	पीलो.	धोलो.
ब्रह्म देवलोक.	घनवात आधारें.	बकरो.	कामग.	२५००	७००	०	०	रातो.	पीलो.	धोलो.
लांतकदेवलोक.	घनोदधिघनवात.	देडको.	नंदावर्त्त.	२५००	७००	०	०	रातो.	पीलो.	धोलो.
शुक्र देवलोक.	घनोदधिघनवात.	अश्व.	श्रीवत्स.	२४००	८००	०	०	०	पीलो.	धोलो.
सहस्रारदेवलो०	घनोदधिघनवात.	हाथी.	सौमनस्य.	२४००	८००	०	०	०	पीलो.	धोलो.
आनतदेवलोक	आकाशने आधारें	सर्प्प.	पुष्पकवि०	२३००	९००	०	०	०	०	धोलो.
प्राणतदेवलोक.	आकाशने आधारें	गेंडो.		२३००	९००	०	०	०	०	धोलो.
आरणदेवलोक	आकाशने आधारें	वृषभ.	पालक.	२३००	९००	०	०	०	०	धोलो.
अच्युतदेवलोक	आकाशने आधारें	मृगविशेष.		२३००	९००	०	०	०	०	धोलो.
नवग्रैवेयक.	आकाशने आधारें	०	०	२२००	१०००	०	०	०	०	धोलो.
पंचानुत्तरविमा.	आकाशने आधारें	०	०	२१००	११००	०	०	०	०	धोलो.

१ एक लवण समुद्रमां जंबूद्वीप सरखा चोवीश खंड समाय.
२ धातकी खंडमां जंबूद्वीप सरखा १४४ खंड समाय.
३ कालोद समुद्रमां जंबूद्वीप सरखा ६७२ खंड समाय.
४ पुष्करार्द्धमां जंबूद्वीप सरखा २४८४ खंड समाय.
५ आखा पुष्करार्द्धमां जंबूद्वीप सरखा ११९०४ खंड समाय.

१ जेवा विमानोना वर्ण तेवाज ते विमानोनी ध्व जाउना वर्ण पण जाणी लेवा.
२ भवनपति, व्यंतर अने ज्योतिषी देवोना विमानो कोइ कालां, कोइ नीलां, कोइ पीलां, कोइ रातां अने कोइ श्वेत एम विविध वर्ण वालां छे.

१ सौधर्म ईशान देवलोकें दक्षिणादिशिना विमानोनी पंक्ति ते दक्षिणेंद्रनी जाणवी.
२ उत्तरदिशिना विमानोनी पंक्ति उत्तरेंद्रनी.
३ पूर्व अने पश्चिमदिशायें जे आवलिकागत वाटलां विमान छे,ते सर्व दक्षिणेंद्रनांछे.
४ पूर्वपश्चिमें जे आवलिकागत त्रिंशच्चतुरस्र विमान, ते बेहु इंद्रोनां अर्धोअर्ध छे.
५ पूर्वपश्चिमें जे वचला मध्यनां इंद्रकवृत्त विमान छे, ते सर्व दक्षिणेंद्रनां छे.
६ पुष्पावकीर्ण विमान अर्धोअर्ध छे.

वैमानिकदेवोमां प्रत्येकदेवलोकें विमानोनी संख्या आणवामाटें मुख भूमिसमासादिनोयंत्र

देवलोक नाम.	सौधर्मेशान.	सनत्कुमारेंद्र	ब्रह्मदेव लोक.	लांतकदेवलोक.	शुक्रदेवलोक.
मुख.	२४९	१९७	१४९	१२५	१०५
भूमि.	२०१	१५३	१२९	१०९	९३
समास.	४५०	३५०	२७८	२३४	१९८
तदर्ध.	२२५	१७५	१३९	११७	९९
प्रतरें गुणवाना.	१३	१२	६	५	४
आवली संख्या.	२९२५	२१००	८३४	५८५	३९६
पुष्पावकीर्ण.	५९९७०७५	१९९७९००	३९९१६६	४९४१५	३९६०४
सर्वसंख्या.	६००००००	२००००००	४०००००	५००००	४००००

सहस्रार देवलोक.	आनत प्राणत.	आरण अच्युत.	अधो ग्रैवेयकत्रिक.	मध्य ग्रैवेयकत्रिक.	ऊर्ध्व ग्रैवेयकत्रिक.	पंचानुत्तर.	ऊर्ध्वलोकें सर्व संख्या.
८९	७३	५७	४१	२९	१७	५	२४९
७७	६१	४५	३३	२१	९	०	५
१६६	१३४	१०२	७४	५०	२६	०	२५४
८३	६७	५१	३७	२५	१३	०	१२७
४	४	४	३	३	३	१	६२
३३२	२६८	२०४	१११	७५	३९	५	७८७४
५६६८	१३२	९६	०	३२	६१	०	८४८९१४९
६०००	४००	३००	१११	१०७	१००	५	८४९७०२३

हवे भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने पहेला बीजा देवलोकना देवो कायायें करी संभोग सेवे छे. मनुष्यनी पेरें भोगवे छे, परंतु मनुष्यने,स्त्रीनी सेवा करतां वीर्य खरे, एटले कामथी निवृत्ति पामे. अने देवताने वीर्य होय नही,माटें अतृप्ताज होय. जेवारें क्यारेंक मन निवर्ते, तेवारेंज संभोग न होय, नहींकां अतृप्ता थका सर्वदा भोग भोगवताज रहे छे.

त्रीजा चोथा देवलोकना देवो मुख,हाथ,नख,स्तन प्रमुखना फरसें करी संभोग सुख पामे. पांचमा छठा देवलोकना देवो देवांगनानां रूप देखी संभोगसुख पामे.
सातमा आठमा देवलोकना देवो देवांगनानो गीत,हास्यना शब्द सांभलीनेसंभोगसुखपामे.
उपरांत आणतादि चार देवलोकना देवता तो पोताने स्थानकें रह्या थकाज जे देवांगनानी मनमां चिंतवणा करे, तेवारें ते देवी पण पोताने स्थानकें बेठी भलीबुरी कामचेष्टा मनमां धरतीभोग माटे सावधान थाय, तेवारें ते देवो तिहांज रह्या मनःसंकल्पें सुरत सुख पामे.

नवग्रैवेयक तथा अनुत्तरविमानवासी देवोने विषयविकार अल्प छे, तेथी ते कोइ रीतें देवांगनाने सेवता नथी तथापि तेमने सुख बीजा देवोथी पण अनंतगुणुं छे.

सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी देवीयो कया देवलोकवालाने केटला आयुवाली भोगमां आवे? तथा ते देवोने भोगनी इछा केवी रीतें पूर्ण थाय? तेनो यंत्र.

भवनपति,व्यंतर अने ज्योतिषी देवो सर्व काय सेवी छे.अने वैमानिक देवोनो यंत्र थाप्योछे.

सौधर्म. १	पल्यो० १	काय भोग सेवी.	ईशान. २	पल्यो० १	काय भोग सेवी.
सनत्कु० ३	पल्यो० १०	फरसभोग सेवी.	माहेंद्र. ४	पल्योप० १५	फरसभोग सेवी.
ब्रह्मदेव. ५	पल्यो० २०	रूपदेखी भोगसेवी.	लांतक. ६	पल्योप० २५	रूपदेखीभोगसेवी.
शुक्रलोक.७	पल्यो० ३०	शब्दभोग सेवी.	सहस्रा. ८	पल्योप० ३५	शब्दसंभोग सेवी.
आनत. ९	पल्यो० ४०	मनेंकरी,मनसेवी.	प्राणत.१०	पल्योप० ४५	मनेंकरीभोग सेवी.
आरण.११	पल्यो० ५०	मनेंकरीभो०मनसे.	अच्युत.१२	पल्योप० ५५	मनेंकरीभोग सेवी.

सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी देवीयोनुं गमनागमन कया कया देवलोक सुधी छे. तेनो यंत्र तथा त्रण प्रकारना किल्बिषीया देवोनुं आयु अने उत्पत्ति स्थाननो यंत्र.

सौधर्मदेवलोकनी.	१—२—३—४	किल्बिषी देवोनुं.	आयुष्य.	उत्पत्तिस्थान.
देवीनुं गमनागमन.	५—६—७—८	किल्बिषी देवोनुं.	पल्य. ३	सौधर्म ईशानें नीचें.
ईशान देवलोकनी.	१—२—३—४	किल्बिषी देवोनुं.	सागर. ३	सनत्कु०माहेंद्रनीचें
देवीनुं गमनागमन.	५—६—७—८	किल्बिषी देवोनुं.	सागर.१३	ब्रह्मलांतकनी नीचें.

हवे किल्बषीया देवोनो अधिकार कहे छे.

ए देवो अशुभकर्मना उदयथी देवतामांहे चंमाल सरखा जाणवा, तेमनां स्थानक कहे छे.

१ जे देवो सौधर्म तथा ईशान देवलोकने तलें वसे छे, तेनुं त्रण पल्योपमायु छे.
२ जे देवो सनत्कुमार देवलोकने तलें वसे छे, तेनुं त्रण सागरोपम आयु छे.
३ जे देवो लांतक देवलोकने अधोभागें वसे छे, तेनुं तेर सागरोपमायु छे.

हवे वैमानिक देवोना शरीरना वर्ण कहे छे.

१ सौधर्मईशान ए बे देवलोकना देवोनां शरीर सुवर्ण सरखी कांतिवालां छे.
२ त्रीजा चोथा अने पांचमा देवलोकना देवोनां शरीरनी कांतिकमलना केसरा जेवी छे.
३ बठा लांतक आदिक सर्वे देवोनां शरीर एक बीजाथी उत्तरोत्तर उज्ज्वल उज्ज्वलतर अने उज्ज्वलतम शरीरवाली जाणवी.

हवे लोकांतिक देवोनुं सरूप कहे छे.

आ जंबुद्दीपथकी असंख्याता द्दीप समुद्र उल्लंघीयें, तेवारें अरुणवर नामा द्दीपनी वेदिकाना छेहडाथी अरुणवर नामा समुद्रमां बेहेंतालीश हजार योजन जइयें, तिहां पाणीनी उपरना तलीयाथी उंचो अप्कायमय महांधकाररूप तमस्काय निकल्यो छे, ते अगीयारसो योजन सुधी नींत सरखो थइने पछी तीर्छो विस्तार पामतो पामतो सौधर्मादि चार देवलोकने आवरी उंचो ब्रह्मदेवलोकना अरिष्टनामा त्रीजा प्रतरें जइ रह्यो छे.

हवे पांचमा देवलोकनो जे त्रीजो प्रतर छे तेना अरिष्टनामा विमाननी चारे दिशायें सचित्त पृथ्वीमय बे बे कृष्णराजियो छे.

एम चारें दिशिनी आठ कृष्णराजि नाटकना अखाडाने आकारें छे, ते आठे कृष्णराजिना आठ आंतरामां आठ विमान छे. अने नवमुं कृष्णराजिनी वचमां मध्यनागें विमान छे. ए नव विमानवासी देवो ते ब्रह्मलोकना समीपें वसे, माटें लोकांतिक देवो कहेवाय अथवा वचला मध्यनागना विमानवासी देवता सर्वे एकावतारी छे माटें लोकशब्दें संसार, तेने अंतें थया, माटें लोकांतिक देव कहेवाय छे.

बीजा आठ विमानमां वसनारा देवता एकांतें एकावतारी न होय पण नवमा विमानना देवो एकांतें एकावतारीज होय, ए नव प्रकारना लोकांतिक देवो पांचमा देवलोकने छेहडे वसे छे, तेमनुं आठ सागरोपमायु छे. तेमना विमानोनां नाम तथा पोतानां नाम अने जेमनें जेटला देवोनो परिवार छे, तेनी संख्या नीचें लखीयें छैयें.

विमाननांनाम	देवोनां नाम.	परिवार संख्या.			
१ अर्चिवि०	सारस्वत देव.	सातशें देवो.	५ चंद्राजवि०	गर्दतोय देव.	सात हजारदेव
२ अर्चिमाली	आदित्य देव.	सातशें देवो.	६ सूर्याजवि०	तुषित देव.	सातहजारदेवो
३ वैरोचन.	वन्हि देव.	चौदशें देवो.	७ शुक्राजवि०	अव्याबाधदेव	नवशें देवो.
४ प्रजंकर.	वरुण देव.	चौदशें देवो.	८ सुप्रतिष्ठाज.	आग्नेय देव.	नवशें देवो.
			९ रिष्ठाजवि०	रिष्ठाज देव.	नवशें देवोपरि.

हवे पीस्तालीश लाख योजनना त्रण पदार्थ छे, तेनां नाम कहे छे.

१ सीमंतनामें नरकावासो. २ मनुष्यक्षेत्र अढीद्दीप प्रमाण. ३ उडुविमान. ४ सिद्धशिला.

हवे त्रण पदार्थ एक लाख लाख योजनना छे, ते कहे छे.

१ अपइठाणो सातमा नरकनो नरकावासो, २ सर्वार्थसिद्ध विमान, अने ३ जंबूद्वीप.

हवे देवता कहेवा होय? तेनुं स्वरूप कहे छे.

१ सर्व देवता शुभकर्मना उदयथी केश, हाड, मांस, दाढी मूछना रोमनी वृद्धि, नख, रुधिर, वसा, चरबी, चामडी, मूत्र, विष्टा, एणे करी रहित निर्मल होय अने कर्पूर, कस्तूरीना सुगंध सरखो मुखनो निःश्वास होय; रजःप्रस्वेदादिक उपलेप रहित, कास श्वासादिक रोग रहित निरुज होय. तेजवंत शरीर होय.

२ उपजती वेलायें शालिभद्र प्रमुखना पितानी पेठें अंतरमुहूर्त्तमांहे पर्याप्ति पूरी करी पछी तरुण पुरुष सरखा निरंतर होय.

३ उपजतांज शरीरने विषे सर्व आभूषण पहेर्यां थकां उपजे.

४ सदा यौवनावस्था रहे, पण क्यारें वृद्धावस्था न आवे.

५ समचतुरस्र संस्थान होय. ६ आंख मटकावे नही निरंतर उघाडी रहे.

७ फूलनी माला पहेरेली कुमलाय नही. ८ चार आंगुल धरतीथी उंचा चाले.

हवे जे कारणें देवोने मनुष्यलोकमां आववुं पडे, ते कारणो कहे छे.

१ श्रीतीर्थंकरना पांच कल्याणिकें आवे. २ महाऋषीश्वरनी तपस्याना प्रभावें आवे.

३ जन्मांतरना स्नेहथी इहां आवे. ४ संगमानी पेठें क्रोधथी इहां आवे.

५ शीलना प्रभावें आवे, सुभद्रा शेठाणी माटें आव्या तेनी पेठें जाणवुं.

हवे देवता इहां कारण विना शामाटे न आवे? ते कहे छे.

१ देवांगनाना प्रेममां मग्न रह्या छे माटें. २ विषयसुखमां घणा आसक्त छे माटें.

३ मनुष्यने आधीन रहेवानुं काम नथी. ४ इहां जेवारें मनुष्य, तिर्यंचनां कलेवर घणा मुवेलां होय, तेवारें पांचशें योजन गंध उंचो जाय अशुभ गंध जाणे माटें न आवे,

हवे वैमानिक देवोना अवधिज्ञाननी स्थिति कहे छे.

१ सौधर्मदेवलोकना देवता तीर्छां असंख्याता द्वीप समुद्र देखे अने उपरला देवता तेथी घणा असंख्याता द्वीप समुद्र देखे. अने उंचुं पोताना विमाननी चूलिका ध्वजा सुधी देखे.

हवे नीचें क्यांसुधी देखे? ते कहे छे.

१ पहेला बे देवलोकवाला पहेली नरक लगें देखे. २ त्रीजा चोथावाला बीजी नरक लगें.

३ ब्रह्मलांतक वाला त्रीजी नरक लगें देखे. ४ शुक्रसहस्रार वाला चोथी नरक लगें देखे.

५ आणतादि चारवाला पांचमी नरक लगें देखे. ६ छ ग्रैवेयकना देवो छठी नरक लगें देखे.

७ उपरला त्रण ग्रैवेयक सातमी लगें देखे. ८ अनुत्तरना देवो कांइक ऊणुं लोकनाल देखे.

हवे सामान्यथी शेष देवोनो अवधि कहे छे.

१ जे सागरोपमथी किंचित् न्यून आउखावाला एवा जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी देवता छे ते अवधिज्ञानें करी संख्याता योजन पर्यंत देखे.
२ अर्द्ध सागरोपमथी वधता आउखावाला देवता असंख्याता योजन पर्यंत देखे.
३ जघन्यथी दश हजार वर्षायुवाला एवा जवनपति व्यंतर पच्चीश योजन लगें देखे.
४ जवनपति व्यंतर देवो उंचुं घणुं देखे, सौधर्म देवलोक सुधी देखे. ५ वैमानिक देवो नीचुं घणुं देखे. ६ नारकी अने ज्योतिषी तीर्छु घणुं देखे. ७ मनुष्य तिर्यंचने अनेकरीतें अवधि ज्ञान होय. इहां सुधी देवोनुं आयु तथा शरीरमान प्रमुख केटलिक एक वातो कही.

हवे नारकी जीवोना आयु प्रमुख कहेवा माटें प्रथम आयु कहे छे.

सामान्यथी जघन्योत्कृष्टायु साते नरकनुं प्रथम पांत्रीशद्वारना अधिकारें कहेवाएुं छे, अने इहां पाथडे पाथडे प्रथम उत्कृष्टायु कहे छे.

रत्नप्रजाना तेर पाथडा मांहेला पहेले पाथडे नेवुं हजार वर्ष, बीजाने विषे नेवुं लाख वर्ष, त्रीजाने विषे एक पूर्वकोटि वर्ष, चोथाने विषे एक सागरोपमना दश जाग करीयें तेवो एक जागायु अने पांचमानें विषे बेजाग एम पाथडे पाथडे एकेक जाग वधारतां यावत् तेरमे पाथडे संपूर्ण एक सागरोपम उत्कृष्टायु थाय छे.

अने जघन्यायु तो पहेले पाथडे दश हजार वर्ष, बीजे पाथडे दशलाख वर्ष, त्रीजे नेवुं लाख वर्ष, चोथे पाथडे एक पूर्वकोटि वर्ष, पांचमे एक सागरोपमना दश जाग करीयें तेवो एक जाग पछी पाथडे पाथडे एकेको जाग वधारतां यावत् तेरमे पाथडे एक सागरना दशीय्या नवजाग आयु थाय.

हवे बीजी नरकपृथ्वीआदिकमां उत्कृष्टी आयुःस्थिति आणवाने अर्थें उपाय कहे छे.

शर्करप्रजाने विषे उत्कृष्टी स्थिति त्रण सागरोपम छे, तेमांथी रत्नप्रजाने विषे उत्कृष्टी स्थिति एक सागरोपमनी छे ते काढीयें, तेवारें शेष बे सागरोपम रहे, ते बे सागरोपमने शर्करप्रजाना अगीयार प्रतरें जाग आपीयें, तेवारें एक जागमां एक सागरोपमना अगीयारीया बे जाग आवे, ते बेने वांछित प्रतर सार्थें गुणीयें, तेवारें प्रथम प्रतरें एकनी सार्थें गुण्यां थकां बे जागज आवे. तेनी सार्थें वली रत्नप्रजा पृथ्वीने विषे उत्कृष्टी स्थिति एक सागरोपमनी छे ते जेलीयें, तेवारें प्रथम प्रतरें एक सागरोपमनी उपर एक सागरोपमना अगीयार जाग करीयें, तेवा बे जाग आवे. एटली शर्करप्रजाना प्रथम प्रतरें उत्कृष्टी आयुःस्थिति जाणवी. पछी प्रतरें प्रतरें बे बे जाग वधारतां यावत्

अगीयारमे प्रतरें पूर्ण त्रण सागरोपम आयु थाय, अने पहेला प्रतरनी उत्कृष्टी स्थिति तेटलीज बीजे प्रतरें जघन्य स्थिति होय. एम सर्व प्रतरें कहेवुं.

एमज त्रीजी वालुकाप्रभाने विषे सात सागरोपम उत्कृष्टायु छे, तेमांथी शर्करप्रभाना त्रण सागरोपम काढीयें, शेष चार सागरोपम रहे. ते त्रीजीपृथ्वीना नव प्रतर छे. तेनी सार्थे वहेंचीयें, तेवारें एक भागमां एक सागरोपमना नव भाग करीयें, तेवा चार भाग आवे. तेनी सार्थे शर्करप्रभानी उत्कृष्ट स्थितिना त्रण सागरोपम मेलवीयें, एटलुं प्रथम प्रतरें उत्कृष्टायु होय, तेम बीजे प्रतरें त्रण सागरोपमनी उपर आठ भाग आयु होय यावत् नवमे प्रतरें सात सागरोपमायु पूर्ण थाय, अने जघन्यायु पूर्वली रीतें कहेवुं.

प्रत्येक नरकें प्रतरें प्रतरें जघन्योत्कृष्टायु जाणवानो यंत्र.

रत्नप्रभाप्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्यसागर.	दशस.	दशला	नेवुंला	पूर्वको	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दशैयाभाग.	०	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
उत्कृष्टसागर.	नेवुंस.	नेवुंला	पूर्वको	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दशैयाभाग.	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
शर्करप्रभाप्र०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	तमस्त०	१
जघन्यसागर.	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	जघन्य.	१२
अग्यारियाभा	०	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	उत्कृष्ट.	३३
उत्कृष्टसागर.	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३		
अग्यारियाभा	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	०		
वालुप्रभाप्र०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	तमःप्र	१	२	३
जघन्यसागर.	३	३	३	४	४	५	५	६	६	जघ०	१७	१८	२०
नवैयाभाग.	०	४	८	३	७	२	६	१	५	त्राइ.	०	२	१
उत्कृष्टसागर.	३	३	४	४	५	५	६	६	७	उत्कृ.	१८	२०	२२
नवैयाभाग.	४	८	३	७	२	६	१	५	०	त्राइ.	२	१	०
पंकप्रभाप्रत०	१	२	३	४	५	६	७	धूमप्र.	१	२	३	४	५
जघन्यसागर.	७	७	७	८	८	९	९	जघन्य	१०	११	१२	१४	१५
सातैयाभाग.	०	३	६	२	५	१	४	पांचै०	०	२	४	१	३
उत्कृष्टसागर.	७	७	८	८	९	९	१०	उत्कृष्ट	११	१२	१४	१५	१७
सातैया भाग.	३	६	२	५	१	४	०	पांचै०	२	४	१	३	०

हवे साते नरकें मली चोराशी लाख नरकावासा छे ते सर्व मांहेली बाजुयें गोल छे, बाहेर चोखूणा छे,हेठें धरतीनुं तलीयुं पाषाणनी धार सरखुं छे,ते अत्यंत दुर्गंधमय छे.

हवें ए नरकावासानुं आयाम, विष्कंज अने उंचपणुं कहे छे. सर्व साते पृथिवी संबंधि नरकावासा त्रण त्रण हजार योजन उंचपणे छे. तेमां एक हजार योजन नीचें छे, अने एक हजार योजन वच्चमां पहोला छे. तथा एक हजार योजन उपर पृथ्वी पिंम छे, तेमज पहोला अने लांबा असंख्याता योजन छे. मात्र रत्नप्रजाने पहेले पाथडे सीमंतो नरकावासो छे, ते पीस्तालीश लाख योजन लांबो पहोलो छे अने सातमी नरकनो अपइठाणो इंड्क नरकावासो एक लाख योजन लांबो पहोलो छे.

हवे पाथडानुं मांहोमांहे अंतर कहे छे. रत्नप्रजा पृथिवीयें १८०००० योजन पृथ्वीपिंम छे, तेमांथी एकेक हजार योजन नीचें उपरथी काढीयें, बाकी १७८००० रहे, तेमांथी तेर पाथडानी उंचाइना ३ए००० योजन काढीयें बाकी १३ए००० योजन रहे, ते तेर पाथडाना आंतरा बार थाय, तेनी साथें वहेंचीयें तेवारें एक जागमां ११५८३ योजननी उपर एक योजनना बार जाग करीयें, तेवा चार जाग आवे, एटलुं पहेली नरकना प्रतरें प्रतरें अंतर छे, एमज बीजी नरक प्रमुखने विषे आंतरानुं गणित करवुं.

पहेली नरकना बार आंतरामां पहेलो तथा छेहलो ए बे आंतरा शून्य छे अने शेष दश आंतरामां जुवनपति देवोनी दश निकाय छे, पण बीजी आदिक नरक पृथिवीना आंतरा सर्व शून्य जाणवा. एना यंत्रोनी स्थापना नीचें करी छे ते जोइ लेवी.

हवे साते नरकना प्रत्येक प्रतर मांहेला मध्यना वचला इंड्क नरकावासाथी चार दिशायें चार श्रेणि अने चार विदिशायें चार श्रेणि एम आठ श्रेणि नरकावासानी निकली छे, तिहां पहेले पाथडे प्रत्येक चार दिशानी एकेक श्रेणिमां उंगणपच्चास नरकावासा छे अने चार विदिशानी प्रत्येक श्रेणिमां अडतालीश नरकावासा छे. पछी पाथडे पाथडे एकेक नरकावासो घटाडतां यावत् सातमी नरकें उंगणपच्चासमे प्रतरें चारे दिशानी पंक्तिमां एकेक नरकावासो छे अने विदिशानी पंक्तिमां नरकावासो नथी तेनी साथें एक मध्यने इंड्क नरकावासो मेलवीयें, तेवारें सातमी नरकें पांच नरकावासा छे.

रत्नप्रजा पृथ्वीने पहेले पाथडे चारे दिशिना १ए६ अने चार विदिशाना १ए२ तथा एक वचमांनो मेलवतां ३८ए पंक्तिगत नरकावासा थाय. पछी बीजे पाथडे चार दिशिना चार अने चार विदिशिना चार मली आठ घटे, तेवारें ३८१ थाय. एम त्रीजा आदिकमां आठ आठ घटावतां यावत् उंगणपच्चासमे प्रतरें पांच नरकावासा पंक्तिगत रहे, शेष्य नरकावासा सर्व पुष्पावकीर्ण जाणवा. अथवा आवलिकागत नरकावासा

जाणवानो उपाय कहे छे. पहेली नरकना पहेला पाथडाना नरकावासाने मुख्य कहीयें अने पहेली नरकें तेर पाथडा छे, माटें तेरमा पाथडाना नरकावासाने भूमि कहीयें, ए बेनो शरवालो करी तेनुं अर्द्ध करी वांछित प्रतरें गुणीयें, तेवारें ते प्रतरना पंक्तिगत नरकावासानी संख्या आवे. एना यंत्रो दाखल करेला छे, ते जोइ लेवा.

रत्नप्रभाने पहेले कांमें रत्न घणां छे, माटें एनुं रत्नप्रभा गोत्र कहीयें,बीजी शर्करायें कांकरा घणा छे, त्रीजी वालुकायें वेलु एटले रेती घणी छे, चोथी पंकप्रभायें कादव घणो छे, पांचमी धूमायें धूम्र घणो छे, छठी तमःप्रभायें अंधकार घणो छे,अने सातमी तमस्तमप्रभायें अंधकारनुं बहुल पणुं छे, एम साते नरकना गुणनिष्पन्न गोत्र छे. ए सात नरक संबंधि गोत्रना हेतु जाणवा.

सात नरकनां नाम, गोत्र, नरकावासानी संख्या, प्रतरसंख्या, पृथ्वीपिंम, सामान्य थी जघन्य उत्कृष्टायु, तेमज देहमान; अवधिज्ञाननुं क्षेत्र, एक नारकी उपना पछी बीजो नारकी केटले कालें उपजे, तेनो विरहाकाल ए सर्वनो यंत्र.

साते नारकीनां नाम.	सात नारकीनां गोत्र.	नरकावासानी संख्या.	प्रतरसं० पाथडा.	नरकनुं उंचपणुं पृथ्वीपिंम.	सामान्यें जघन्यायु.
घम्मा.	रत्नप्रभा.	३००००००	१३	१८००००	दश हजारवर्ष.
वंशा.	शर्करप्रभा.	२५०००००	११	१३२०००	एक सागर.
शैला.	वालुकप्रभा.	१५०००००	९	१२८०००	त्रण सागर.
अंजणा.	पंकप्रभा.	१००००००	७	१२००००	सात सागर.
रिठा.	धूमप्रभा.	३०००००	५	११८०००	दश सागर.
मघा.	तमःप्रभा.	९९९९५	३	११६०००	सत्तर सागर.
मघावती.	तमस्तमप्रभा.	५	१	१०८०००	बावीश सागर.

सामान्यें उत्कृष्टायु.	सामान्य देहमान धनुष्य.	उत्कृष्ट वैक्रिय देहमान.	उत्कृष्ट अवधि ज्ञानक्षे० क्षे०	जघन्य विरहकाल.	उत्कृष्ट विरह काल.
एक सागर.	ध० ७॥ अं० ६	ध० १५॥ अं० १२	गाउ. ४	एक समय.	चोवीशमुहूर्त्त
त्रण सागर.	ध. १५॥ अ. १२	ध० ३१।	गाउ. ३॥	एक समय.	सात दिवस.
सात सागर.	ध० ३१।	ध० ६२॥	गाउ. ३	एक समय.	पन्नर दिवस.
दश सागर.	ध० ६२॥	ध० १२५	गाउ. २॥	एक समय.	एक मास.
सत्तर सागर.	ध० १२५	ध० २५०	गाउ. २	एक समय.	बे मास.
बावीश सागर.	ध० २५०	ध० ५००	गाउ. १॥	एक समय.	चार मास.
तेत्रीश सागर.	ध० ५००	ध० १०००	गाउ. १	एक समय.	छ मास.

साते नरकना ओगणपचास प्रतरें दिशि अने विदिशि संबंधी नरकावासानी पंक्तिनी संख्यानो तथा एकंदर पंक्तिगत नरकावासानी संख्यानो यंत्र.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
दिशि.	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९
विदिशि.	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८
सर्वसं०	३८९	३८१	३७३	३६५	३५७	३४९	३४१	३३३	३२५	३१७	३०९

१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५
३०१	२९३	२८५	२७७	२६९	२६१	२५३	२४५	२३७	२२९	२२१	२१३	२०५

प्र०	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
दि०	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४
वि०	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३
सर्व.	१९७	१८९	१८१	१७३	१६५	१५७	१४९	१४१	१३३	१२५	११७	१०९

३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१
१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०
१०१	९३	८५	७७	६९	६१	५३	४५	३७	२९	२१	१३	५

सात नरक पृथिवीमां आवलिकागत नरकावासानी संख्या आणवा माटें मुख, भूमि समासादिक करणनो यंत्र तथा पुष्पावकीर्ण नरकावासानी संख्या.

७ पृथ्विवी.	१ रत्नप्र०	२ शर्करा.	३ वालु०	४ पंकप्र०	५ धूमप्र०	६ तमःप्र०	७ तमस्त०	सर्वसं०
मुखानि.	३८९	२८५	१९७	१२५	६९	२९	४	३८९
भूमयः	२९३	२०५	१३३	७७	३७	१३	०	५
समास.	६८२	४९०	३३०	२०२	१०६	४२	०	३९४
समासा०	३४१	२४५	१६५	१०१	५३	२१	०	१९७
प्रतराः	१३	११	९	७	५	३	१	४९
पंक्तिगत.	४४३३	२६९५	१४८५	७०७	२६५	६३	५	९६५३
पुष्पाव०	२९९५५६७	२४९७३०५	१४९८५१५	९९९२९३	२९९७३५	९९९३२	०	८३९०३४७
शरवाले.	३००००००	२५०००००	१५०००००	१००००००	३०००००	९९९९५	५	८४०००००

७ नारकीना पृथ्वीपिंडमांथी नीचें तथा उपरना एकेक हजार योजन न्यून करवा अने सातमी नरक पृथ्वीयें साडी बावन हजार योजन नीचें अने साडी बावन हजार योजन उपर मूकीयें. तेवारें बाकी त्रण हजार योजन रहे. तेमां एकज पाथडो छे. शेष ६ नरक पृथ्वी संबंधि पाथडाना आंतरानो यंत्र.

नरकनां नाम.	रत्नप्रभा.	शर्करप्रभा.	वालुकप्रभा.	पंकप्रभा.	धूमप्रभा.	तमःप्रभा.	तमस्तमःप्रभा
पृथ्वीपिंड.	१८००००	१३२०००	१२८०००	१२००००	११८०००	११६०००	१०८०००
द्विसहस्रोन करतां	१७८०००	१३००००	१२६०००	११८०००	११६०००	११४०००	३०००
प्रतरसंख्या.	१३	११	९	७	५	३	१
प्रतरनुं उंचपणुं.	३०००	३०००	३०००	३०००	३०००	३०००	३०००
पाथडा०पृथि.पिंड	३९०००	३३०००	२७०००	२१०००	१५०००	९०००	३०००
शेषपा० विना पृ०	१३९०००	९७०००	९९०००	९७०००	१०१०००	१०५०००	१०५०००
पाथडानी संख्या.	१२	१०	८	६	४	२	०
प्रतरांतर मान.	११५८३$\frac{४}{१२}$	९७००	१२३७५	१६१६६$\frac{८}{१२}$	२५२५०	५२५००	०

प्रत्येक नरक पृथिवीयें आवलिकागत वाटला नरकावासानी तथा त्रिखूणा अने चौखूणा नरकावासानी तथा छूटा पुष्पावकीर्ण नरकावासानी संख्यानो यंत्र. अने वचलो इंद्रक नरकावासो गोल होय पछी पं क्तिमां पहेलो त्रिखूणो, बीजो चौखूणो पछी वाटलो एम आवलिकाना छेहेडा सुधी कहेवुं.

नरकनाम.	घम्मा. १	वंशा. २	शेला. ३	अंजणा. ४	रिष्टा. ५	मघा. ६	माघ०७	आवलिकागत.
वाटला.	१४५३	८७५	४७७	२२३	७७	१५	१	३१२१
त्रिखूणा.	१५०८	९२४	५१६	२५२	१००	२८	४	३३३२
चोखूणा.	१४७२	८९६	४९२	२३२	८८	२०	०	३२००
सर्वसंख्या.	४४३३	२६९५	१४८५	७०७	२६५	६३	५	९६५३
पुष्पावकीर्ण.	२९९५५६७	२४९७३०५	१४९८५१५	९९९२९३	२९९७३५	९९९३२	०	८३९०३४७
सर्वसंख्या.	३००००००	२५०००००	१५०००००	१००००००	३०००००	९९९९५	५	८४०००००

पहेली रत्नप्रजा नारकी संबंधि १८०००० योजन पृथिवीपिंममांहे नारकीना तेर पाथडा त्रण त्रण हजार योजनना उंचा एक बीजानी उपर छे, तेनी वचमां केटलुं केटलुं एकेका प्रतरनी मांहोमांहे अंतर छे? तथा जवनपति देवोनी दश निकाय कया कया प्रतरना अंतरमां छे? अने कयुं अंतर शून्य छे? तथा नीचेंना हजार योजन शून्य छे अने उपरना हजार योजनमां व्यंतर तथा वाणव्यंतर देवोनी निकाय कया कया स्थानकें छे? ते देखाडवानो यंत्र.

उत्तरश्रेणि.	पिंम योजन प्रमाण.	दक्षिणश्रेणि.
रत्नप्रजा बीजी उत्तरश्रेणि.	१० योजन मृतपिंम.	पहेली दक्षिणश्रेणि रत्नप्रजा.
सुवत्त्व आदिक आठ इंद्र.	८०अणपन्नीयादिकवाणव्यं.	सन्निहित आदि आठ इंद्र.
शून्यपिंम छे.	१० योजन मृतपिंम.	शून्यपिंम छे.
माहाकालादि आठ इंद्र.	८०० योजनपिशाचव्यंतर.	कालेंद्रप्रमुख आठ इंद्र.
शून्यपिंम छे.	१०० योजननो पिंम.	शून्य पिंम छे.
पहेलो पाथडो उंचो छे.	३००० योजन प्रमाण उंचो.	एमां नरकावासा छे.
पहेलुं प्रतरांतर मान.	११५८३$\frac{4}{12}$ योजनमां.	एटलामां आकाश शून्य छे.
बीजो पाथडो उंचो छे.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
असुरकुमार निकाय बलींद्र.	११५८३$\frac{4}{12}$ आंतरामां.	असुरकुमार निकाय चमरेंद्र.
त्रीजो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
नागकुमार निकाय जूतानंदेंद्र.	११५८३$\frac{4}{12}$ आंतरामां.	नागकुमारनिकायधरणींद्र.
चोथो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
सुवर्णकुमार वेणुदालींद्र.	११५८३$\frac{4}{12}$ आंतरामां.	सुवर्णकुमारनिकाय वेणुदेवेंद्र.
पांचमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
विद्युत्कुमारनिकायहरिशिषेंद्र	११५८३$\frac{4}{12}$ आंतरामां.	विद्युत्कुमारनिकायहरिकांतेंद्र
छठो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
अग्निकुमारनि.अग्निमाणवेंद्र.	११५८३$\frac{4}{12}$ आंतरामां.	अग्निकुमारनि०अग्निशिखेंद्र.
सातमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
द्वीपकुमार निकाय विशिष्टेंद्र.	११५८३$\frac{4}{12}$ आंतरामां.	द्वीपकुमारनिकाय पूर्णेंद्र.
आठमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
उदधिकुमारनिकायजलप्रनेंद्र.	११५८३$\frac{4}{12}$ आंतरामां.	उदधिकुमारनि० जलकांतेंद्र.
नवमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.

दिशिकु०नि०अमितवाहनेंद्र.	११५८३$\frac{4}{12}$ आंतरामां	दिशिकुमार निकाय अमितेंद्र.
दशमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
पवनकुमारनि० प्रभंजनेंद्र.	११५८३$\frac{4}{12}$ आंतरामां.	पवनकुमारनिकाय वेलंबकेंद्र.
अगियारमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
स्तनितकुमारनिकाय घोषेंद्र.	११५८३$\frac{4}{12}$ आंतरामां.	स्तनितकुमारनि०माहाघोषेंद्र.
बारमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
ए आंतरामां शून्य छे.	११५८३$\frac{4}{12}$ आंतरामां.	ए आंतरो शून्य छे.
तेरमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
अधो भाग.	१००० योजन प्रमाण.	नरकावासा रहित छे.
सर्वसंख्या.	१८०००० योजन.	रत्नप्रभानो पिंड प्रमाण छे.

हवे नारकीमां प्रतरें प्रतरें जूडुं जूडुं उत्कृष्ट देहमान कहे छे.

रत्नप्रभाना प्रथम प्रतरें उत्कृष्ट देहमान त्रण हाथनुं छे,अने तेरमे प्रतरें सात धनुष्य त्रण हाथ ने छ अंगुल छे, तेमांथी पहेला प्रतरना त्रण हाथ काढीयें, तेवारें शेष सात धनुष्य ने छ आंगुल रहे. ते सात धनुष्यना अठावीश हाथ थाय. तेनें तेर प्रतरमांथी प्रथमनो प्रतर एक मूकी शेष बारने आंके वहेंचीयें, तेवारें एक भागमां बे हाथ आवतां बार दु चोवीश हाथ जाय, बाकी चार हाथ रहे. तेनां छन्नु अंगुल थाय,तेनी सार्थे प्रथमनी छ अंगुल उपर छे, ते मेलवियें, तेवारें १०२ अंगुल थाय, तेने बारने आंकें वहेंचतां एक भागमां साडाआठ अंगुल आवे, तेवारें बे हाथ ने साडाआठ अंगुलनी वृद्धि करतां बीजे प्रतरें पांच हाथ ने साडाआठ अंगुल देहमान थाय. एम प्रतरें प्रतरें बे हाथने साडाआठ आंगुल वधारतां यावत् तेरमे प्रतरें सात धनुष्यनी उपर त्रण हाथ ने छ अंगुल देहमान थाय. फरी तेटलुंज देहमान बीजा नरकना प्रथम प्रतरें कहेवुं. वली शर्कराने अगीयारमे प्रतरें एथी बमणुं देहमान थवानुं छे,माटें उत्कृष्टामांथी जघन्य देहमान काढीयें,एटले पोणा आठ धनुष्य ने छ अंगुल वधे,तेना अंगुल करीयें, तो ७५० थाय, ते शर्कराना अगियार प्रतरमांथी पहेला प्रतरनुं आयु कहेवाणुं माटे तेने पडतुं मूकी बाकी दश प्रतरें वहेचीयें, तेवारें पंचोतेर अंगुल एक भागमां आवे, तेना त्रण हाथ ने त्रण अंगुल थाय, तेटलुं प्रत्येक प्रतरें देहमान वधारतां अगीयारमे प्रतरें साडा पन्नर धनुष्य ने बार अंगुल देहमान थाय, तेटलुं देहमान वली त्रीजी नरकने प्रथम प्रतरें आणीने पछी तेज करण करवुं एम सर्व नरकपृथ्वीयें करतां देह प्रमाण थाय. ते सर्व नीचेंना यंत्रथी जोइ लेजो.

रत्नप्रभादिक प्रत्येक पृथ्वीना जूदा जूदा प्रतरें शरीरना प्रमाणनो यंत्र.

१ रत्नप्रभा.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
धनुष्य.	०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	७
हस्त.	३	१	३	२	०	२	१	३	१	०	२	०	३
अंगुल.	०	८॥	१७	१॥	१०	१८॥	३	११॥	२०	४॥	१३	२१॥	६

२ शर्करप्रभा.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
धनुष्य.	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१४	१४	१५
हस्त.	३	२	१	०	३	२	२	१	०	३	२
अंगुल.	६	९	१२	१५	१८	२१	०	३	६	९	१२

३ वालुकप्रभा.

प्र०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
ध०	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१
ह०	२	२	२	१	१	१	१	१	१
अं०	१२	७॥	३	२२॥	१८	१३॥	९	४॥	०

४ पंकप्रभा.

प्र०	१	२	३	४	५	६	७
ध०	३१	३६	४१	४६	५२	५७	६२
ह०	१	१	२	३	०	१	२
अं०	०	२०	१६	१२	८	४	०

५ धूमप्रभा.

प्र०	१	२	३	४	५
ध०	६२	७८	९३	१०९	१२५
ह०	२	०	३	१	०
अं०	०	१२	०	१२	०

६ तमःप्रभा.

प्र०	१	२	३
ध०	१२५	१८७	२५०
ह०	०	२	०
अं०	०	०	०

७ तमस्तमप्रभा.

प्र०	१
ध०	५००
ह०	०
अं०	०

हवे ए साते नरक पृथ्वी शेने आधारें रहेली छे ? ते कहे छे. नारकीना मध्यमां वचें घनोदधिनो पिंड वीश हजार योजन छे, अने घनवात, तनुवात तथा आकाश असंख्याता योजननो पिंड छे, तेमां घनवातथी असंख्यातगुणो तनुवात छे, अने तनुवातथी असंख्यातगुणो आकाशनो पिंड छे. घनोदधि, घनवात उपर प्रतिष्ठित छे, घनवात तनुवात उपर प्रतिष्ठित छे, तनुवात आकाश उपर प्रतिष्ठित छे, आकाश कोइ उपर प्रतिष्ठित नथी. ए घनोदध्यादिक चार वलयें करी सर्व पृथ्वीयो वींटेली छे, ते अनुक्रमें मध्यभागथी चारे दिशायें चारे वलय प्रदेशें प्रदेशें घटतां घटतां यावत् आप आपणी

पृथ्वीने छेहडे छेक घणाज स्वल्प थया थका वलयाकारें वींटी रह्या छे. त्यां सर्व नरक पृथ्वी योने छेहडे केटला केटला योजननां वलय रह्यां छे, तेना यंत्र, तथा साते नरक पृथिवी भेली करया थकां छत्रातिछत्र आकार छे, एटले उपर न्हानुं छत्र तेनी नीचें महोटुं छत्र, तेनी नीचें महोटुं एम हेठली हेठली नरक महोटीमहोटी छे. वीश हजार योजन घनोदधिनो पिंड कह्यो, अने असंख्याता योजन घनवातादिकनो पिंड कह्यो. ते सर्व नरकनी वचालें होय, पछी अनुक्रमें प्रदेशें प्रदेशें घटतो घटतो छेहडे आ यंत्रमां लख्या प्रमाणें वलय होय.

नरक. घनोदधिवलयप्रमाण. घनवातवलय. तनुवातवलयप्रमाण. त्रणेनुसरवालो

नरक आंक.	योजन	गाउ.	गाउत्रै याभाग	योजन.	गाउ.	योजन.	गाउ.	गाउना त्र.भाग	योजन.	गाउ.	गाउत्रइ याभाग.
१	६	०	०	४	२	१	२	०	१२	०	०
२	६	१	१	४	३	१	२	१	१२	२	२
३	६	२	२	५	०	१	२	२	१३	१	१
४	७	०	०	५	१	१	३	०	१४	०	०
५	७	१	१	५	२	१	३	१	१४	२	२
६	७	२	२	५	३	१	३	२	१५	१	१
७	८	०	०	६	०	२	०	०	१६	०	०

रत्नप्रभा पृथ्वीना १८०००० पिंडमां पहेलो खरकांड १६००० योजन छे, बीजो पंकबहुलकांड ८४००० योजन छे, त्रीजो जलबहुलकांड ८०००० योजन छे. अने बीजी सर्व पृथ्वी पृथ्विकायमय जाणवी. साते नरक पृथ्वी घनोदधि, घनवात, तनुवातने वलयें करी वींटली छे, माटें आयाम विष्कंभें करी चारें दिशायें अलोकनें फरसे नही. चारे दिशायें छेहलो तनुवात वलय अलोकने फरशे छे माटें. तथा नारकीने वेदनानुं स्वरूप जैनप्रबोध पुस्तक तथा सूयगडांग सूत्र तथा संघयणादि ग्रंथोमां छपायुं छे.

हवे आ पुस्तकमां देव नारकियादिकनां आयु तथा द्वीपसमुद्रनां प्रमाण सर्व पल्योपम अने सागरोपमें करी कह्यां छे, माटें पल्योपम अने सागरोपमनुं स्वरूप लखीयें छैयें.

ते पल्योपम तथा सागरोपम एकेका त्रण प्रकारना बादर तथा त्रण प्रकारना सूक्ष्म मली छ प्रकारें छे. तेमां बादर कोइ काममां नथी आवता परंतु सूक्ष्म काममां आवे छे. पल्य एटले जेमां धान्य भरीयें तेनी जेने उपमा छे तेने पल्योपम कहीयें. ते अथवा जेणें करी कालादिकनां प्रमाण मवीयें उपमीजें, तेने पल्योपम कहीयें. ते

एक उद्धार पल्योपम बीजो अद्ध पल्योपम अने त्रीजो क्षेत्रपल्योपम, एवा त्रण प्रकारें छे. ते उद्धारादिक एकेको वली एक सूक्ष्म अने बीजो बादर एवा बे बे नेदें छे.

हवे पल्यनुं प्रमाण कहे छे. उत्सेधांगुलें एक योजननो कूवो वाटलो गोलाकारें जाणवो, ते लांबपणे तथा पहोलपणे अने उंमपणे सर्वत्र एक योजन प्रमाण कहेवो ते नो परिधि त्रण योजन अने एक योजनना छ नाग करीयें, तेवो एक नाग उपर थाय.

ते कूवो देवकुरु उत्तरकुरु नामें जे युगलियानां क्षेत्र छे, तिहां जघन्य एक बे त्रण दिवसना उत्कृष्टथी सात दिवसना जन्मेला गामराना रोम अंगुल प्रमाण लेवा, ते रोमना प्रथम आठ कटका करीयें वली ते एकेका कटकाना आठ आठ कटका करतां ६४ कटका थाय. त्रीजी वार आठ खंम करतां ५१२ थाय. चोथी वार आठ खंम करतां ४०९६ थाय. पांचमी वार आठ खंम करतां ३२७६८ थाय. छठी वार आठ खंम करतां २६२१४४ थाय. सातमी वार आठ खंम करतां २०९७१५२ थाय.

ए वीश लाख सत्ताणुं हजार एकशो नें बावन खंम थया, ते सर्व बादर खंम थया तेणें करी पूर्वोक्त पालो संपूर्ण ठांशीने एवो नरवो के ते अग्निथी बले नही, वायराथी रोमखंम उडे नही, गंगानदीनो प्रवाह उपरथी चाल्यो जाय तो पण तेने ताणी शके नही, चक्रवर्तीनुं कटक उपरथी चाल्युं जाय, तो पण धसके नही. एवो ते कूवो नरीने पढी ते मांहेथी अकेक समयें अकेक केश खंम काढाडतां थकां जेटले कालें ते पालो खाली थाय, तेटलो बादर उद्धार पल्योपमनो संख्याता समय प्रमाण काल होय, जे नणी ते खंम संख्याताज होय, माटें संख्यातो काल कह्यो, ए बादर उद्धार पल्योपम जे कह्यो ते मात्रसूक्ष्म उद्धार पल्योपमनुं स्वरूप समजाववामांज उपयोगी होय. परंतु बीजा कशामां पण काम आवे नही.

हवे पूर्वें जे वालाग्रखंमें पल्य नर्यो छे, ते बादर एकेक खंमना असंख्याता सूक्ष्म खंम कल्पियें, ते एवा कल्पीयें, के जे एक खंमनो वली बीजो खंम केवली केवल ज्ञानें करी पण कल्पी न शके, सतेजवंत नेत्रनो धणी जे जालीमांहेथी सूक्ष्म पुजल सूर्यना तेजें करी देखे, तेनो असंख्यातमो नाग अथवा बादर पर्याप्त पृथिवी कायिया जीवनुं जेवुं सूक्ष्म शरीर होय, तेवडे खंमें करी पूर्वोक्त कूवो नरीयें, ते एकेको खंम समय समय काढाडतां असंख्याता समय लागे, अर्थात् संख्याता वर्षनी कोटियें करी ते कूप खाली थाय तेने सूक्ष्म उद्धार पल्योपम कहीयें. तेवा दश कोडाकोडी पल्योपमें एक सूक्ष्म उद्धार सागरोपम थाय. तेवा अढी सागरोपमना जेटला समय थाय तेटले प्रमाणें असंख्याता द्वीप समुद्र छे. ए सूक्ष्म उद्धार पल्योपम कह्यां.

तथा तेहीज योजन प्रमाण पल्य बादर वालाग्रें नर्यो; ते मध्येंथी शो शो वर्षे एकेक केशखंम काहाडतां, ते पल्य संख्याता वर्षनी कोडी प्रमाण कालें निर्लेप थाय, तेवारें बादर अद्धा पल्योपम संख्याता वर्ष प्रमाण थाय.

वली तेहीज खंमना पूर्वोक्त रीतें असंख्याता खंम कल्पी ते कल्पना खंम शो शो वर्षे एकेक कहाडतां जेवारें ते पल्य निर्लेप थाय, तेवारें सूक्ष्म अद्धापल्योपम असंख्याता वर्षनी कोडी प्रमाण थाय. तेवा दश कोडाकोडी सूक्ष्म अद्धापल्योपमें एक सूक्ष्म अद्धा सागरोपम थाय. तेवा वली दश कोडाकोडी सागरोपमें एक अवसर्प्पिणी काल थाय. वली तेवा दश कोडाकोडी सागरोपमें एक उत्सर्पिणी काल थाय. ए अवसर्प्पिणी तथा उत्सर्पिणीना बेहु काल मली वीश कोडाकोडी सागरोपमें एक कालचक्र थाय, ए सूक्ष्म अद्धापल्योपम अने सागरोपमें करी देवता, नारकी, मनुष्य अने तिर्यंचना आयुनुं मान तथा कर्मस्थितिमान तथा कायस्थितिमान तथा नवस्थितिनां कालमानादिक मवीयें, ए चोथुं सूक्ष्म अद्धापल्योपम कह्युं, एटले ए सूक्ष्म अद्धासागरोपमना अनंता पुजलपरावर्त्तें अतीत अद्धा तथा अनंता पुजलपरावर्त्तें अनागत अद्धा थाय. तिहां अनागत अद्धानी अनंतता छे अने अतीत अद्धानुं आदि नथी, तेथी बेहुने समानपणुं छे. अन्य आचार्य वली एम कहे छे, के जो पण समयादिकें करी अनागत अद्धा हीयमान छे, तो पण अनागत अद्धानो क्षय नथी थतो, ते माटें अतीत अद्धायकी अनागत अद्धा अनंतगुणी छे.

सांप्रत बे प्रकारना क्षेत्र पल्योपमनुं निरूपण करीयें छैयें. ते पूर्वोक्त बादर वालाग्र खंमें करी नर्यो जे पल्य ते मध्यें कल्पना करेला वालाग्रें स्पर्श्या जे आकाशप्रदेश ते मांहेथी एकेक आकाश प्रदेश समय समय काहाडतां जेवारें सर्व वालाग्रें स्पष्ट थयेला एवा सर्व आकाश प्रदेश निर्लेप थाय, तेवारें असंख्याती उत्सर्पिणी अने असंख्याती अवसर्प्पिणी कालप्रमाण एक बादर क्षेत्रपल्योपम थाय.

हवे ते पल्यना सूक्ष्म एकेका वालाग्रने स्पर्शी आकाश प्रदेश तथा अणस्पर्श्या एवा समस्त आकाशप्रदेशने समय समय काहाडतां जेवारें ते पल्य निर्लेप थाय, तेवारें पूर्वोक्त बादरक्षेत्र पल्योपमना कालमानथकी असंख्यातगुणुं असंख्याती उत्सर्प्पिणी अने अवसर्प्पिणी प्रमाण सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपमनुं कालमान थाय. तेवा दश कोडाकोडी सूक्ष्म क्षेत्रपल्योपमें एक सूक्ष्म क्षेत्र सागरोपम थाय, एणें करी त्रसादिक जीवनुं परिमाण करवुं, एटले दृष्टिवादने विषे द्रव्य प्रमाण चिंतवीयें तथा पृथिव्यादिक एकेंद्रिय त्रसांत जीवनुं परिमाण करीयें, तेनें विषे एनुं प्रयोजन छे.

अहीं शिष्य पूछे छे के, जो स्पष्ट,अस्पष्ट, नजःप्रदेश अहीं सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपमें करीने ग्रहण करीयें छैयें, तो वालाग्रोनुं शुं प्रयोजन छे ? यथोक्त पल्यांतरगत नजःप्रदेशापहारमात्रथीज सामान्यपणे कहेवुं उचित छे ? तत्र गुरु कहे छे, के ए सत्य छे. किंतु सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपमें करी दृष्टिवादने विषे द्रव्य मवीयें छैयें, ने केटलाएक यथोक्त वालाग्र स्पष्ट नजःप्रदेशों करी मवियें छैयें, माटें दृष्टिवादोक्त द्रव्यमानोपयोगीपणायकी वालाग्र प्ररूपण प्रयोजनवालुं छे.

एम त्रण सूक्ष्म पल्योपम शास्त्रने विषे उपयोगी होय अने त्रण बादर पल्योपम कह्यां, ते सूक्ष्मनुं स्वरूप समजववा माटेंज जाणवां. अहींयां घणुं तो सूक्ष्म अद्धापल्योपमनुं प्रयोजन छे, ते अद्धापल्योपमें करी वीश कोडाकोडी सागरोपमनुं कालचक्र थाय, तेवा अनंतें कालचक्रें एक पुज्ञलपरावर्त्त थाय,एवा अनंत पुज्ञलपरावर्त्तें अतीत अद्धा अतिक्रम्या ते नणी एने विषे पुज्ञलपरावर्त्त एवी संज्ञा करीयें ॥ इति ॥

हवे पृथ्वीने विषे सो प्रकारनां जे रत्नो कहेवाय छे, तेना नेदो कहे छे.

१ तेमां प्रथम भुवनना त्रण नेद छे,ते कहे छे. १देवभुवन,२मनुष्यभुवन,३नागभुवन.

२ बीजा स्थानना त्रण नेद छे,ते कहे छे. १मनुष्यस्थान,२देवस्थान,३नारकीस्थान.

३ त्रीजा नूमिना त्रण नेद छे, ते कहे छे. १ उत्तम, २ नीच, ३ सम.

४ चोथा पुरुषना त्रण नेद छे, ते कहे छे. १ उत्तम, २ मध्यम, ३ अधम.

५ पांचमा पदार्थना त्रण नेद छे, ते कहे छे. १ धातु, २ मूल, ३ जीव.

६ छठा पुरुषार्थना चार नेद छे, ते कहे छे. १ धर्म, २ अर्थ, ३ काम, ४ मोक्ष.

७ सातमा राजवंशीना छत्रीश नेद छे, ते कहे छे. १ सूर्यवंश, २ सोमवंश, ३ यादव, ४ कदंब, ५ परमार, ६ इक्ष्वाकु, ७ चहुआण, ८ मोरी, ९ शिलार, १० सिंधव, ११ छिंदक, १२ चाउडा, १३ प्रतिहार. १४ लुंडक, १५ रागोड, १६ शक, १७ करटपाल, १८ करंभ, १९ चंचिल्ल, २० गोहिल, २१ मकुआणक, २२ पौलक, २३ राजपाल, २४ धान्यपाल, २५ अनंग, २६ निकुल, २७ दधिकर, २८ कोल, २९ तुर, ३० दधिपक, ३१ हूल, ३२ हरिय, ३३ सेल्हार, ३४ मोमीया, ३५ जाडिया. ३६ कुजवरकुल.

८ आठमा राज्यनां सात अंग छे,तेनां नाम कहें छे. १स्वामी,२आमात्य,३जनपद, ४ नंमार, ५ डुर्ग एटले गढ, ६ बल, ७ मित्रांग.

९ नवमा राजगुणना छत्रु नेद छे,ते कहे छे. १ वंश, २ विनय, ३ विजय, ४ विवेक, ५ विद्या, ६ विचार, ७ सदाचार, ८ विस्तार, ९ परिछेद, १० अनुग्रह, ११ सदा

ग्रह, १२ यश, १३ सदोदित, १४ सर्वसह, १५ धर्मबल, १६ सत्य, १७ शौच, १८ सन्मान, १९ संस्थान, २० समाधान, २१ सौख्य, २२ सौजन्य, २३ सौनाग्य, २४ रूप, २५ स्वरूप, २६ सागत्य, २७ विनाग, २८ संयोग, २९ वियोग, ३० सत्त्व, ३१ संपूर्णत्व, ३२ सकलत्व, ३३ प्रसन्नत्व, ३४ सलज्जत्व, ३५ पालकत्व, ३६ पांमित्य, ३७ प्रणय, ३८ प्रसरण, ३९ प्रमाण, ४० प्रताप, ४१ प्रमोद, ४२ प्रारंन, ४३ प्रना वछेद, ४४ संग्रह, ४५ विग्रह, ४६ पुष्टि, ४७ तुष्टि, ४८ प्रीति, ४९ प्राप्ति, ५० प्रशंसा, ५१ प्रतिष्ठा, ५२ प्रतिज्ञा, ५३ स्थैर्य, ५४ धैर्य, ५५ शौर्य, ५६ गांनीर्य, ५७ चातुर्य, ५८ बुद्धि, ५९ बल, ६० अध्यक्ष, ६१ विबोध, ६२ वृद्धि, ६३ सिद्धि, ६४ कांति, ६५ कीर्त्ति, ६६ स्फूर्त्ति, ६७ व्युत्पत्ति, ६८ वात्सल्य, ६९ मांगल्य, ७० महोत्सव, ७१ मंत्र, ७२ रसिकत्व, ७३ नावुकत्व, ७४ समृद्धित्व, ७५ गुरुत्व, ७६ शक्ति, ७७ नुक्ति, ७८ युक्ति, ७९ अयुक्ति, ८० अशक्ति, ८१ अनुक्रम, ८२ अनिमान, ८३ वदान्य, ८४ कारुण्य, ८५ दाक्षिण्य, ८६ वर्त्तन, ८७ स्पर्शन, ८८ रसन, ८९ घ्राण, ९० श्रवण, ९१ मर्यादा, ९२ मंमन, ९३ उदय, ९४ उदात्त, ९५ उत्साह, ९६ उत्तमत्व गुण.

१० दशमा राजपात्रना बत्रीश नेद छे, ते कहे छे. १ धर्मपात्र, २ काम, ३ विनोद, ४ विद्या, ५ विलास, ६ विन्यास, ७ ज्ञान, ८ क्रीडा, ९ हास्य, १० शृंगार, ११ वीर, १२ स्नेह, १३ जगन्मान्य, १४ मंत्री, १५ संधि, १६ महत्तम, १७ आमात्य, १८ प्रधान, १९ अध्यक्ष, २० सेनापात्र, २१ नागर, २२ पुष्प, २३ मान्य, २४ पदस्थ, २५ देशी, २६ राज्ञी, २७ कुलपुत्रिका, २८ पुनर्नू, २९ वेश्या, ३० दासी, ३१ दास, ३२ आनिचारिक.

११ अगीयारमा राजविनोदना छत्रीश नेद छे, ते कहे छे. १ गीत, २ विनोद, ३ लिखित, ४ शिक्षा, ५ वक्तृत्व, ६ कवित्व, ७ शास्त्र, ८ शस्त्र, ९ युद्ध, १० नियुद्ध, ११ गणित, १२ गज, १३ तुरग, १४ पक्षी, १५ आखेटक, १६ द्यूत, १७ जलयंत्र, १८ मंत्र, १९ महोत्सव, २० फल, २१ पुष्प, २२ कला, २३ गुण, २४ प्रहेलिका, २५ चित्र, २६ क्षेत्र, २७ खेलन, २८ वित्तसूत्र, २९ नृत्य, ३० श्रवण, ३१ कर, ३२ बुद्धि, ३३ विद्या, ३४ रथ, ३५ कथा, ३६ कलत्र.

१२ बारमा आस्थानना अढार नेदो छे, ते कहे छे. १ मह्ल, २ आपृह्रित, ३ स्निग्ध, ४ मंत्री, ५ महत्तम, ६ आमात्य, ७ प्रधान, ८ बुद्धिमुख, ९ उनयमुख, १० आग्रायक, ११ सांग्रामिक, १२ देश्य, १३ पुरुषधर्म, १४ पुरुषविज्ञान, १५ पुरुषराज, १६ पुरुषकर्म, १७ पात्र, १८ विनोदपात्र. इति अष्टादशः नेदाः समाप्ताः ॥

१३ तेरमा राजविद्याना चार नेद छे, ते कहे छे. १ आन्विक्षिकी, २ चर्या, ३ वार्त्ता, ४ दंमनीति.

१४ चौदमा राजनीतिना चार नेद छे,ते कहे छे. १ साम, २ दाम, ३ नेद, ४ दंम,

१५ पन्नरमा आयुधना छत्रीश नेद छे,ते कहे छे. १ चक्र, २ धनु, ३ धनुष्य, ४ वज्र, ५ अंकुश, ६ छुरिका, ७ तोमर, ८ कुंत, ए शूल, १० त्रिशूल, ११ शक्ति, १२ पाश, १३ मुजर, १४ गुलिका, १५ मुसटी, १६ लुंढी, १७ गदा, १८ शंकु, १ए पट्टी, २० पट्टीश, २१ रिष्ट, २२ करण, २३ यकपन, २४ हल, २५ मुशल, २६ मुद्गलिका, २७ कर्त्तरी, २८ करपत्र, २ए तरवार, ३० कोदाली, ३१ ड्फोट, ३२ गोफण, ३३ माई, ३४ मब्रस, ३५ हडश्व, अने ३६ शस्त्र.

१६ शोलमा शास्त्रना सत्त्यावीश नेद छे, ते कहे छे. १ शब्दशास्त्र, २ अलंकारशास्त्र, ३ तर्कशास्त्र, ४ आगम, ५ गणित शास्त्र, ६ कल्प,७ कला, ८ शिक्षा,ए विनोद, १० विज्ञान, ११ मंत्र, १२ सामुड्रिक, १३ शकुन, १४ चिकित्सा, १५ सत्काव्य, १६ मोक्ष, १७ धर्म, १८ अर्थ, १ए वास्तुशास्त्र, २० प्रवरतर, २१ महानामकोश, २२ सुविद्या, २३ छंद, २४ स्वप्नशास्त्र, २५ नवरसयुक्तकाव्य, २६ नाद्य, २७ धीनादिशास्त्र.

१७ सत्तरमा तत्त्वना बावन नेद छे,ते कहे छे. १ पृथ्वी,२ अप्,३ तेज,४ वायु,५ आकाश, ६ शब्द, ७ रूप, ८ रस, ए स्पर्श, १० गंध, ११ घ्राण, १२ चक्षु, १३ श्रोत्र, १४ त्वक्, १५ पाणि, १६ पाद, १७ गुद, १८ उपस्थान, १ए बुद्धि, २० अलंकार, २१ प्रकृति, २२ पुरुषरक्त, २३ मांस, २४ मेद, २५ मज्जा, २६ शुक्र, २७ अस्थि, २८ वातरस, २ए गंध, ३० स्पर्श, ३१ घ्राण, ३२ चक्षु, ३३ पित्त, ३४ कफ, ३५ मल, ३६ काम, ३७ क्रोध, ३८ लोन, ३ए नय, ४० मोह, ४१ मात्सर्य, ४२ राग, ४३ नियति, ४४ काल, ४५ विद्या, ४६ शुद्धविद्या, ४७ माया, ४८ शक्ति, ४ए नाद, ५० बिंडु, ५१ कला, ५२ ईश्वर शिवतत्त्व.

१८ अढारमी कलाना बहोंतेर नेद छे,ते कहे छे. १ वाद्य,२ नृत्य, ३ गणित,५ पठित,६ लिखित, ७ लेख्य,८ वक्तृत्व,ए कथा, १० वंचन, ११ नाटक, १२ छंद,१३ अलंकार, १४ दर्शन, १५ अनिधान, १६ धातुकर्म, १७ अर्थमान, १८ वाद, १ए वृद्धि, २० शोच, २० मंत्र, २१ विनोद, २२ विचार, २४ नेपथ्य, २४ विलास, २५ शस्त्रकर्म, २६ नीति, २७ शकुन, २८ गीत, २ए चित्र, ३० संयोग, ३१ हस्तलाघव, ३२ सूत्र, ३३ कुसुम,३४ इंद्रजाल, ३५ स्नेह,३६ पान, ३७ आहार, ३८ विहार, ३ए सौनाग्य, ४० प्रयोग, ४१ गंधवाद, ४२ वस्तु, ४३ रत्न, ४४ पात्र,४५ वैद्य, ४६ देशनाषित, ४७ विजय, ४८ वाणिज्य, ४ए आयुध,५० युद्ध, ५१ नियुद्ध, ५२ वर्त्तन, ५३ हस्ती, ५४ तुरग. ५५ पक्षी, ५६ नारी, ५७ नूमिलेप, ५८ दंतकाष्ठ, ५ए इष्टिका, ६० पाषाण,

६१ हास्य,६२ उत्तर,६३ प्रत्युत्तर,६४ शरीर, ६५ शास्त्र, ६६ ताल,६७ ढोल,६८मृदंग, ६९विणा, ७० वांसली, ७१ नेरी, ७२ पलितविनाश,

१९ ओगणीशमा विज्ञान हेतुना चोराशी नेद बे,ते कहे बे. १ तत्त्वज्ञान, २ चर्मविज्ञान, ३कर्म विज्ञान, ४ लक्ष्मीयोग, ५ शंख,६ दंत,७ गुटिका,८ रसायन,९ वचन,१० कवित्व, ११ यंत्र, १२ मंत्र, १३ तंत्र, १४ मदन,१५नेपथ्य, १६ स्यंतक, १७ इष्टिका, १८ लेख्य, १९ सूत्र, २० चित्र, २१ कर्मरंग, २२ शुचिकर्म, २३ शकुन, २४ ब्रह्मकर, २५ नैर्मल्य, २६ गंधयुक्ति, २७ आराम, २८ शिल्प, २९ काव्य, ३० कांस्य, ३१ काष्ठ, ३२ कुंन, ३३ लोह, ३४ पत्र, ३५ वंश्य, ३६ नख, ३७ दशन, ३८ प्रासाद, ३९धातु, ४० विनूषण, ४१ स्वरोदय, ४२ द्यूत, ४३ अध्यात्म, ४४ अग्नि, ४५ विद्वेषण, ४६ उच्चाटन, ४७ स्तंनन, ४८ मोहन, ४९ वशीकरण, ५० वस्तु, ५१ स्वयंजु, ५२ हस्तिशिक्षा, ५३ अश्वशिक्षा, ५४ पक्षी, ५५ स्त्री,५६ काम, ५७ चक्र,५८ वजीकरण, ५९ पशुपालन, ६० कृषी, ६१ वाणिज्य, ६२ लक्षण, ६३ कालमानविधि, ६४ आसनविधि, ६५ शास्त्रबंध, ६६ नियुद्धकरण, ६७ आखेटक, ६८ कुतूहल, ६९ केश,७० पुष्प, ७१ इंद्रजाल, ७२ विनोद, ७३ सौनाग्य, ७४ प्रयोग, ७५ शौच,७६ ज्ञान, ७७ ज्ञेय, ७८ प्रीति, ७९ आयु, ८० चाटु, ८१ व्यापार, ८२ धारणा, ८३ हेय, ८४ उपादेय.

२०वीशमा देशसंख्या ते चारेदिशामां थइने चोराशीनेदें बे, ते कहे बे. तेमां पूर्वदिशामां १ गौड, २ कान्यकुब्ज, ३ कलिंग, ४ गोल, ५ अंग, ६ कुरंग, ७ बंगाल, ८ अराच्य, ९ वरेंड, १० वामन, ११ गंगापार, १२ अंतर्वेदी, १३ मागध, १४ मध्यकुरु, १५ माहल, १६ कामरूप, १७ कड, १८ पुंड्र, १९ वोडास, २० अग्नि, २१ मालव, २२ पांचाल, २३ जालंधर,२४ शूरसेन, २५ लोहितपात. पश्चिमदिशामां. २६ काबेल, २७ वालंन, २८ सौराष्ट्र, २९ कुंकुम, ३० लाडश्री, ३१ अर्बुद, ३२ मेवाड, ३३ अवंति, ३४ नागणित, ३५ किरात, ३६ शकट, ३७ सौवीर, ३८ कोंकण, उत्तर दिशिमां.३९ गुर्जर,४० सिंधु,४१ केकाण,४२ नेपाल,४३ लाट,४४ नोट, ४५ तुरक,४६ तायक, ४७ बर्बर, ४८ वज्जुर, ४९ कीर, ५० काश्मीर, ५१ हिमालय, ५२ लोहपुर. ५३ श्रीकाष्ठ. दक्षिणदिशिमां. ५४ मलय, ५५ सिंहल, ५६ कोशल, ५७ पाहल, ५८ आंध्र, ५९ वंध्य, ६० कर्कट, ६१ द्रविड, ६२ श्रीपर्वत, ६३ वैदर्न, ६४ धाराउराला, ६५ तापीतट, ६६ माहाराष्ट्र, ६७ आनीरदेश, ६८ नर्मदातट, ६९ द्वीपदेश.

२१एकवीशमा स्थानना बत्रीश नेदो बे,ते कहे बे. १ स्वर्ग, २ मृत्यु,३ पाताल, ४ तनु, ५ विद्या, ६ वास्तु, ७ विनोद, ८ वाद, ९ गीत, १० वाद्य, ११ नृत्य, १२

रूप, १३ धर्म, १४ अर्थ, १५ काम, १६ मोक्ष, १७ देश, १८ काल, १९ यात्रा, २० समय, २१ पुरुष, २२ स्त्री, २३ गज, २४ तुरंगम, २५ पक्षी, २६ रत्न, २७ पान, २८ आहार, २९ शय्या ३० व्यापार, ३१ वस्तु ३२ विज्ञान लक्षण.

२२ बावीशमा गृहना चोवीश नेदो ळे,ते कहे ळे. १ प्रासाद,२ हर्म्य, ३ आयतन, ४ गृह, ५ कोश, ६ कोष्ठागार, ७ पानीयगृह, ८ शौचगृह, ९ शाला, १० माल्य, ११ मठ, १२ सत्रागार, १३ शृंगारस्थान, १४ धर्मस्थान, १५ विनोदस्थान, १६ मंदिर, १७ हस्तिशाला, १८ वीशमंमप, १९ माहानस, २० नोजनशाला, २१ गुप्तस्थान,२२ आदिस्थान, २३ अर्धस्थान, २४ राजांगण.

२३ त्रेवीशमी मंगल वस्तुना एक शो आठ नेदो ळे,ते कहे ळे. १ ब्रह्मा,२ विष्णु, ३ माहेश्वर, ४ वीतराग, ५ स्कंद, ६ आदित्य, ७ लोकपाल, ८ अग्नि, ९ अमर, १० सागर, ११ पर्वत, १२ गगन,१३ ग्रहण, १४ गांधर्व, १५ चंद्र, १६ विनायक, १७ ज्योतिक, १८ तीर्थ, १९ द्विज, २० धर्मशास्त्र, २१ वेदशास्त्र, २२ वेद, २३ पद्म, २४ पर्यंक, २५ कौस्तुन्न, २६ कांचन, २७ रौप्य, २८ ताम्र, २९ घृत, ३० मधु, ३१ सिद्धांत, ३२ चंदन, ३३ श्वेत, ३४ वस्त्र,३५ वेश्या, ३६ गोरोचन, ३७ मृत्तिका,३८ गोमय, ३९ शस्त्र, ४० अंजन, ४१ रत्न, ४२ मनसिल, ४३ मोदक, ४४ शंख, ४५ प्रियंगु, ४५ वचा, ४७ श्वेतपुष्प, ४८ सर्षव, ४९ दधि, ५० दूर्वा, ५१ अक्षत, ५२ उदंबर, ५३ आम्र, ५४ छत्र, ५५ वाजित्र, ४६ दर्ज, ५७ हस्ती, ५८ बीज, ५९ मुक्ताफल, ६० खंजरीट, ६१ वृषन्न, ६२ राजहंस,६३ कन्या,६४ दर्पण, ६५ दीप, ६६ अंकुश, ६७ तुरंगम, ६८ गीत, ६९ वेणु, ७० वीणाध्वनि, ७१ नूमि, ७२ सिंह, ७३ मय, ७४स्वस्तिक, ७५ तोरण, ७६ कुंन, ७७ चामर, ७८ वत्स, ७९ गो, ८० आर्द्र, ८१ मांस, ८२ स्त्री, ८३ पुरुषयुग्म, ८४ वाहन, ८५ प्रधान, ८६ विद्या, ८७ विनय, ८८ तुष्टि, ८९ पुष्टि, ९० प्रसाद, ९१ उल्लोच, ९२ मदिरा, ९३ सत्य, ९४ पूर्णपात्र, ९५ आर्द्रशाक, ९६ पिप्फलपत्र, ९७ श्रीवृक्ष, ९८ तालवृक्ष, ९९ पूजा, १०० निधि, १०१ गौरी, १०२ गंगा, १०३ सरस्वती, १०४ नर्मदा, १०५ यमुना, १०६ सिद्धि, १०७ प्रीति, १०८ कीर्त्ति. ए सर्व मांगलिक वस्तु जाणवी.

२४ चोवीशमा दानना त्रण नेद ळे. ते कहे ळे. १ अन्नय, २ द्रव्य, ३ परोपकार.

२५ पच्चीशमा यशना पांच नेद ळे, ते कहे ळे. १ जन्मकृत प्रताप यश, २ कीर्त्तिः ३ पराक्रमयश, ४ रूपयश, ५ सदाचारमां प्रवर्त्तन करवुं ते यश.

२६ ढव्वीशमा कीर्त्तिना सात प्रकार ळे, ते कहे ळे. १ दानकीर्त्ति, २ पुण्यकीर्त्ति,

३ विद्वज्जनकीर्त्ति,४ नवकृतकाव्यकीर्त्ति, ५ आवर्त्तनकीर्त्ति,६ शौर्यकीर्त्ति, ७ यशःकीर्त्ति.

२७ सत्यावीशमा रसना नवभेद छे,ते कहे छे. १ शृंगाररस, २ हास्यरस, ३ करुणारस, ४रौद्ररस, ५ वीररस, ६ भयानकरस, ७ बीभत्सरस, ८ अद्भुतरस,९ शांतरस.

२८ अठ्यावीशमा भावना उंगणपञ्चास भेदो छे, ते कहे छे. १ रति, २ हास्य, ३ शोक, ४ क्रोध, ५ उत्साह, ६ भय, ७ जुगुप्सा, ८ विस्मय, ९ स्तंभन, १० स्वेद, ११ स्वर,१२ भेद, १३ रोमांच, १४ वेपथु, १५ वैवर्ण्य, १६ अश्रु, १७ प्रलाप, १८ निर्वेद, १९ ग्लानि, २०शंका, २१ आश्रम, २२ आलस्य, २३ देशचिंता, २४ मोह, २५ धृति, २६ स्मृति, २७ क्रीडा २८, चपलता, २९ जडता, ३० हर्ष, ३१ अवश, ३२ विषाद, ३३ असुख, ३४ वर्ग, ३५ अपस्मार, ३६ निद्रा, ३७ स्वप्न, ३८ विबोध, ३९ अमर्ष, ४० उग्रता, ४१ उन्माद, ४२ मति, ४३ व्याधि, ४४ विरक्त, ४५ वितर्क, ४६ त्रास, ४७ स्मरण, ४८ माया, ४९ लोभ.

२९उंगणत्रीशमा अभिनयना चार भेद कहे छे. १आंगिक,२वाचक,३सात्त्विक,४अहार्य.

३० त्रीशमा वृत्तिना चार भेद कहे छे. १ भारती,२ सात्वती,३ कौशिकी,४ आरभटी.

३१ एकत्रीशमा माहान्पुरुषना चार भेदो छे, ते कहे छे. १ धीरोद्धत, २ धीरोदात्त, ३ धीरललित, ४ धीरशांत.

३२ बत्रीशमा नायकना चार भेदो छे; ते कहे छे. १ दक्षिण, २ अनुकूल,३ शठ, ४ धृष्ठ.

३३ तेत्रीशमा नायकना गुण बत्रीश प्रकारना छे, ते कहे छे. १ कुलीन, २ शीलवान, ३ नयस्थ, ४ शौचवान्, ५ प्रियंवद, ६प्रीतिमान, ७ सुभग, ८ विनयवान्,९ कीर्त्तिमान्, १० त्यागी, ११ विवेकी,१२ शृंगारवान्, १३ अभिमानी, १४ श्लाघ्यवान्, १५ समुज्ज्वलवेष, १६ सकलकला कुशल,१७ प्रिय,१८ सत्यवान्, १९ अवदान्य, २० स्वजन,२१ सुगंधप्रिय, २२ सुवृत्त, २३ मंत्रवान्, २४ क्लेशसह, २५ प्रस्तावप्रकाशक, २६ पंडित, २७उत्तम सत्त्व, २८ धार्मिक, २९ महोत्साही, ३० गुणग्राही,३१ क्षमी, ३२ प्राभाविक.

३४ चोत्रीशमा माहानायिकाना त्रण भेद कहे छे. १ स्वकीया, २ परकीया, ३ पणांगना. वाग्भट्टालंकारमां नायिकाना चार भेद कह्या छे.१अनूढा,२स्वकीया,३परकीया,४पणांगना.

३५पांत्रीशमा नायिकाना आठ भेद कहे छे. १ वासकसज्जा, २ विरहोत्कंठिता,३ खंडिता,४ विप्रलब्धा,५ प्रोषितभर्तृका, ६ कलहांतरिता,७ अभिसारिका,८स्वाधीनभर्तृका.

३६छत्रीशमा वली पण नायिकाना गुणो एकत्रीश प्रकारना छे,ते कहे छे. १ कुलजा, २ सुभगा, ३ सुरूपा,४ सुसत्त्वा,५ सुवेषा,६ सुविनीता,७ सुरतप्रवीणा,८ सुखप्रिया, ९ विभोगिनी,१० विचक्षणा,११ प्रियभाषिणी,१२ प्रसन्नमुखी, १३ पीनस्तनी,१४ रसिका,

१५ लज्जान्विता,१६ लक्षणयुता,१७ पतितज्ञा,१८ गीतज्ञा, १९ विद्याज्ञा,२० नृत्यज्ञा, २१ सुकुमारशरीरा, २२ सुगंधप्रिया, २३ चारुनेत्रा, २४ नातिमानिनी, २५ मधुरवाच्या, २६स्नेहवती,२७ विमर्षवती, २८ सत्यवती, २९शीलवती,३० प्रज्ञावती, ३१ गुणान्विता.

३७ साडत्रीशमा सौख्यकरणना चार भेद छे, ते कहे छे. १ अभ्यासकरण, २ अभिमान, ३ संप्रियकरण, ४ विषयकरण.

३८आडत्रीशमा सौख्यना त्रण प्रकार छे,ते कहे छे. १ आंगिक,२वाचक,३ मानसिक.

३९ ओगणचालीशमा शौचना दश भेदो छे, ते कहे छे. १ मुखशौच, २ स्नान, ३ मृत्तिका, ४ स्कंध, ५ कक्षा, ६ श्मश्रु, ७ जल, ८ नख, ९ अनल, १० सत्यशौच.

४० चालीशमा कामना बे भेद छे, ते कहे छे. १ स्वाभाविक, २ कृत्रिम.

४१ एकतालीशमा कामावस्थाना दश भेदो छे,ते कहे छे. १ अभिलाषता, २ स्मृति, ३ गुणोत्कीर्त्तन, ४ उद्वेग, ५ प्रलाप, ६ उन्माद, ७ व्याधि, ८ जडता, ९ मरण, १० चिंता.

वली कामना बाण, कोइ ठेकाणें पांच भेदें कहेला छे, ते कहे छे. १ संगम, २ विगम, ३ हर्ष, ४ मोह, ५ मरणाधिक.

वली पण कामना पांच बाण कहेला छे, ते कहे छे. १ संमोहन, २ उत्पादन, ३ तापन, ४ शोषण, ५ मरण.

४२ बहेंतालीशमा मूर्खना आठ प्रकार छे, ते कहे छे. १ निर्लज्ज, २ शठ, ३ क्लीब, ४ निर्घृण, ५ व्यसनी, ६ अतिभोगी, ७ गर्वित, ८ निष्ठुर.

४३ त्रेंतालीशमा नागरिक जननां चोवीश करण छे,ते कहे छे. १ विषयसुखनो ओरडो जुदो राखे. २ कायचिंतानुं स्थानक राखे, ३ पाणीनुं स्थानक, ४ रसोइनुं स्थानक, ५ नेपथ्यनुं गृह राखे, ६ नेपथ्यनां उपकरण घणां राखे,७ घरनां उपकरण घणां राखे, ८ शस्त्र घणां राखे, ९ आसन घणा प्रकारनां राखे, १० रम्यपणुं, ११ माल्यादि भोगनुं राखवुं, १२ बेसवा उठवानुं गुप्तस्थान राखे, १३ प्रभातमां विराम लेवा माटें स्थान राखे, १४ मध्यान्हने विषे भोजन करवा स्थान राखे, १५ छानुं भंमारनुं स्थानक राखे, १६निरंतर विद्यानो अभ्यास करे, १७कुलोचित मार्गवर्त्तन करे, १८प्रदोषने विषे गीतविनोद करे, १९ सुरतोपचार करे, २० क्यारेंक उद्यानमां गमन करे, २१ कदाचित् क्षेत्रनिरीक्षण करे,२२निरंतर गृहकार्यमां रहे,२३भोगमां व्याप्त रहे, २४विजनस्थान.

४४ चुम्मालीशमा रूपना त्रण भेद छे, ते कहे छे. १ संपूर्ण लक्षणावयव, २ असंपूर्ण लक्षणावयव, ३ निर्लक्षणावयव.

४५ पीस्तालीशमा स्वभावना त्रण भेद १मुग्धस्वभाव,२मुग्धचतुरस्वभाव,३ चतुरस्वभाव.

४६ छहेंतालीशमा पार्थिवना दश प्रकारें प्रमोद छे,ते एक श्लोकें करी कहे छे.ज्ञाने दाने बले राज्ये, विनोदे वैरिसंग्रहे ॥ शौर्ये धर्मे च सौख्ये च,प्रमोदा दशधा स्मृता ॥ १ ॥

४७ सुडतालीशमो चार प्रकारनो बोध कहे छेः– १ बालसंस्कारप्रबोध,२ प्रज्ञाप्रबोध, ३ शास्त्रप्रबोध, ४ तत्त्वनिश्चयप्रबोध.

४८ अडतालीशमी चार प्रकारनी बुद्धि कहे छेः– १ उत्पातिकी, २ विनयकी, ३ कार्मिकी, ४ पारिणामिकी.

४ए ओगणपच्चाशमी बुद्धिना आठ प्रकारें गुण छे, ते कहे छे. १ शुश्रूषा, २ श्रवण, ३ ग्रहण, ४ धारणा, ५ ऊह, ६ आपोह, ७ अर्थ, ८ विज्ञान.

५० पच्चाशमा गांधर्वना चार प्रकार कहे छेः–१ स्वरगत,२तालगत,३पदगत,४ अवधानगत.

५१ एकावन्नमा त्रण प्रकारना महागीत कहे छेः–१माहागीति,२उपगीत,३अनुगीति.

५२ बावन्नमा गीतना बत्रीश गुण छे,ते कहे छेः– १ सुस्वर,२ सुताल, ३ सुपद, ४ शुद्ध, ५ ललित, ६ सुसंबंध, ७ सुप्रमेय, ८ सुराग, ए सुरस, १० सुसंगित, ११ सुहर्ष, १२ सुग्रह,१३ श्लिष्य१४क्रमध्य,१५ सुवर्ण,१६ सुगम,१७ सुरक्त,१८ संपूर्ण,१ए सालंकार, २० सुभाषाद्य, २१ सुसंधिष्ट, २२ सव्युत्पन्न, २३ मधुर, २४ स्फुट, २५ अग्राम्य, २६ प्रसन्न,२७ कुंचितकंपित,२८समयोचित२ए विद्या३०संगत,३१प्रथमस्थित,३२ स्वस्थ, ३३ एक ३४ अद्भुत, ३५ विलंबितमध्य, ३६ उक्त प्रमाण.

५३ हवे त्रेपन्नमा नृत्यना बे प्रकार छे,ते कहे छे. १ लास्य, २ तांमव,

५४ चोपन्नमा काव्यना शोल प्रकार कहे छे. १ समय, २ प्रतिज्ञा, ३ अभ्यासविद्या, ४ जाति, ५ गीति, ६ रीति, ७ वृत्ति, ८ वाच्य, ए वाचक १०,छंद, ११ अलंकार, १२ गुण, १३ दोष, १४ रस, १५ भाव, १६ अभिनय.

५५ पच्चावन्नमा वक्तृत्वना दश प्रकार कहे छे. १ परिभावित, २ सत्य,३ मधुर,४ सार्थक, ५ परिस्फुट, ६ परिमित, ७ मनोहर, ८ चित्र, ए प्रसन्न, १० भावानुगत.

५६ छपन्नमा भाषाना छ प्रकरो छे,ते कहे छे. १ संस्कृत, २ प्राकृत, ३ अपभ्रंशी, ४ पैशाची, ५ मागधी, ६ शौरसेनी.

५७ सत्तावन्नमा पांमित्यना पांच भेदो छे, ते कहे छे. १ वक्तृत्व, २ वादित्व, ३ कवित्व, ४ आयामत्व, ५ गमत्व.

५८ अछावन्नमा वादना चोविश भेद कहे छे. १ उत्पत्ति, २ समा, ३ अयति, ४ सभा, ५ वाद, ६पक्ष, ७ प्रतिपक्ष, ८ प्रमाण, ए प्रभेद, १०प्रसन्न, ११ प्रत्युत्तर, १२

दूषण, १३ भूषण, १४ उपन्यास, १५ अनुमोद, १६ आदेश, १७ निर्णय, १८ ग्रंथनिश्रय, १९ निश्चय, २० स्थान, २१ अर्थांतर, २२ समता, २३ जय, २४ पराजय.

५९ उंगणशाठमा दर्शनना ६ भेदो छे,ते कहे छे. १ माहेश्वरदर्शन, २ ब्राह्मदर्शन, ३ सांख्यदर्शन, ४ बौधदर्शन, ५ जैनदर्शन, ६ चार्वाकदर्शन.

६० साठमा माहेश्वर दर्शनना पांच भेद छे, ते कहे छे. १ विशेष, २ शिवधर्म, ३ पाशुपत्त, ४ कालमुख, माहाव्रतिक पर्यंत,

हवे तेनाज बीजी रीतें प्रांच भेदें कहे छे. अथोविशेषशिवधर्म, १ शैव, २ पाशुपत, ३ फलमुख, ४ माहाव्रत, ५ ब्रह्मचर्य.

६१ एकसठमा ब्राह्मणना लक्षण दश प्रकारें कहे छे. १ प्रमाण, २ संस्कार, ३ कर्म, ४ वर्त्तन, ५ ब्रह्मचारी, ६ गृहस्थ, ७ वान ८ प्रस्थ, ९ यति, १० ब्रह्मपर्यंत.

६२ बासठमा सांख्य शास्त्रना चार भेद कहे छे. १ तत्त्व, २ प्रमाण, ३ प्रकार, ४ सर्वात्मा.

६३ त्रेसठमा बौधमतना दश भेद छे,ते कहे छे. १ सौगत, २ सर्वद, ३ परिगत, ४ विहार, ५ प्रमाण, ६ प्रभेद, ७ प्रमोद, ८ शौर्य, ९ त्रिकयोगाचार, १० आध्यात्मिकमोक्षपर्यंत.

६४ चोसठमा जैनमतना सात प्रकार छे,ते कहे छे. १ सर्वज्ञ, २ धर्म, ३ तत्त्वार्थ, ४ प्रमाण, ५ प्रतिज्ञा, ६ भेद, ७ सिद्धपर्यंत.

६५ पांसठमा चार्वाकना चार भेद छे,ते कहे छे. १ तत्त्वार्थ, २ प्रमाण, ३ प्रभेद, ४ प्रमोद.

६६ छासठमा विचारना चोवीश भेद छे,ते कहे छे. १ विद्या, २ विज्ञान, ३ विनोद, ४ कला, ५ कवित्व, ६ वक्तृत्व, ७ गीत, ८ नृत्य, ९ वाद्य, १० देश, ११ काल, १२ पात्र, १३ प्रमेय, १४ पर्याय, १५ जय, १६ रस, १७ वाद, १८ अभिनय, १९ धर्म, २० अर्थ, २१ काम, २२ मोक्ष, २३ प्रमाण, २४ लोकवादपर्यंत.

६७ सडसठमा गुरुत्वना दश भेद छे, ते कहे छे १ वंश, २ ज्ञान, ३ पद, ४ शौर्य, ५ सत्त्व, ६ दान, ७ बल, ८ जय, ९ संतान, १० स्वगुण.

६८ अडसठमा चरितना चार भेद कहे छे. १ मानवचरित, २ दानवचरित, ३ वीरविलासचरित, ४ गुणप्रख्यापन चरित.

६९ उंगण्योतेरमा राज्यपालनना पांच भेदो छे, ते कहे छे. १ धर्मपालन, २ राज्यपालन, ३ भूमिपालन, ४ प्रजापालन, ५ नीतिपालन.

७० सित्तेरमा उत्तमपणाना सात भेदो छे, ते कहे छे. १ वय, २ कुल, ३ शील, ४ रूप, ५ पद, ६ ज्ञान, ७ प्रयोग.

७१ एकोतेरमा शक्तिना नव भेद छे, ते कहे छे. १ ज्ञानशक्ति, २ धर्मशक्ति, ३ दान

शक्ति, ४ मंत्रशक्ति, ५ कामशक्ति, ६ अर्थशक्ति, ७ युद्धशक्ति, ८ व्यायामशक्ति, ए देशशक्ति.

७२ बहोंतेरमा अहंकारना आठ प्रकार छे, ते कहे छे. १ ज्ञान अहंकार, २ दान अहंकार, ३ बल अहंकार, ४ धर्म अहंकार, ५ काम अहंकार, ६ द्रव्य अहंकार, ७ शत्रु मारण अहंकार, ८ समारंभ अहंकार.

७३ त्रहोंतेरमा वात्सल्यना चार भेद छे, ते कहे छे. १ देववात्सल्य, २ सद्गुरुवात्सल्य, ३ मित्रवात्सल्य, ४ वल्लन्न पुरुष वा पदार्थनुं स्नेहनेलीधे वात्सल्य.

७४ चम्मोतेरमा प्राप्तिना आठ भेदो छे, ते कहे छे. १ ज्ञानप्राप्ति, २ धर्मप्राप्ति, ३ बलप्राप्ति, ४ कामप्राप्ति, ५ विज्ञानप्राप्ति, ६ पात्रसंग्रहप्राप्ति, ७ सर्वार्थ, ८ राज्यप्राप्ति.

७५ पंच्चोतेरमा शौर्यना चोवीश भेद छे, ते कहे छे. १ स्नानशौर्य, २ मनःशौर्य, ३ शब्दशौर्य, ४ प्रताप, ५ उदय, ६ प्रतिज्ञा, ७ तेज, ८ ज्ञान, ए संग्राम, १० जय, ११ साहस, १२ प्रतिपन्न, १३ शरणागत, १४ प्रमोद, १५ प्रबोध, १६ आज्ञा, १७ उद्यम, १८ अर्थ, १ए आचार, २० बल, २१ कीर्त्ति, २२ लक्षण, २३ व्रत, २४ आपदाशौर्य.

७६ छोंतेरमा बलना दश प्रकार कहे छे. १ वाग्बल, २ कायबल, ३ बुद्धिबल, ४ स्थानबल, ५ सुहृद्बल, ६ शकुनबल, ७ देवताबल, ८ धनबल, ए मंत्रबल, १० सैन्यबल.

७७ सत्योतेरमा आज्ञाना दश भेद छे, ते कहे छे. १ ज्ञान, २ आगम, ३ प्रताप, ४ ऐश्वर्य, ५ वाक, ६ परिश्रम, ७ निद्रा, ८ रति.

७८ अष्ठोतेरमा संग्रहना नव भेद छे, ते कहे छे. १ ज्ञानसंग्रह, २ पात्रसंग्रह, ३ मित्रसंग्रह, ४ पत्नियोगसंग्रह, ५ बलसंग्रह, ६ जयसंग्रह, ७ धर्मसंग्रह, ८ श्रुतसंग्रह, ए गुणसंग्रह.

७ए उगण्याएंशीमा परिछेदना पांचभेद छे, ते कहे छे. १ अलक्षित, २ लक्षित, ३ मानसिक, ४ वाचक, ५ कार्मण.

८० एंशीमा प्रस्तुत्वना पांच भेद छे, ते कहे छे. १ ज्ञानप्रस्तुत्व, २ अक्षयप्रस्तुत्व, ३ शौर्यप्रस्तुत्व, ४ स्थापनाप्रस्तुत्व, ५ प्रदानप्रस्तुत्व.

८१ एक्याशीमा लब्धिना आठ भेद छे. ते कहे छे. १ अणिमा, २ महिमा, ३ गरिमा, ४ लघिमा, ५ ईशित्व, ६ वशित्व, ७ प्राप्ति, ८ प्राकाम्य.

८२ ब्यासीमा दिव्यना दश भेद छे, ते कहे छे. १ जल, २ अग्नि, ३ घट, ४ कोश, ५ विष, ६ माष, ७ तांडुल, ८ फल, ए तुल, १० सुतस्पर्शी.

८३ त्र्याशीमा अपराधना दश भेद छे, ते कहे छे. १ अद्भंग, २ नृपवध, ३ स्त्रीवध, ४ वर्णसंकर, ५ परस्त्रीगमन, ६ चौर्य, ७ पतिविनानो गर्न, ८ दंमपारुष्य, ए वाक्य, १० गर्नपातन.

८४ चोराशीमा उत्तमकारिगरना ठ नेद ठे,ते कहे ठे. १ आरामिक, २ मणिकार, ३ स्वर्णकार, ४ कांस्यघाटक, ५ दारुकृत्, ६ कुंनकार.

८५ पंचाशीमा मध्यम कारिगर पुरुषोना ठ नेद ठे,ते कहे ठे. १ लूहार, २ सलाट, ३ कडिया, ४ यंत्रवाहकशोडिक, ५ तंतुवायी, ६ हजाम.

८६ ठाशी अधम कारिगर पुरुषोना ठ नेद ठे,ते कहे ठे. १ धोबी, चमार, ३ नट, ४ चरट, ५ खारवा, ६ कैवर्त्तक ते निल्ल.

८७ सत्त्याशीमा उत्तम प्रकृतिवाला कारिगरना ठ नेदो ठे,ते कहे ठे. १ हजाम, २ सोनी, ३ खत्री, ४ कांस्यघडनार, ५ सुतार, ६ कुंनार.

८८ अठ्याशीमा मध्यम प्रकृतिवाला कारिगरना ठ नेद ठे,ते कहे ठे. १ आरामिक एटले माली, २ मणियार, ३ दरजी, ४ कुक, ५ चितारो, ६ पालखी उपाडनार नोई.

८९ नेवाशीमा अधमप्रकृतिवाला कारिगरना ठ नेद ठे, ते कहे ठे. १ चमार, २ मधपाडनार, ३ नट, ४ निल्ल, ५ लुहार, ६ पाराधि.

९० नेवुंमा नारुना नव नेद ठे, ते कहे ठे. १ घांची, २ मोची, ३ घांचा, ४ धोबी, ५ लुहार, ६ दरजी, ७ माठी, ८ निल्ल, ९ गोवाल. ए नव नारुकना नाम जाणवा.

९१ एकाणुमा कारुना नव नेद ठे, ते कहे ठे. १ कांदविक, २ कौटुंबिक, ३ कुंनार, ४ सोनी, ५ माली, ६ तंबोली, ७ हजाम, ८ काठिक, ९ गांधर्व घायक.

९२ बाणुमा शब्दना पांच नेदो ठे, ते कहे ठे. १ वीणानो शब्द, २ सतारनो शब्द, ३ वंशशब्द, ४ मादलनोशब्द, ५ करतालनो शब्द.

९३ त्र्याणुमा धान्यना त्रण नेद ठे, ते कहे ठे. १ शीर्शक, २ शंबा, ३ घंटक.

९४चोराणुमा शाकना चार नेद ठे,ते कहे ठे. १ कंद शाखा, २ पत्र, ३ पुष्प,४ फल.

९५ पंचाणुमा मांसना त्रण नेद ठे,ते कहे ठे. १जलचरमांस,२थलचरमांस,३खेचरमांस.

९६ ठन्नुमा रसना ठ नेद ठे,ते कहे ठे. १आम्ल,२ मधुर,३ तीक्ष्ण,४ कषाय,५कटु.

गाथा प्रास्ताविक ठे. आहारनिमित्तेएणं,वेसाए घर मागउ ॥ धम्मलानंतु जा जाणई, दवलानं विमग्गियउ ॥ १ ॥ माणगएणं मुणिणा, पडिया तिणउ तहिं ॥ हिरणाणं तु कोडीउ, वेसाए अग्गउ तया ॥ इति माहानिशीथे ॥ साकादिवेसणासत्ती, नंदीसेणो मुणीसरे ॥ जीविए सागिहे आसी, दसणं पडिबोहिं. इति शतरत्नसंग्रहः समाप्तः ॥

हवे वासुदेव, तीर्थंकर अने चक्रवर्त्ती तथा बलदेव, ए चार पदवीवाला जीवो देवता तथा नारकीथी आव्या उपजे पण मनुष्यमांथी आवे नही.

१ चक्रवर्त्ती तथा बलदेव, ए बेहु चारे निकायना देवोमांथी आवी उपजे.

२ तीर्थंकर तथा वासुदेव, ए बेहु वैमानिक देवोमांथी आवी उपजे.

३ चक्रवर्त्तीना जे पांच मनुष्य रत्न छे, ते सातमी नरक, तेउकाय, वायुकाय, तिर्यंच अने मनुष्य तथा अनुत्तर विमान, एटला स्थानकथी आव्या न होय, शेषस्थानकथी आव्या होय.

४ तथा हाथी अने अश्व, ए बे तिर्यंचपंचेंद्रिय रत्न छे, अने सात एकेंद्रिय रत्न छे एमनी उत्पत्ति यथासंभवपणे जाणवी.

कया जीव नरकें जाय? संज्ञिपंचेंद्रिय पर्याप्ता संख्याता वर्षायुवाळा एवा मनुष्य अने तिर्यंच मरी नरकें जाय तेना आचरण कहे छे.

१ मिथ्यात्वी जीव.
२ महा आरंभ करनार.
३ घणा परिग्रहमां आसक्त.
४ घणो लोभी होय.
५ शुभक्रिया रहित होय.
६ पापरुचि जीव होय.
७ रौद्रपरिणामी होय.
८ कृतघ्नदुष्ट परिणाम वाळो.

कयो जीव कयी नरकें जाय?

१ असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच पहेली नरक सुधी जाय.
२ गर्भज भुजपरिसर्प, गोह, नोळीयादि बीजी सुधीजाय.
३ गर्भजपंखी त्रीजी नरकें जाय.
४ सिंह प्रमुख चोपद जीव चोथी नरक सुधी जाय.
५ गर्भजउरःपरि सर्प पांचमी नरक सुधी जाय.
६ स्त्रीरत्न छठी नरकें जाय.
७ गर्भजमनुष्य, गर्भज मत्स्य उत्कृष्ट सातमी नरकें जाय.

बाहुल्य आश्रयी विशेष कहे छे.

१ व्याळ सर्प प्रमुख.
२ दाढाळा सिंह वाघ प्रमुख.
३ गृध्र पक्षी प्रमुख.
४ जलचर मत्स्य प्रमुख.

एटला जातिना जीव प्रायः घणुं करी नरकथी आवे अने पाछा पण मरीने नरकेंज जाय, परंतु तेनो नियम नही. केम के कोइ कोइ जीव नरकथी आव्या पछी जातिस्मरणादि सामग्रीयें समकित पामीने शुभगतिमां पण जाय छे.

संख्याता आयु वाळा मनुष्य मरीने चारे गतिमां जाय, परंतु वज्रऋषभनाराच संघयणवाळा कोइ कोइ मनुष्य पांचमी सिद्धगतिमां पण जाय छे, ते कहे छे.

१ मनुष्यजाति सामान्यथी जघन्य एक बे अने उत्कृष्टां १०८ एक समयमां सीजे. अने विशेषथी वेद आश्रयी आ प्रमाणें सीजे.
२ स्त्रीलिंगें वीश सीजे.
३ नपुंसकलिंगें दश सीजे.
४ पुरुषलिंगें १०८ सीजे.

हवे गृहस्थादिक लिंगआश्रयी एक समयमां केटला सीजे ते? कहे छे.

१ गृहस्थलिंगें एक समयें. ४
२ तापसादिलिंगें एक समयें. १०
३ साधुलिंगें एकसमयें. १०८

हवे जघन्य मध्यम अने उत्कृष्ट अवगाहना आश्रयी मोक्ष जवानुं कहे छे.

१ लघु बे हाथनी अवगाहनायें. ४
२ मध्यम अवगाहनायें. १०८
३ उत्कृष्ट पांचशें धनुष्यनी अवगाहनायें २
१ ऊर्ध्वलोक मेरुचूलिका नंदनवन प्रमु० ४
२ अधोलोक ते अधोग्रामादिकथी. १२

२ तिर्यक् लोकथी एक समयें. १०८
१ समुद्रजलमांथी एक समयें. २
२ शेष द्रह नदी प्रमुखमांथी. ३

हवे कइ गतिमांथी आवेला मनुष्य एक समयें केटला मोक्षें जाय ? ते कहे छे.

१ नरकगतिथी आव्या. १०
२ तिर्यंच गतिथी आव्या. १०
३ मनुष्यगतिथी आव्या. २०
४ देवगतिथी आव्या. १०८
५ रत्नप्रनाथी आव्या. १०
६ शर्करप्रनाथी आव्या. १०
७ वालुकाप्रनाथी आव्या. १०
८ पंकप्रनाथी आव्या. ४
९ पृथ्वीकायथी आव्या. ४
१० अप्कायथी आव्या. ४
११ वनस्पतिथी आव्या. ६
१२ तिर्यंचपंचेंद्रिय पुरुषथी आव्या. १०
१३ तिर्यंच स्त्रीथी आव्या. १०
१४ मनुष्य पुरुषथी आव्या. १०
१५ मनुष्य स्त्रीथी आव्या. १०
१६ नुवनपतिनी प्रत्येक निकायथी. १५
१७ नुवनपतिनी देवीथी आव्या. ०
१८ व्यंतर देवोथी आव्या. १०
१९ व्यंतर देवीथी आव्या. ५
२० ज्योतिषी देवोथी आव्या. १०
२१ ज्योतिषी देवीथी आव्या. २०
२२ वैमानिक देवोथी आव्या. १०८
२३ वैमानिक देवीथी आव्या. २०

चक्रवर्त्तीना चौद रत्ननां नाम तथा लंबाइ आदिक प्रमाण तथा तेनाथी थतां काम.

एकेंद्रिय.	प्रमाण.	जे कार्य करे ते कहे छे.	पंचेंद्रिय.	शुं कार्य करे.	वासुदेव.	देहमान.
चक्ररत्न.	वामप्रमाण.	वैरीनुंमस्तक छेदे.	पुरोहित.	शांतिकर्मकरे.	चक्ररत्न.	साते जे
छत्ररत्न.	वामप्रमाण.	म्लेछना मेघनो निरोध.	अश्वरत्न.	महापराक्रमी	धनुष्यर०	कालें उ
दंमरत्न.	वामप्रमाण.	वांकीनूमिने समी करे.	गजरत्न.	महापराक्रमी	खड्गरत्न.	त्पन्न थ
चर्मरत्न.	बे हाथप्रमा०	शाली प्रमुखने उत्पन्न.	सेनापति	चारखंमजिते	कौस्तुन.	या होय,
खड्गरत्न.	बत्रीशअंगुल.	संग्राममांशक्तिवंतहोय	गृहपति०	घरयोग्यकाम	गदारत्न.	ते काल
कांगिणी.	चारअं.लांबुं.	वैताढ्यनीनींतेमांमला	वार्त्तिक.	नदीना पुल.	वनमाल	ना पुरुष
मणिरत्न.	चारअं.लांबुं.	बारयोजन उद्योत करे.	स्त्रीरत्न.	महारूपवंत.	शंखरत्न.	प्रमाण.

ए एकेकुं रत्न एक हजार यक्षदेवोयें अधिष्ठित होय,अने बे हजार देवो चक्रवर्त्तीनी बे बाहुयें अधिष्ठित होय सर्व मली शोल हजार देवो चक्रवर्त्तीनी सेवा करे. एमां चक्ररत्न, खड्गरत्न, छत्ररत्न अने दंमरत्न. ए चार आयुधशालामां उपजे. तथा मणिरत्न, सुवर्णकांगिणीरत्न अने चर्मरत्न, ए त्रण नंमारमां उपजे. अने हस्ती तथा अश्व, ए बे वैताढ्य पर्वतमां उपजे. जंबूद्वीपमां जघन्यथी चार चक्रवर्त्ती होय, तेवारें उपन्न रत्न

होय अने उत्कृष्टथी अठावीश विजयना तथा एक भरतनो अने एक ऐरवतनो मली त्रीश चक्रवर्त्ती होय, तेवारें ४२० रत्न होय.

हवे सिद्धशिलानुं स्वरूप कहे छे.

१ सर्वार्थसिद्ध विमानथी बार योजन ऊंची.

२ कोइक आचार्य कहे छे, के सर्वार्थसिद्ध विमानथी बार योजन लोकनो छेहडो.

३ पीस्तालीश लाख योजन लांबी पहोलीछे.

४ अढीद्वीपमां पिस्तालीश लाख योजन प्रमाण मनुष्यनी वस्ति छे अने जे मोक्ष जाय छे, ते पण मनुष्यज जाय छे, ते सर्व समश्रेणीयें जाय छे, माटें जे स्थलथी जाय तेज स्थलें जइ तिहां सिद्धशिलामां रहे.

५ वच्चमां आठ योजन जाडी छे.

६ छेहडे माखीनी पांख सरखी पातली छे.

७ वर्णे अर्जुन सोना सरखी छे.

८ स्फटिक रत्ननी पेरें निर्मल उज्ज्वल छे.

९ उत्तान छत्राकारें छे. अथवा घृतथी भरेली जेवी कचोली होय, तेवे आकारें छे.

१० सिद्धशिलानी ऊपर एक योजन छेहडे लोकनो अंत छे. तिहां एक कोशनो छठ्ठो भाग ३३३ धनुष्यनी ऊपर बत्रीश अंगुलमां सर्व सिद्धना अनंताजीव रह्या छे.

हवे पूर्वनुं प्रमाण कहे छे.

चोराशी लाख ने चोराशी लाखें गुणतां ७०५६०००००००००० एटलो आंक आवे तेटला वर्षनी एक पूर्वमां संख्या जाणवी.

निगोदनुं स्वरूप कहे छे.

१ जे गोलाकारें निगोदनो समुदाय, तेने गोलो कहीयें. तेवा असंख्याता गोला चौद राजलोकमां छे.

२ एकेक गोलामां असंख्याती निगोद छे.

३ एकेका निगोदमां अनंता जीव जाणवा.

हवे वनस्पतिने विषे अनंतकायनो संभव कहे छे.

१ सर्व जातिनी वनस्पतिनो प्रथम ऊगतो अंकूरो अनंतकाय होय.

२ पछी ते अंकूरो वधतो वधतो प्रत्येक रूपें अथवा साधारण रूपें थाय.

हवे एकेंद्रियपणुं कोण जीव पामे? ते कहे छे.

१ जेनें मैथुननी इछा घणी होय.

२ जेमां अज्ञानपणुं घणुं होय.

३ जे घणो बीकण होय.

४ अशाता आवे थके घणो कायर होय.

अथ त्रेवीश पदवीनां नाम.

१ चक्ररत्न.
२ छत्ररत्न.
३ दंडरत्न.
४ चर्मरत्न.
५ खड्गरत्न.
६ मणिरत्न.
७ कांगणीरत्न.
८ सेनापतिरत्न.
९ गाथापतिरत्न.
१० वार्द्धिकरत्न.
११ पुरोहितरत्न.
१२ अश्वरत्न.
१३ गजरत्न.
१४ स्त्रीरत्न.
१५ तीर्थंकरपदवी.
१६ चक्रवर्त्ती पदवी.

१७ वासुदेव पदवी. १९ केवली पदवी. २१ श्रावक पदवी. २३ मंमलिक पदवी.
१८ बलदेव पदवी. २० साधु पदवी. २२ समकित पदवी.

हवे कयीगतिथी निकल्या जीवो, ए त्रेवीश मांहेली कयी पदवी पामे? ते कहे छे.

१ पहेली नरकना निकल्या जीव, एकेंडी रत्ननी सात पदवी न पामे बाकी शोल पामे.
२ बीजा नरकना निकल्या जीव, एक चक्रवर्त्ति पदवी वर्जिने बाकी पन्नर पदवी पामे.
३ त्रीजा नरकना निकल्या जीव, वासुदेव बलदेव ए बे टाली बाकी तेर पदवी पामे.
४ चोथा नरकना निकल्या जीव, एक तीर्थंकर वर्जी बाकी बार पदवी पामे.
५ पांचमा नरकना निकल्या जीव, केवली वर्जी बाकी अगीयार पदवी पामे.
६ छठा नरकना निकल्या जीव एक साधु टाली बाकी दश पदवी पामे.
७ सातमा नरकना निकल्या जीव, हस्तिरत्न, अश्वरत्न. समकेत ए त्रण पदवी पामे.
८ भवनपति, वाणव्यंतर अने ज्योतिषी ए त्रण निकायमांथी निकलेला जीव, एक वासुदेव बीजो तीर्थंकर ए बे पदवी न पामे शेष एकवीश पदवी पामे.
९ पृथिवी, अप्प, वनस्पति, पंचेंद्रियतिर्यंच अने मनुष्य ए पांचमांथी निकल्या जीवो, चक्रवर्त्ती, वासुदेव; बलदेव अने तीर्थंकर ए चार वर्जी शेष ओगणीश पदवी पामे.
१० बेंडी, तेंडी अने चौरिंडी ए त्रण विकलेंडी मांहेथी निकल्या जीवो चार उत्तम पुरुष अने पांचमी केवलीनी पदवी टाली शेष अढार पदवी पामे.
११ अग्नि अने वायुकायमांथी निकल्या जीवो सात एकेंडीरत्न आठमो हस्तिरत्न अने नवमो अश्वरत्न ए नव पदवी पामे.
१२ सौधर्म तथा ईशान देवलोकना निकल्या जीव सर्व त्रेवीश पदवी पामे.
१३ त्रीजाथी आठमा देवलोकना निकल्या जीव, सात एकेंडी टाली शेष शोल पदवी पामे.
१४ नवमा देवलोकथी मांमी नवग्रैवेयक पर्यंतना निकल्या जीवो, सात एकेंडीरत्न आठमुं हस्तिरत्न अने नवमुं अश्वरत्न वर्जी शेष चौद पदवी पामे.
१५ पांच अनुत्तरथी आवेला जीवो चौदरत्न तथा वासुदेव टाली शेष आठ पदवी पामे.

हवे विमान प्रमुख पदार्थ जे आंगुलें करी मवीयें, ते कहे छे.

१ घर, कूवा, तलाव प्रमुख जे वस्तु छे ते सर्व आत्मांगुलें करी मापीयें.
२ पृथ्वी, पर्वत, विमान प्रमुख जे छे ते सर्व पदार्थो प्रमाणांगुलें करी मापीयें.
३ शरीरने उत्सेधांगुलें करी मापीयें.

हवे ए आंगुलना प्रमाण कहे छे.

१ सर्वथी पहेलां सूक्ष्म परमाणुं कहीयें.
२ एवा अनंता सूक्ष्म परमाणुयें एक बादर परमाणु कहीयें.
३ आठ बादर परमाणुयें जे सूर्यना तापें

जाली प्रमुखमां नजरें देखाय, एवा कणी याने ऊर्ध्वरेणु अथवा रथरेणु कहीयें.
४ आठ ऊर्ध्वरेणुयें एक त्रसरेणु थाय.
५ आठ त्रसरेणुयें देवकुरु क्षेत्रना युगली या मनुष्य संबंधी एक मोवालानी अणी थाय, तेने वालाग्र कहीयें.
६ आठ वालाग्रें एक लीख थाय.
७ आठ लीखें एक यूका थाय.
८ आठ यूकायें एक यव थाय.
९ आठ यवें एक उत्सेधांगुल थाय.
१० छ उत्सेधांगुलें एक पग थाय.
११ बे पगें एक विलस एटले वेंत थाय.
१२ बे विलसें एक हाथ थाय.
१३ चार हाथें एक धनुष्य थाय.
१४ बे हजार धनुष्यें एक कोश थाय.
१५ चार कोशें एक योजन थाय.

हवे प्रमाणादि अंगुल कहे छे.

१ चारशें उत्सेधांगुलें एक प्रमाणांगुल थाय.
२ बे उत्सेधांगुलें श्रीमहावीर भगवाननुं एक आत्मांगुल कहेवाय.
३ श्रीऋषभदेवजी अने भरतचक्रवर्त्तीनुं शरीर. १२० प्रमाणांगुल प्रमाण जाणवुं.

हवे सर्व जीवोने उपजवानी योनि चोराशी लाख छे, ते सर्व प्रथम पांत्रीश द्वारमां कहेली छे, अहीं तेनुं स्वरूप लखीयें छैयें.

१ जे जीवोनी उपजती वखतें वर्ण, गंध, रस, स्पर्श एक बीजाना परस्पर सरखा होय, तेवा सर्व जीवोनी एकज योनि छे.
२ उपजवानां स्थानकने पण योनि कहीयें.
३ गोबरना छाणामां जेटली जातिना जीव आवी उपजे, ते सर्व एक योनिना जाणवा

हवे पांत्रीश द्वारमां प्रत्येक दंडकें जीवोना कुलनी संख्या कही छे, तेनो शरवालो करीयें, तेवारें १९७५०००००० थाय. यद्यपि उपजवानी योनि एकज छे पण तेमां कृमी कीडा प्रमुख घणां कुल आवी उपजे छे.

हवे जूदी जूदी योनिनां स्वरूप कहे छे.

१ देवता एकेंद्रिय, नारकीने संवृत योनि छे.
२ विकलेंद्रिय, संमूर्छिमपंचेंद्रिय, तिर्यंच अने मनुष्यने विवृत योनि होय.
३ गर्भज पंचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्यने मिश्र ते संवृत, निवृत, बेहु योनि होय.
४ देवता, नारकीने अचित्त योनि होय.
५ गर्भज तिर्यंच तथा मनुष्यने मिश्रयोनि छे.
६ बाकी सर्व जीवने सचित्तादि त्रण योनि छे.
७ नारकीने शीत उष्ण ए बे योनि छे.
८ देवता अने गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीय तथा मनुष्यने मिश्र योनि होय.
९ पृथ्वी, अप्, वायु, वनस्पति तथा संमूर्छिम तिर्यंच अने मनुष्यने त्रण योनि छे.
१० तेउकायने एकज उष्ण योनि होय.

हवे मनुष्यने योनि विशेष कहे छे.

१ शंखावर्त्त योनिमां पुत्र मरण पामे.
२ शंखावर्त्त योनि स्त्रीरत्ननेज होय.
३ कूर्मोन्नत योनि ते काचबाना पुंठनी पेरें उंची होय पेट वधे नही, ए योनिमां अरिहंत, चक्रवर्त्ती, वासुदेव, बलदेव उपजे.
४ वंशना पान बे भेलां करीयें एवे आकारें

जे योनि होय ते त्रीजी वंसीपत्ता योनि कहीयें. एमां शेष सामान्य मनुष्य उपजे.

हवे आयुसंबंधि विशेष कहे छे.

१ बांधवानी वेलायें बंधकाल आयु कहीयें.

२ आयु बांध्या पछी जेटलो काल वचमां उदय न आवे, तेने आबाधाकाल कहीयें.

३ आयु पूर्ण थाय ते अंतसमयायु कहीयें.

४ घणो काल भोगववा योग्य आयुने सर्व प्रदेशें उदेरी स्वल्पकाल भोगववा योग्य करे समकालें भोगवे तेनेअपवर्त्तनकहीयें.

५ जेटला कालनो बांध्युं तेटलोज भोगवे तेने अनपवर्त्तन आयु कहीयें

६ जे कारणें करी आयु घटे, तेउपक्रम आयु छे.

७ कोइ कारणें आयु न घटे ते निरुपक्रमायु.

हवे बंधकाल जे जीवने जेटलो होय, ते कहेछे.

१ देवता, नारकी, असंख्याता वर्षायुवाला युगलीया मनुष्य तिर्यंच ए सर्व छ मास आयु रहे, तेवारें परभवनुं आउखुं बांधे.

२ संख्याता वर्षायु वाला एवा तिर्यंच मनुष्य निरुपक्रमायु वाला ते त्रीजो भाग आयु बाकीरहे तेवारें परभवनुं आयु बांधे.

३ सोपक्रम आयु वाला मनुष्य तिर्यंच त्रीजा भागथी उंडुं शेषायु रहे थके अथवा नवमो भाग, अथवा सत्तावीशमो भाग अथवा अंतर्मुहूर्त्त आयु शेष रहे, तेवारें परभवनुं आयु बांधे.

४ आउखानो जेटलो भाग बाकी रहे थके नवा आउखानो बंध पडे, पछी जेटले कालें उदय आवे, तेनी वचमांनो काल ते अबाधाकाल कहेवाय.

५ अंतसमयें आयु पूर्ण थये जीव एक समय प्रमाण रुजुगति करे अथवा चार पांच समय प्रमाणनी वक्रगति करे.

हवे ए बेहु गतिमां निश्चय व्यवहारनयें करी परभवनुं आउखुं उदय आवे अने परभवनो आहार होय ते कहे छे.

१ रुजुगतिमां पहेले समयें परभवनुं आउखुं अने परभवनो आहार उदय आवे.

२ वक्रगतिमां बीजे समयें परभवनुं आउखुं उदय आवे, अने एक समयनी वक्रगतिमां बीजे समयें आहार करे.

३ बे समयनी वक्रगतिमां त्रीजे समयें आहार करे. एक समय अणाहारी होय.

४ त्रण समयनी वक्रगतिमां चोथे समयें आहार करे. बे समय अनाहारी होय.

५ चार समयनी वक्रगतिमां पांचमे समयें आहार करे. त्रण समय अनाहारीहोय.

६ एक समयनी वक्रगतिमां बेहु समय आहार लीये.

हवे आयुआश्रयी कहे छे.

७ जे आयु बांधवा समयें यथायोग्य ढीलुं बांध्युं, ते देशकाल अध्यवसाय आश्रयी घटे, तेने अपवर्त्तनायु कहीयें.

८ जे आउखुं पहेलुं घणुं निकाचितबंधें करी बांध्युं, ते अवश्य भोगववुंज जोइयें तेने अनपवर्त्तन आयु कहीयें.

९ जे उत्तम पुरुष जेवा के चक्रवर्त्तीच,

मैशरीरी तेज नवें मोक्ष जावा वाला एवा मनुष्य, तेमज देवता तथा नारकी अने युगलीया मनुष्य तथा तिर्यंच ए सर्वनुं निरुपक्रम आउखुं होय.

१० जे अध्यवसायें अथवा विष प्रमुखें करी आउखुं घटे, ते अध्यवसाय प्रमुख उपक्रम कहीयें, अने ए उपक्रमथी विपरीत ते अनुपक्रम कहीयें.

हवे सात प्रकारें आयु घटे,ते कारण कहे छे.

१ राग द्वेषथी तथा स्त्रीना स्नेहथी मरे, ते अध्यवसाय मरण कहीयें.

२ ताजणा प्रमुख शस्त्रथी मरे, अथवा फांसी खाई मरे ते निमित्त मरण कहीयें.

३ भुख तृषाथी मरे,अथवा घणो आहार करवाथी मरे ते आहार मरण कहीयें.

४ शूलीथी, विषमवेदनाथी,पेट दुःखवाथी मरे ते वेदना मरण कहीयें.

५ पेटमां कटारी मारी मरे,पाणीमांहे पडी मरे, ते पराघात मरण कहीयें.

६ विषकन्या फरसथी मरे, सर्प्प विंछी प्रमुखना मसवाथी मरे,तेफरस मरण कहीयें.

७ घणा श्वासोश्वास आव्याथी मरे थोडा श्वासोश्वास आव्याथी मरे, ते आणपाण मरण कहीयें.

हवे कुबेरदत्ता साधवीयें बालकनी आगल अढार नात्रां पोतानां गायां, तेनां नाम कहे छे.

प्रथम बालकनी साथें छ सगपण कहे छे.

१ पोतानी माताना उदरमांथी ए बालकनो जन्म थयो छे माटें भाइ थयो.

२ भाइनो दीकरो थाय माटें भत्रीजो थयो.

३ धणीनो न्हानो भाइ थाय माटें देवरथयो.

४ शोकनो जण्यो छे माटें दीकरो थयो.

५ बापनो भाइ थाय, माटें काको थयो.

६ शोकना दीकरानो दीकरो माटें पौत्रो थयो.

हवें कुबेरदत्त भाईनीसाथें छ नात्रांथयांतेकहे

१ बेहु जण एकज माताना उदरथी उपना छैयें ते माटे म्हारो भाइ कहेवाय.

२ फरी म्हारी मातानो ए धणी थायो छे ते माटें म्हारो बाप कहेवाय.

३ एनी साथें हुं परणी माटें भर्त्तार थाय.

४ ए पालणामां पोढेलो छोकरो म्हारा धणीनो भाइ थाय छे तेथी ते छोकरो म्हारो काको थयो ते म्हारा काकानो वली ए बाप थाय माटें म्हारो दादो थयो.

५ वली पहेला म्हारी शोक्यनो ए दीकरो हतो माटें म्हारो पण दीकरो थयो

६ म्हारी सासुनो धणी थाय छे ते माटे म्हारो ससरो पण थाय.

हवे कुबेरदत्ता गणिकानी साथें छ नातरां केवी रीतें थाय? ते लखीयें छैयें.

१ एनी कुखें जन्मी छुं माटे माता थाय.

२ म्हारा धणीनी माता थाय माटे सासु छे.

३ म्हारा भाइनी स्त्री थाय माटें भोजाइ छे.

४ म्हारा भर्त्तारनीस्त्री थाय ते शोक्य कहीयें.

५ म्हारा काकानीमाताथायतेदादी कहीयें.

६ म्हारी शोक्यनो दीकरो ते म्हारो पण दीकरो थयो, तेनी ए स्त्री छे. ए सगपण गणतां म्हारी वहू पण थाय.

ए अढार नात्रां कुबेरदत्ता साधवीयें एकला पोता आश्री पालणामां पोढोढेला ढो कराने आगल गाइ संजलाव्यां एवा कुबेरसेना वेश्या तथा ते साधवीनो जाइ जेने पोतें परणी हती, ते तथा तेना वीर्यथी जे बालक उत्पन्न थयो ढे जेनी पासें साधवी पोतें ऊनी रहीने हालरडा गाय ढे, ते मली चारे जणना प्रत्येकें एकेकना अढार अढार नात्रां परस्पर एक बीजानी सार्थे संबंधें थाय, तेवारें सर्व मली बहोंतेर नात्रां थाय.

॥ अथ अशुनध्यानना त्रेशठ स्थानक, दृष्टांत सहित कहें ढे. ॥

१ अज्ञान ध्याननी ऊपर, मासतुषनो दृष्टांत जाणवो.
२ अनाचार ध्याननी ऊपर, पुत्रने अर्थें चिंताना करनार कोंकण साधुनो दृष्टांत.
३ कुदर्शन ध्याननी ऊपर, नंदमणियार श्रेष्ठीनो तथा सोमिलब्राह्मणनो दृष्टांत.
४ क्रोधध्याननी ऊपर, कुलवालक, मंखलीपुत्र, पालक तथा नमुचिनो दृष्टांत.
५ मान ध्यानें बाहुबलीनो दृष्टांत. ६ मायाध्याने मल्लिनाथनो दृष्टांत.
७ लोनध्याननी ऊपर केसरीया लाडु वहोरनार साधुनो दृष्टांत.
७ राग ध्याननी ऊपर त्रण दृष्टांत कहे ढे. तेमां कामरागनी ऊपर मणिरथराजाजे. मयणरेहा सतीनी ऊपर मोहित थयो तेनो दृष्टांत, तथा स्नेहरागनी ऊपर ना तुमंत्री अने सरस्वतीनो दृष्टांत अने दृष्टिरागनी ऊपर गोष्टामाहिलनो दृष्टांत.
ए द्वेषध्याननी ऊपर धर्मरुचि नंदना वडनो दृष्टांत.
१० मोहध्याननी ऊपर बलदेव, विष्णु, तथा सज्जनवसूरिनो दृष्टांत.
११ इछाध्यानें कपिलकेवलीनो दृष्टांत. १२ मिथ्यात्वध्यानें जमालीनो दृष्टांत.
१३ मूर्छाध्यानें कनककेतुनो दृष्टांत. १४ शंकाध्यानें आषाढाचार्यनो दृष्टांत.
१५ कांक्षा ध्याननी ऊपर मरीचि तथा कपिलादिकनो दृष्टांत.
१६ गृद्धिध्याननी ऊपर मङ्गूराभंगू अने कंमरिकनो दृष्टांत.
१७ आशाध्याननी ऊपर मूलदेव अने निर्घृणशर्म ब्राह्मणना संबलनो दृष्टांत.
१८ तृष्णाध्याननी ऊपर अंगारदाहकनो दृष्टांत.
१ए क्षुधाध्याननी ऊपर संप्रतिराजानो जीव द्रुमकनो दृष्टांत.
२० पंथध्याननी ऊपर पोतनपुर मार्गगवेषक वल्कलचीरीनो दृष्टांत.
२१ पंथें चालवाना ध्याननी ऊपर वरधणु तथा ब्रह्मदत्तनो दृष्टांत.
२२ निद्रा ध्यानें चौदपूर्वधर दृष्टांत. २३ नियाणाध्यानें संनूतिरुषि द्रौपदी दृष्टांत.
२४ स्नेह ध्याननी ऊपर मरुदेवीमाता तथा अर्हन्नकजीनी मातानो दृष्टांत.
२५ कामध्याननी ऊपर हासा, प्रहासा, लोनितकुमारनंदीनो दृष्टांत.

२६ कलुषध्याननी उपर उदायिनराजा प्रति अभिची कुमारनो दृष्टांत.
२७ कलहध्याननी उपर महाशतक श्रावक तथा रेवती श्राविकानो दृष्टांत.
२८ युद्धध्यान उपर कूणिक अने चेटकना दृष्टांत. २९नियुद्धध्यानें भरत बाहुबलीनो दृष्टांत.
३० संगध्यानें भावदेव नागिलानो दृष्टांत. ३१ संग्रहध्यान उपर मम्मण दृष्टांत.
३२ व्यवहारध्याननी उपर राज कुलिपुत्रनें अर्थे बेहु शोक्योनो दृष्टांत.
३३ क्रयविक्रयध्याननी उपर लोभनंदनो दृष्टांत.
३४ अनर्थ दंड ध्याननी उपर द्वैपायनऋषि प्रति साम्ब प्रद्युम्नादिकनो दृष्टांत.
३५ आभोग ध्याननी उपर प्रसन्नचंदनो दृष्टांत जेने जाणतां व्रत वीसर्यां.
३६ आणाईल ध्याने सणाविल साधुनी बहेने वधतुं तेल लीधुं ते ऋण थया नो दृष्टांत.
३७ वैरध्यानी उपर फरशुराम तथा सुभूमादिकनो दृष्टांत.
३८ वितर्कध्याननी उपर नंदराजानुं राज्यलेवा वांछनार चाणाक्यनो दृष्टांत जाणवो.
३९ हिंसाध्याननी उपर कूपनिक्षिप्त कालसूरियानो दृष्टांत जाणवो.
४० हास्यध्याननी उपर चंडरौद्राचार्यें शिष्यने दीक्षा दीधी, तेनो दृष्टांत जाणवो.
४१ प्रहास्याध्यानें चंडप्रद्योतनें वारतऋषीश्वरने निमित्त कहीने वांद्यो, ते दृष्टांत.
४२ पउसध्यानी उपर मरुभूति प्रत्यें कमठनी पेरें दृष्टांत जाणवो.
४३ फरुसध्याननी उपर ब्रह्मदत्त प्रतें चुलणीनो अथवा युगबाहु प्रत्यें मणिरथनो दृष्टांत.
४४ भयध्यानें गजसुकुमालनो विनाश करनार सोमिलने भय उपनो ए दृष्टांतजाणवो.
४५ अप्रशंसाध्यानें सकडालना मुखथकी वररुचियें पोतानी अप्रशंसानुं ध्यान कीधुं ते दृष्टांत अथवा रथिकें पोतानुं विज्ञान, कोश्याने देखाड्युं ते दृष्टांत.
४६ परनिंदाना ध्यान उपर कुरंगडु मुनि निंदाना करनारा चार क्षपकनो दृष्टांत.
४७ परग्रह ध्यान उपर सभासमक्ष गोष्ठामाहिल दुर्बलिकापुष्पग्रें रह्यो, ए दृष्टांत.
४८ परिग्रह ध्याननी उपर मुनिपति प्रत्यें कुंचिक श्रावकनो दृष्टांत.
४९ परपरिवादध्याननी उपर सुभद्रा सती प्रत्यें तेनी सासु नणंदनो दृष्टांत.
५० परदूषणध्याननी उपर दमयंतीने शाकिणीना कलंक चढाव्यानो दृष्टांत.
५१ आरंभध्याननी उपर ढंढणा कुमार पूर्वभव राजाधिकारीनो दृष्टांत.
५२ समारंभध्याने मनमांहे कोईक शोक्यना दीकरानुं मरण चिंतवनारा सुलढनो दृष्टांत.
५३ पापानुमोदनध्याननी उपर तंडुलमत्स्य अंतरमुहूर्त्त अनुमोदन करे ते दृष्टांत.
५४ अरिजाणध्यान उपर वापीनो उद्यान नंदमणियारें चिंतव्यो तेनो दृष्टांत.
५५ असमाधिमरणध्याननी उपर स्कंदसूरिनो दृष्टांत.

५६ कर्मोदय पच्चयं ध्याननी उपर मरणवेलायें विष्णु श्रेणिकादिकनी पेरें दृष्टांत.
५७ ऋद्धिगारवध्यानंनी उपर दशार्णनद्र राजानो दृष्टांत.
५८ रसगारवध्याननी उपर सुबुधि प्राधान प्रत्यें जितशत्रु राजानी पेरें दृष्टांत.
५९ शातागारव ध्याननी उपर शशीराजानी पेरें दृष्टांत.
६० अविरमणध्याननी उपर नृगुपुरोहितना बेहुकुमर आश्रयी दृष्टांत जाणवो.
६१ अमुत्तिमरण ध्याननी उपर ब्रह्मदत्तनो पूर्वजव संनूत यतिनो दृष्टांत.
६२ रूपध्याननी उपर चंदप्रद्योतें पटलित अंगारवतीना रूपनो दृष्टांत.

॥ उपदेश रत्नकोश प्रारंनः ॥

१ सर्वदा जीवदया पालवी.
२ इंद्रियोने कुमार्गें प्रवर्त्ताववी नही.
३ इंद्रियोने धर्ममार्गें प्रवर्त्तावववी.
४ निरंतर धर्मपूर्वक सत्यवचन बोलवुं.
५ शील खंमन करवुं नही.
६ कुशीलीयानो संसर्ग करवो नही केमके जेवी संगति होय तेवी बुद्धि पण थाय.
७ गुरुनुं वचन लोपवुं नही.
८ जेम गुरु कहे, तेमज प्रवर्त्तवुं.
९ मार्गमां चपलपणे चालवुं नही.
१० नीची दृष्टिराखी जीवय त्नकरतां चालवुं.
११ पोतानेकुलयोग्य द्रव्यानुसारेंवेशपहेरवो.
१२ वांकीदृष्टियें कोइनी सामुं जोवुंनही.
१३ पोतानी जिव्हा संवरी राखवी.
१४ आलपंपाल एटले यद्वत् यद्वत्नबोलवुं.
१५ अविचारित कार्य न करवुंविचारीकरवुं.
१६ पोतानाकुलनोरुडोआचारलोपवोनही.
१७ पारका मर्म बोलवा नही केमके ते रोष्यो थको पोतें मरे अथवा आपणने मारे.
१८ कोइने कूडुं आल देवुं नही.
१९ कोइने आक्रोश वचन कही शापन देवो.
२० गुणवंत पुरुषनो उपकार करवो.
२१ उपकारकरीबीजाआगलप्रकाशवोनही.
२२ दुःखमांरूडा माणसनेंआलंबनआपवुं.
२३ महोटुं संकट आवी पडे तो पण कोइ नी आगल हाथ मांमवो नही.
२४ कोइ आपणने प्रार्थना करे तो छति शक्तियें प्रार्थनानो जंग न करवो.
२५ पोतामां घणा गुण होय तो पण पोतानी प्रशंसा स्वमुखें करवी नही.
२६ दुर्जन माणसनी निंदा करवी नही.
२७ जेनो जेवो स्वजाव होय ते मूके नही.
२८ पोताना धर्ममार्गें चालीयें.
२९ घणी हास्य मस्करी न करवी.
३० हास्य न करवाथी गुरुता पामीयें.
३१ वैरीनो विश्वास करवो नही.
३२ जे आपणा उपर विश्वास राखे, तेनी साथें कोइ रीतें विश्वासघात न करवो.
३३ कोइनो करेलो उपकार वीसारवो नही.
३४ गुणवंत उपर राचीयें प्रशंसा करीयें.
३५ निःस्नेही उपर स्नेह न करवो. परंतु मध्यस्थ पणे रहेवुं.
३६ पात्रनी परीक्षा करी सुपात्रने दान देवुं.

सन्मान करवुं, केम के सत्पुरुषनो आ कलिकालमां त्रोटो छे.

३७ लोक निंदा करे तेवुं काम न करवुं केम के जुठुं बोलवुं, चोरी करवी, परदारा सेववी, एथी लोकमां कलंक चढे अने परजवें नरकें जवुं पडे. माटे ते न करवुं.

३८ पोतानुं साहस सत्त्व छोडवुं नही. जो पोतामां सत्त्व होय तो सर्व कारज थाय.

३९ व्यसननी उपर मोहित न थावुं.

४० लक्ष्मीक्षय थाय तो पण थोडामांथी यथायोग्य दान आपवुं ए धीरपुरुषनुं खड्गधारा समान व्रत जाणवुं.

४१ कोइनीसाथें घणो स्नेह न करवो जेटलो स्नेह करीयें तेटलो दुःखदायी थाय.

४२ अनीष्ट उपर प्रति दिवस रोष न करवो.

४३ कोइ साथें क्लेश न करवो.

४४ अन्यायथी लक्ष्मी उपार्जवी नही.

४५ कुवास कुठाकुर वास न करवो.

४६ बालकने प्रियवचनें बोलाववुं.

४७ वैरीने मधुरवचनें बोलाववो जेथी ते सुख पामे तो आपणी साथें कलह न करे.

४८ घणी लक्ष्मी होय तो पण ते बपोरनी छाया सरखी जाणी अहंकार न करवो,

४९ लक्ष्मी न होय तो विषवाद न करवो. सर्वदासमभावें रहेवाथीसंताप न थाय.

५० सेवकना वखाण तेना मुख आगल करवां.

५१ पुत्रनां वखाण तेनी पाछल करवां पण तेना मुख आगल न करवां.

५२ सर्वकोइ प्रत्यें सरस सकोमल अने थोडुं धर्मसंयुक्त वचन बोलवुं.

५३ पोताना शत्रु अनेमित्रनोविनय करवो.

५४ पोतानी संपत्ति माफक दान देवुं.

५५ पारका गुण शील होय ते बोलवा. पण अवगुण न बोलवा. ए मंत्रविना पण महोटुं वशीकरण छे एम जाणवुं.

५६ प्रस्तावें बोलवुं पण अप्रस्तावें न बोलवुं केम के प्रस्तावें बोलवुं सर्वने गमे.

५७ घणा माणसमांहे जे दुर्जन होय तेनुं बहुमान करवुं.

५८ पोताना प्रियनुं विशेष उपकार करवो.

५९ गुणवंतनी पूजा करवी.

६० बीजानी पासे मंत्र आलोच न करवो.

६१ पारके घेर एकला न जवुं.

६२ स्त्रीयें पतिव्रता धर्म पालवो.

६३ जेनी साथें अत्यंत प्रीति करवा वांछीयें तो तेने घेर जमवुं.

६४ ते मित्रने आपणे घेर जमाडवो.

६५ मित्रने वस्त्रादिकनुं दान आपवुं.

६६ मित्र जे वस्तु आपे, ते लेवी.

६७ पोतानी वात मित्र आगल कहेवी.

६८ मित्रनी वात पोतें प[illegible]वी, एम करवाथी तेनी साथें प्रीति दृढ थाय.

६९ कोइनुं अपमान करवुं नही.

७० पोताना गुणनो गर्व न करवो.

७१ गर्व करवाथी गुणहीन थइयें.

७२ बहुरत्ना वसुंधरा छे माटें पृथ्वीमां विचित्र आश्चर्य देखी विस्मय पामवुं नही.

देवादिक संबंधि आयु प्रमुखनो यंत्र.

महोटुं कार्य आरंभीने पछी न्हानुं करीयें तो लोकमां हांसी थाय.

३४ न्हानुं कार्य आरंभीने पछी तेने महोटुं करीयें तो लोकमांहे प्रशंसा थाय.

३५ सर्वजीवने पोता सरखा जाणी कोइने दुहवीयें नही राग रोष आणीयें नही.

३६ ए प्रमाणें वर्त्तनारो पुरुष क्यारें दुःखी न थाय सेवटें कर्म छेदी मोक्ष जाय इति ॥

॥ अथ अष्टभंगी प्रारंभः ॥

१ सुदेव, सुगुरु अने सुधर्म, ए त्रण तत्त्वनुं स्वरूप न जाणे अने साधुधर्म तथा श्रावक धर्म ए बे मांहेलो कोइ धर्म न आदरे अने पच्चरकाण जिनमत अनुष्ठान न पाले ए प्रथम भांगो जाणवो एनो स्वामी सकल लोकवासी मिथ्यात्वी जाणवो.

२ जिनतत्त्व न जाणे अने साधु धर्म तथा श्रावक धर्म आदरे अने अज्ञानकष्ट मास क्षमणादिक पच्चरकाण पालें ए बीजो भांगो बाल तपस्वी तापसादिकनो जाणवो.

३ ज्ञानतत्त्व न जाणे अने बेहु धर्ममांहेलो एक धर्म आदरे पण यथास्थित साधुधर्म मार्ग न पालें प्रतीत न आणे ए न जाणे, न आदरे अने न पाले,एवो त्रीजो भांगो सर्व पासथ्था, कुशीलीया, संशक्त इत्यादिक भव्य तथा अभव्यादिकनो जाणवो.

४ जिनमत स्वरूप न जाणे तथा वली साधु धर्म आदरे वली यथाछंद पणे साधु मार्गने पाले ए न जाणे, आदरे अने पाले एवो चोथो भांगो उत्सूत्र प्ररूपक अगीतार्थनो छे.

५ धर्मना स्वरूपने जाणे, पण नियमना भयने लीधे बेहु धर्म मांहेलो एके धर्म न आदरे अने व्रत पच्चरकाण पण पाले नही ए जाणे, न आदरे, अने न पाले एवो पांचमो भांगो श्रेणिक, सात्यकी अने श्रीकृष्ण प्रमुख सम्यक्दृष्टियोनो जाणवो.

६ धर्मना स्वरूपने जाणे पण बेहुमांहेलो एके धर्म आदरे नही परंतु नववाड सहित शील प्रमुख पाले ए छठ्ठो भांगो अनुत्तर विमानवासी देवादिकनो जाणवो.

७ जिनधर्मना स्वरूपने विशद रीतें जाणे अने बेहु धर्ममांहेला एक धर्मने आदरे परंतु निद्रावरणीय कर्मोदयें करी पाली शके नही सातमो भांगो संविज्ञपक्षीनो जाणवो.

८ जिनधर्ममां अत्यंत कुशल थको धर्मस्वरूपने जाणे अने आदरे तेमज जिनोक्तधर्म यथास्थित पणे पाले ए जाणे, आदरे अने पाले एवो आठमो भांगो साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका रूप चतुर्विध श्रीसंघनो जाणवो.

ए आठभांगामां प्रथमना चार भांगा मिथ्यादृष्टीना जाणवा अने पाछला चार भांगा सम्यक्दृष्टिनां छे तेमांपाचमो छठ्ठो भंगो अविरति सम्यक्दृष्टीनो अने सातमो भंगो देशविरतिनो जाणवो तथा आठमो भांगो देशविरति अने सर्वविरति बेहुनो जाणवो ॥इति॥